ज्योतिष में रोग निदान

(प्रभावशाली उपायों सहित)

ज्योर्तिविद् आचार्य राधाकृष्ण

‘या श्रीः स्वंय सुकृतिनां भवनेश्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।’

अर्थात् जो पवित्र आत्माओं के घर, पुण्यात्माओं के यहाँ स्वंय धन लक्ष्मी के रूप में, पापियों के यहाँ दरिद्रता के रूप में, शुद्ध अन्तकरण वाले पुरूषों के हृदय में ज्ञान रूप में, सत्पुरूषों के मन में श्रद्धा रूप में तथा कुलीन मनुष्यों के पास लज्जा रूप में निवास करती है, मैं उन आद्य शक्ति स्वरूपा देवी को सादर नमन् करता हूँ। हे ! देवि आप समस्त संसार का सादर पालन पोषण करें।

2nd इनर टाइटल

ज्योतिष में रोग निदान

(प्रभावशाली उपायों सहित)

लेखक व अनुसंधानकर्ताः-

ज्योतिर्विद् आचार्य राधाकृष्ण

(पित्तरदोष कारण और समाधान, विवाह बाधा और दम्पत्य सुख के उपाय, ज्योतिष में व्यवसाय का निर्धारण, भाग्यशाली रत्न-स्टॉन्स, ज्योतिष में रोग निदान, हिमालय के सिद्ध योगी, हिमालय के सद्गुरू, तन्त्र के दिव्य प्रयोग, सर्वोत्तम देवी उपासना, कुण्डलिनी और सूक्ष्म शरीर की यात्रा और ध्यान की गहन अनुभूतियाँ जैसी बीस से अधिक पुस्तकों के लेखक)

सम्पर्कः-
फोनः 09417014059, 08556050214

बगीची पेडामल,
o/s लोहगढ गेट, अमृतसर -143001
E-mail: drrkasr@gmail.com

......प्रकाशक.......
अमित पाकेट बुक्स
सुखजा मार्कीट, नजदीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर-144001
फोनः- 0181-212696

अनुक्रमण

- ज्योतिष शास्त्र में बवासीर रोग
- ज्योतिष शास्त्र में ऑन्त्रपुच्छ शोथ (एपेंन्डीसाइटिस)
- ज्योतिष शास्त्र में हृदय संबंधी रोग
- ज्योतिष शास्त्र में गुर्दा और पथरी रोग
- ज्योतिष शास्त्र कमर दर्द
- ज्योतिष शास्त्र में पक्षाघात (लकवा)
- ज्योतिष शास्त्र में अस्थमा (दमा)
- ज्योतिष शास्त्र में क्षय रोग
- ज्योतिष शास्त्र में एड्स रोग
- ज्योतिष शास्त्र मे गुप्त रोग
- ज्योतिष शास्त्र में दुग्ध विकार

अध्याय-सात

ज्योतिष शास्त्र में जटिल रोगों की विवेचना

- ज्योतिष शास्त्र में मिरगी रोग
- ज्योतिष शास्त्र में मनोविक्षिप्ति
- ज्योतिष शास्त्र में त्वचा संबंधी रोग
- ज्योतिष शास्त्र में कर्ण संबंधी रोग
- ज्योतिष शास्त्र मूक-बधिर रोग
- ज्योतिष शास्त्र कैंसर रोग

अध्याय-आठ

पितृदोष और रोग विचार

- पितृदोष शान्ति के उपाय
- कालसर्प योग की शान्ति के उपाय

अध्याय-नौ

रोग के दौरान विशिष्ट उपाय/कर्मकाण्ड

- सूर्य उपासना
- गायत्री उपासना
- वैदिक मंत्र जप
- महामृत्युंजय जप अनुष्ठान
- श्री शतचण्डी सम्पुटित
- लाल किताब के उपाय

अध्याय-दस

रोगों के अनुसार रत्नों का चुनाव

- स्वास्थ रक्षण में रत्नों का महत्व
- रत्न चिकित्सा का आधार
- नवरत्न (माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया आदि।)

- अन्य उपयोगी पत्थर (दाना-ए-फिरंग, कहरूवा, शभई, हौल दिली, संगे यशब और अन्य)

*****

प्रवेश

मुझे एक ऐसे मरीज का केस स्मरण है, जिसने चिकित्सा विज्ञान को भारी अचम्भे में डाल दिया था। यह मामला कोई 12-13 वर्ष पुराना है। एक दिन प्रातःकाल के समय एक 58 वर्षीय प्रौढ व्यक्ति अपने स्नान घर में अचानक गिर गया। घर वालों को पता चला तो उन्होंने सहारा देकर उसे बिस्तर पर लिटा दिया। यद्यपि उस प्रौढ व्यक्ति को दस-बारह मिनट के बाद ही होश आ गया, पर होश में आने के बाद वह कुछ वहकी-वहकी सी बातें करने लगा। आधा-पौना घंटे के बाद ही वह अपने पारिवारिक सदस्यों को भी ठीक से नहीं पहचान पा रहा था। उसे अपनी पत्नी, अपने बहु-बेटे की आवाज भी पहचान में नहीं आ रही थी।

घर वालों ने तुंरत एम्बुलैंस बुलाकर प्रौढ को शीर्घ ही एक प्राइवेट हॉस्पीटल में एडमिट करवा दिया। यद्यपि, जब वह लोग उस मरीज को एम्बुलैंस में डालकर हॉस्पीटल ले जा रहे थे, तो स्ट्रेचर के ऊपर पडे-पडे ही उसके मुंह एंव नाक से खून बहने लगा। हॉस्पीटल तक पहुंचते उन्होंने जैसे-तैसे खून रोकने का काम किया। पर इसके साथ ही मरीज की बेहोशी भी गहराती गई और हॉस्पीटल पहुंचते-पहुंचते वह मरीज गहरे कोमा में चला गया। उसके बाद से वह प्रौढ कोमा से बाहर नहीं निकल पाया।

हॉस्पीटल में मरीज का इलाज पंद्रह दिनों तक चलता रहा। लेकिन न तो उसकी तबियत में ही कोई सुधार आया और न ही उसकी बेहोशी ही टूटी। उसकी गंभीर हालत एंव बचने की संभावना दिखाई ने देने पर डॉक्टरों ने मरीज को घर ले जाकर सेवा करने के लिए कह दिया। अन्ततः डॉक्टरों की सलाह पर घर के लोग मरीज को वापिस घर ले आये। रोगी के मुंह पर अब भी ऑक्सीजन का मॉस्क लगा था। घर पर मरीज को एक बेड के ऊपर लिटाया गया। रात कोई दो-ढाई बजे के आसपास एक आश्चर्यचकित घटना घटित हुई। अस्पताल से वापिस आने के चौदह-पंद्रह घंटे बाद अचानक वह मरीज अपनी ऑखें टिमटिमाने लगा। धीरे-धीरे उसे होश भी आने लगा। अगले कुछ घंटों में रोगी की हालत काफी हद तक स्थिर हो गई।

रोगी को होश आने के बाद तुरंत ही हॉस्पीटल में भरती कराया गया। तदोपरांत एक सप्ताह के इलाज के बाद रोगी ठीक होकर भी अपने घर आ गया और कई वर्ष तक जिंदा रहा। मरीज का मौत के मुंह से वापिस आना किसी चमत्कार से कम नहीं कहा जा सकता!

इस प्रकार की घटनाएं बार-बार देखने, सुनने को मिलती रहती है। कभी जिन रोगियों के जिंदा बचने की कोई संभावना नहीं रहती, वह गंभीर रोगी भी थोडे दिनों के उपचार से किसी चमत्कार की तरह भले चंगे हो जाते है और कई-कई वर्ष तक जिंदा रहते है। जबकि दूसरी तरफ जिन रोगियों में किसी रोग के स्पष्ट लक्षण तक दिखाई नहीं पडते, डॉक्टर एक के बाद एक टेस्ट करा-करा कर थक हार जाते है, और जिनमें किसी रोग का पता तक नहीं लगता। अन्त में रोगी की बीमारी को मन का वहम मान कर छोड दिया जाता है। ऐसे (नि) रोगी अचानक मृत्यु के शिकार बनते देखे जाते है।

ऐसा भी सैंकडों बार देखने में आया है कि साइकिल से गिरे, ठोकर लगने या घर में पैर फिसलने से गिरे लोग तुंरत मृत्यु का शिकार बन गये, लेकिन दूसरी तरफ कई-कई मंजिल ऊपर से गिरे, सडक, रेल दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुए, मलवों में दबे लोग चमत्कारिक ढंग से जिंदा बच गये।

ऐसी घटनाओं को देखकर लगता है कि मनुष्य के जीवन के तार केवल शरीर तक सिमटे नहीं है, बल्कि उसके जीवन, उसके क्रियाकलाप, उसके रोगी-निरोगी बनने, उसके किसी गंभीर बीमारी से अचानक उभर आने या स्वस्थ्य अवस्था में ही अचानक किसी गंभीर रोग का शिकार बन जाने अथवा एकाएक मृत्यु के मुंह में समा जाने के पीछे किसी न किसी अदृश्य शक्ति का हाथ अवश्य रहता है। ज्योतिष विज्ञान में इसे ही **'ग्रहों'** का प्रभाव माना गया है। यद्यपि कर्म सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले मनीषियों ने इसे पूर्व जन्मों के फल, पित्तरों का श्राप या संताप रूप में स्वींकार किया है।

इसी प्रकार अनेक बार ऐसा भी देखने में आया है कि बहुत से दंपत्ति सामान्य होने के बावजूद संतान सुख से वंचित रह जाते है। चिकित्सकों की दृष्टि में पति-पत्नी के अंदर कोई दोष नहीं पाया जाता। बारबार परीक्षण कराने पर भीं पति-पत्नी को निर्दोष घोषित किया जाता है। बावजूद इस सबके वह गर्भधारण में सफल नहीं हो पाते या फिर पत्नी बार-बार के प्रयास से मृत शिशु को जन्म देती रहती है। यद्यपि ऐसे मामलों के पीछे चाहे अन्य कारण दिखाई न पडे, परंतु ग्रहों की

विशेष स्थिति अवश्य देखी जाती है। कई बार तो आश्चर्य तब होता है जब चिकित्सकों की दृष्टि में संतान पैदा करने में अक्षम लोग भी अनुकूल ग्रह दशा आने पर अनायास संतान सुख की प्राप्ति कर लेते है।

ज्योतिष शास्त्र का तो प्राचीन समय से ही अटूट विश्वास रहा है और अब सैंकडों बार अध्ययन-अनुसंधान से भी प्रमाणित किया जा चुका है कि जब किसी व्यक्ति को प्रतिकूल ग्रह की दशाऽर्न्तदशा या गोचर स्थिति का सामना करना पडता है तो अनायास ही उसके जीवन में कई तरह के उतार-चढाव आने लगते है। वह व्यक्ति अचानक ही किसी गंभीर रोग की चपेट में आ जाता है। जबकि इसके विपरीत भी देखा जाता है। किसी रोगी व्यक्ति को अनुकूल व शुभ ग्रह की दशाऽर्न्तदशा शुरू होते ही अनायास अपने असाध्य एंव लाइलाज समझे रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। अनुकूल ग्रह की दशाऽर्न्तदशा शुरू होते ही उसके जीवन में नया दौर शुरू हो जाता है।

इसी तरह सैंकडों बार ऐसा भी देखा गया है कि किसी गंभीर रोग से पीडित चल रहे रोगी को यदि प्रतिकूल अवधि के दौरान रोगकारक बने या अशुभ एंव निर्बल ग्रहों से संबन्धित ***'रत्न'*** धारण करवा दिया जाए, उसे उपयुक्त ***'धातु'*** या ***'यंत्र'*** पहना दिया जाए, अशुभ ग्रहों से संबन्धित वस्तुओं का दान उसके हाथों करवा दिया जाए, अशुभ ग्रहों की अशुभता शान्ति के लिए मंत्र जाप, पूजा-पाठ सम्पन्न करवा दिया जाए, हवन-यज्ञ करा लिये जाएं, तो निश्चित ही आचर्श्यजनक रूप में उनकी हालत सुधारने लगती है। जहॉ तक कि जिन रोगियों के लिए ऑपरेशन करना सुनिश्चित घोषित कर दिया जाता है, वह रोगी भी बिना ऑपरेशन कराए अपनी बीमारी से मुक्ति प्राप्त कर लेते है।

मेरे सामने बार-बार ऐसे मामले आते रहे, जिनमें रत्न, धातु, यंत्र आदि धारण कराने एंव प्रतिकूल ग्रहों की अशुभता दूर करने के निमित्त विशिष्ठ पूजा-पाठ, दान-पुण्य, जप-हवन आदि कराने से आश्चर्यजनिक परिणाम मिले। इस संबंध में मुझे एक बारह वर्षीय बालक का उदाहरण आज भी स्मरण है। इस बालक को बारह वर्ष की उम्र तक तीन बार अपनी उदर व्याधि के कारण ऑपरेशन की प्रक्रिया से गुजरना पडा। फिर भी उसकी हालत में पर्याप्त सुधार नहीं आया। यह बालक समय पूर्व प्रसव से पैदा हुआ था और जन्म से ही कई व्याधियों से ग्रस्त बना रहा। लेकिन जब से उस बालक को उपयुक्त 'रत्न' का लॉकेट बनबाकर गले में धारण कराया और तीन महीने तक शास्त्रानुसार महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न करा दिया गया, तो उसके बाद से बालक के स्वास्थ्य में चमत्कारिक परिवर्तन आया।

मिरगी से पीडित सैंकडों स्त्रियों और अन्य रोंगियों को उपयुक्त धारण कराने से पर्याप्त लाभ मिलते देखा गया। मिरगी को तो आज भी हमारे जहां एक अभिशाप के रूप में लिया जाता है। सैंकडों युवतियां इस रोग से पीडित रहने के कारण उम्र भर के लिए अविवाहित रह जाती है। यद्यपि मिरगी मस्तिष्क संबंधी एक ऐसी गंभीर व्याधि है, जिसके पीछे ग्रहों की विशेष भूमिका रहती है। ज्योतिषीय दृष्टि से चन्द्र-बुधादि ग्रहों की निर्बल स्थिति एंव पाप पीडित होने को इसके लिए मुख्यतः जिम्मेदार माना जाता है और उनकी अशुभता दूर करने के लिए उपयुक्त रत्न धारण कराने एंव दान-पुण्य आदि से रोगियों को पर्याप्त लाभ मिलते देखा गया है।

मिरगी रोग से पीडित रही एक महिला का मामला मुझे आज भी स्मरण है। यह महिला 44-45 वर्ष से मिरगी रोग से पीडित थी। उसने जगह-जगह जाकर अपना इलाज करवाया, कई तरह की पूजा-पाठ भी सम्पन्न कराये, कई दरगाहों पर जाकर मन्नतें मांगी, पर उसे अपने रोग से कहीं भी मुक्ति नहीं मिल पायी। मिरगी की दवाएं लेते रहने के बावजूद उसे हर दूसरे-तीसरे दिन ही मिरगी का दौरा पड जाता था। लेकिन जब से इस स्त्री को उसकी ग्रह स्थिति देखकर विशेष रत्न धारण करा दिया गया, उसी दिन से दवाओं का पूरा असर तो होने ही लगा, उस रोगिणी की हालत में भी बहुत सुधार आया।

इसी तरह हड्डियों के रोग, अस्थि सन्धियों से संबन्धित रोग, आर्थ्रराइटिस से पीडित, माइग्रेन और जीर्ण सिरदर्द से पीडित, मूत्र संस्थान के रोगों से ग्रस्त, अस्थमा और छाती के रोगों से लेकर अन्य रोगों तक में ज्योतिषीय उपायों से लाभ मिलते देखा गया है। इन उपायों पर अमल करने से एक बात तो यह देखने में आयी है कि जो रोग दवाओं से नियंत्रण में नहीं आते, वही रोग ऐसे उपायों के बाद उन्हीं दवाओं से सहज नियंत्रण में आने लगते है। दूसरी बात इन उपायों के बाद रोग की तीव्रता, रोग की आक्रमकता भी अत्यधिक कमजोर पडने लगती है। तीसरी बात इन उपायों से रोगी के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आने लगता है।

ज्योतिष संबंधी उपायों से अनेक निःसंतान दंपत्तियों की कोख भरते देखी गई है। जिन दंपत्तियों की जन्मकुंडली में पितृदोष विद्यमान रहता है, और जो बार-बार प्रयास करने के बावजूद संतान सुख प्राप्ति से वंचित रहते है, अगर उन्हें पितृ पूजा, त्रिपुण्डी श्राद्ध, नारायण बलि श्राद्ध आदि कर्म सम्पन्न करा दिये जाएं, तो उन्हें संतान सुख मिलने की संभावना बढ जाती है। ऐसे अनेक दंपत्तियों को ऐसे उपायों के बाद संतान प्राप्त करते देखा है।

दसअसल, ग्रहों का हमारे जीवन, हमारे स्वास्थ पर कितना गहरा प्रभाव पडता है, इस तथ्य को अब आधुनिक वैज्ञानिक भी स्वींकार करने लगे है। सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, मंगल जैसे ग्रहों का मानव जीवन और उसके क्रियाकलाप पर पडने वाले प्रभावों के स्पष्ट प्रमाण मिल चुके है। सूर्य कलंक के दिनों में पृथ्वी पर बाढ, सूखा, हिमपात, भूकंप, चक्रपात आदि का प्रकोप एकाएक बढने लगता है। इस दौरान कई तरह के रोग महामारी बनकर तेजी से फैलने लगते है। इस बात को अनेक शोधकर्ताओं ने प्रमाणित किया है।

सन् 2012 से जब से सूर्य पर भारी उथल-पुथल मची है, उसी के प्रतिफल हमें पृथ्वी पर दिखाई पड रहे है। पृथ्वी के ऊपर जितनी उथल-पुथल विगत 50-60 वर्षों में दिखाई नहीं दी, उससे कहीं ज्यादा उथल-पुथल तो पिछले दो-ढाई वर्ष के दौरान ही देखी गई है। इस छोटी सी अवधि में पृथ्वी पर आयी आपदाओं के कारण करोडों लोग प्रभावित हुए है। इस दौरान ऐसे क्षेत्रों में भी बाढ का प्रकोप देखा गया, जहां बाढ आने के बारे में सोचा तक नहीं जा सकता। जिन क्षेत्रों में सूखा पडता था वहां बाढ का भंयकर प्रकोप देखा गया। सूर्य से ही नहीं, वरन् चन्द्रमा और बृहस्पति के प्रभाव से भी पृथ्वी वासियों की मनोदशा में तीव्र गति से बदलाव आ रहे है। इसलिए पृथ्वी पर मनोरोगियों के साथ-साथ लूटपाट, डकैतियों, बलात्कार, धोखा-फरेब से लेकर दुर्घटनाएं एंव हत्याओं की घटनाएं निंरतर बढ रही है। इन्ही के कारण हमारा नैतिक पतन हो रहा है। समाज में अनैतिकता का सम्राज्य सर्वत्र फैलता जा रहा है।

सूर्य कलंक के संबंध में वराहमिहिर के बृहत्संहिता जैसे प्राचीन ग्रन्थ में भी उल्लेख आया है। सूर्य में आने वाले परिवर्तनों के कारण मनुष्य के स्वभाव, व्यवहार से लेकर उसके शारीरिक स्वास्थ्य तक पर गहरा प्रभाव पडता है। इस अवधि में पृथ्वी पर इन्फ्लूएंजा, प्लेग, हैजा, क्षय जैसे संक्रमण जन्य रोग एंव हृदयाघात, उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों में भी तेजी आते देखी जाती है या फिर यह बीमारियां अधिक उग्र बनने लगती है।

इस संबन्ध में अमेरिका स्थिति येल यूनीवर्सिटी से संबन्धित वैज्ञानिक डॉ. हटिग्टन ने अपने दीर्घकालीन अध्ययन के बाद निष्कर्ष निकाला है कि सौर मण्डल में उत्पन्न हलचलें एंव सूर्य कलंक की अवधि में पृथ्वी के वातावरण के साथ-साथ जीव-जगत के स्वास्थ्य व व्यवहार में एक गहरा बदलाव आने लगता है। इस समय मानव स्वभाव के ऊपर गहरा प्रभाव पडता है, जहां तक की मानव की ऊर्वरता भी घटने लगती है।

इसी तरह कुछ अन्य अध्ययनों से भी पता चला है कि सूर्य कलंक की अवधि में कभी-कभी मानव स्वभाव उन्माद या युद्धोन्माद तक से ग्रस्त हो जाता है। इस कारण इस अवधि में समाज और देशों तक में अनावश्यक कलह, वैर-भाव, युद्ध की घटनाएं बढ जाती है। आसाधारण राजनैतिक उथल-पुथल की घटनाएं, महान क्रान्तियां तक भी इसी अवधि में घटित होते देखी गई। इस दौरान वैचारिक मतभेद भी सर्वाधिक उच्च शिखर पर होते है। विश्व की वर्तमान स्थिति को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

कोई अर्ध शताब्दी पूर्व कार्ल सांगा और जॉन नेल्सन नामक दो पश्चिमी ज्योतिर्विदों ने अपने गहन अध्ययन के आधार पर सिद्ध किया था कि विश्व युद्ध, विश्व जनक्रातिन्यों तक की घटनाओं के पीछे सौर मण्डल संबन्धी ऐसी घटनाएं ही जिम्मेदार रही है।

इसी तरह हार्वर्ड यूनीवर्सिटी, अमेरिका के विख्यात खगोलविद डॉ. राबर्ट नोयस ने भी अपने दीर्घकालीन अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि सूर्य के केन्द्र से असंख्य शक्ति धाराएं, विभिन्न तरह के शक्ति पुंज निरंतर निस्त्रत होते रहते है, लेकिन जब कभी इनकी सान्द्रता में थोडी-बहुत भी उथल-पुथल मचती है, या उनमें किसी तरह का बदलाव आने लगता है, तो तत्काल उसका प्रभाव पृथ्वी के वातावरण पर देखने को मिलता है। इसी दौरान पृथ्वी पर प्राकृतिक आपदाओं जैसे चक्रपात, ज्वालामुखी फटने, भूंकप के विनाश, सूखा पडने, बाढ आने, बर्फ पडने जैसे प्रकोप भंयकर रूप धारण करने लगते है, साथ ही कई तरह की बीमारियां भी इन दिनों तेजी से फैलने लगती है। ऐसी उथल-पुथल की स्थिति में पृथ्वीवासी भुखमरी या सूखा-बाढ आदि के शिकार भी अधिक बनते है या फिर पृथ्वी पर अनावश्यक मारकाट, युद्ध की ज्वालाएं भडक उठती है। अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध जैसी घटनाओं के लिए ही नहीं, वरन् रूसी क्राति, मिस्त्र की जनक्रान्ति और भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन तक के लिए भी सूर्य सक्रियता का बहुत बडा सहयोग रहा है।

इसी तरह सन् 1990 से लेकर सन् 2000 तक ऐसा घटना क्रम चला, जब सूर्य कलंक की स्थिति बन गई थी। उस समय भी संसार के अनेक देशों में कई तरह के अनावश्यक युद्धोन्माद खडे हो गये थे। अनेक देश बे-वजह युद्ध की विभीषिका में लिप्त हो गये। उस समय वातावरण में भी कई तरह के तीव्र बदलाव देखे गये थे। आतंकबादी वारदातों तक के पीछे भी ग्रह एंव सौर मण्डल संबन्धी इन्हीं घटनाओं को देखा जाने लगा है। सूर्य कलंक के दौरान पृथ्वी के वातावरण में ही

तीव्र बदलाव नहीं आये, वरन् कहीं बाढ, तो कहीं सूखा, कहीं भूस्खलन, तो कहीं बदाल फटने, भूंकप, ज्वालामुखी फटने की विभीषिकाएं भी झेलनी पडी।

इन दिनों भी ऐसा ही खतरा दिनों-दिन बढता जा रहा है। विभिन्न समुदायों के मध्य गहरे मतभेद उभर रहे है। इसी भावना से प्रेरित होकर कई देश युद्धोन्माद की ओर बढते जा रहे है।

पश्चिम जर्मनी, 'बोकुम' के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. हाइन्ज कामिस्की के अनुसार हर नवें, ग्यारहवें और अठारहवें वर्ष सूर्य के धरातल पर भंयकर विस्फोट होते है। इस सदी में किए गये अध्ययन के अनुसार विस्फोटों की तीव्रता में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। सन् 1972 के अगस्त माह में, सूर्य पर जो विस्फोट हुआ था उसकी क्षमता करोडों हाइड्रोजन बमों के बराबर मानी गयी। उस विस्फोट की घातक तरंगें बाह्य वातावरण (आयनोस्फियर) को चीर कर पृथ्वी तक भी पहुंची और जितना घातक प्रभाव पृथ्वी के वातावरण, वृक्ष, वनस्पतियों एंव जीवों पर देखा गया, उसका सहज अनुमान नहीं लग सकता। प्रो. हाइन्ज के अनुसार उस दौरान कैंसर, हृदय रोग, रक्तचाप जैसी बीमारियों में बेतहाशा वृद्धि देखी गई।

वैसे भी **प्राचीन काल** से ही लोगों का अगाध विश्वास रहा है कि हमारे (मनुष्य) सुख-दुःख, जन्म-मरण, सफलता-असफलता, आधि-व्याधि आदि का संबन्ध ग्रह-नक्षत्रों के साथ किसी न किसी रूप में रहता ही हैं। चन्द्रमा के समुद्र पर पडने वाले प्रभाव से तो हम सब भली-भाँति परिचित है। चन्द्र प्रभाव के कारण समुद्र में ज्वार-भाटा आते है, समुद्र के पानी में भारी उथल-पुथल मचती है। इतना ही नहीं, चंद्र प्रभाव से ही पृथ्वी पर भूंकप, चक्रपात आदि का संबन्ध भी किसी न किसी रूप में रहता ही है। ठीक इसी प्रकार मानव शरीर के ऊपर भी चन्द्रमा आदि ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव पडता हैं। मानव शरीर का अधिकांश अंश भी जल तत्व से निर्मित रहता है, जहां तक कि मानव शरीर के तरल अंश का 99 प्रतिशत अंश पानी के रूप में ही रहता है। इसीलिए मानव शरीर, मानव स्वभाव, व्यवहार और स्वास्थ तक पर चन्द्रमा का गहरा प्रभाव पडता है। स्त्रियों की प्रजनन क्षमता, पुरूषों की पौरूषता तक पर चन्द्रमा का गहरा प्रभाव देखा जाता है।

मानव ही नही, अन्य अनेक जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों तक के ऊपर अंतरिक्ष में भ्रमण कर रहे सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह-नक्षत्रों का गहरा प्रभाव पडते देखा गया है। अधिकांश वनस्पतियां सूर्य की धूप की जगह रात्रि में चन्द्र प्रभाव से तेजी से बढती देखी गई है। कुछ पुष्पों को छोडकर लगभग सभी पुष्प सूर्य के तेज प्रकाश में ही खिलते हैं, परंतु श्वेत कुमुद, रात की रानी, चांदनी जैसे पुष्प रात्रि को चन्द्रमा की चांदनी में खिलते है, जबकि रक्त कुमुद दिन में खिलता है और रात्रि को बंद हो जाता है।

सूर्य-चन्द्र की तरह ही अन्य ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव हमारे एंव जीव जगत के पशु-पक्षियों एंव वनस्पतियों के ऊपर पडता है, जैसे बिल्ली की नेत्र पुतली चन्द्र कला के अनुसार घटती बढती, सिकुडती-फैलती रहती है। बहुत से पशु-पक्षी, जैसे कुत्ता, बिल्ली, सियार, गीदड, भेडिया, मधुमक्खी, घोडा, वन चिडिया, सोन चिडिया, बगले, कई तरह की चीटियां, चूहे, मगरमच्छ, घडियाल जैसे जानवरों के ऊपर ग्रह-नक्षत्रों का सीधा प्रभाव देखा जाता है। विशेष घडी, पल, नक्षत्र, योग आदि के अनुसार उनके स्वभाव, व्यवहार, चरित्र आदि में इस कदर बदल आते है कि वह अपना प्राकृतिक स्वभाव एंव बर्ताव त्याग कर अन्य तरह के हाव-भाव दिखाने लगते है, अलग तरह की वोलियां निकालने लगते है, ताकि वातावरण में घट रहे घटना क्रम की सूचना अपने अन्य साथियों, अन्य प्रजातियों के प्राणियों को दे सके, अन्य जीव-जन्तुओं, मनुष्य को प्रदान कर सके। जीव-जन्तुओं के ऐसे विचित्र व्यवहार से वर्षात् के आगमन, आंधी-तूफान आने, ज्वालामुखी फटने, धरती फटने, भूकंप आने जैसी अनेक बातों का पता बहुत पहले चल जाता है।

मगरमच्छ, घडियाल, कछुआ जैसे जानवर सूर्य-चन्द्र की विशेष गति एंव नक्षत्रों के विशेष योग आने पर ही अपने अण्डे देते है और उन्हें सेते हैं। सीप से मोती बनने की घटना तो हम सबको ज्ञात है। स्वाति नक्षत्र में मोती बनने की यह अद्भुत घटना घटित होती है। इस नक्षत्र में पैदा हुआ मोती अद्भुत शक्ति सम्पन्न बन जाता है।

समुद्र में उठने वाले ज्वार और भाटे की घटनाएं पूर्णिमा के आसपास ही घटित होती है, तो उसी दौरान लोगों की मानसिक दशा, उनके व्यवहार, स्वभाव एंव मनोस्थिति में भी एकाएक विशेष बदलाव देखने को मिलते है।

वैसे भी आयुर्वेद जैसी प्राचीन चिकित्सा प्रणाली में तो **'ज्योतिष'** विज्ञान के महत्व को प्राचीन काल से ही स्वींकार किया गया है। आयुर्वेद में ऋतु अनुसार जीवनयापन करते रहने के बार-बार निर्देश दिये गये है।

पृथ्वी पर ऋतुओं का आवागमन अंतरिक्ष में परिभ्रमण करने वाले ग्रहों की स्थिति के अनुसार ही चलता है। इसमें सूर्य, चंद्र और पृथ्वी की सर्वाधिक भूमिका रहती है। यह तीनों अपनी-अपनी धुरी तथा कक्षों में भ्रमण करते है। इस गति क्रम में जो निरंतर उतार-चढाव आते है, उसी अनुसार रात-दिन, गर्मी-सर्दी, वर्षा-बसंत आदि का क्रम बना रहता है। पानी बरसने से लेकर भूकंप, तूफान आने तक की अनेकों प्रकृति जन्य घटनाएं इसी आधार पर घटित होती रहती है। इनका

मनुष्य, वनस्पति, प्राणी जगत से लेकर पृथ्वी के वातावरण तक पर गहरा प्रभाव पडता है। मानव स्वास्थ्य के प्रसंग में भी ग्रह गति एंव मौसम के प्रभाव को समझा जा सके, तो निश्चित ही इनके खतरे से बचने एंव सुअवसरों का अनुकूल लाभ उठाने में मदद मिल सकती है।

चरक संहिता सूत्र (अ. 6/4) के अनुसार ऋतुओं के अनुरूप आहार-विहार में अनुकूल परिवर्तन करते रहने से स्वस्थ्य एंव निरोग जीवन जिया जा सकता है। आचार्य चरक ने ऋतुओं के अनुसार वर्ष को छह अंग और छः ऋतुओं में विभाजित किया है। माघ-फाल्गुन को शिशिर, चैत्र-बैसाख को बसंत, ज्येष्ठ-आषाढ को ग्रीष्म, श्रावण-भाद्र पक्ष को वर्षा, आश्विनी-कार्तिक को शरद और अगहन-पौष को हेमंत ऋतु में बांटा है।

चरक संहिता के अनुसार ऋतु अनुसार वनस्पतियों में से सौम्य अंश सूख जाने से इनमें तिक्त, कषाय और कटु रस की क्रमशः वृद्धि होती है तथा प्राणियों में रूक्षता अधिक पायी जाती है। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य पृथ्वी का जलीयांश को सोख लेता है तथा वायु तीव्र और रूक्ष होकर संसार के स्नेह भाग का पोषण करती है, परिणाम स्वरूप शिशिर, बसंत और ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओं में रूक्षता उत्पन्न होने से तिक्त, कषाय और कटु रसों की वृद्धि से मनुष्य शरीर में दुर्बलता आती है।

बसंत ऋतु में सूर्य जब मीन और मेष राशि पर रहते है तो सूर्य की उष्णता बढनी शुरू होती है, फलतः दुर्बलता एंव व्याधियों का बढना भी यहीं से आरंभ होता है। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य जब वृष और मिथुन राशि पर होते है, तो उसकी किरणें अत्यंत प्रखर हो जाती है। इससे भूमण्डल के सभी पदार्थों के कटु रस की वृद्धि होती है तथा प्राणियों में रूग्णता और दुर्बलता का प्रकोप बढता जाता है।

अतः सूर्य और चन्द्र की गति और स्थिति का पृथ्वी की वनस्पतियों और प्राणियों पर पडने वाले बुरे प्रभावों की रोकथाम के लिए ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार में अनुकूल परिवर्तन करने का आयुर्वेद में विस्तृत वर्णन आया है। यथा-

आचार्य सुश्रुत के अनुसार- हेमंत ऋतु में सामान्तः शरीर की जठराग्नि सशक्त रहती है। अतः इन दिनों वायु का प्रकोप अधिक रहता है। इसलिए स्निग्ध पदार्थों की बहुलता वाले पदार्थ स्वाथ्य के लिए लाभकारी रहते है। पर शिशिर ऋतु में कटु, तिक्त, कषाय रसों से युक्त वातवर्द्धक पदार्थों का सेवन वर्जित है।

हेमंत ऋतु में संचित हुआ कफ बंसत ऋतु में सूर्य की किरणों से प्रभावित होकर जठराग्नि को मंद कर देता है, अतः इस ऋतु में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है। इसलिए स्निग्ध और अम्लीय पदार्थों का सेवन वर्जित है। इनके लिए पुराने अन्न का सेवन लाभकारी है।

ग्रीष्म ऋतु में शरीर में स्निग्धता का अभाव रहता है। इस काल में स्निग्ध पदार्थ, मधुर रस, घी, चावल आदि का सेवन अधिक करना चाहिए। किंतु लवण, अम्लीय तथा कटु रस वाले पदार्थों का सेवन हानिकारक बन जाता है।

वर्षा ऋतु में जठराग्नि सर्वाधिक दुर्बल हो जाती है। इन दिनों दिन में सोना, धूप में बैठना वर्जित माना गया है। पुराने जौ, गैंहू का प्रयोग लाभप्रद रहता है। अम्लीय व लवण युक्त स्निग्ध पदार्थों की बहुलता स्वास्थ्य रक्षक है। जबकि शरद ऋतु में वर्षा ऋतु में संचित पित्त प्रकुपित रहता है। अतः इस दौरान वसा, क्षारीय एंव दही का सेवन वर्जित माना गया है।

चाहे आधुनिक चिकित्सक और शोधकर्ता प्राचीन सिद्धान्त को स्वींकार करें या न करें, लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि हरेक व्यक्ति अपने स्वभाव, व्यवहार एंव प्रकृति के अनुसार अलग ही रहता है। इसी आधार पर आयुर्वेद में सभी लोगों को वात, पित्त और कफ प्रकृति के आधार पर तीन गुणों के तीन अलग-अलग वर्गों में रखा है। इन तीन गुणों के आधार पर लोगों की प्रकृति, स्वभाव, शारीरिक-मानसिक विशेषताएं प्रथक-प्रथक बन जाती है। इसलिए वात प्रकृति के लोग प्रतिकूल वातावरण में शीघ्र ही पेशीय, सन्धिय एंव स्नायु संबधी एंव मानसिक व्याधियों के शिकार बन जाते है, जबकि पित्त प्रकृति के लोग प्रतिकूल वातावरण या प्रतिकूल खानपान से शीघ्र ही अपच, अजीर्ण, उदर व्याधि, उदर के घाव, त्वचा रोग, एलर्जी, फोडे-फुन्सी, बवासीर जैसे अनेक रोगों के शिकार बनने लगते है। ऐसे लोगों को उच्च्व रक्तचाप, एसिडिटी, मस्तिष्कीय आघात, अस्थि भंग एंव दुर्घटनाओं का खतरा भी सदैव बना रहता है। लेकिन जो लोग कफ प्रकृति के रहते है, वह शीघ्र संक्रामक रोगों, हृदय रोग, हृदयाघात, अस्थमा जैसे गंभीर रोगों के शिकार बनते है।

ज्योतिष विश्लेषण से ऐसे लोगों का सहज निदान किया जा सकता है और उनकी जन्मकालीन राशि, लग्न, लग्नेश आदि के आधार पर उनकी प्रकृति को ध्यान में रखकर उन्हें प्रतिकूल वातावरण, प्रतिकूल खानपान के प्रति समय रहते आगाह किया जा सकता है, उन्हें अनुकूल दिनचर्या अपनाने, अनुकूल चीजें प्रयोग में लाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। उन्हें किस चीज का प्रयोग विशेष रूप से करना चाहिए और कौन सा रत्न, कौन सी धातु धारण करनी चहिए, किस ग्रह की अशुभता को शान्त करना चाहिए आदि अनेक जरूरी बातों की जानकारी देकर रोग ग्रस्त होने से बचाया जा सकता है अथवा रोग ग्रस्त होने पर यथाशीघ्र निरोगी बनाने में मदद की जा सकती है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर मेरा यही निष्कर्ष है कि रोगों से बचाव के साथ-साथ रोग निदान एंव गंभीर, जीर्ण एंव लाइलाज समझे जाने वाले रोगों से मुक्ति पाने में ज्योतिष विज्ञान बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः यथा संभव इस विज्ञान का उपयोग करना चाहिए।

एक अन्य बात भी जान लेनी जरूरी है और मुझे इस बात की खुशी भी है कि अब पढे-लिखे लोग भी ज्योतिष विज्ञान में गहरी रूचि ले रहे है।

एक अन्य बात भी जान लेनी जरूरी है कि आज का मनुष्य, आज की मानव सभ्यता जिस चौराहे पर पहुंच गई है, उस चौराहे से उसके राह भटकने का खतरा भी पैदा हो गया है। आज का मनुष्य जीवन की इतनी समस्याओं से घिरा है कि उनसे बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझ पा रहा है। उसे समझ नहीं आ रहा कि वह उनसे कैसे बाहर आये या किसे अपनी मदद के लिए पुकारे, किसकी मदद ले कि उसके जीवन नैया दूसरे किनारे सही तरह से पंहुचा जाए?

मनुष्य जीवन सैकडों समस्याओं से होकर गुजरता है और इस कठिन डगर से बाहर निकलने का सही एंव सुगम मार्ग ज्योतिष की मदद से ढूंडा जा सकता है। शायद इसीलिए लोग ज्योतिष विज्ञान की तरफ एक बार पुनः आकर्षित हो रहे हैं। लाखों लोग ज्योतिषयों के पास अपनी समस्याओं का निदान खोजने के लिए आने लगे है। एक बात और अब लोग केवल ज्योतिष समाधान के लिए ही नहीं, वरन् ज्योतिष विद्या को समझने, उसे सीखने एंव स्वंय में आत्मसात करने के लिए भी आगे आने लगे है। लोगों में ज्योतिष विद्या को समझने का रूझान तेजी से बढ रहा है।

कुछ दशक पूर्व तक केवल ब्राह्मण परिवारों के युवक ही ज्योतिष सीखने, ज्योतिष का ज्ञान पाने के लिए ही गुरू जनों के पास आते थे, पर अब समाज के हर वर्ग से, जहां तक कि बहुत सी स्त्रियां और युवतियां भी ज्योतिष विज्ञान की तरफ आकर्षित होने लगी है। अब युवतियों में भी ज्योतिष को पढने में रूचि पैदा होने लगी है। ज्योतिष सीखने के लिए वह भी आगे आने लगी है। मेरे पास ज्योतिष विज्ञान का प्रायोगिक ज्ञान लेने के लिए लगभग प्रत्येक हफ्ता-दस दिन में ही ऐसी 10-15 युवतियां आ ही जाती है। मजे की बात तो यह है कि इनमें बहुत सी युवतियां ज्योतिष सीखकर उसे अपनी जीविका का, लोगों को मार्गदर्शन देने का माध्यम बनाने लगी है। अनेक युवतियां तो ज्योतिष विद्वान के रूप में सुविख्यात भी हो रही है।

ज्योतिष सीखने के लिए अब सामान्य जन ही नहीं, सामान्य पढे-लिखे लोग ही नही, बल्कि इंजीनियर, डॉक्टर, सीए, एम.बी.ए. स्तर तक पढे-लिखे लोग, उच्च्य पदाधिकारी, न्यायाधीश स्तर तक, सभी लोग इस विद्या में गहरी रूचि लेने लगे हैं। आपने भारत के दो भूतपूर्व चुनाव आयोग श्री टी.एन शेषन और श्री गोपाल स्वामी जी का नाम अवश्य सुना होगा। यह दोनों अति महत्वपूर्ण व्यक्ति ज्योतिष के बडे अच्छे विद्वान है। इसी तरह भारत के भूतपूर्व राष्ट्पति श्री शंकरदयाल शर्मा जी स्वंय में अच्छे ज्योतिष विद्वान थे। यह नाम तो एक वानगी भर है। इस समय अधिकांश अधिकारी वर्ग ही नहीं, बल्कि सैंकडों राजनेता न केवल ज्योतिष की मदद से अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य निपटाते है, वरन् स्वंय भी इस विज्ञान को रूचि लेकर पढने-सीखने लगे है।

ज्योतिष द्वारा मार्गदर्शन के लिए ही नहीं, वरन् ज्योतिष ज्ञान सीखने के लिए भी लोगों में रूझान तेजी से बढ रहा है। अब सभी तरह के लोग, बूढे-युवा, स्त्री-पुरूष, सभी ज्योतिष शास्त्र को सीखने में रूचि ले रहे है।

यद्यपि ज्योतिष को लेकर अनेक प्रकार की भ्रांतिया भी समाज में फैल रही है, फिर भी यह विज्ञान धीरे-धीरे और भी ज्यादा लोकप्रिय बनता जा रहा है। लोग विवाह-शादी, वर-वधु के चुनाव के लिए ही नहीं, वरन् जन्म एंव प्रसव का समय सुनिश्चित करने, बच्चों के नामकरण संस्कार के लिए समय निकालने, मूर्ति आदि की स्थापना के लिए इस विज्ञान से मार्गदर्शन ही नहीं लेते, बल्कि स्वंय के शिक्षा क्षेत्र का चुनाव, अपने अनुकूल व्यवसाय का चुनाव करने, रोग निदान, ऑपरेशन की तारीक तय करने, अपनी घर-बिल्डिंग बनाने का मुहूर्त निकालने, व्यावसायिक मीटिंग तय करने, विदेश यात्रा के लिए दिन सुनिश्चित करने, फिल्मों का नाम रखने से लेकर फिल्म रिलीज करने का दिन निर्धारित करने तक सैंकडों अवसरों पर ज्योतिष की मदद लेने लगे है।

ज्योतिष विज्ञान के इसी महत्व को समझते हुए मैंने **'ज्योतिष में रोग निदान'** नामक इस पुस्तक की रूप रेखा तैयार की है। स्वास्थ्य विज्ञान में ज्योतिष निश्चित ही एक महत्वपूर्ण कडी सिद्ध हो सकता है यह हम सभी भली प्रकार से जानते है। मेरे प्रिय पाठकों को इस पुस्तक के अध्ययन या इसमें दिये गये दिशा-निर्देश से थोडा भी लाभ प्राप्त हुआ, उनके जीवन में थोडी सी भी आत्मिक शान्ति प्राप्त हुई, उनकी किसी परेशानी का समाधान निकला, तो मैं अपने इस प्रयास को निश्चित ही सफल समझूंगा। यद्यपि मेरे प्रिय पाठक किसी भी विषय की अतिरिक्त जानकारी के लिए या अपने सुझाव अथवा समआलोचनात्मक टीका-टिप्पणी के लिए मुझसे **निःसंकोच पत्र व्यवहार, फोन सम्पर्क या अन्य तरह से सम्पर्क स्थापित** कर

सकते है, ताकि मैं अपने आगे के प्रयास में आप लोगों की जिज्ञासाओं का और भी गहनता से सामाधन कर पाऊँ, अपने प्रयास में अधिक सफल हो सकूँ।

इस पुस्तक को कम समय में इतने बढिया कलेवर व साज-सज्जा के साथ प्रकाशित करने के लिए मैं **प्रकाशक महोदय, श्री अनिल गुप्ता जी** का हार्दिक धन्यवाद करना चाहूंगा। दरअसल, इन्ही के प्रोत्साहन और प्रेरणा से यह पुस्तक अल्प समय में अपना यह आकार ग्रहण कर सकी। अन्यथा इस विषय पर पुस्तक लिखने का विचार काफी समय से मेरे मन में दबा हुआ था। इस विचार को अंकुरित कर वास्तविक रूप देने की मुख्य प्रेरणा प्रकाशक महोदय से ही मिली। पुस्तक प्रकाशन के लिए मैं पुनः श्री अनिल गुप्ता जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

आप सब विद्व-पाठक वृन्दों का पूर्ववत् स्नेह और प्यार मिले, यही एकनिष्ठ मेरी आकांक्षा है।

'जय श्रीकृष्ण !'

'सधन्यवाद।'

स्नेह आकांक्षी
ज्योतिर्विद् आचार्य राधाकृष्ण
फोनः 09417014059,
08556050214

सम्पर्क सूत्रः-
बगीची पेडामल,
o/s लोहगढ गेट, अमृतसर -143001
E-mail: drrkasr@gmail.com

✱✱✱✱✱

अध्याय-एक

एस्ट्रोमेडीकल अर्थात् एलोपैथी में ज्योतिष विज्ञान

आदिकाल से विश्वास किया जा रहा है कि भ्रमाण्ड में परिभ्रमण कर रहे ग्रह, नक्षत्र आदि पृथ्वी के समस्त जीव धारियों, पृथ्वी के समस्त घटनाक्रमों, जीव-जन्तुओं, प्राणियों और वनस्पतियों तक के ऊपर अपना सीधा असर डालते है। यह मनुष्य के ऊपर तो बहुत गहरा प्रभाव छोडते है। शुरू से ही ऐसा माना जा रहा है कि ग्रह मनुष्य के स्वभाव का निर्धारण करते है, यही उसके व्यवहार और स्वभाव में बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार रहते है। ग्रहों के गुण ही मनुष्य की शारीरिक एंव मानसिक सामर्थ, पुरूषार्थ और स्वास्थ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ग्रहों की परिभ्रमण गति की हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

ग्रहों के इसी प्रभाव को समझते हुए हमारे पूर्वजों ने ज्योतिष शास्त्र (एस्ट्रोलॉजी) की आधार शिला रखी। हमारे प्राचीन ज्योतिषर्विद् आचार्य वारह मिहिर, आर्य भट्ट, ब्रह्मगुप्त, बृहस्पति, कपिल, कश्यप, मंजाल, शतानंद, जैमिनी जैसे विद्वान अंतरिक्ष विज्ञान के जानकार होने के साथ-साथ ज्योतिष के भी प्रकाण्ड विद्वान थे। वह जन्मकुंडली बनाने और वांचने का कार्य भी करते थे। पश्चिम के अनेक जाने-माने ज्योतिषी जैसे गैलीलियो, टाइको ब्राहे, कॉपरनिकस, केप्लर, पाइथागोरस और न्यूटन तक भी अंतरिक्ष विज्ञान की वैज्ञानिक गणनाओं करने के साथ-साथ राजा-महाराजाओं और सम्राटों की जन्मकुंडली भी वांचा करते थे।

प्राचीन रोम और यूनान में भी ज्योतिष काफी प्रचलित था। किन्तु पश्चिम में जब से ईसाई धर्म ने जोर पकडा, तब से चर्च के पादरियों ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया। क्योंकि पश्चिम के लोग ज्योतिष को पूर्व की खोज मानते थे और ईसाई पादरी ज्योतिष के ज्ञान से बिल्कुल अंजान थे। फिर भी पश्चिम जगत के लोग ज्योतिष और ज्योतिषियों द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों में गहरी रूचि लेने लगे, तो इससे पादरियों और ईसाईयत् पर लोगों पर विश्वास घटने का खतरा पैदा होने लगा। इससे चर्च के पादरी और धर्म प्रचारक लोग ज्योतिष या हर उस चीज का विरोध करने लगे जिससे उनकी मान्यता को ठेस पहुंचने का खतरा हो। यद्यपि आगे चलकर वही ईसाई पादरी लोगों में अपनी पकड बढाने के लिए अन्य प्रकार से भविष्यवाणियों करने लगे और कई अन्य तरह की बातों का सहारा लेने लगे।

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक शाखाएं है। जैसे जीवन संबन्धी फलादेश, परिजन संबन्धी भविष्यवाणियां, व्यापार ज्योतिष, रत्न ज्योतिष, वर्ष फल, मुहूर्त ज्योतिष आदि। इसी प्रकार फलित ज्योतिष के अन्तर्गत **'चिकित्सा ज्योतिष'** (Astro medical) भी एक स्वतन्त्र विद्या है। इसमें मुख्य बात यह है कि चिकित्सा ज्योतिष की यह शाखा मानव सभ्यता के लिए अति उपयोगी सिद्ध होती रही और अब भी उपयोगी है। क्योंकि ज्योतिष की इस शाखा के द्वारा रोग निदान में सहजता के अतिरिक्त रोग के कारण एंव रोग उत्पत्ति काल की पूर्व सूचना देकर संबन्धित व्यक्ति को पहले ही सतर्क करके रोग की त्रासदी भोगने से बचाया जा सकता है। चिकित्सा ज्योतिष की मदद से निश्चित ही रोग के कष्ट को कम किया जा सकता है अथवा समय रहते उपयुक्त उपायों पर ध्यान देकर उनसे पूर्णतः मुक्ति पाना भी संभव है।

एस्ट्रोमेडीकल

आयुर्वेद शास्त्र में तो ज्योतिष विज्ञान की प्राचीन समय से ही विशेष मान्यता रही है, परन्तु अब आधुनिक चिकित्सक भी ज्योतिष विज्ञान, विशेषकर ग्रह-नक्षत्रों पर विश्वास जताने लगे है। आयुर्वेद मर्मज्ञों का प्राचीन काल से ही गहन विश्वास रहा है कि अंतरिक्ष में भ्रमण कर रहे ग्रह-नक्षत्र पृथ्वी के समस्त जीव-जन्तुओं से लेकर प्राकृतिक घटनाओं और स्थूल वस्तुओं तक के ऊपर गहरा प्रभाव छोडते है।

वैदिक ग्रन्थों में जगह-जगह एक वाक्य आया है, 'यथा ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड' अर्थात् जो कुछ ब्रह्माण्ड में समाया है या ब्रह्माण्ड में कहीं कुछ भी घटित होता है, वही सब सूक्ष्म रूप में प्रत्येक जीव के अन्दर भी कुछ न कुछ अंश में अवश्य समाया रहता है और वैसा ही उसके अन्दर निश्चित ही घटित होता रहता है। अतः ब्रह्माण्ड की प्रत्येक हलचल का प्रभाव

ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचना के ऊपर अवश्य पडता है। प्रत्येक प्राणी (मनुष्य) का शरीर भी ब्रह्माण्ड का ही एक सूक्ष्म इकाई (अंश) के रूप में रहता है, तो फिर यह कैसे ब्रह्माण्ड की हलचल से अछूता छूट सकता है?

ब्रह्माण्ड की प्रत्येक हलचल, अर्थात् ग्रह-नक्षत्र की प्रत्येक गतिविधियां हमारे शरीर पर व्यापक प्रभाव डालती है। यह हमें स्वस्थ्य और निरोगी रहने मदद करती है। यह हमें साहसी एंव पुरूषार्थी बनाती है। यही हमें जीवटता के साथ-साथ रोग, निर्बलता, दुःख और पीडाएं भी देती रहती है। अतः इस आधार पर ज्योतिष विज्ञान को आधुनिक विज्ञान (स्वास्थ विज्ञान) से भला कैसे अलग रखा जा सकता है।

प्राचीन समय से आयुर्वेद मनीषी रोग निदान के साथ-साथ, दवा के चुनाव, जडी-बूटियों के संग्रह, दवाओं के योग निर्मित करने से लेकर किसी भी तरह का चिकित्सकीय कर्म करने से पहले शुभ-अशुभ मुहूर्त का ध्यान अवश्य रखते थे। किसी रोगी का उपचार करते समय भी ग्रह, नक्षत्रों का विशेष ध्यान रखा जाता था। जडी-बूटियों के चुनाव के समय भी ग्रह, नक्षत्रों की गतिविधियों का विशेष ध्यान रखना पडता था। क्योंकि जडी-बूटियों के गुणों में ग्रह-नक्षत्र आदि से बनने वाले विशेष योग, मुहूर्त, तिथि और दिन के अलग-अलग काल के अनुसार गहरा अन्तर आते देखा गया है। इसलिए आयुर्वेद शास्त्र में जडी-बूटियों को ग्रहण करते समय, उनसे योग (दवाओं) का निर्माण करते समय ग्रह, नक्षत्रों की दशा का विशेष ध्यान रखने के लिए कहा गया है।

आयुर्वेद प्रणाली की अनेक दवाएं तो ऐसी है जिन्हें खास मौसम या मुहूर्त (काल) में ही बनाया जा सकता है। आयुर्वेद के प्राचीनतम् ग्रन्थ, चरक संहिता में तो जहॉं तक कहा गया है रोगी को वैद्य के पास जाने के लिए घर से निकलते समय भी अनुकूल समय, दिन, तिथि, वार का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इतना ही नहीं, वैद्य को भी अपने रोगियों की जॉंच, रोग निरीक्षण करते समय एंव औषधियों के संग्रह एंव योग तैयार करते व रोगी को सेवन कराते समय भी खास ध्यान देना चाहिए।

अब तो यह बात काफी हद तक आधुनिक परीक्षणों से भी स्पष्ट हो चुकी है कि हमारी दिनचर्या और शारीरिक-मानसिक क्षमता के साथ-साथ रोग पैदा होने अथवा रोगों का अचानक अदृश्य होने के पीछे ग्रह, नक्षत्र एंव मौसम आदि का विशेष हाथ रहता है। बहुत से रोग ऋतु और मौसम के अनुसार ही व्यापक रूप धारण करते है और उसी दौरान तीव्रता से फैलते है। इन रोग और रोगियों का संबंध भी विशेष ग्रह, राशि एंव नक्षत्र आदि के साथ घनिष्टता से देखा जाता है। जैसे जठरान्त्र व ताप संबंधी रोग ग्रीष्म ऋतु में तीव्रता से फैलते है, तो श्वास, हृदय, मस्तिष्क संबन्धी रोगों का प्रकोप शरद ऋतु, मानसून के मौसम में अधिक देखा जाता है। अस्थमा (दमा) का दौरा, हृदयाघात, मस्तिष्क आघात, माइग्रेन, मिरगी का दौरा और मानसिक आघात आदि कुछ खास तिथियों के दौरान, कुछ खास राशियों एंव लग्नादि वाले लोगों को ही अधिक शिकार बनते है। इसी प्रकार आमाशय व्रण, मूत्र संस्थान के रोग, मूत्र संस्थान की पथेरियां, गुर्दों के रोग, मोतियाबिंद जैसे अनेक रोगों का भी स्पष्ट संबन्ध किसी खास ग्रह, राशि एंव नक्षत्रों की स्थिति के साथ देखा जाता है।

जैसे स्त्रियों के मासिक धर्म और मनोरोगियों की मानसिक दशा का चन्द्र कलाओं के साथ घनिष्ट संबंध रहता है। इसी तरह पूर्ण चंद्र (पूर्णिमा) के दिन लूट-पाट, डकैतियों, दुर्घटनाओं, बलात्कार की घटनाएं एकाएक बढ जाती है। इन घटनाओं एंव बहुत से रोगों का गहरा संबंध सूर्य चक्र एंव चंद्र कलाओं के साथ निश्चित मेल खाता है। इसी प्रकार स्त्री द्वारा गर्भ धारण करना, उसके प्रसव की शुरूआत, प्रसव के सामान्य रूप से सम्पन्न होने या सिजेरियन ऑपरेशन जैसी जटिलता का सामना करने आदि अनेक बातों का संबंध भी ग्रह, नक्षत्रों की स्थिति के साथ देखा गया है। जहॉं तक कि सामान्य ऑपरेशन की सफलता-असफलता, उनके सहज रूप में सम्पन्न होने या ऑपरेशन के दौरान किसी तरह की जटिलता उत्पन्न होने के पीछे भी इन ग्रह-नक्षत्रों की भूमिका देखी जाती है। अनेक बार ऑपरेशन के दौरान अत्यधिक मात्रा में रक्त स्त्राव होने या भयंकर संक्रमण फैले जाने से कई तरह की जटिलताएं पैदा हो जाती है। इन जटिलताओं का संबंध भी स्पष्ट रूप में कुछ विशेष ग्रह-राशि-नक्षत्र के साथ देखा गया है। ऑपरेशन से बने घावों के शीघ्र भरने या उनके संक्रमित होने का अनुमान ऑपरेशन के लिए निर्धारित किये समय की ग्रह स्थिति के विश्लेषण द्वारा काफी हद तक लगाया जा सकता है।

निश्चित ही ज्योतिष शास्त्र के आधार पर वह दिन, समय और मौसम ज्ञात किया जा सकता है जब कुछ खास बीमारियों से लोग पीडित होते है अथवा उन्हें अन्य तरह की परेशनियां पेश आती है। इसी प्रकार प्रतिकूल ग्रह दशा को जानकर, जिनमें अचानक किसी दुर्घटना का शिकार बनकर अस्पताल पहुंचना पडता है अथवा किसी अनावश्यक ऑपरेशन कराने की नौबत खडी होती है, से बचा जा सकता है।

मौसम से प्रभावित होता है हमारा स्वास्थ्य

ज्योतिष शास्त्र में तो प्राचीन काल से ही माना जा रहा है कि सूर्य, चंद्र, मंगल जैसे ग्रह हमारी पृथ्वी और उसके जीवन, पृथ्वी के ऊपर निवास करने वाले समस्त जीव-जंतुओं के साथ पृथ्वी के वातावरण तक के ऊपर अपना गहरा प्रभाव डालते है, लेकिन अब यह तथ्य आधुनिक शोधकर्ताओं की समझ में भी आने लगा है। चाहे ग्रह-नक्षत्र आदि के स्थूल प्रभाव को ऑंखों से देखना संभव न पाए, फिर भी वैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट प्रमाण मिलने लगे है।

कुछ वर्ष पहले कनैडियन क्लाइमेट सेंटर के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों में देखा कि जिस दिन हवा में आर्द्रता बढने लगती है और वायु दाब तेजी से घटता जाता है, साथ ही तापमान में तेजी से उतार-चढाव आने लगता है, उस दिन निश्चित ही तनाव जन्य माइग्रेन का दौरा पडने की संभावना एकाएक बढ जाती है। ऐसे मौसम में इस रोग से पीडित पुराने रोगियों में एकाएक चिडचिडापन और पारिस्परिक कलह की भावना बढाने लगती है। इतना ही नहीं, ऐसे मौसम के दौरान इन लोंगों में आत्मघात का भाव भी जोर पकडने लगता है।

इसी प्रकार एक अन्य अध्ययन के आधार पर कोलम्बिया यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के मौसम विभाग के विशेषज्ञ डॉ. इंजगोल्ड स्टीन का कहना है कि उच्च वायुदाब से मौसम ठंडा हो जाए, पर उस दिन वर्षा न हो, तो ऐसे मौसम में अस्थमा के रोगी कुछ राहत महसूस करते है, परंतु जब वातावरण में आर्द्रता बढने लगती है तो उनमें अचानक ही दमा की तीव्रता जोर पकडने लगती है। इसी तरह इलिनॉय मेडिकल सेंटर यूनिवर्सिटी की डॉ. अनीता बेकर का कहना है कि हृदय रोगियों में दिल का दौरा पडने का खतरा भी मौसम में एकाएक परिवर्तन आने से ढाई गुना तक बढ जाता है। डॉ. बेकर ने अपने अध्ययनों के दौरान देखा कि दो दिन पूर्व हुई वर्षा के पश्चात् हृदयाघात से मरने वालों की संख्या सामान्य दिनों की तुलना में 35 % अधिक रहती है।

जर्मनी में तो वहां का मौसम विभाग नियमित रूप से मौसम आधारित विशेष स्वास्थ्य बुलेटिन प्रसारित करता है। इस बुलेटिन में लोगों के शरीर पर मौसम के पडने वाले प्रभावों की विशेष चेतावनी जारी की जाती है। नियमित तौर पर बनते बिगडते उच्च और न्यून वायुदबाब और गरम-सर्द हवाओं की चाल के आधार पर मौसम विभाग मौसम को छः चरणों में विभाजित करके उसकी जानकारी अपने लोगों को देता रहता है। मौसम विज्ञानिकों के अनुसार मौसम का प्रत्येक चरण स्वास्थ्य की भिन्न-भिन्न अवस्था के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करता है। जैसे सामान्यः और उच्च वायु दबाव वाला मौसम अच्छे स्वास्थ्य की ओर संकेत करता है, जबकि न्यून वायु दाब और गर्मी की स्थिति स्वास्थ्य में आने वाली गिरावट की सूचना देती है।

पश्चिमी जगत के अनेक वैज्ञानिकों ने भी अब अपने अध्ययनों के आधार पर सिद्ध कर दिखाया है कि सूर्य की स्थिति का पृथ्वी के वातावरण के साथ-साथ जीव जगत (मनुष्य) के ऊपर निश्चित ही गहरा प्रभाव पडता है। एक तरह से सूर्य और जीव जगत के क्रिया-कलापों के मध्य गहरा संबंध रहता है। इसलिए सूर्य परिवर्तन के साथ प्राणियों के शारीरिक एंव मानसिक स्वभाव, व्यवहार व स्वास्थ्य में कई तरह के बदलाव आने लगते है।

सूर्य से न केवल पृथ्वी पर ऋतु परिवर्तन ही घटित होते है, वरन् जीव जगत के संपूर्ण क्रिया-कलाप पर भी सीधा असर पडता है। इसलिए ऐसा देखा गया है कि जिन दिनों सूर्य पर तीव्र क्रियाएं घटित होती है या सूर्य के ऊपर धब्बे नजर आने लगते है, उन्ही दिनों पृथ्वी पर हैजा, प्लेग, टाइफाइड जैसी व्याधियां तेजी से फैलने लगती है। रूस के एक वैज्ञानिक प्रो. शिझेबस्की का तो जहां तक कहना है कि सूर्य परिवर्तन के दिनों में मनुष्य के स्वभाव और बर्ताव में बडी तेजी से बदलाव आने लगते है।

सूर्य का ही नहीं, चंद्रमा को तो मानव स्वभाव और उसकी आंतरिक संरचना (जैविक संरचना) के साथ और भी घनिष्ट संबंध देखा गया है। इसलिए पूर्णिमा और अमावस्या के आसपास मनुष्य के भावनात्मक गुणों में एकाएक तीव्र बदलाव आने लगते है। पूर्णिमा के आसपास मानव स्वभाव के साथ-साथ रक्तचाप, हृदय की धडकन, उपापचय संबंधी क्रियाओं में भी कई तरह के बदलाव देखे जाते है।

शिकागो, अमेरिका के इलिवान्स यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक राल्फ डब्लू. मोरिस ने अपने अध्ययनों से देखा है कि पूर्णिमा के आसपास अन्य अवसरों के मुकाबले रक्त स्त्राव की संभावना अधिक रहती है, क्योंकि इन दिनों मानव रक्त में रक्त का थक्का बनाने वाली प्लेटलेट्स नामक कणिकाओं की संख्या एंव उनकी गतिविधियों में एकाएक गिरावट देखी जाती है। इसलिए इन दिनों ऑपरेशन के दौरान या चोट, दुर्घटना आदि लगने पर अधिक रक्त स्त्राव की संभावना रहती है। इसीलिए

इस अवधि में अत्यधिक रक्त रिसने से दुर्घटनाओं में मरने वालों की आशंका अधिक देखी गई है। एक बात और भी देखी गई कि पूर्णिमा के आसपास रक्त ग्लूकोज का स्तर भी अन्य दिनों के मुकाबले अधिक बना रहता है।

चन्द्र कालाओं का महिलाओं के मासिक चक्र के साथ तो और भी गहरा संबंध रहता है। ज्यादातर महिलाओं में उनके मासिक चक्र की शुरूआत पूर्णिमा के आसपास ही देखी जाती है। 27 चन्द्र कालाओं की तरह ही महिलाओं का मासिक चक्र भी प्रायः 27 दिनों के अन्तराल से ही चलता रहता है। मासिक चक्र ही नहीं, बल्कि उनके मनोभावों पर भी पूर्ण चंद्र का सीधा प्रभाव देखा जाता है। इसलिए इन दिनों महिलाओं में अत्यधिक रक्त स्त्राव और हॉर्मोन उतार-चढाव ही नहीं देखा जाता, बल्कि उनमें उदासी, अवसाद और हताशा की स्थिति भी अत्यंत गंभीर बन जाती है। इसलिए बहुत सी महिलाएं इन दिनों आत्महत्या के लिए विवश होती है।

चन्द्रमा के प्रभाव की पुष्टि मनोचिकित्सालों और पुलिस विभाग से एकत्रित किए आंकडों से भी होती है। पूर्ण चंद्र अर्थात् पूर्णिमा के आसपास मनोचिकित्सलयों में मानसिक तनाव, डिप्रेशन, सीजोफ्रेनिया, बाई पोलर मूड डिसआर्डर, उन्माद जैसे रोगों से पीडित रोगियों की संख्या एकाएक बढने लगती है अथवा इन रोगों से पीडित चल रहे रोगियों की उग्रता पहले के मुकाबले अचानक बढ जाती है। इसी तरह इन दिनों चोरी, डकैती, हत्या, लूट-खसूट, बलात्कार जैसी घटनाओं में भी अचानक तेजी आने लगती है।

एक अन्य अध्ययन के दौरान देखा गया कि इन दिनों आगजनी एंव हिंसा की घटनाओं में भी अचानक वृद्धि होने लगती है। इसी प्रकार राजनैतिक प्रतिशोध की घटनाओं में आश्जर्यजनिक वृद्धि देखी जाती है। अमेरिका के एक सामाजिक कार्यकर्ता का तो जहां तक कहना है कि बडी-बडी रौवरी और लूटपाट की घटनाएं अक्सर पूर्णिमा या अमावस के आसपास ही अंजाम दी गई। अमेरिका के डेविड बरकोलिए नामक एक कुख्यात डाक तार विभाग के कर्मचारी ने 'सैन ऑफ सैम' नामक जो हत्याकांड आठ रातों में अंजाम दिया था, उसमें से पांच रात पूर्णिमा की ही थी।

यद्यपि चन्द्र कलाओं के साथ मानव व्यवहार और उसके क्रिलाकलाप में जो परिवर्तन आते है, उन्हें समझना सहज संभव नहीं। परंतु पूर्णिमा के दिन पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा तीनों एक सीधी रेखा में आ जाते है, अतः उस समय उन तीनों के सम्मिलित विद्युत चुम्बकीय प्रभाव एंव गुरूत्वाकर्षण में जो सूक्ष्म परिवर्तन आते है, वही पृथ्वी के वातावरण के साथ-साथ जीव जगत (मनुष्य) की जैव रासायनिक संरचना एंव मानसिक क्रियाकलाप में परिवर्तन का कारण बनते है। इन्हीं के संयुक्त प्रभाव से उनके स्वभाव एंव व्यवहार में कई तरह के बदलाव आते है। इसी से उनके शारीरिक एंव मानसिक स्वास्थ्य में भी एकाएक गडबडी पैदा होने लगती है और वह विचित्र व्यवहार करने लगते है।

संभवतः विभिन्न ग्रहों के अदृश्य प्रवाह से आने वाले प्रतिकूल परिणामों से पैदा होने वाले नुकसान से बचाने के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने इन दिनों व्रत, उपवास, पूजा-पाठ, मंत्र जाप आदि का जो विधान समाज में प्रचलित किया, वह मूलतः मानव सभ्यता को इनके निषेधात्मक प्रभावों से बचाये रखने के उद्देश्य से था। ताकि मानव समाज को गैर सामाजिक कार्यों में संलग्न होने से रोका जा सके।

पश्चिमी जगत के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक माइकेल्सन् ने अपनी खोजों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि सूर्य-चन्द्र जैसे ग्रह-नक्षत्र एंव तारे मनुष्य के शरीर एंव मन को सीधे प्रभावित करते है। यद्यपि मनुष्य स्वंय के दृढ संकल्प एंव स्व विवेक द्वारा इनके दुष्प्रभावों से कुछ हद तक स्वयं को बचाने की सामर्थ भी रखता है।

माइकेल्सन् ने अपने गहन शोधकार्य के आधार पर सिद्ध किया है कि अमावस्या-पूर्णिमा के दौरान पृथ्वी पर सूर्य-चन्द्र के प्रभाव में अचानक वृद्धि होने लगती है। इससे समुद्र में ही ज्वार-भाटा नहीं आता, वरन् पृथ्वी भी नौ इंच के लगभग फूलती एंव अन्दर की ओर धंसने लगती है।

पृथ्वी के इस परिवर्तन का ज्वार-भाटा के अलावा भूकंपों के साथ भी गहरा संबंध देखा गया है। समय-समय पर संसार भर में जो बडे भूकंप देखे गये उनका इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि ऐसे ज्यादातर भयंकर भूकंप अमावस्या और पूर्णिमा के आसपास ही आये। माइकेल्सन् का कहना है कि अगर सूर्य-चन्द्र की गतिविधियों से पृथ्वी और समुद्र जैसी अजीवित चीजें प्रभावित हो सकती है, तो फिर पथ्वी पर रहने वाले मनुष्य और अन्य जीव-जन्तु कैसे अप्रभावित रह सकते है?

इसी तरह पश्चिम के एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. बुडाईन ने तो चांद का जड एंव चेतन जगत पर पडने वाले प्रभाव का और भी गहराई से अध्ययन किया है। उनका भी अपने अध्ययन के आधार पर यही कहना है कि चांद का प्रभाव जड पदार्थ एंव कम चेतना (कम बुद्धि वाले) वाले जीव-जन्तुओं के ऊपर तो तत्काल एंव विशेष रूप से देखा जाता है। इसी तरह मानव जाति में जो लोग कम बौद्धिक क्षमता वाले रहते है वह भी इन दिनों शीघ्र प्रभावित होते है। इसलिए इन लोगों में इन

तिथियों के आसपास मिरगी, उन्माद, उच्च्य रक्तचाप और कामुक प्रवृत्तियों का दौर एकाएक बढ जाता है। जबकि असामाजिक लोगों में भी इन्हीं तिथियों के दौरान हत्या, चोरी, डकैती और बलात्कार जैसी निकृष्ट घटनाओं को अंजाम देने की प्रवृत्ति जोर पकडने लगती है।

एक अन्य अध्ययन में देखा गया है कि इन विशेष दिनों में कमजोर और जड प्रकृति के लोगों में पीयुष ग्रन्थि (पिट्यूटरी ग्लैंण्ड), थायमस ग्लैंण्ड और एड्रीनल ग्लैंण्ड जैसी अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियॉं एकाएक अति सक्रिय होकर अधिक मात्रा में हॉर्मोन का उत्पादन करने लगती है। इन हॉर्मोन के अतिरिक्त मात्रा में रिसाव से शरीर में असाधारण प्रतिक्रियाए शुरू हो जाती है। इन सबका उन लोगों के मन, मस्तिष्क और स्वभाव एंव व्यवहार के ऊपर गहरा प्रभाव पडता है। इसी कारण वह लोग कई प्रकार की असाधारण गतिविधियां दर्शाने लगते है या फिर कई तरह के अपराधों को अजांम देने के लिए विवश हो जाते है। सडक एंव अन्य दुर्घटनाओं के साथ-साथ अपराधों का दौर भी इन्हीं दिनों एकाएक बढ जाता है। क्योंकि इन दिनों कम मानसिक स्तर वाले लोग अपनी भावनाओं, संवेदनाओं और विचारों को सही दिशा-निर्देश नहीं दे पाते।

अमेरिका के दो सुप्रसिद्ध भौतिक शास्त्रियों का भी अपने शोधकार्य के आधार पर मानना है कि चन्द्रमा का मनुष्य और अन्य समस्त जीव-जन्तुओं की मानसिक अवस्था के साथ गहरा संबन्ध रहता है। अमेरिका के इन शोधकर्ताओं- प्रो. आरनाल्ड मेयर और डॉ. कॉलिस्को का कहना है कि मनुष्य, पशु-पक्षी, वनस्पति आदि सभी एक-दूसरे के साथ परस्पर गहरे रूप से जुडे है। साथ ही इन सबका संबंध ब्रह्माण्ड में परिभ्रमण कर रहे अंतरक्षीय ग्रहों के साथ भी रहता है। अतः यह सभी एक-दूसरे को परस्पर प्रभावित करने की स्थिति में रहते है। इस पारस्परिक संबन्ध को ही अब पर्यावरण सांमजस्यता अर्थात् 'इकोलॉजी' कहा जाने लगा है। इस पारस्परिक संबंध अर्थात् इकोलॉजी के महत्व का दो-तीन दशक पहले तक वैज्ञानिकों को ख्याल तक नहीं था, पर आज यह एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

आधुनिक इकोलॉजिस्ट्स मानने लगे है कि पृथ्वी पर पायी जानी वाली प्रत्येक जीवित और अजीवित चीज परस्पर एक-दूसरे के साथ गहरे से जुडी रहती है। यहॉ मनुष्य ही नहीं जंगली जानवर, सांप, मछली, केकडा, घडियाल या अन्य सूक्ष्म कीट-पतंग या फिर घास-पात, पेड-पौधों तक सभी का अपना-अपना विशेष महत्व है। पृथ्वी का जीवन एक श्रृखंलावद्ध रूप से चलता है। इस श्रृंखला की एक भी कडी के टूटने का अर्थ है कि किसी अन्य दूसरी प्रजाति का जीवन संकट में पड जाना।

इसी तरह ज्योतिष विज्ञान में इकोलॉजी के प्रभाव में पृथ्वी के अलावा अन्तरक्षीय ग्रहों का समावेश किया गया है और समस्त ग्रहों को एक श्रृंखला के रूप में आवद्ध किया है।

दरअसल, प्रत्येक ग्रह परस्पर एक-दूसरे को अपनी गुरूत्वाकर्षण एंव विद्युत चुम्बकीय तरंगों से प्रभावित करते है। प्रत्येक ग्रह की अपनी एक विशेष अंदरूनी और बाहरी संरचना रहती है। फलस्वरूप हर ग्रह अलग-अगल ढंग से व्यवहार करता है। इसी आधार पर मंगल युद्ध, क्रोध, वीरता, तत्काल न्याय, शल्य सर्जरी, चिकित्सा का ग्रह माना गया है, तो शनि को विलंब, दुःख, कष्ट, त्याग और साधु प्रवृत्ति का ग्रह माना गया है। इसी आधार पर शुक्र को भोग-विलासता का ग्रह माना गया, जबकि बुध बुद्धि का ग्रह माने गये। **(इस विषय की विस्तृत जानकारी के लिए आप मेरी ''ज्योतिष विज्ञान का इतिहास एंव आधुनिक खाजें'' नामक पुस्तक में पढ सकते है। ...लेखक)**

****

अध्याय-दो

ज्योतिष विज्ञान की संक्षिप्त पृष्ठभूमि

अपने उद्‌भव काल से ही मनुष्य हमेशा कुछ नया जानने को उत्सुक रहा है। इसी उत्सुकता एंव जिज्ञासा ने उसे ज्योतिष शास्त्र जैसे गंभीर विषय के रहस्योद्‌घाटन के लिए प्रेरित किया।

ज्योतिष शास्त्र का उदय भारत में हुआ। वास्तव में ही यह एक अत्यन्त विशाल व गूढ विषय हैं। इसकी उत्पत्ति भारतीय वेदों के समय से मानी गयी है। इसके आधार खागोल विज्ञान (Astronomy) है और इसमें सौर मंडल की चाल के माध्यम से धरातल पर होने वाली घटनाओं की व्याख्या की जाती है।

ज्योतिष यर्थारतः **'ज्योति'** और **'ईश'** का भावार्थ है, ग्रहों के संदेश, जो व्यक्ति में ईश्वरीय गुण व्याप्त कर दे। ज्योतिष के प्रमुख सिद्धान्तों का पालन करते हुए खगोल शास्त्र की गणनाओं द्वारा भूत और वर्तमान काल की स्थितियों का विश्लेषण करके सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है। ज्योतिष विज्ञान, जिसे हमारे प्राचीन महर्षियों- आर्य भट्‌ट, पाराशर, जैमिनी, वराह मिहिर, गर्ग, कालिदास, भृगु, मनु, कश्यप और अन्य अनेक विद्वानों ने अपनी दिव्य दृष्टि एंव गहन एकाग्रता से अन्वेषण कर मानव कल्याण के लिए विकसित किया है, आज के समय भी मानव के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

ज्योतिष का संक्षिप्त इतिहास

ब्रह्मा जी ने ब्रह्माण्ड की रचना के साथ-साथ ज्योतिष शास्त्र की भी रचना की। उन्होंने स्वंय इसके सिद्धान्त बनाए। फिर इस विज्ञान का विकास व चिंतन-मनन का कार्य सतत्‌ जारी रहा।

भारतीयों के अतिरिक्त अन्य सभ्यताओं जैसे बेबिलेनियन, मिस्त्र, मेसोपोटामिय, ग्रीक, रोमन आदि में भी इसके अध्ययन एंव चिंतन-मनन का कार्य चलता रहा। इस प्रकार ज्योतिष के विकास के साथ-साथ उसके सिद्धान्तों की नयी-नयी व्याख्याएं होती रही। सबसे पहले राशि चक्र (Zodiac) को बारह काल्पनिक हिस्सों में बांटा गया। लगभग 2500 वर्ष पहले आंख से देखकर विभिन्न ग्रह, उपग्रहों की चाल की गणना का अध्ययन शुरू हुआ। हमारे सुप्रसिद्ध प्राचीन ज्योतिष आचार्यों यथा मनु, आर्य भट्‌ट, भृगु, बृहस्पति, कपिल, कश्यप, सारस्वत और वारह मिहिर आदि ने इसका विस्तृत अध्ययन किया। तत्पश्चात्‌ ईसा से 67 वर्ष पूर्व पश्चिमी खगोलविदों में टालमी और उसके बाद गैलीलियो, न्यूटन, पाइथागोरस, केप्लर एंव कोपरनिकस आदि ने इस पर कार्य किया। इन सबके बताए सिद्धान्त ही आज के खगोल शास्त्र के अयन के महत्वपूर्ण आधार बने है। आजकल अमेरिका, स्विट्‌जरलैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड और फ्रांस के अनेक विश्वविद्यालय में ऐच्छिक विषय के रूप में ज्योतिष शास्त्र पढाया जा रहा है।

आदिकाल से विश्वास किया जा रहा है कि भ्रमाण्ड में परिभ्रमण कर रहे ग्रह, नक्षत्र आदि पृथ्वी के समस्त जीवधारियों, पृथ्वी के सभी घटना क्रमों, जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों के ऊपर अपना असर डालते है। यह मनुष्य के ऊपर तो बहुत गहरा प्रभाव छोडते है। शुरू से ही माना जा रहा है कि ग्रह मनुष्य के स्वभाव का निर्धारण करते है, उसके व्यवहार और स्वभाव में बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार रहते है। ग्रहों के गुण ही मनुष्य की शारीरिक एंव मानसिक सामर्थ, पुरूषार्थ और स्वास्थ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ग्रहों की परिभ्रमण गति का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

ग्रहों के इसी प्रभाव को समझते हुए ही हमारे पूर्वजों ने ज्योतिष शास्त्र (एस्ट्रोलॉजी) की आधार शिला रखी। हमारे प्राचीन ज्योतिषर्विद्‌ आचार्य वारह मिहिर, आर्य भट्‌ट, ब्रह्मगुप्त, बृहस्पति, कपिल, कश्यप, मंजाल, शतानंद, जैमिनी जैसे विद्वान अंतरिक्ष विज्ञान के जानकार होने के साथ-साथ ज्योतिष के भी प्रकाण्ड विद्वान थे। यह जन्मकुंडली बनाने और वांचने का कार्य करते थे। पश्चिम के अनेक जाने-माने ज्योतिषी जैसे गैलीलियो, टाइको ब्राहे, कॉपरनिकस, केप्लर, पाइथागोरस और न्यूटन तक भी अंतरिक्ष विज्ञान की वैज्ञानिक गणनाओं करने के साथ-साथ राजा-महाराजाओं और सम्राटों की जन्मकुंडली वांचा करते थे।

प्राचीन रोम और यूनान में भी ज्योतिष काफी प्रचलित था। अरब देशों में तो ज्योतिष विद्या काफी विकसित हुई। अरब में ज्योतिष का जो रूप विकसित हुआ, उसे 'रमल ज्योतिष' का नाम दिया गया। अरब ज्योतिष विद्वानों पर भारतीय ज्योतिष विज्ञान का गहरा प्रभाव रहा है। यह ज्योतिष विद्या इस्लाम धर्म प्रचार के समय यूरोप और पश्चिमी देशों में एक बार पुनः अरब देशों के माध्यम से पहुंची। उस समय भी यूरोपियन ईसाई पादरियों ने इसका पुनः पुरजोर विरोध शुरू कर दिया था। यद्यपि इस सबके बावजूद 15 वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक ज्योतिष विज्ञान का खूब जलवा रहा। फ्रांस में

16 वीं शताब्दी में नास्त्रेदसम की भविष्यवाणियों की खूब धूम मची और इग्लैंण्ड में अब तक की सबसे विख्यात महारानी मानी गई एलिजाबेथ- प्रथम तो स्वंय ज्योतिषी जॉन डी. के तय किए मुहूर्त पर ही गद्दी के ऊपर बैठी। 17 वीं शताब्दी के बाद यूरोप में ज्योतिष के प्रचार ने खूब जोर पकडा, लेकिन अन्य तरह से भी भविष्यवाणियों की जाने लगी।

भारतीय ज्योतिषी भाचक्र (Zodiac) को 13 अंश 20 कला के हिसाब से उसे 27 बारबर भागों में बांटते है। प्रत्येक अंश को **'नक्षत्र'** कहा जाता है। ये 27 भाग क्रमशः नौ नक्षत्र समूह के तीन वर्ग बनाते है। इनमें पहला वर्ग अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य एंव अश्लेषा नक्षत्र का, दूसरा वर्ग मघा, पूर्वी-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र का जबकि तीसरा वर्ग मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद एंव रेवती नक्षत्र का है। इस तरह भारतीय ज्योतिष का मुख्य आधार नक्षत्रों के ऊपर रहा है।

यद्यपि पाश्चात्य् ज्योतिष विद्वानों ने राशि चक्र को नक्षत्रों की जगह 12 काल्पनिक हिस्सों में बांट कर उन्हें **'राशियों'** के नाम प्रदान किये। इस प्रकार प्रत्येक राशि 30 अंश की रहती है। मेष (Aries), वृष (Taurus), मिथुन (Gemini), कर्क (cancer), सिंह (Leo), कन्या (Virgo), तुला (Libra), वृश्चिक (Scorpio), कुम्भ (Aquaris), मीन (Pisces) आदि बारह राशियां मानी गई है।

इस प्रकार भारतीय ज्योतिष के अनुसार एक राशि में सवा दो नक्षत्र आते है। इस तरह मेष से कर्क के बीच पहले समूह के नौ नक्षत्र, सिंह से वृश्चिक के बीच में दूसरे समूह के नौ नक्षत्र और धनु से मीन के बीच तीसरे समूह के नौ नक्षत्र आते है।

कुछ ऐतिहासिक भविष्यवाणियां

राजा विक्रमादित्य के दरबार में अनेक ज्योतिषी नियुक्त किए गये थे, इनमें सर्वोपरि थे, वराह मिहिर। वराह मिहिर द्वारा समय-समय पर उचित गणनाओं के बाद की गई अनके भविष्यवाणियां पूर्णः सत्य साबित होती रही। इसलिए राजा विक्रमादित्य का उनके प्रति बहुत स्नेह भाव था।

जब राजा विक्रमादित्य को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, तो उन्होंने अनेक ज्योतिषियों से उसकी जन्मकुडंली बनवायी और तत्संबन्धी भविष्यवाणी करते समय उन सभी ज्योतिषियों ने राजकुमार के 18 वें जन्म दिवस पर भारी खतरे का संकेत भी बता दिया था। यद्यपि उन सबसे अलग वराह मिहिर ने भविष्यवाणी की कि, 'अपनी 18 वीं वर्ष गांठ की शाम पांच बजे के करीब राजकुमार एक दुर्घटना के शिकार बनेगें और निश्चित रूप से उस दुर्घटना के कारण उनकी मृत्यु हो जाएगी। मृत्यु का कारण एक बडा जंगली सुअर बनेगा। दुनिया की कोई शक्ति इस घटना को नहीं टाल सकती।' वराह मिहिर की इस भविष्यवाणी को सुनकर सब एकाएक हक्के बक्के हो गये।

वक्त गुजरता गया और एक दिन वह घडी भी आ गई, जिस दिन राजकुमार की 18 वीं वर्षगांठ पड रही थी। उस दिन राजा ने सुबह से ही राजकुमार के इर्द गिर्द इतनी कडी सुरक्षा व्यवस्था कर दी कि कोई परिंदा भी पर न मार सके। राजकुमार को राजमहल की सातवीं मंजिल पर सैनिकों के घेरे में सुरक्षित रखा गया। राजा का सख्त निर्देश था कि हर 15 मिनट के अंतराल से राजकुमार की कुशल क्षेम की खैर-खबर उन तक पहुंचायी जाए। शाम पॉच बजे राजा को दरबार में सूचना मिली कि राजकुमार पूर्णतः कुशल मंगल है। पर दरबार में मौजूद प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य वारह मिहिर ने राजा से कहा, 'महाराज यह सूचना तो गलत है, राजकुमार तो अब जीवित ही नहीं है।'

वारह मिहिर की इस बात से राजा आपे से बाहर हो गए। राजा बोले, 'अगर वराह मिहिर की यह घोषणा गलत सिद्धि हुई, तो उन्हें कडी से कडी सजा दी जाएगी।' वराह मिहिर ने मुस्कराकर राजा के आदेश को स्वीकार किया। फिर राज कुमार का हालचाल जानने राजा स्वंय महल की सांतवी मंजिल पर स्थित राजुकमार के कक्ष में गए। पर राजकुमार वहां नहीं थे। एक सेवक ने बताया कि बंद कमरे में राजकुमार को थोडी घुटन महसूस हो रही थी, इसलिए वह खुली हवा में टहलने महल की छत के ऊपर चले गए है।

राजा तुरंत भाग कर छत पर गए, तो वहां राजकुमार को मरा हुआ पाया। जैसी कि वराह मिहिर ने भविष्यवाणी की थी। राजकुमार की मृत्यु का कारण एक सुअर ही बना।

दरअसल, किले के निर्माण के समय राजमहल की छत की मुडेर पर सुअर की एक विशाल लौह प्रतिमा स्थापित की गई थी, जो समय के साथ जंग खाकर कमजोर हो गई। अतः जब राजकुमार छत पर आए, तो दुर्भायवश ही सुअर की

वह विशाल आकृति उनकी छाती पर आकर गिरी और तत्काल उनके प्राण पखेरू उड गये। इस तरह आचार्य वराह मिहिर द्वारा की गई एक और भविष्यवाणी एकदम सत्य सिद्ध हुई।

इसी तरह पश्चिम के प्रसिद्ध ज्योतिषी सूदसियर ने जूलियस सीजर को उनकी हत्या किए जाने की चेतावनी पहले ही दे दी थी। सूदसियर ने कहा था कि 15 मार्च के दिन उनकी हत्या हो जाएगी। यद्यपि अति आत्मविश्वास से भरे सीजर ने इस बात (भविष्यवाणी) की काई परवाह नहीं की। वह सूदसियर की बात को पूर्णतः नजरअंदाज रखकर लापरवाह बने रहे। अन्ततः 15 मार्च की वह दोपहर भी आ गयी। दोपहर के समय जूलियस सीजर ने अपने सैनिकों एंव सूदसियर से कहा भी, 'आधा दिन तो व्ययतीत हो चुका है, अब तक तो कुछ नहीं हुआ तो अब आगे क्या होगा?'

और इतिहास साक्षी है कि सीजर के निकटतम् साथी ब्रूटस ने ठीक उसी 15 मार्च के दिन ही थोडी देर बाद बडी बेरहमी से जूलियस सीजर की उसके महल में ही हत्या कर दी।

अध्याय-तीन

ज्योतिष शास्त्र में सामान्य रोग विचार

भारत में ज्योतिष (शरीर) शास्त्र के ऊपर लाखों ग्रन्थ लिखे गये, जिसमें मुखाकृति से लेकर शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंगों के संबन्ध में उनकी रचना, आकृति एंव रूप-रंग इत्यादि को देखकर किस व्यक्ति को किस प्रकार की व्याधि कब हो सकती है? इसका विशद वर्णन किया गया। यद्यपि उनमें से अधिकांश ग्रन्थ अब सहज उपलब्ध नहीं है, फिर भी विद्वान ज्योतिषियों ने इस विषय पर काफी काम किया है। पश्चात् ज्योतिषियों ने भी चिकित्सा ज्योतिष पर विस्तार से बहुत कुछ लिखा है। स्वंय मेरे अनुभव में भी आया है कि इस विद्या द्वारा गंभीर रोगों से पीडित लोगों की मदद की जा सकती है। कौन सा रोग किस स्थिति में उत्पन्न होगा, इस बात की पूर्व सूचना एक प्रतिभाशाली ज्योतिषी जन्म के समय या जब आवश्यता पडे, व्यक्ति की जन्मकुडंली के आधार पर लगा सकता है।

पंच तत्व से निर्मित शरीर

हमारा यह शरीर पंच तत्वों से निर्मित हुआ है। यह पॉच तत्व है- अग्नि तत्व, जल तत्व, वायु तत्व, पृथ्वी तत्व, और आकाश तत्व। यही पॉच तत्व हमारे जीवन और शरीर को संचालित करते है। इन पांच तत्वों में चार तत्व अर्थात् अग्नि तत्व, जल तत्व, वायु तत्व और पृथ्वी तत्व शरीरस्थ रहते है, जबकि पांचवें आकाश तत्व का संबन्ध शरीर से नहीं, बल्कि आत्मा के साथ माना गया है। अतः इस तत्व के संबन्ध में ज्योतिष की एक स्वतन्त्र शाखा मानी गई, जिसे **'आध्यात्म ज्योतिष'** के नाम से जाना जाता है। इस विषय पर फिर कभी बात की जाएगी।

ज्योतिष शास्त्र में मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन आदि बारह राशियां मानी गई है। इन बारह राशियों को उनके गुण-दोष के अनुसार उपरोक्त चार तत्वों में विभाजित किया गया है, जैसे मेष, सिंह, धनु राशियॉ अग्नि तत्व, वृष, कन्या, मकर राशियॉ पृथ्वी तत्व, मिथुन, तुला, कुंभ राशियॉ वायु तत्व एंव कर्क, वृश्चिक, मीन राशियॉ जल तत्व का प्रतिनिधत्व करने वाली मानी गई है। राशियों के इस गुण के आधार पर उनसे संबन्धित रोग विकृति का 'निदान' सहजता से किया जाता है।

भू-चक्र की इन बारह राशियों को नख शिखांत तक अलग-अलग अंगों का प्रतिनिधित्व भी दिया गया है। अतः इस प्रकार संपूर्ण मुखाकृति की कारक राशि मेष मानी गई, तो वृष राशि को कंठ का प्रतिनिधित्व दिया गया है। इसी तरह मिथुन राशि बाहु, ग्रीवा और स्कंध, कर्क राशि वक्ष एंव धमनी, सिंह राशि जहां हृदय की कारक राशि है, वही कन्या राशि उदर का प्रतिनिधत्व करती है, तुला राशि कटि प्रदेश एंव वृश्चिक राशि गुप्तांगों के ऊपर अपना प्रभाव रखती है। धनु राशि जांघ, मकर राशि घुटने, कुंभ राशि पिंडलियों के ऊपर और भू-चक्र की अतिंम राशि मीन पैरों के ऊपर अपना प्रभाव रखती है। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र में अंगों का विभाजन किया गया है।

जन्मकुंडली और रोग विचार

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हमारे शरीर में कैसा भी रोग जन्म ले, रोग की प्रकृति चाही कैसी भी क्यों न हो, उसका सीधा संबन्ध हमारे पूर्व संचित कर्मो के साथ अवश्य रहता है। इसलिए बहुत से लोग जीवन भर संयमी जीवनयापन करते रहने, आचार-विचार का पूरा पालन करते रहने, अशुद्ध आहार, गलत खानपान एंव मादक द्रव्यों से पूर्णतः परहेज रखने के बावजूद समय-बेसमय नाना प्रकार के रोगों के ग्रास बनते रहते है। इसी तरह कुछ लोग अपने पूर्व संचित कर्मो के अनुसार कई तरह के जटिल रोगों (Complicated Diseases) का शिकार बनकर दीर्घ अवधि तक उनकी यातनाएं झेलने पर मजबूर होते है। इनके विपरीत बहुत से लोग ऐसे भी देखे जाते है जो जीवन भर ऊॅट-पटांग खाते-पीते रहते है, अमर्यादिति जीवनयापन करते है, तंबाकू, बीडी, सिगरेट, मदिरा, पान आदि का सेवन करते रहने के बावजूद पूर्णतः स्वस्थ्य एंव निरोगी जीवन जी लेते है

दरअसल, ज्योतिष शास्त्र में अनेक रोगों का संबन्ध व्यक्ति के पूर्व जन्म के संचित कर्मों के साथ स्थापित किया गया है। अतः जीवन की अन्य घटनाओं की तरह ही व्यक्ति के शरीर में जन्म लेने वाले रोग, रोगों की गंभीरता या साध्यता-असाध्यता, रोग के ठीक होने या असाध्य-गंभीर बनते जाने अथवा रोग के मृत्यु कारक सिद्ध होने का संबंध पूर्व जन्म के कर्मों के साथ स्थापित किया गया है। इसी तरह व्यक्ति के जीवन का अन्त किसी दुर्घटना, युद्ध, विषपान, हत्या या पानी में डूबने से होगा या भूकंप आदि के दौरान उसे अकाल मृत्यु की प्राप्ति होगी, जैसी अनेक बातों का पता व्यक्ति की जन्मकालीन ग्रह स्थिति, ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा, ग्रहों की गोचर स्थिति और प्रश्न कुंडली आदि के आधार पर सहजता से लगाया जा सकता है। जहॉं तक कि जन्मकुंडली के गहन विश्लेषण से रोगों से बचने, रोगों के गंभीर बनने से रोकने के लिए तत्संबन्धी उपाय सम्पन्न कराकर लोगों को बीमार पडने से भी बचाया जा सकता है। ऐसे कुछ उपायों की मदद से कुछ समय के लिए अकाल मृत्यु को रोककर कुछ जरूरी कामों को भी निपटाया जा सकता है।

ज्योतिष में रोग विचार

ज्योतिष संबन्धी विभिन्न ग्रंथों में शारीरिक रोगों को दो वर्गों में बांटकर उनका फलकथन के लिए कहा गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोगों के दो वर्ग हैः- सहज रोग और आगंतुक रोग।

- **सहज रोगः-**

ज्योतिष शस्त्र में सहज रोग, उन रोगों को कहा गया है जो जन्मजात रूप में, शिशु के जन्म के साथ आते है। जैसे जन्मकालीन दाग-धब्बे, त्वचा के निशान या व्यक्ति की विशिष्ट रूचियों का संबन्ध उसके पूर्व जीवन के साथ स्थापित किया जाता है, ठीक वैसे ही जन्मजात रोगों का संबन्ध व्यक्ति के पूर्व जन्मों के पाप, पूर्व जन्मों के भोगों के साथ स्थापित किया जाता है। ऐसे अनेक रोगों के पीछे पितृदोष भी एक प्रमुख कारण बन जाता है।

इस प्रकार के सहज रोगों के अर्न्तगत जन्मकालीन अंगहीनता, अपगंता, गूंगापन, बहरापन, जन्म से अंधापन, मंद बुद्धिहीनता, पागलपन, नपुंसकता, बांझपन, ठिगनापन या अन्य किसी गंभीर रोग से ग्रस्त रहना आदि। वर्तमान समाज में ऐसे जन्मजात रोगों ही संख्या दिनों-दिन बढती जा रही है। इसलिए आज के समय जन्म से ही नजर का दृष्टिदोष लेकर पैदा होने वाले बच्चों, शारीरिक विकार के शिकार बच्चों, हृदय रोग, वृक्क संबन्धी रोग, श्वसन संस्थान संबन्धी रोगों के साथ जन्म लेने वालों की संख्या दिनों-दिन बढ रही है। क्योंकि ऐसे अधिकांश बच्चे अपने साथ अपने पूर्व जीवन के अशुभ फल, बुरे कर्मों एंव अशुभ दोष यानी पितृदोष, पितृश्राप आदि को लेकर ही जन्म ले रहे है। ऐसे सभी रोग प्रायः असाध्य रोगों की श्रेणी में ही आते है और दीर्घकालीन अवधि तक बने रहकर स्वंय बालक, उसके परिवार, उसके मां-बाप आदि को परेशान किए रहते है। ऐसे अशुभ दोषों का संताप एक तरह से पूरे परिवार को ही भुगतना पडता है। कई बार तो ऐसे बच्चों का जन्म ही अपने मां-बाप से अपने पूर्व जन्मों का बदला लेने के निमित्त होता है।

ज्योतिष शास्त्र में ऐसे रोगों का विचार प्रायः जन्मकुंडली के अष्टम् भाव व अष्टमेश के साथ लग्नेश, द्वितीयेश की शुभाशुभ स्थिति के आधार पर लगाया जाता है। यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ऐसे असाध्य रोगों से जन्मकुंडली में विद्यमान दुर्बल, निर्बल, पाप ग्रस्त ग्रहों को बल प्रदान करने, अशुभ एंव पापी ग्रहों की शांति करवाने से कुछ हद तक मुक्ति पायी जा सकती है। इस प्रकार के कुछ उपाय निश्चित ही बच्चे और उसके परिवार को कुछ राहत प्रदान करने वाले सिद्ध होते है।

यदि इस प्रकार के जन्मजात रोगों के पीछे पितृदोष का हाथ रहता है या उनका संबन्ध काल सर्पदोष, सर्पश्राप के साथ रहता है, तो निश्चित ही तत्सबंधी उपाय सम्पन्न कराने के बाद बच्चों के स्वास्थ्य, बच्चों के रोग में अप्रत्यासित लाभ मिलते देखा जाता है।

- **आगंतुक रोगः-**

दूसरे प्रकार के रोगों को ज्योतिष शास्त्र में 'आगुंतक' रोग कहा गया है। आमतौर पर यह रोग ज्यादा गंभीर, ज्यादा जटिल नहीं होते। सामान्यतः इन रोगों का कष्ट व्यक्ति को अल्प समय तक ही भोगना पडता है। ऐसे रोग अशुभ ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा, गोचर स्थित के अनुसार जन्म लेते है और ग्रह स्थिति एंव गोचर दशा बदलते ही स्वंय या दवा-दाऊ लेने पर निर्बल पडने लगते है, रोगी के स्वास्थ्य में स्वतः सुधार आने लगता है। यद्यपि समय रहते इन रोगों के उपचार पर समुचित ध्यान न दिया जाये, स्वास्थ्य और निरोगता संबन्धी उपायों को ध्यान में न रखा जाए, तब यह रोग धीरे-धीरे गंभार एंव असाध्य बनने लगते है। तब यह आगंतुक रोग भी पर्याप्त अवधि के बाद मृत्युकारक सिद्ध होते है।

इस प्रकार के आगंतुक रोगों के पीछे व्यक्ति की अनुचित जीवनशैली, प्रतिकूल खानपान की आदत, अशुद्ध आचार-विचार आदि का हाथ रहता है। मौसमी रोग, संक्रामक रोग, मधुमेह, उच्च्व रक्तचाप, श्वसन संबन्धी रोग जैसे- दमा, एलर्जी, वृक्क संबंधी रोग, मनोरोग, डिप्रेशन, उदर संस्थान संबन्धी रोग, अन्तःस्त्राव ग्रंथी संबंधी रोग, नेत्र व्याधियां, त्वचा संबन्धी आदि सहस्त्रों तरह के रोग इन्ही के अर्न्तगत आते है। गठिया, वात विकार जैसी जरा व्याधियों का संबन्ध भी इन्हीं के अर्न्तगत माना गया है। अनायास चोट लगना, दुर्घटनाएं घटना आदि के फलस्वरूप पैदा होने वाले रोग भी इन्हीं के अर्न्तगत माने जाते है। इस प्रकार के रोगों का संबन्ध जन्मजात रोगों के विपरीत व्यक्ति के वर्तमान कर्म एंव क्रियाकलापों के साथ ही रहता है।

ज्योतिष शास्त्र में आगंतुक रोगों का विचार मुख्यतः जन्मकुंडली के षष्ठ भाव, षष्ठेश, लग्नेश के साथ जन्मकुंडली के अन्य भावों, भावस्थ राशियों और उनमें स्थित शुभ-अशुभ ग्रहों के आधार पर लगाया जाता है।

फलदीपिका, सर्वार्थ चिंतामणि, बृहज्जातक जैसे अनेक ज्योतिष संबन्धी ग्रंथों में जन्मकुंडली के द्वादश भावों के साथ-साथ भू-चक्र की बारह राशियों एंव सत्ताईस नक्षत्रों का संबन्ध काल पुरूष (काल्पनिक पुरूष) के विभिन्न अंगों के साथ स्थापित किया गया है। अतः जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली का कोई भाव, उसका भावेश, राशि, राशि स्वामी और कारक ग्रह निर्बल या पापाक्रांत होकर, पापी ग्रहों से दृष्ट होकर या पापकर्तरी जैसे योगों के मध्य में पडता है, तो निश्चित ही उस व्यक्ति को प्रतिकूल ग्रह दशा के दौरान तत्संबन्धी अंग में रोग पैदा होने की आशंका बढ जाती है। ऐसे रोगों की शुरूआत आमतौर पर आयेश, व्ययेश या त्रिक भाव के स्वामियों या उनसे संबन्धित अशुभ ग्रहों की दशाऽर्न्तदशा लगने, उनसे संबन्धित ग्रह-नक्षत्र आदि के अशुभ भाव से गोचर करने के दौरान ही देखी जाती है। अतः इस दौरान रोगों के प्रकोप या दुर्घटना, विषपान या जलाशय में डूबने आदि से बचने के लिए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए अथवा समय रहते निर्बल ग्रह को बल प्रदान करने या पापी ग्रहों की अशुभता शांत करने के विशेष प्रयास करने चाहिए। अन्यथा थोडी सी लापरवाही ही रोग को जन्म देने अथवा रोग की स्थिति जटिल बनाने के लिए पर्याप्त रहती है।

ऐसा देखा गया है कि अगर पंचव भाव, पंचमेश, सूर्य आदि ग्रह पर बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा, बुध, लग्नेश, योगकारक ग्रह आदि का शुभ प्रभाव रहे, तो रोग ज्यादा जटिल, कष्ट साध्य एंव जीर्ण रूप धारण नहीं करते, बल्कि अनुकूल ग्रह की दशाऽन्तर्दशा या गोचर प्रभाव शुरू होते ही थोडे से उपचार, थोडे से उपाय करने भर से ही अदृश्य हो जाते है। यद्यपि भाव स्वामी, राशि स्वामी, त्रिक स्थान पर बैठे, लग्न से 6, 8, 12 वें भाव तथा राशियों के ऊपर पाप ग्रह यथा शनि, मंगल, सूर्य, राहू, केतु, षष्ठेश, अष्टमेश का प्रभाव पडने या इन भावों के स्वामी निर्बल, षडबलहीन रहने, अशुभ षष्ठांश में पडने से निश्चित ही तत्संबंधी अंग में रोग उत्पन्न होने की संभावना बढ जाती है। जैसे-

अगर किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली के पंचम भाव एंव सिंह राशि में शनि-राहु की युति स्थित हो, पंचमेश सूर्य भी अपनी नीचि राशि में बैठे हो या षष्ठ भाव में जाकर स्थित हो, तो उस व्यक्ति को उदर संस्थान संबन्धी विकार पैदा होने की संभावना सदैव बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति को उदर संस्थान संबन्धी थोडा बहुत समस्या तो सदैव बनी रहती है, किंतु जब इन भाव, भावेश या राशियों पर किसी अशुभ-क्रूर ग्रह की दशाऽन्तर्दशा या गोचरवश प्रभाव पडने लगे, तो उस दौरान रोग की आक्रमणता एकाएक बढ जाती है। तब ऐसे रोग प्रायः असाध्य बन जाते है। उपरोक्त ग्रह स्थिति में चूँकि पंचम भाव, सिंह राशि और कारक का संबन्ध उदर क्षेत्र एंव वहां स्थित अंगों के साथ रहता है। इसलिए इस दौरान कारण इन्हीं अंगों (उदर संस्थान) में रोग उत्पत्ति की संभावना बनती है।

ज्योतिष में रोग निदान

आयुर्वेद शास्त्र और ज्योतिष का घनिष्ठ संबध रहा है। आयुर्वेद में आयु तत्व के घटकों की विवेचना के अनुसार एंव और ज्योतिर्विद्या में काल तत्व, समय चक्र के अनुसार रोगों की उत्पत्ति मानी गई है। इन दोनों का मानव जीवन से निकट संबन्ध है। जोतिर्विद्या के अनुसार तारा पुंज के तीन समुदाय है, जिनका संबन्ध आयुर्वेद के त्रिदोष से है।

उदाहरणार्थ- यदि किसी व्यक्ति का जन्म वात समुदाय के नक्षत्रों में हुआ है, तो उसमें वात संबंधी रोगों से पीडित रहने की संभावना अधिक रहती है। इसी प्रकार से ग्रहों का प्रभाव तीनों धातुओं पर अलग-अलग तरह से रहता है।

अतः जन्मकुडंली का अध्ययन करके वैद्य यह निर्धारित कर सकता है कि अमुक व्यक्ति दूर्बल संकल्प वाला है, निराशावादी है या अति भावुक स्वभाव का है। रोगी के बाह्‌य लक्षण उसकी आंतरिक बीमारी के परिचायक है, जो स्थूल रूप में दृष्टिगोचर होते है। जन्मकुडंली रोग की संपूर्ण अवस्थाओं का विवेचन करती है। जैसे-

- जन्मकुडंली में यदि शनि तुला राशि में हो और बुध के ऊपर उनकी दृष्टि हो, तो यह ग्रह स्थिति गुर्दे की रक्त कोशिकाओं में तीव्र ऐंठन पैदा कर सकती है। हां, यदि शनि पर गुरू की शुभ दृष्टि भी है तो ऐसा टल भी सकता है। एक डॉक्टर तो रोग होने पर ही परीक्षण करके ही रोग निदान कर सकता है, जबकि सुयोग्य ज्योतिषी जन्मकुडंली विवेचना के आधार पर रोग होने के पूर्व ही उसके विषय में बता सकता है कि जातक को कौन से समय में कौन सा रोग हो सकता है और रोग कितने समय तक बना रह सकता है?
- अतः निश्चित ही वैद्य रोगी की जन्मकुडंली में ग्रह स्थिति एंव दशा, महादशा, अर्न्तदशा देखकर बता सकते है कि रोगी की बीमारी ठीक होगी या नहीं, अथवा ठीक होने में कितनी कालावधि लगेगी। इस तरह इलाज करके पूर्ण आत्म विश्वास के साथ यश कमा सकते है।
- यदि वैद्य को चिकित्सा पूर्व ही पता चल जाए कि जातक को मारकेश की महादशा चल रही है, तो वह दवा के साथ उपयुक्त आध्यात्मिक परामर्श देकर रोगी को ठीककर यश प्राप्त कर सकता है।

जन्मकुडंली के कौन-कौन से ग्रह किन-किन रोगों के परिचायक हैः-

- चंद्रमा पृथ्वी के समीप होने एंव मन का कारक होने से मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करता है। समुद्र में उठने वाला लघु ज्वार एंव बृहद ज्वार चंद्र एंव सूर्य की गतिविधियों के कारण ही आते है। जब चंद्र और सूर्य एक- दूसरे के आमने सामने होते है तब बृहद ज्वार आता है। मानव शरीर में जल की मात्रा अल्पाधिक होती है। अतः चंद्रमा मानव शरीर को सर्वाधिक प्रभावित करता है। चंद्रमा की राशि कर्क और कर्क राशि में शनि आने पर पूर्णिमा के दिन ही सुनामी आया और शनिदेव ने पूरा विनाश कर दिया। ये ज्वलंन्त उदाहरण हमारे सामने है। जैसे श्रीलंका, चेन्नई, थायलैण्ड, कोस्टल ऐशिया की सुनामी, वैसे ही जलोदर आदि बीमारियां पूर्णिमा को अधिक परेशान करती है।
- ग्रह अपनी महादशा में ज्यादा प्रभावित होते हैं। ग्रह इसी प्रकार बाहर राशियों तथा जन्मकुडंली के बारह भाव भी काल पुरूष के विभिन्न अंगों के प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि किसी भाव में पाप ग्रह या नीच ग्रह है तथा उसका स्वामी भी कमजोर है, तो निश्चित ही उस भावेश की दशाऽन्तर्दशा में उस भाव संबन्धी अंगों में रोग होगा ही। जैसे यदि तीसरे भाव और भावेश कमजोर है, तो भावेश की दशाकाल में गले की बीमारी, श्वास रोग या कर्ण रोग की पूरी संभावना रहती है।
- इसी तरह यदि जन्मकुडंली के किसी भाव में चन्द्र-बुध की युति हो और वे सूर्य, मगंल तथा शनि से दृष्ट हो तो निश्चित ही जातक मानसिक रोगी बनता है।
- छठवें भाव में राहू और मगंल स्थित हो तो आंत्र वृध्दि (hernia) की संभावना बढ जाती है।
- चौथा भाव चतुर्थेश, कर्क राशि तथा चंद्रमा के ऊपर पाप ग्रहों के प्रभाव पडे तथा लग्नेश एंव शुक्र भी छठे या बारहवें भाव में हो तो क्षय रोग की संभवना रहती है।
- इसी तरह यदि चंद्र चतुर्थेश होकर छठवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो और उस पर राहू की दृष्टि भी पडे, तो मिरगी जैसे रोग की संभावना बनती है।
- लग्नेश बुध चंद्रमा के साथ अथवा लग्नेश चंद्रमा बुध के साथ स्थित हो तथा इनके ऊपर राहू एंव शनि की पूर्ण दृष्टि पडे हो तो निश्चित ही कुष्ठ रोग की संभावना बनती है।

कब होते है रोग?

अधिकांशतः ग्रहों की महादशा में बीमारियां पैदा होती है। अनेक बार रोग कारक ग्रह की महादशा के दौरान एंव अन्य पीडाकारक ग्रह की अर्न्तदशा के दौरान भी में बीमारी पैदा होने लगती है। इसी तरह दूसरे, छठवें, आठवें एंव बारहवें भाव स्वामी भी अपनी महादशा एंव अन्य ग्रहों की अर्न्तदशा तथा प्रत्यन्तर दशा में बीमारी के कारण बनते है। दो केन्द्र भावों के स्वामी शुभ ग्रह भी अपनी दशा में पीडादायक बनते है। इसी प्रकार यदि लग्नेश छठे भाव में हो या षष्ठेश-लग्नेश लग्न भाव में हो अथवा लग्न को देखता हो या केंन्द्र में मित्र राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सामान्यतः स्वस्थ एंव निरागी रहता है। इसके साथ यदि अष्टमेश स्वग्रही हो, केन्द्र में हो या अष्टम् भाव में शनि हो तो जातक दीर्घायु प्राप्त करता है।

अतः ज्योतिष का आधार लेकर निश्चित ही एक चिकित्सक सफल चिकित्सा कर सकता है। ज्योतिष का ज्ञाता चिकित्सक रोगी की जन्मकुडंली में ग्रह स्थिति देखकर तथा वर्तमान में चल रही महादशा-अर्न्तदशा एंव प्रत्यर्न्तरदशा ज्ञात कर, गोचर आदि पर विचार कर रोग का एकदम सही निदान कर सकता है।

जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में रोग कारक ग्रह विद्यमान रहते है, तो पापी ग्रह आदि की दर्शाऽन्तदशा, प्रत्यंतर दशा के दौरान, गोचर की प्रतिकूल गति होने पर रोग की शुरूआत होती है या रोग की तीव्रता एकाएक बढ जाती है। लेकिन एक बात और भी देखी जाती है। सभी ग्रह एक निश्चित अवधि के अनुसार ही अपना प्रभाव दिखाते है। एक निश्चित अवधि में वह अपना शुभ फल प्रदान करते है, तो दूसरी अवधि में वह एकाएक परेशानी, पीडा, रोग आदि का कारण सिद्ध होते है। जैसे सूर्य जन्म से बाईसवें वर्ष, चंद्रमा चौबीसवें वर्ष, मंगल अठ्ठाईसवें वर्ष, बुध पैंतीसवें वर्ष, बृहस्पति सोलहवें और चालीसवें वर्ष, शुक्र पच्चीसवें से अठ्ठाईसवें वर्ष, शनि छत्तीसवें से ब्यालीसवें वर्ष तथा अपनी साढे साती, राहु चौंतालीसवें से पचासवें वर्ष एंव केतु अडतालीसवें से पचासवें वर्ष में अपना फल प्रदान करते है। अतः इनके आधार पर भी रोग प्रतिकार का पूर्वानुसार लगाना चाहिए।

शनि और रोग विचार

ज्योतिष शास्त्र में शनि को तमोगुणी और क्रूर ग्रह माना गया है। यह दयाहीन स्वभाव, लंबे नाखून एंव रूखे-सूखे बालों वाला, अधोमुखी, मंदगति से भ्रमण करने वाला एंव आलस्यी स्वभाव का है। इसका आकार दुर्बल एंव ऑखें अंदर की ओर धंसी प्रतीत होती है। जहां सुख का कारक बृहस्पति को माना गया है वहीं शनि को दुःख का कारक माना गया है। शनि में पृथक्कताकारी गुण भी है। इसलिए जन्मकुंडली की जिस राशि एंव नक्षत्र में शनि संबन्ध स्थपित करता है, उसी अंग विशेष में ही पृथक्कता के गुण एंव रोग के लक्षण भी उत्पन्न कर देता है।

शनि को वात कारक ग्रह माना गया है। इसलिए शनि का मूल प्रभाव स्नायु तंत्र, नस-नाडियों और शारीरिक गति आदि के ऊपर देखा जाता है। अतः शनि के प्रभाव से व्यक्ति पक्षाघात ग्रस्त होकर अपंग, लूला-लंगडा, चलने-फिरने से लाचार बनकर सदां के लिए बिस्तर पर गिर पडता है।

आयुर्वेद शास्त्र में तीन प्रकार के दोषों को रोग उत्पत्ति या स्वास्थ्य का मुख्य आधार बताया है। यह तीन दोष है- वात, पित्त और कफ। जब तक इन तीनों दोषों के मध्य पूर्ण सांमजस्य का भाव बना रहता है, तब तक शरीर भी पूर्ण रूपेण निरोगी रहकर कर्म करता रहता है, लेकिन जैसे ही इन तीनों दोषों के मध्य का सांमजस्य गडबडाने लगता है, तो उसके फलस्वरूप शरीर के अन्दर नाना प्रकार के रोग सिर उठाने लगते है। इसमें वात दोष का संबन्ध **'शनि'** ग्रह के साथ स्थापित किया गया है।

आयुर्वेदिक ग्रंथों में कई जगह ऐसा उल्लेख आया है-

पित्त पंगु कफः पंगु पंगवो मल धातवः।
वायुना यत्र नीयते तत्र गच्छिन्ति मेघवत्।

अर्थात्- पित्त, कफ और मल व धातु सभी निष्क्रिय है। ये स्वंय गति नहीं करते। शरीर में विद्यमान वायु ही इन्हें गतिमान रखती है। जिस प्रकार बादलों को वायु ही आकाश में इधर-उधर गतिमान बनाये रखती है, ठीक उसी प्रकार शनि भी अपने वात रूप में शरीरस्थ दोषों एंव धातुओं को गतिमान बनाये रखने का कार्य करते है। अतः ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि के अशुभ ग्रस्त होने पर शरीरगत वायु (प्राण-अपान आदि) का क्रम टूटने लगता है और कई तरह की विकृतियां जन्म लेने लगती है। अशुभ शनि जिस राशि, नक्षत्र और भाव को पीडित करते है उसी अंग में वायु का संचार अनियन्त्रित होने लगता है और तत्पश्चात् उन अंगों में नाना प्रकार के रोग जन्म लेने लगते है। यह शनि का ही प्रभाव है कि अन्न, जल, शीत, ताप आदि का प्रभाव तो पर्याप्त देरी से प्रकट होते है, परंतु शनि यानि वायु का प्रभाव तत्क्षण ही अपना प्रभाव दिखाने लगता है।

नैसर्गिक जन्मकुंडली में शनि को दशम और एकादश भाव का प्रतिनिधित्व (स्वामित्व) दिया गया है। अतः इन भाव व इनके स्वामियों के अशुभ प्रभाव में पडने से घुटने के रोग, समस्त जोडों के रोग, अस्थि संबन्धी व्याधियां, मांसपेशियों के रोग, चर्म रोग, श्वेत कुष्ठ, अपस्मार, पागलपन, पिण्डली में दर्द, दायें पैर, बायें कान व हाथ में रोग, स्नायु दौर्बल्य, सांस लेने में कमजारी, ह्रदय रोग तक जन्म लेने लगते है। रोगनिवृत्ति भी एकादश के प्रभाव में है।

शनि का लौह धातु पर अधिकार रहता है। रक्त का संबन्ध भी लौह धातु के साथ ही स्थापित किया गया है। अतः शनि की अशुभता के कारण शरीर में लौह की कमी के फलस्वरूप रक्ताल्पता, पीलिया, शारीरिक दौर्बल्य, सख्त कमजोरी का प्रभाव पैदा होने लगता है। इसी प्रकार शनि अपने पृथक्कताजन्य प्रभाव के कारण अचानक दुर्घटना, अस्थि भंग (फेक्चर) या शरीर के किसी अंग का अचानक बेकार हो जाना, जैसी अनेक विषम स्थितियां भी पैदा करने का कारण बनता है। अतः शारीरिक स्थिति, विशेषकर सुख-दुःख की स्थिति जानने के लिए जन्मकुंडली में शनि के शुभाशुभ को जानना अति आवश्यक है।

जैसे कहा गया हैः-

आत्मादये गगनगैं बलिभिर्बलक्तराः।

दुर्बलैर्दुर्बलाः ज्ञेया विपरीत शनैः फलम्।

अर्थात्- जन्मकुंडली में शनि की स्थिति अधिक विचारणीय मानी गई है। इसका अशुभ होकर किसी भाव में बैठना उस भाव एंव राशि संबन्धित अंग में दुःख अर्थात् रोग का कारण बनता है। गोचर में भी शनि एक राशि में सर्वाधिक समय तक भ्रमण करता है। इससे उस अंग विशेष की कार्यशीलता में परिवर्तन आना रोग को न्यौता देता है।

उदरस्थ वायु में समायोजन से शनि पेट मज्जा को जहां शुभ होकर सबल करता है वहीं अशुभ बनकर उसमें निर्बलता उत्पन्न करता है। फलस्वरूप व्यक्ति की पाचन शक्ति में अनियमितता के कारण अपच-अजीर्ण की स्थिति तक बनी रहती है, जो अन्ततः रस, धातु, मांस, अस्थि को कमजोर करती है। समस्त रोगों की जड एक तरह से उदर रोगों को ही माना गया है।

शनि जन्य कुछ रोगों की विवेचना निम्न प्रकार से की जा सकती हैः-

पीडादायक वात संबन्धी रोग

छठा भाव रोग का भाव माना गया है, अतः जब किसी जन्मकुंडली का छठवा भाव या भावेश शनि से संबन्ध बनाता है, तो वातरोग की उत्पत्ति होती है। छठवे भाव में शनि निम्न भाग अर्थात् पैरों का प्रभावित करता है।

- शनि की राहू-मंगल से युति एंव सूर्य से छठवे भाव में स्थित रहने से पैरों से संबन्धित व्याधियां पैदा हो सकती
- छठवे या आठवें भाव में शनि, सूर्य-चंद्र से युति करे, तो हाथों में वात संबन्धी विकार पैदा हो सकते है या उनमें दर्द, पीडा बनी रह सकती है।
- लगनस्थ बृहस्पति के ऊपर सप्तमस्थ शनि की अशुभ दृष्टि पडे तो भी वातरोग की उत्पत्ति की संभावना रहती है।
- शनि लगनस्थ शुक्र पर अपना अशुभ प्रभाव डाले तो नितंब में रोग जन्म लेते है।
- त्रिकोण भाव या सप्तम् भाव में मंगल हो व शनि सप्तमस्थ को पीडित करे, तो भी वात संबन्धी अर्थात् गठिया (आर्थ्रराइटिस) जैसे रोग की स्थिति बनती है।
- शनि क्षीण चंद्र से द्वादश भाव में युति बनाकर स्थित हो, तो भी गठिया रोग का कारण सिद्ध होता है।
- द्वादश भाव में मंगल-शनि की युति भी वातरोग कारक सिद्ध होती है
- षष्ठेश व अष्टमेश की लग्न में शनि से युति भी वात रोग का कारण सिद्ध होती है।

अध्याय-चार

रोग कारक ग्रह, राशि और भाव

ज्योतिष शास्त्र में एक काल्पनिक पुरूष (काल पुरूष) की कामना करते हुए उसके विभिन्न अंगों का संबंध अलग-अलग ग्रह, राशियों एंव जन्मकुंडली के अलग-अलग भावों के साथ स्थापित किया गया है। जैसे काल पुरूष में केशों का संबन्ध जल तत्व राशियों से माना गया है। नासिका एंव कर्ण का वायु तत्व राशियों के साथ, नेत्रों का अग्नि तत्व राशियों से संबंध माना गया है। इसी प्रकार कपोल से पृथ्वी तत्व राशि का संबंध स्थापित किया गया है। यद्यपि अंगों के सूक्ष्म विभाजन में द्रेष्काण आदि की सहायता भी लेनी पडती है। जैसे मिथुन राशि के साथ बांह, ग्रीवा और स्कंध का संबंध स्थापित किया गया है, लेकिन इस क्षेत्र में कौन सा अंग कब आक्रांत होगा, यह जानने के लिए द्रेष्काण पद्धति का प्रयोग करना उपयुक्त रहता है।

द्रेष्काण पद्धति के अनुसार राशि के प्रथम दस अंश जहां ग्रीवा और स्कंध पर प्रभाव डालते है, वही ग्यारहवें से बीसवें अंश स्कंध से कोहनी का परिचायक माना जाता हैं। इसके बाद के दस अंश यानी इक्कीस से तीस वें अंश का भाग कोहनियों से अंगुलियों तक को प्रभावित करने वाला माना जाता है। इस प्रकार राशि अंश के आधार जब संबन्धित अंग के प्रभावित होने का पता लगाया जा सकता है।

शारीरिक संरचना की दृष्टि से कर्क राशि को वक्ष और धमनियों का कारक माना गया है। अतः कर्क राशि के प्रथम दस अंश अन्न नलिका को प्रभावित करते है, वहीं इसका द्वितीय खंड स्तन पर अधिकार रखता है। हृदय के नीचे और उदर के मध्य एक पर्दा होता है, जिसे चिकित्सक 'डायफ्राम' कहते है। इस भाग का संबंध सिंह राशि से रहता है। हृदय स्पंदन तथा हृदय के रक्त का संचार करने वाली रक्त धमनियों का संबंध कर्क राशि के अंतिम भाग से रहता है। इसी तरह कन्या राशि उदर की छोटी आंत, पित्ताशय और आमाशय पर प्रभाव रखती है, जबकि सूक्ष्म रूप में कन्या राशि का प्रथम भाग पाक स्थली, द्वितीय भाग छोटी आंत और तृतीय भाग पित्ताशय का प्रतिनिधित्व करता है। तुला राशि पूरे कटि प्रदेश तथा मेरूदंड के नीचे से ऊपर वाले आधे भाग की परिचायक है। मेरूदंड से ऊपर का भाग जो ग्रीवा तक जाता है, यह मिथुन राशि के अंर्तगत आता है। धनु राशि जंघा प्रदेश को प्रभावित करती है। यहां द्रेष्काण का प्रथम भाग नितंब, द्वितीय भाग जंघा, मध्य और तृतीय भाग घुटने तक आसन्न रहता है। मकर राशि घुटनों को प्रभावित करती है। यहां द्रेष्काण का प्रथम भाग घुटने के ऊपर की त्वचा, द्वितीय भाग घुटने में रहने वाले स्नायु तंत्र से संबन्ध रखता है। कुंभ राशि में द्रेष्काण का प्रथम भाग पिंडली के ऊपरी भाग को, मध्य भाग स्नायु तंत्र तथा तृतीय भाग पिंडली से पैर तक जाने वाली हड्डी से संबन्धित है। टखने से पैर की अंगुली तक का भाग मीन राशि के अधिकार क्षेत्र में आता है। द्रेष्काण का प्रथम भाग टखने, द्वितीय भाग पैर के मध्य भाग और मीन राशि का तृतीय भाग अंगुलियों का परिचायक है।

ग्रह एंव रोगोत्पत्ति

ऊपर हमने काफी विस्तार से राश्यानुरूप अंगों का विभाजन दर्शाया है। पर ऐसा नहीं कि केवल राशियां ही काल पुरूष के शरीर को प्रभावित करती है। वास्तव में तो राशिगत् ग्रह ही रोगोत्पत्ति के लिए उत्तरदायी रहते है। अतः इस संबन्ध में भी कुछ बातें है जिन्हें समझ लेना जरूरी है।

आयुर्वेद पद्धति में रोग निदान के मुख्यतः तीन आधार, तीन मुख्य सूत्र माने गये है। यह तीन सूत्र है- वात, पित्त और कफ। आयुर्वेद पद्धति में इन्हें दोष कहा गया है। इन्हीं त्रिदोष के न्यूनाधिक प्रकोप से रोग उत्पत्ति होती है।

आयुर्वेद पद्धति में सूर्यदेव पित्त उत्पादक ग्रह माने गये है। चंद्र कफ और शनि वात दोष की सृष्टि करने वाले माने गये है। यहां भी इन तीनों कारक ग्रहों के सहयोगी ग्रह है। जैसे शनि, गुरू, बुध और राहू वात, शुक्र और चन्द्र कफ एंव सूर्य, केतु और मंगल पित्त उत्पन्न करने वाले माने गये है।

सम् स्वभावी ग्रह कैसा कार्य करते है, इस संबन्ध में नीचे कुछ परिचय दे रहे है:-

रवि (सूर्यदेव) पित्त के अतिरिक्त नेत्र, जीवनी शक्ति और आत्मबल के लिए उत्तरदायी है। मगंल शारीरिक ताप केन्द्र को प्रभावित करते है। केतु भी दाह उत्पन्न करता है। शनि शरीर के अंगों में रूक्षता उत्पन्न करते है। इससे वात की सृष्टि होती है। शनि के सहयोगी ग्रहों में बुध तन्त्रिका तंत्र, गुरू मेद, राहू शनिवत् कार्य करते है। चंद्र जहां कफ उत्पन्न करता है, वहीं वह मन को भी संचालित करता है। शुक्र श्लेष्मिक झिल्लियों पर अपना अधिकार रखते है तथा कामवासना का सांकेतिक ग्रह माने गये है। इस प्रकार विद्वान ज्योतिषी उपरोक्त वर्णित सिद्धान्तों का आधार लेकर रोग निदान में मदद ले सकते है।

यद्यपि मनुष्य की अस्वस्थता केवल शरीर तक ही सीमित नहीं रहती। मनुष्य की अस्वस्थता का संबंध उसकी मानसिक क्षमता के साथ भी रहता है। मनुष्य की अस्वस्थता के कम से कम तीन-चौथाई मामले मानसिक व्याधियों के रूप में भी रहते है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी मानसिक व्याधियों के मूल में मुख्यतः चन्द्र, बुध और शनि ग्रह को उत्तरदायी ठहराया गया है। सूक्ष्म रूप में इसमें भी कुछ भेद है। जैसे चन्द्रमा के दुष्परिणाम से व्यक्ति का मन विचलित रहता है। चन्द दोष मुख्यतः मन को अस्थिर बनाये रखता है, जबकि बुध मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव डालता है। अतः बुध के ऊपर अशुभता बढने पर बुद्धिहीनता जैसे असाध्य रोग पैदा होते है। शनि जैसे ग्रह औदासिन्य प्रभाव प्रदान करते है। अतः जहां तक मानसिक रोगों का प्रश्न है तो बुध, चंद्र और शनि पाप ग्रहों से आक्रांत हो, तो निश्चित ही मानसिक रोग प्रदान करते है।

जब लग्न में सूर्यदेव रहते है तो मस्तक पीडा, पित्त विकार की सृष्टि करते है। घन भाव और द्वादश में मंगल, राहू और सूर्य में से कोई ग्रह हो तो नेत्र संबन्धी विकार प्रदान करते है। क्योंकि उपरोक्त दोनों भाव नेत्र के परिचायक है। सूक्ष्म विश्लेषण से द्वितीय भाव दक्षिण नेत्र जबकि द्वादश भाव वाम नेत्र से संबन्धित है। इसी तरह तृतीय और एकादश भाव में पाप ग्रह हो, तो तृतीय भावस्थ पापग्रह दक्षिण एंव एकादशस्थ पापग्रह वाम कर्ण संबन्धी विकार उत्पन्न करते है।

नवग्रहों से संबन्धित अंग और रोग

ज्योतिष शास्त्र में राशियों की तरह अलग-अलग ग्रहों का भी अलग-अलग शारीरिक अंग एंव उनसे संबधित रोगों के साथ स्थापित किया गया है। अतः नवग्रहों में सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह जिस राशि में पीडित होकर बैठते है, उसके अनुरूप ही रोग विचार किया जाता है। इसमें राशि के साथ उनकी शत्रुता, मित्रता का भी ख्याल रखा जाता है।

नीचे नवग्रह, नवग्रहों से संबन्धित अंग एंव उनके द्वारा पैदा होने वाले संभावित रोगों का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है:-

1- सूर्यदेवः-

सूर्य से संबन्धित अंगः-

सूर्यदेव का संबंध सिर, हृदय, दाहिनी ऑख, मुख, तिल्ली, गला, मस्तिष्क, पित्ताशय, अस्थि, रक्त, फेंफडें, स्तन आदि अंगों के साथ माना गया है।

सूर्य संबन्धी रोगः-

सूर्यदेव के पीडित होने पर मस्तिष्क संबंधी रोग, हृदय रोग, उच्च्व रक्तचाप, उदर विकार, मेनेजाइटिस, मिरगी, सिरदर्द, नेत्र विकार, ज्वर आदि रोगों की संभावना रहती है।

अतः जब सूर्य षष्ठ भाव (रोग भाव) में आते है या संबंध बनाते है, तो सिरदर्द, पित्त विकार, हृदय रोग, अस्थि विकार, शारीरिक निर्बलता, आत्मिक बल की क्षीणता और दक्षिण नेत्र दोष आदि का कारण बनते है। जन्मकुडंली में सूर्य निर्बल होने पर हड्डियां कमजोर बनती है। यदि सूर्य बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ या दृष्ट होकर स्थित है तो बायीं ऑख और द्वितीय भाव में स्थित है तो दाहिनी ऑख कमजोर बनती है।

यदि आपके लग्न में, सूर्य निर्बल बनकर स्थित है तो आपको निम्नलिखित रोग पैदा हो सकते है:-

शरीर में गर्मी की कमी के कारण हृदय की कमजोरी, हृदय रोग, शरीर में पित्त और जठराग्नि की कमी, मानसिक दुर्बलता, काम करने का उत्साह और साहस न रहना, थकावट और बुढापे में पैदा होने वोले रोग और कमजोरियां, सिरदर्द, ऑखों की दृष्टि कमजोर होना, आमाशय की कमजोरी, भूख न लगना, पेट फूलना, भोजन न पचना, गैस बनना, रक्त की कमी, चेहरा पीला पडना, पुराना ज्वर, पुराने रोगों के पश्चात् की कमजोरी, स्नायु और मस्तिष्क के रोग, दुबलापन, सर्दी के मौसम और सर्दी से पैदा होने वाले रोग, जो सर्दी से शरीर का भीतरी तरल बढ जाने से पैदा हों, जैसे नजला, जुकाम, पतला तरल, शरीर में तरल की अधिकता, पानी अधिक इकट्ठा हो जाना, रक्त संबंधी रोग, रक्ताल्पता, शरीर में गमी और शक्ति घट जाने से ब्लड प्रैशर कम हो जाना और कमजोरी से ऑखों के आगे अंधेरा छाना, बेहोशी, दिल और नाडी की गति

कमजोर हो जाना और अन्य कमजोर करने वाले रोगों से शरीर का बर्फ की भांति ठण्डा पडना, मस्तिष्क की कमजोरी और सोचने की शक्ति घटना और वात रोग, क्षय रोग आदि पैदा हो सकते है।

ऐसे व्यक्तियों को सूर्य को बल प्रदान करने के लिए कन्धारी अनार जैसे लाल रंग का माणिक्य अंगूठी में जडवाकर पहनना चाहिए या माणिक्य से तैयार की हुई दवा खिलानी उचित है।

2- चन्द्रदेव

चंद्र से संबन्धित अंगः-

चंद्रदेव का संबंध छाती, लार, गर्भ, जल, रक्त, लसिका, अन्तः ग्रंथियों, कफ, मूत्र, मन, बायीं आँख, उदर, डिंब ग्रंथि, स्त्री जननांग आदि के साथ माना गया है।

चन्द्र संबन्धी रोगः-

चंद्रदेव के पीडित होने पर नेत्र रोग, हिस्टीरिया, ठंड, कफ, उदर रोग, अस्थमा, डायरिया, दस्त, मानसिक रोग, जननांग संबंधी रोग, पागलपन, हैजा, ट्यूमर, ड्राप्सी आदि की आशंका रहती है।

चंद्रदेव मन के कारक माने गए है। यह जल तत्व प्रधान ग्रह है, अतः जब चंद्रमा षष्ठ भाव में बैठते है, तो व्यक्ति को मानसिक दुर्बलता, मानसिक कमजोरी, मनोविकार आदि प्रदान करते है। यदि चंद्रमा के ऊपर मंगल का प्रभाव भी पड रहा हो तो यह रक्त विकार का कारण भी बनते है। चंद्रमा वाम नेत्र से संबन्धित माने गए है, अतः पाप पीडित रहने पर यह वाम नेत्र में दोष उत्पन्न करते हैं। चंद्रमा शीत प्रकृति के कारण जुकाम, नजला आदि के कारण भी बनते है।

चंद्रमा का संबन्ध कफ से माना गया है। चंद्रमा निर्बल, पाप ग्रह की युति या दृष्ट हों, तो जातक को क्षय, दमा, खांसी, निमोनिया और गंभीर हृदय रोग देते है। जलीय रोग और मानसिक रोग भी चंद्रमा उत्पन्न करते है।

यदि आपकी राशि में चंद्रमा कमजोर है और बुरा प्रभाव डाल रहे है तो आपको निम्नलिखित रोग हो सकते हैः-

मूत्र में शुगर आना यानी डायबिटीज, मस्तिष्क की सख्त कमजोरी, पागलपन, दूसरो को जोश में आकर मारना, घर से भाग जाना, नींद न आना, बुद्धिहीनता, जडबुद्धि, स्नायुविक दुर्बलता (Nervous Debility), दिल फेल होना, दिल का अधिक तेजी से घडकना, दिल की कमजोरी, आंखों की दृष्टि कमजोर होना, गर्मी की अधिकता से होने वाले रोग, स्त्रियों के रोग और स्त्रियों की शारीरिक दुर्बलता, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, पुराने ज्वर, अतिसार, कंठमाला, वृक्क और मूत्राशय संबंधी रोग, बूंद-बूंद कर मूत्र आना या मूत्र बंद होना, मिरगी, पागलपन, दमा, सांस कठिनाई से आना, प्रत्येक प्रकार की खांसी, हाई ब्लड प्रैशर, हाथ और पांव की हथेलियों और तलवों में सख्त जलन होना, शराब अधिक पीना, बुरी संगत में पडना, गमी की अधिकता से रक्त व तरल खुश्क हो जाना, हड्डियों, मांस, रक्त तरल की कमी जन्य रोग, धैर्य और साहस की कमी से बैचेनी आदि।

ऐसी दशा में रोगी को दूधिया रंग का मोती पहनने की राय दी जाती है और मोतियों से बनी दवा खिलाई जाती है। उपरोक्त रोगों में मोती अपने पास रखने या मोतियों से बनी दवायें खाकर इन रोगों को दूर रखने में सफलता मिलती है।

3- मंगल

मंगल से संबन्धित अंगः-

मंगल का संबंध पित्त, मांसपेशी, स्वेद ग्रंथियों, पेशी तन्त्र, तंतु, बाह्य जननांग, प्रोस्टेट ग्लैंड, गुदा, रक्त, अस्थि, मज्जा, नाक, पस आदि के साथ स्थापित किया गया है।

मंगल संबन्धी रोगः-

मंगल के पाप पीडित होने पर तीव्र ज्वर, सिरदर्द, मुंहासे, चेचक, घाव, जलन, कटना-फटना, बवासीर, नासूर, साइनस, गर्भपात, रक्ताल्पता, फोडा, लकवा, पक्षाघात, पोलियो, गले में गांठ या दर्द, गर्दन के रोग, हाइड्रोसील, हर्निया जैसे अनेक रोगों की संभावना रहती है।

मंगल का संबन्ध अग्नि तत्व से माना गया है। अतः मंगल षष्ठ भाव में स्थित रहने पर पित्त संबन्धी रोग यथा उच्च्व रक्तचाप, रक्तस्त्राव, नकसीर फूटना, दुर्घटनाएं, अग्नि भय, बिजली भय आदि का कारण बनते है। मंगल का संबन्ध रक्त विकार, घाव, फोडे-फुंसी, बवासीर, चेचक, स्त्रियों के रज संबन्धी दोष, आंव विकार और चोट आदि लगने से भी रहता है

अतः जब मनुष्य को मंगल बुरी दृष्टि से दखता है तो उसको निम्नलिखित रोग हो सकते हैः-

रक्तदोष से उत्पन्न रोग जैसे फोडे-फुन्सी, दाद, खुजली, भगन्दर, बवासीर, चेचक, खसरा, हाई ब्लड प्रैशर, एनेमिया (रक्ताल्पता), वीर्य अधिक नाश करने से पैदा रोग, जलन के साथ मूत्र आना, बूंद बूंद कर मूत्र आना, मानसिक दुर्बलता,

मिरगी, स्नायु दुर्बलता, बुढापे की कमजोरी, पुराना ज्वर, भूख की कमी, शरीर में चरबी न रहना, चिडचिडापन, शीघ्र क्रोध करना, दूसरों से बिना कारण लडना-झगडना, आमाशय व अन्तडियों के रेग, कुष्ठ रोग, जोडों का दर्द आदि।

इन सभी रोगों में रोगी को सिंदूरी रंग का मूंगा पहनने का परामर्श दिया जाता है। मूंगे से बनी दवाएं भी प्रयोग कराई जा सकती है। उपरोक्त रोगों में मूंगा पहनकर और प्रबाल पिष्टी खाकर इन रोगों और मंगल की बुरी दृष्टि से बचा जा सकता है।

4- बुध

बुध से संबन्धित अंगः-

बुध का संबंध स्नायु तंत्र, जीभ, आंत्र, वाणी, नाक, कान, गला, फेंफडे आदि के साथ स्थापित किया गया है।

बुध संबन्धी रोगः-

बुध के पाप ग्रस्त होने पर मस्तिष्क विकार, स्मृति ह्यास, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पडना, सूंघने, सुनने अथवा बोलने की शक्ति का ह्यास होना आदि देखे जाते है।

यदि बुध का संबन्ध षष्ठ भाव के साथ स्थापित हो जाए, तो वाणी दोष, त्वचा संबंधी रोग, भ्रम, पांडुरोग आदि पैदा होने लगते है। बुध का संबन्ध वाणी से माना गया है। अतः इसकी निर्बलता से बालक गूंगा हो सकता है। बालक हकलाता अथवा तुतलाता है। बुध ग्रह नपुंसकता एंव चर्मरोग भी उत्पन्न करता है।

जब मनुष्य को बुध बुरी दृष्टि से देखता है तो उसको निम्नलिखित रोग हो जाते हैः-

गुदा और मलाशय के रोग, बवासीर, भगन्दर, गुदा फटना, पेट, विशेष रूप से पेडू के निचले भाग के रोग, कोढ, अर्जीण, उदरशूल, संग्रहणी, तुतलाना, दुबलापन, वजन गिरते जाना, मर्दाना कमजोरी, बुद्धि कमजोर होना, पेट में अम्लता की अधिकता, पुराना ज्वर, हड्डियां, मांस, यकृत, तिल्ली, वृक्क संबंधी रोग, हृदय रोग, कैंसर एंव न भरने वाले पुराने घाव, इन्फ्लूएंजा, उपदंश, दमा और पेडू के विभिन्न रोग।

ऐसे सभी रोगियों को हरे रंग का पन्ना धारण करने को कहा जाता है और पन्ना से बनी औषधियां खिलाई जाती है।

5- देवगुरू बृहस्पति

बृहस्पति से संबन्धित अंगः-

देवगुरू बृहस्पति का संबंध यकृत, नितंब, जांघ, मांस, चरबी, कफ, पांव आदि अंगों के साथ माना जाता है।

बृहस्पति से संबन्धित रोगः-

बृहस्पति के पाप ग्रसित होने पर पीलिया, यकृत संबन्धी रोग, अपच, मोतियाबिंद, रक्त कैंसर, फुफ्फुसावरण शोथ, वात, बादी, उदर, वायु, तिल्ली कष्ट, साइटिका, गठिया, कटि वेदना, नाभि चढना आदि अनेक रोग सताने लगते है।

बृहस्पति का संबंध कफ दोष, उदर विकार, ऑत्र शोथ के साथ माना गया है। यह पीलिया, हार्ट अटैक तथा वायु जनित सन्निपात जैसे रोगों के पीछ भी मुख्य भूमिका निभाते है।

बृहस्पति विरोधी होने पर मनुष्य को निम्न रोग एंव परेशानी झेलनी पड सकती हैः-

जोडों का दर्द, पक्षाघात, लकवा, शोथ, गले, यकृत के रोग, मोटापा, अतिसार, रसौलियां, आक्षेप, संक्रामक रोग, विषैले रोग, मिलती, शरीर में तरल की अधिकता से उत्पन्न रोग जैसे जुकाम, शरीर में पानी पडना, अधिक मात्रा में मूत्र आना, कोढ, बवासीर, गिल्हड, आवाज बैठ जाना, प्लेग, हिस्टीरिया, ऐंठन संबंधी रोग, नाडियों की कमजोरी, खांसी, पेट में गोला प्रतीत होना आदि।

बृहस्पति मनुष्य की चरबी और ग्रन्थियों पर शासन करते है। इसलिए ऐसे रोगी को चरबी और ग्रन्थियों से संबन्धित रोग भी हो सकते है। ऐसे मनुष्य अपव्ययी, धोखेबाज, मुकदमेबाज, अधिक बोलने वाले, स्वंय को बडा समझने वाले, डींग मारने वाले भी रहते है। बृहस्पति के निर्बल होने पर मनुष्य को पीले रंग का पुखराज धारण करना चाहिए और पुखराज से बनी औषधियां खानी चाहिए।

6- असुरगुरू शुक्र

शुक्र से संबन्धित अंगः-

शुक्र का संबंध जननांग, ऑख, मुख, ठुड्डी, गाल, गुर्दे, वीर्य आदि के साथ माना गया है।

शुक्र से संबन्धित रोगः-

जन्मकुंडली में शुक्र के पीडित एंव पाप ग्रस्त रहने पर काले-नीले दाग-धब्बे, त्वचा के रोग, कोढ, श्वेत दाग, गुप्तांग संबंधी रोग, मधुमेह, नेत्र संबंधी रोग, मोतियाबिंद, वीर्य दोष, प्रमेह, रक्ताल्पता, एक्जिमा, मूत्र संबंधी रोग आदि की संभावना रहती है। यह वीर्य संबन्धी विकार भी उत्पन्न करता है। पेशाब की थैली में पथरी भी शुक्र से संबन्ध रखती है।

शुक्र नीच दृष्टि पर मनुष्य को निम्नलिखित रोग देते हैः-

सुजाक में ग्रस्त स्त्री से संभोग करने से सुजाक, वीर्य प्रमेह, शीघ्रपतन, मूत्र में शक्कर आना, पुरूष गुप्त रोग, बांझपन, मर्दाना कमजोरी, वीर्य संबंधी रोग, मूत्र कठिनाई से आना, स्त्रियों में गर्भाशय के रोग, अधिक शराब पीने से उत्पन्न रोग, शरीर के विभन्न अंगों में पानी एकत्रित होना, समय से पहले बूढा प्रतीत होना, ल्यूकोरिया, अत्यधिक शारीरिक दुर्बलता, वजन गिरते जाना, कफ की अधिकता से उत्पन्न रोग, शरीर से गाढे तरल का निकलना जैसे मूत्र के साथ या सोते समय वीर्यपात होना, नाक से गाढा तरल, जुकाम में तरल गिरना, फेफडों से गाढा बलगम निकलना, पाखाने में आंव आना, गाढी पीप आना, वात, पित्त, कफ दोष से उत्पन्न होने वाले जटिल एंव जीर्ण रोग, स्नायु दुर्बलता और स्नायु संबंधी रोग जैसे पक्षाघात, लकवा, कम्पन, अंगुलियों या पांव में च्यूंटिया सी रेंगती प्रतीत होना, पांवों का सुन्न और ठंडा पडना, सफेद दाग, रक्ताल्पता, भगन्दर, न्यूमोनिया, क्षय रोग, काली खांसी, दमा और फेफडों के रोग, बुढापे और कमजोरी से पैदा रोग आदि।

ऐसे रोगियों को सफेद रंग का असली हीरा धारण करने और हीरे से बनी औषधिया खाने से पर्याप्त लाभ मिलता है।

7- सूर्य पुत्र शनिदेव

शनिदेव से संबन्धित अंगः-

शनि का संबंध मुख्यतः पॉव, घुटने, श्वास, अस्थि, नाखून, दांत, कान आदि के साथ स्थापित किया गया है।

शनि से संबन्धित रोगः-

शनि के पाप प्रभाव में पडने के फलस्वरूप बहरापन, दॉतदर्द, पायरिया, निम्न रक्तचाप, कठिन उदरशूल, आर्थराइटिस, कैंसर, स्पांडीलाइटिस, हाथ-पांव की कंपकपाहट, साइटिका, मूर्च्छा जैसे अनेक जटिल एंव दुसाध्य रोग पैदा होते है।

इनके अलावा शनि लकवा, वातरोग, घुटनों में तीव्र पीडा या अपंगता, गठिया, पैरों में पीडा एंव आकस्मिक दुर्घटनाओं का कारण भी बनते है। यह गैस ट्रबल और भ्रम से उत्पन्न रोगों से भी संबन्ध रखते है।

शनि निर्बल एंव पाप ग्रस्त होने पर निम्न रोग और कष्ट देते हैः-

कठिन आर्थिक परिस्थितियां, व्यापार में हानि, नौकरी न मिलना, कंगाली, माता, पिता, भाई, पुत्र की मृत्यु, सगे संबन्धियों की शत्रुता, सुख और आराम की बजाय दुख, आर्थिक कठिनाईयों से दुःखी होकर शहर छोडकर दूसरे नगर में बसना, मुकदमेबाजी, जेल और दरिद्रता में साथ जीवनयापन, फटे-पुराने कपडे पहनने पर विवश होना, स्नायु पीडा, स्नायु संबंधी रोग जैसे कम्पन, सिर व हााथ-पांव का अनैच्छिक रूप से हिलना, रक्ताल्पता, दुर्बलता, जोडो का गति न करना और उनमें तीव वेदना, मिरगी, हिस्टीरिया, बेहोशी, मानसिक रोग, पुरानी और जटिल फुलबहरी, लंगडी का दर्द, मूर्खता आदि।

शनि के बुरे प्रभाव और कष्टों को दूर करने के लिए अंगूठी में नीलम जडवाकर पहनने से यह कष्ट और रोग दूर होने लगते है। नीलम शनि के आक्रमणों से ढाल की भांति रक्षा करता है।

8- राहु और केतुः-

राहु-केतु से संबन्धित अंगः-

राहु मुख्यतः शरीर के ऊपरी हिस्से और केतु शरीर के निचले हिस्से (धड भाग) का प्रतिनिधित्व करता है।

राहु-केतु संबन्धी रोगः-

यह दोनों छाया ग्रह क्रमशः शनि और मंगल के अनुरूप रोग (व्याधि) प्रदान करते है। यह जिस राशि एंव भाव में बैठते है, उसके अनुरूप ही व्याधि देते है। राहु, केतु से संबन्धित रोग की पहचान प्रायः कठिनाई से होती है।

राहू विष भय, कीटाणु जनित संक्रामक रोग, होंठों पर व्रण, कुष्ठ आदि का कारण बनते है। यह फूड पॉयजिनिंग, सर्प दंश, दांत पीडा आदि उत्पन्न करते है।

राहू के प्रतिकूल होने पर मनुष्य को निम्नलिखित रोग हो सकते हैः-

मनुष्य में साहसहीनता और आत्महत्या की भावना प्रबल होती है, जिन, भूत का डर, पेट में कीडे, जोडों का न हिलना, उनमें शोथ, दर्द, गर्भाशय शोथ, मिरगी, खसरा, चेचक, कोढ आदि।

राशि में राहू कमजोर होने पर गोमेद अंगूठी में जडवाकर पहनने से उपरोक्त रोग और कष्ट दूर होते है।

जबकि केतू का संबंध निमोनिया, भगंदर जैसे रोगों के साथ रहता है। यह आकस्मिक दुर्घटनाएं एंव विष विकार का कारण भी बनता है।

राशि में केतू की कमजोरी से निम्नलिखित रोग हो सकते हैः-

कई तरह के चर्म रोग, फोडे-फुन्सी, खुजली, चेचक, खसरा, हैजा, जलोदर, गर्भाशय के रोग, हृदय पर दबाव पडने से हृदय का अधिक तेजी से धडकना और वायु प्रभाव से सिरदर्द और सिर में भारीपन, अर्जीण, दमा का सख्त दौरा आदि।

राशि में केतू की बुरी दृष्टि को दूर करने के लिए लहसुनियां (वैडूर्य-Cat's Eye) को अंगूठी में जडवाकर पहनना चाहिए।

राशियां और उनसे संबन्धित प्रमुख रोग

ज्योतिष शास्त्र में सम्पूर्ण भू-चक्र को बारह विभिन्न राशियों में विभाजित किया गया है। यह बारह राशियां ही काल पुरूष के समस्त बाहरी और आन्तरिक अंगों का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे मेष राशि का संबन्ध सिर एंव मस्तिष्क के साथ, वृष राशि का संबन्ध मुख और कंठ (टॉन्सिल) आदि के साथ, मिथुन राशि का संबन्ध गला, बांह, फेंफडें एवं श्वसन तंत्र के साथ, कर्क राशि का संबन्ध हृदय एंव रक्त परिसंचरण तन्त्र के साथ, सिंह राशि का संबन्ध पेट एंव आहार संस्थान के साथ, कन्या राशि का संबन्ध कमर एंव अंतडियों, पेट के आन्तरिक एंव निचले अंगों के साथ, तुला राशि का संबन्ध पेडू, जननेन्द्रिय एंव गुर्दों के साथ, वृश्चिक राशि का संबन्ध गुदा, मूत्रेन्द्रिय एंव जननेन्द्रिय के कार्यों के साथ, धनु राशि का संबन्ध जांघ, कूल्हे, स्नायु मंडल एंव स्नायु तन्त्रिकाओं के साथ, मकर राशि का संबन्ध घुटने, अस्थियों एंव अस्थि जोडों के साथ, कुंभ राशि का संबन्ध पिंडलियों, रक्त विकार एंव रक्त प्रवाह संबंधी रोगों के साथ तथा मीन राशि का संबन्ध पैर एंव शरीर के आन्तरिक तरल पदार्थ के साथ स्थापित किया गया है। अतः राशियों के इस विभाजन के आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जिस राशि के साथ काल पुरूष के जिन अंगों का संबन्ध रहता है, उन राशियों एंव भावों पर बुरे व अशुभ ग्रहों के प्रभाव से उनसे संबन्धित अंगों में कई तरह की बीमारियां जन्म लेने लगती है।

नीचे बारह राशियों का शारीरिक अंगों के साथ संबन्ध और उनमें राशियों के अनुसार होने वाली बीमारियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा हैः-

1- मेष राशिः-

संबन्धित अंगः-

मेष राशि के साथ मस्तिष्क, सिर, चेहरा से संबन्धित अस्थियों और अधिवृक्क ग्रन्थि (एड्रीनल ग्लैण्ड), पिटयूटरी ग्लैण्ड, पाइनल ग्लैण्ड, ऊपरी जबडा का संबन्ध माना गया है।

संभावित रोगः-

मेष राशि पर बुरे प्रभाव के कारण ब्रेन टयूमर, माइग्रेन, सिरदर्द, मानसिक तनाव, हिस्टीरिया, अवसाद, चेचक, दांतों का दर्द, गंजापन और गर्भाशय में गांठ बनने की आशंका रहती है।

2- वृष राशिः-

संबन्धित अंगः-

वृष राशि के साथ गला, गर्दन, स्वर तंत्र, गले की अस्थियां, कान, गर्दन की कैरोटिड धमनी, थॉयराइड ग्रन्थि, निचला जबडा, गला, जीभ, नाक, वाणी, चेहरा, ग्रासनली और सिर के पिछले भाग का संबन्ध माना गया है।

संभावित रोगः-

वृष राशि पर बुरे प्रभाव पडने के फलस्वरूप गले में दर्द, गले की सूजन, आवाज का बिगडना, थॉयराइड ग्रन्थि संबन्धी दिक्कतें, कब्ज और मासिक चक्र संबन्धी अनियमिताएं शुरू होने की आशंका रहती है।

3- मिथुन राशिः-

संबन्धित अंगः-

मिथुन राशि का संबन्ध गला, बाजू, हाथ की अंगुलियों, कंधे से लेकर फेंफडे व श्वसन तंत्र, कंधे की अस्थि, स्कंध, ऊपरी पसली, कान, हाथ, बांह, स्वर यन्त्र आदि के साथ स्थापित किया गया है।

संभावित रोगः-

मिथुन राशि पर बुरे ग्रहों का प्रभाव पडने से श्वसन संबंधी रोग जैसे- ब्रोंकाइटिस, निमोनिया, हृदय की सूजन, हाथ व कंधे में दर्द, मूर्च्छा तक आने की आशंका बनी रहती है।

4- कर्क राशिः-

संबन्धित अंगः-

कर्क राशि के साथ हृदय, छाती, आमाशय, यकृत, प्लीहा, स्तन व स्तनों की दुग्ध नलिका, थायमस ग्रंथि, नीचे की पसली, फेंफडें, उदर आदि का संबन्ध स्थापित किया गया है।

संभावित रोगः-

कर्क राशि पर बुरे प्रभाव पडने से अपच, अजीर्ण, एसीडिटी, पेट का अल्सर, मधुमेह, छाती में दर्द, जलोदर, प्लीहा वृद्धि, पीलिया और स्तनों के विकार एंव स्तन कैंसर की आशंका बनी रहती है।

5- सिंह राशिः-

संबन्धित अंगः-

सिंह राशि का संबन्ध पेट, पसली, हृदय की मुख्य रक्त धमनियां, रीढ की हड्डी, एड्रीनल ग्लैण्ड, पित्ताशय, यकृत, कोख, कमर आदि के साथ स्थापित किया गया है।

संभावित रोगः-

सिंह राशि पर बुरे प्रभाव पडने से हृदय संबन्धी रोग, हृदय के वाल्वों की खराबी, हृदय की अनियमित धडकन, छाती में दर्द, रक्त विकार, पीलिया, फेंफडों की खराबी, ऑखों में सूजन और बेहोशी तक की संभावना रहती है।

6- कन्या राशिः-

संबन्धित अंगः-

कन्या राशि के साथ कमर, पेट, आंत्र, यकृत, एपेंडिक्स, रीढ के मध्य भाग, नाभि चक्र, अग्न्याशय, मेखला क्षेत्र एंव पसलियों का संबन्ध माना गया है।

संभावित रोगः-

कन्या राशि पर बुरे प्रभाव के परिणामस्वरूप उदर संबन्धी रोग, टायफाइड, आंत्र दर्द, पेटदर्द और नाभि के आसपास दर्द की संभाबना बनी रहती है।

7- तुला राशिः-

संबन्धति अंगः-

तुला राशि का संबन्ध पेडू, जननेन्द्रिय, गुर्दे, पीठ के निचले हिस्से, पित्ताशय, मूत्राशय, वस्ति प्रदेश, डिंब ग्रंथि, मूत्र वाहिनी, गर्भाशय नलिकाएं आदि के साथ स्थापित किया गया है।

संभावित रोगः-

तुला राशि पर बुरा प्रभाव पडने के कारण कमर दर्द, बहुमूत्रता, त्वचा संबन्धी रोग, पथरी, जननेन्द्रिय संबन्धी विकार, पित्ताशय संबन्धी रोग पैदा होने की आंशका बनी रहती है।

8- वृश्चिक राशिः-

संबन्धित अंगः-

वृश्चिक राशि का संबन्ध गुर्दों, योनि, मूत्राशय, गर्भाशय, पुरूष जननेन्द्रिय, पौरूष ग्रन्थि, अंडाशय, ओवरी, मलद्वार, भ्रूण जैसे अंगों के साथ माना गया है।

संभावित रोगः-

वृश्चिक राशि पर बुरे प्रभावों के फलस्वरूप गुर्दे में पथरी, श्वेत प्रदर, गर्भाशय के विभिन्न रोग, भंगदर, बवासीर, अंडाशय से डिंब क्षरण रूकना आदि रोगों की आशंका बनती है।

9- धनु राशिः-

संबन्धित अंगः-

धनु राशि का संबन्ध मुख्यतः जांघ, कूल्हे, स्नायु तन्त्रिकाओं, सूक्ष्म रक्त धमनियों, कमर के निचले हिस्से की अस्थियों आदि के साथ माना गया है।

संभावित रोगः-

धनु राशि पर बुरा प्रभाव पडने के कारण सन्धिवात, गठिया, गुर्दा विकार, आग से जलना, वे-बजह थकान बनी रहना, आलस्य की दशा बनी रहने की आशंका रहती है।

10- मकर राशिः-

संभावित अंगः-

मकर राशि का संबन्ध घुटनों, अस्थियों, अस्थि जोड, जांघ के चिलने व पिछले हिस्सों के साथ स्थापित किया गया है।

संभावित रोगः-

मकर राशि पर बुरे प्रभाव के परिणामस्वरूप पैर व घुटनों में दर्द की शुरूआत, अस्थि सन्धियों में सूजन के साथ तीव्र दर्द, अस्थियों में ऐंठन के पश्चात् पक्षाघात तक की नौबत बन सकती है।

11- कुंभ राशिः-

संभावित अंगः-

कुंभ राशि का संबन्ध मुख्यतः पिण्डलियों, रक्त व रक्त प्रवाह, घुटनों के निचले हिस्से एंव पैर की स्नायु तन्त्रिकाओं के साथ माना गया है।

संभावित रोगः-

कुंभ राशि पर बुरा प्रभाव पडने के कारण पैरों की रक्त शिराएं सूज जाती है (पेरीकोज वेंस डिजीज), पैरों की अस्थियां कमजोर पडकर शीघ्र टूटने लगती है और पैरों में टेढापन, लंगडापन आने लगता है।

12- मीन राशिः-

संबन्धित अंगः-

मीन राशि का संबन्ध पैर के निचले भाग, पैर की अंगुलिया व अंगूठे, तलवे, टखने आदि के साथ माना गया है।

संभावित रोगः-

मीन राशि पर बुरा प्रभाव पडने के कारण पैर के निचले हिस्से में दर्द, अकडापन, तलवे व टखनों में दर्द, पुरूषों में नपुंसकता, पैर की पिण्डलियों में खिंचाव, गुदाद्वार पर असहनीय खुजली के साथ दर्द बने रहने की आशंका रहती है।

द्वादश भाव एंव रोग विचार

जन्मकुंडली के द्वादश भाव व्यक्ति के जीवन की समस्त घटनाओं, समस्त बातों का ही प्रतिनिधित्व नहीं करते, वहीं वह व्यक्ति के पूर्व जीवन एंव भविष्य के जीवन की झांकी भी प्रस्तुत करते है। जन्मकुंडली के इन्हीं द्वादश भावों का संबंध उसके शरीर के विभिन्न अंगों एंव रोग उत्पत्ति के साथ भी रहता है। यही द्वादश भाव स्वंय उसके जीवन के साथ-साथ उसके निकटतम् संबन्धियों का प्रतिनिधित्व भी करते है।

रोग निदान एंव रोग उत्पत्ति के संबंध में मुख्यतः निम्न भावों का विशेष महत्व माना गया हैः-

1- षष्ठ भाव

जन्मकुंडली के इस भाव को रोग, रिपु (शत्रु), कलह-क्लेश जैसे नाम दिये गये है। अतः इस भाव के स्वामी (षष्ठेश) को रोगेश, रिपेश भी कहा जाता है। यह जन्मकुंडली का प्रथम त्रक स्थान भी है। अतः जब कोई ग्रह निर्बल बनकर इस षष्ठ भाव में बैठता है, तो वह अपने कारकत्व के अनुसार अपनी अशुभता देता है, व्यक्ति को रोग प्रदान करता है। इस ग्रह पर जितने अधिक अशुभ प्रभाव रहते है उसकी अशुभता भी उतनी ही बढती जाती है तथा तत्संबन्धी रोग की जटिलताएं, गंभीरताएं एंव असाध्यताएं भी उतनी ही बढती जाती है। यद्यपि षष्ठ भावस्थ ग्रह पर शुभ ग्रहों (गुरू, शुक्र, बली चंद्रमा, बुध या योगकारक ग्रह) की युति या दृष्टि से शुभ प्रभाव पड रहे हो, तो उन अशुभ ग्रहों की अशुभता ज्यादा गंभीर सिद्ध नहीं होती या उनके कारण जन्म लेने वाले रोग ज्यादा कष्टप्रद एंव परेशानी का कारण नहीं बनते। ऐसे रोग प्रायः साध्य ही बने रहते है।

षष्ठ भाव में स्थित होकर विभिन्न ग्रह अलग-अलग रोगों का कारण बनते देखे जाते है।

2- अष्टम् भाव

अष्टम् भाव से आयु, स्त्रियों का मांगल्य, सौभाग्य, मरे हुए व्यक्ति का धन, वसीयत या बीमा कंपनी से प्राप्त धन, क्लेश, अपवाद, विघ्न, जहर से मृत्यु, कैद, ऊँचाई से गिरना, दासता आदि का विषय देखा जाता है। अतः इस अष्टम् भाव और अष्टमेश की स्थिति से रोग की जटिलता, रोग की जीर्णता आदि का विचार किया जाता है। जब इस भाव में कोई ग्रह अपनी नीचि राशि में आकर या अस्त होकर बैठता है, पाप युति या पाप दृष्ट होकर स्थित रहता है, निर्बल बनकर, अशुभ षष्ठांश में स्थित होता है, तो निश्चित ही वह दीर्घकालीन रोग का कारण बनता है। ऐसे रोग प्रायः कष्टकारी सिद्ध होते है। यह रोग बार-बार प्रकट और अदृश्य होते रहते है।

अष्टम् भाव, अष्टमेश और अष्टम भाव में स्थित ग्रहों की अशुभता, निर्बलता के साथ जन्मकुंडली में लग्न भाव और लग्नेश भी पर्याप्त पाप प्रभाव में हों, पापी ग्रहों से पीडित या निर्बल, अस्त होकर बैठे हों, तो भी रोग प्रायः असाध्य ही बन जाते है और वह मृत्यु कारक सिद्ध होते है। यद्यपि शुभ ग्रहों के प्रभाव से घातक रोग भी साध्य बन जाते है।

द्वादश लग्न और ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति को निम्न प्रकार से जाना जा सकता हैः-

यद्यपि हमें एक बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए कि प्रत्येक लग्न के लिए शुभ-अशुभ ग्रह भिन्न-भिन्न होते है, अतः उनके आधार पर ही यह निर्णय लिया जाना चाहिए कि जन्मकुंडली में कौन सा ग्रह शुभकारी और कौन सा ग्रह अशुभकारी बनकर स्थित है। इससे रोग निदान में पर्याप्त मदद मिलती है।

निम्न सारणी से लग्नानुसार शुभ-अशुभ ग्रह का अंतर स्पष्ट हो सकता हैः-

लग्न	शुभ ग्रह	अशुभ ग्रह	मध्यम ग्रह
मेष	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति	बुध, शुक्र	शनि
वृष	बुध, शुक्र	चन्द्र, मंगल, बृहस्पति	सूर्य, शनि
मिथुन	बुध, शुक्र	मंगल, बृहस्पति	शनि
कर्क	चन्द्र, मंगल, बृहस्पति	बुध, शनि	सूर्य, शुक्र
सिंह	सूर्य, मंगल, बृहस्पति	बुध, शनि	चन्द्र, शुक्र
कन्या	चन्द्र, बुध, शुक्र	सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि	
तुला	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, मंगल, बृहस्पति	चन्द्र
वृश्चित	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र
धनु	सूर्य, मंगल, बृहस्पति	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र
मकर	बुध, शुक्र, शनि	मंगल, बृहस्पति	सूर्य, चद्र
कुंभ	शुक्र, शनि	चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति	सूर्य
मीन	चन्द्र, बृहस्पति	सूर्य, बुध, शुक्र, शनि	मंगल

अध्याय-पॉंच

ग्रह विवेचना और रोग विचार

ग्रह दो प्रकार से मनुष्यों को हानि पहुंचाते है। जब कोई ग्रह किसी मनुष्य की राशि में विरोधी या कमजोर बनकर स्थित रहता है, तो वह मनुष्य उस ग्रह की जीवनदायिनी लहरों से वंचित हो जाता है। अर्थात् यदि किसी मनुष्य की राशि में सूर्य निर्बल बनकर स्थित है तो उसमें सूर्य की शक्तिप्रद किरणों के न पहुंच पाने के कारण गर्मी एंव तेज की कमी जन्य रोग- सर्दी से उत्पन्न होने वाले रोग कष्ट देने लगते है। रोगी ताप और गर्मी की कमी के कारण ठण्डी वस्तुएं खा लेने से विभिन्न रोगों से ग्रस्त होने लगता है। यद्यपि ऐसी दशा में उसको माणिक्य पहनाकर सूर्य की गर्म लहरें पैदा की जा सकती है। जब उसके शरीर में गर्मी और शक्ति अधिक मात्रा में आ जायेगी तो सूर्य की कमजोरी से उत्पन्न होने वाले रोग स्वतः ही दूर होने लग जायेंगे। किंतु जब किसी पुरूष या रोगी की राशि में सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली है तो सूर्य को शक्तिशाली गर्म लहरों के कारण उसमें गर्मी से उत्पन्न होने वाले रोग बहुत कष्ट देते रहते है। ऐसी दशा में रोग दूर करने के लिए ऐसे उपाय किये जाते है जिससे सूर्य की गर्मी कम हो जाये। यदि कोई ग्रह मनुष्य को लाभ पहुंचाने वाले भाव में ह परंतु उसकी शक्ति क्षीण है और उसको ग्रह से निकलने वाली लहरों (ग्रह की शक्ति कमजोर होने के कारण) का लाभ नहीं मिल रहा हो, तो ऐसी दशा में उस व्यक्ति को ऐसे रत्न धारण कराने चाहिए जिनसे उसमें वह ग्रह शक्तिशाली हो जाये। उस रत्न को पहनने से उस व्यक्ति का रोग, आर्थिक कमजोरी, विपत्तियॉं आदि कम हो जायेंगी। कई रोग ऐसे होते है जो एक से अधिक ग्रहों की कमजोरी के कारण पैदा होते है। अतः ऐसा दशा में रोगी को उन सभी ग्रहों से संबंध रखने वाल रत्न पहनने पडते है या कई रत्नों से बनी दवाऐं खिलानी पडती है।

हिन्दू रत्न विशेषज्ञ और हिन्दू ज्योतिषियों का मत है कि यदि किसी व्यक्ति में कोई ग्रह कमजोर या बुरी दृष्टि से दूषित है या उसमें कई ग्रह कमजोर है तो उस व्यक्ति को उन ग्रहों से संबंध रखने वाला उतना ही बडा रत्न पहनना चाहिए। जितना बडा रत्न होगा उससे उतनी ही अधिक शक्तिशाली किरणें निकलेगी। छोटा रत्न होने पर उससे बहुत कमजोर और कम शक्ति की किरणें निकलती है। इसलिए उस ग्रह की कमजोरी को दूर करने के लिए चार रत्ती या उससे अधिक वजन का रत्न पहनना ही उपयुक्त रहता है। रत्न का वजन जितना कम वजन रहेगा उतनी ही कम शक्ति की लहरें निकलेगीं और उतना ही कम उससे लाभ होगा।

ग्रह विवेचना

जन्मकुंडली में सूर्यदेव का स्थान सर्वोपरि माना गया है। इसलिए शारीरिक रूप में स्वस्थ्य रहने के लिए लग्नेश के साथ-साथ पुरूष के लिए **सूर्यदेव** का और स्त्री के लिए **चन्द्रदेव** का शुभ एंव बली बनकर बैठना अत्यंत आवश्यक माना गया है। किसी पुरूष जातक की जन्मकुंडली में उदित सूर्य जैसे लग्न, एकादश, दशम्, नवम् एंव अष्टम् भाव में शुभ माने गये है, इसमें भी नवम्, दशम् व एकादश भाव अति उत्तम है। ऐसा जातक प्रायः स्वस्थ्य ही रहते है। यद्यपि ऐसे सूर्य पर किसी पापी ग्रह की दृष्टि पडने के कारण थोडा-बहुत कष्ट रह सकता है। यह स्थिति सूर्य के उदय काल की होती है। सूर्यास्त से रात्रि काल तक की स्थिति जैसे सप्तम्, षष्ठम्, पंचम, चतुर्थ, तृतीय एंव द्वितीय भाव के समय लग्नेश अथवा किसी पापी ग्रह की दृष्टि दोष को समाप्त करती है।

सूर्य एक पुरूष व अग्नि तत्व ग्रह है। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह अग्नि राशि (मेष, सिंह व धनु) में बहुत ही अच्छा प्रभाव देते है। क्योंकि यह राशियां अग्नि राशि के साथ-साथ सूर्य की मित्र राशि भी है। ऐसे सूर्य से जातक सुन्दर व स्वस्थ्य शरीर के स्वामी होते है। वह रोगों से बचे रहते है। उनमें विशेष रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है। यदि कभी किसी विषम मौसम के कारण वह किसी विशेष रोग की चपेट में आते है, तो भी शीघ्र स्वस्थ्य हो जाते है। इसमें एक समस्या यह होती है कि इन्हें कोई छोटा अथवा सामान्य रोग नहीं सताता। इन्हें सदैव बडे रोग ही परेशान करते है।

सूर्य को मिथुन राशि में शुभ माना जाता है। क्योंकि मिथुन वायु तत्व राशि है तथा अग्नि तत्व की मित्र राशि है। फिर भी यहां का सूर्य जन्मकुंडली में शनि व चन्द्र के अशुभ अथवा बलहीन बनने पर मानसिक तनाव और स्नायु संस्थान

संबंधी विकारों का कारक बनता है। इसलिए ऐसे जातक को पर्याप्त आराम करना चाहिए। इन्हें प्रतिकूल ग्रह की दशाऽन्तर्दशा के दौरान धार्मिक अथवा शुभ सत्संग के साथ किसी न किसी मनोरंजक धार्मिक साहित्य का अध्ययन करते रहना चाहिए। सूर्य अपने उदय काल में अच्छा प्रभाव देते है। रात्रि का सूर्य मध्यम प्रभाव देता है।

यदि सूर्य अग्नि राशि- मेष, सिंह व धनु में हो तो सर्वोत्तम, मिथुन में उत्तम, वायु राशि मिथुन, तुला व कुंभ एंव पृथ्वी तत्व राशि वृषभ, कन्या व मकर में मध्यम तथा जल तत्व राशि कर्क, वृश्चिक एंव मीन में निर्बल, इसमें भी कर्क व मीन राशि में यह विशेष निर्बल बन जाते है। इसमें भी सूर्य त्रिक (6, 8, 12) भाव में निर्बल होते है। इसलिए सूर्य जन्मकुंडली में जिस भाव के स्वामी तथा जिस भाव का कारक है, उन सभी बातों का अशुभ प्रभाव प्राप्त होगा। सूर्य का पित्त, हृदय, अस्थि, नेत्र, प्राणवायु व मणिपूरक चक्र तथा रीढ की हड्डिी पर अधिपत्य होता है। इसलिए सूर्य यदि जन्म कुंडली में अशुभ व पीडित होकर स्थिति है, तो इन बातों पर भी निश्चित अशुभ प्रभाव पडता है। इसके साथ ही ज्वर, हृदय रोग, पित्त विकार, अपस्मार, शरीर में अत्यधिक जलन, नेत्र रोग, चर्म रोग, हड्डियों का बारबार टूटना, कोढ, अग्नि व विष भय, पशु हानि का भय, चोरी, देवों की रूष्ठता, भूत-प्रेत का प्रकोप आदि द्वारा जातक को कष्ट की संभावना रहती है। सूर्य की दशा अथवा सूर्य के अशुभ गोचर में अथवा सूर्य जब स्वराशि में होते है तो उपरोक्त फल प्राप्त होते है। तदापि मन्तान्तर से इसमें विद्वानों के अलग-अलग विचार है।

प्रत्येक राशिस्थ सूर्यकृत रोग

मेष राशि मेंः-

सूर्य मेष राशि में उच्चस्थ होते है। सूर्य व मेष राशि दोनों ही अग्नि तत्व प्रधान है, इसलिए इस स्थिति में व्यक्ति में रोगों से लडने की विशेष शक्ति रहती है। जातक अच्छे डीलडौल वाला होता है। यद्यपि किसी भी कारण से इस स्थिति में सूर्य पीडित हो जाए अथवा यह योग 2, 6, 8 अथवा 12 वें भाव में निर्मित हो, तो व्यक्ति को नेत्र रोग हो सकता है या उसकी नेत्र ज्योति मंद पड सकती है। उसके लिए चश्मे का प्रयोग आवश्यक बन जाता है। यह योग कम आयु से ही प्रभावी रहता है अर्थात् कम आयु में ही नेत्र ज्योति कम होने लगती है। इस योग में यदि केतू की युति हो तो **'मोतियाबिंद'** होता है। यद्यपि इस योग पर शुभ चन्द्र अथवा लग्नेश की दृष्टि हो तो यह फल अधिक आयु में घटित होता है।

वृष राशि मेंः-

इस राशि का सूर्य भी मजबूत शरीर प्रदान करता है। यद्यपि पीडित अथवा पापी प्रभाव में होने पर जातक को मिरगी, मूर्च्छा, हिस्टीरिया अथवा हृदय रोग की संभावना देता है।

मिथुन राशि मेंः-

जन्मकुंडली में सूर्य मिथुन राशि या त्रिक भाव (6,8,12) में स्थित हो अथवा पीडित होकर गोचर वश इन भावों में आये, तो जातक को रक्त विकार, फेंफडों के रोग-प्लूसी अथवा स्नायु विकार दे सकता है।

कर्क राशि मेंः-

सूर्य के लिये यह बहुत ही कमजोर राशि है। ऐसे जातक का शरीर अत्यंत दुबला-पतला रहता है। उसकी पाचन क्रिया भी ठीक नहीं रहती। यदि यहां चंद्रदेव भी स्थित हो तो क्षय (टीबी) जैसा असाध्य रोग भी दे सकते है। जबकि शनि की दृष्टि हो तो जोड दर्द, स्नायु रोग एंव वात विकार जैसी बीमारियां होती है। ऐसे रोग जल्दी ठीक नहीं होते। काफी उपचार के बाद भी यह रोग नियंत्रण भी नहीं आते।

सिंह राशि मेंः-

यह सूर्य की अपनी राशि है। ऐसे जातक मोटे व स्वस्थ शरीर के होते है। इसलिए सूर्य पर शनि की दृष्टि अथवा युति हो एंव चतुर्थ भाव व उसका स्वामी भी पीडित हो, तब हृदय रोग जल्दी सताता है। अतः ऐसे जातकों को श्रमसाध्य कार्य एंव पैदल चलने-फिरने पर अधिक जोर देना चाहिए। यद्यपि ऐसे जातकों को कम ही रोग सताते है। यदि रोग हो भी जाएं तो वह शीघ्र ठीक हो जाते है। ऐसे लोगों को आयुर्वेद उपचार एंव औषधियों से बहुत लाभ मिलता है। इसलिए इन्हें आयुर्वेदिक उपचार ही लेना चाहिए।

कन्या राशि मेंः-

इस राशि का सूर्य जातक को चिडचिडा स्वभाव प्रदान करता है। उसका पाचन संस्थान बिगडा रहता है। नेत्र रोग तो होते ही है।

तुला राशि में:-

यह सूर्य की नीच राशि है। इस राशि में आकर अथवा पीडित व पापी सूर्य मूत्र संस्थान के रोग जैसे- मूत्र में जलन, किडनी खराब, डायबिटीज एंव कमर में दर्द आदि देता है।

वृश्चिक राशि में:-

इस राशि का सूर्य पापी होने पर स्नायु विकार, फेंफडों के रोग और बडी एंव भयंकर दुर्घटनाएं या चोट देता है। इसमें भी यदि यह अष्टम् भाव में हो तो और भी गंभीर रोगों की संभावना रहती है।

मकर राशि में:-

इस राशि का स्वामी शनि है जो सूर्य के स्वाभाविक शत्रु माने गये है, इसलिए यहां सूर्य के होने पर शरीर बहुत ही अधिक कमजोर रहता है। शरीर में रोगों से लडने की क्षमता भी कम होती है। अतः इस स्थिति में शनि के कारकत्व वाले रोग जैसे- पैर व जोडों में दर्द, कोष्ठद्धता, मानसिक रोग, मन की उदासी जैसे रोग सताते है।

कुंभ राशि में:-

यह भी शनि की राशि है। इस राशि के सूर्य हृदय रोग, नेत्र विकार, मानसिक रोग अथवा मानसिक कष्ट तथा रक्त संचार में बाधा संबंधी रोग देते है।

मीन राशि में:-

इस राशि का सूर्य शरीर को दुर्बल बनाता है, इसलिए ऐसे लोगों को कई तरह के संक्रामक रोग, रक्त विकार एंव पाचन संस्थान की समस्याएं परेशानी रखती है।

➢ सूर्य संबंधी विशेष रोग

सूर्य यदि लग्नेश के साथ त्रिक भाव में हो ताप रोग देता है। सूर्य यदि छठवें भाव के स्वामी के साथ लग्न अथवा आठवें भाव में हो तो शरीर पर चोट का अथवा जन्म से कोई चिन्ह देता है। कर्क राशि में सूर्य के साथ चन्द्र हो अथवा दोनों एक-दूसरे की राशि में बैठे हों तो टी.बी. जैसे रोग के साथ शारीरिक दुर्बलला प्रदान करते है। जबकि आठवें भाव में शनि, छठे भाव में मंगल, दूसरे भाव में सूर्य एंव बारहवें भाव में चन्द्र हो अथवा यह चारों ग्रह एक साथ इनमें से किसी भी भाव में स्थिति हों, तो निश्चित ही वीर्य संबंधी रोग देते है। यदि दूसरे भाव में सूर्य षष्टेश अर्थात् छठे भाव के स्वामी के साथ हो अथवा कर्क या सिंह राशि में सूर्य के साथ राहू हो, तो जातक को पशु से चोट अथवा हानि का डर रहता है। लग्न में पापी सूर्य त्वचा अथवा रतौंधी रोग देते है। मंगल के साथ होने पर मुख रोग होता है। यदि सूर्य लग्न, सप्तम्, अष्टम् भाव में मंगल की दृष्टि लेकर बैठे, तो अग्नि अथवा विस्फोट से खतरा रहता है। इसमें भी यदि केतु का भी प्रभाव रहे तो मृत्यु तक हो सकती है। सप्तम् भाव में सूर्य, लग्न भाव में चन्द्र, दूसरे में मंगल एंव द्वादश भाव में शनि के स्थित रहने पर अथवा अष्टम् भाव में सूर्य, लग्न में मंगल एंव चतुर्थ भाव में शनि के रहने पर क्षय जैसे रोग की आशंका रहती है।

सूर्य महादशा का फल

जन्मकुंडली में सूर्य यदि पापी, अकारक अथवा पीडित हो तो इनकी दशा में निम्न फल प्राप्त होते है:-

यहां मैं एक बात अवश्य कहना चाहूंगा कि सूर्य संबंधी फलादेश देखने से पहले जन्मकुंडली का भली प्रकार से अवलोकन करना चाहिए। जातक की जन्मकुंडली में सूर्य की स्थिति क्या है? क्योंकि सूर्य संबंधी शुभ अथवा अशुभ फल तभी प्राप्त होते है जब सूर्य उपरोक्त स्थिति में स्थिति रहते है। शुभ ग्रह, लग्नेश अथवा योगकारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि पडने पर निश्चित ही सूर्य के अशुभ फलों में न्यूनता आती है।

जैसे सूर्य यदि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक को आग, वाहन दुर्घटना अथवा विष का भय रहता है। इसमें भी अगर अशुभ मंगल अथवा केतु की दृष्टि या युति बने तो यह फल और अधिक कष्टप्रद बन जाते है।

प्रथम भाव के पापी व अकारक सूर्य की महादशा में नेत्र संबंधी रोग एंव जीवनसाथी को कष्ट, छठवे भाव में सूर्य के पीडित अथवा पापी होने पर एपिन्डेक्स का ऑपरेशन, क्षय रोग, खूनी पेचिश अथवा दस्त जैसे रोग होते है। यह रोग कभी सामान्य रूप से होते है तो कभी गंभीर रूप लेकर आते है। आठवें भाव के सूर्य सडक दुर्घटना का भय, अति कामोत्तेजना, नेत्र विकार, ज्वर, पेचिश, अग्नि आदि का संताप देते है। बारहवें भाव के सूर्य से शैय्या सुख में कमी, शरीर के निचले हिस्से में कष्ट, विशेषकर पैर और पिण्डलियों में, व्यापार में हानि अथवा धोखा, आर्थिक तंगी के साथ पशु से आघात मिलता है। केतु के अशुभ होने पर कुत्ते से काटने का भय भी रहता है।

सूर्य महादशा अन्तर्गत अन्य ग्रहों का अन्तर्दशा फल

सूर्य महादशा के उपरोक्त फल पूर्ण महादशा में कभी भी घटित हो सकते है, परंतु सूर्य महादशा के दौरान अन्य ग्रह की अन्तर्दशाओं में निम्न फल प्राप्त होते है। इन फलों का निर्धारण भी सूर्य के साथ जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही है, उसके बलाबल एंव शुभाशुभ देखकर ही करना चाहिए। यथा-

सूर्य में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

सूर्य अन्तर्गत सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जातक को राज्य लाभ, घर से दूर निवास, ज्वर जैसे रोग प्रभावित करते है। यद्यपि सूर्य के शुभ होने पर शुभ एंव अशुभ होने पर अशुभ फल अधिक प्राप्त है।

सूर्य में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में जातक अपने शत्रुओं के लिये काल स्वरूप रहता है। पुराने कष्ट एंव समस्याओं से मुक्ति मिलती है। मकान सुख, धन लाभ व मित्रों के साथ अच्छा समय व्ययतीत होता है। यह सब सूर्य, चन्द्र की शुभ स्थिति में होता है। यदि चन्द्र पक्षबल में क्षीण, पापी या पीडित हो तो जलीय रोग, भय एंव अग्नि का डर बना रहता है।

सूर्य में मंगल अन्तर्दशा फलः-

इस स्थिति में व्यक्ति रोगी अथवा शल्य क्रिया के लिए मजबूर होता है। उसे अपने ही परिवार के लोगों का विरोध झेलना पडता है। धन के दुरूपयोग के साथ सरकारी कामकाज में हानि अथवा दण्ड भय बना रहता है। इस समय व्यक्ति को पुलिस के चक्करों से दूर रहना चाहिए। वाहन चालन में भी सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही अग्नि एंव विस्फोट से दूर रहना चाहिए। शरीर पर चोट अथवा ऑपरेशन की संभावना रहती है। यह सब मंगल के अति अशुभ स्थिति में होने से होता है। यदि मंगल शुभ हो तो उसकी अशुभता में कमी आती है। यद्यपि मंगल के साथ केतु की स्थिति भी देखनी चाहिए। यदि केतु लग्नस्थ हो तो विशेष ध्यान रखने की जरूरत रहती है।

सूर्य में राहू अन्तर्दशा फलः-

सूर्य अन्तर्गत राहू के दौरान सिर में पीडा अथवा कष्ट, नये-नये शत्रु बनते है। जातक को चोरी अथवा अन्य रूप से धन नाश का खतरा रहता है। इस समय नेत्र रोग, अचानक दुर्घटना या अन्य कष्ट सताते है। जातक का मन जिम्मेदारी से हटकर सांसारिक भोग विलासता में अधिक लगता है।

सूर्य में गुरू अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में गुरू के शुभ एंव कारक बनकर स्थित रहने से शत्रुनाश, अनेक प्रकार से धन लाभ, घर में निरंतर शुभ कार्य सम्पन्न होते है। जातक का मन ईश्वर आराधना में लगता है, परंतु कान में कष्ट एंव क्षय रोग का खतरा बना रहता है। गुरू के पीडित होने पर ऐसे अनेक कष्ट प्राप्त हो सकते है, जिसके विषय में व्यक्ति ने सपने में भी नहीं सोचा होता।

सूर्य में शनि अन्तर्दशा फलः-

सूर्य में शनि की अन्तर्दशा अत्यधिक खर्चीली रहती है, जिसकी पूर्ति के लिये कर्ज तक लेना पडता है। गुरू, पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्ति की मृत्यु, पुत्र वियोग, घरेलू वस्तुओं का नाश एंव पूर्ण गन्दगी बनी रहती है। शारीरिक रूप से भी व्यक्ति गन्दा रहता है। जातक के जीवनसाथी को भी कष्ट सहना पडता है। उसे वात एंव पित्त संबंन्धित कष्ट सताते है।

सूर्य में बुध अन्तर्दशा फलः-

इस अवधि में व्यक्ति फोडे-फुन्सी, चर्म रोग, कुष्ठ रोग तथा पीलिया के साथ कमर दर्द, पेट व वात, पित्त तथा कफ से पीडित रहता है।

सूर्य में केतू अन्तर्दशा फलः-

व्यक्ति को मित्र वर्ग से धोखा अथवा विछोह या मित्र की मृत्यु का सामना करना पड सकता है। अपने लोगों से विशेषकर अपने परिवार के लोगों से विरोध अथवा झगडा बना रहता है। शत्रु हानि, धन का नाश, गुरू तुल्य व्यक्ति रोग ग्रस्त रहता है। जातक के सारे शरीर में कष्ट बना रहता है। इस समय अनेक प्रकार से हानि, अपमान एंव मानसिक कष्ट की संभावना बनी रहती है।

सूर्य में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

जातक के लिए यह दशा भी शुभ नहीं रहती। इसमें जातक के शरीर में कष्ट, मकान व भोजन में कमी बनी रहती है। साथ ही जीवनसाथी भी कष्ट में रहता है। यहां आप सोच सकते है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति को भोजन की कमी कैसे हो सकती है? तो आप भोजन में कमी को इस रूप में समझ सकते है कि कोई सम्पन्न व्यक्ति अन्य कारण से समय पर भोजन नहीं कर पाता अथवा कोई रोग इसका कारण बन सकता है।

➢ चन्द्र संबंधी विशेष रोग

चन्द्रमा अत्यधिक तीव्र गति से भ्रमण करने वाला उपग्रह है। चन्द्रमा के पापी होने की स्थिति में असाध्य रोग नहीं होते। यद्यपि चन्द्रमा जब गोचर में अर्थात् स्वराशि से 1, 3, 6, 7, 10 व 11वें भाव में भ्रमण करते है तब प्रायः शुभ प्रभाव ही प्रदान करते है। इस समय वह रोगों को रोकने की विशेष शक्ति रखते है। इस गोचर के साथ चन्द्र शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि से कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि तक बली रहने के कारण शुभ फल ही प्रदान करते है।

यद्यपि ज्योतिष की दृष्टि में चन्द्रमा चाहे गोचर के हों अथवा जन्मकुंडली में 4, 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो निश्चित ही रोग कारक बनते है। चन्द्रमा के पापी अथवा पीडित होने की स्थिति में जातक को खांसी, जुकाम, फेंफडों के रोग, प्लूरसी, मूर्च्छा, मन्दाग्नि, स्त्रियों में मासिक धर्म की अनियमितता, दमा, लकवा, पीलिया, गर्भ अथवा गर्भपात, गुप्त रोग, त्वचा रोग, पेट के रोग, रक्त विकार तथा मानसिक रोग का सामना करना पडता है।

प्रत्येक राशिस्थ चन्द्रकृत रोग

मेष राशि में:-

इस राशि में चन्द्रमा से मानसिक कष्ट, वीर्य विकार एंव नेत्रों से संबन्धित रोग अधिक परेशान करते है। यदि केतु की युति भी हो तो सिर में चोट लगने की संभावना रहती है। इसके कारण व्यक्ति को जीवनपर्यन्त पीडा बनी रहती है। राहू की युति होने पर व्यक्ति मद्यपान के कारण कष्ट उठाता रहता है।

वृष राशि में:-

इस राशि में चन्द्र होने से मुख रोग, गले के विकार, घाव, आधाशीशी का दर्द जैसे रोग सताते है। बुध भी यदि पीडित अथवा पापी स्थिति में हो तो जातक को वाणी विकार भी हो सकता है।

मिथुन राशि में:-

मिथुन राशि में चन्द्र के रहने पर फेफडों के रोग, स्त्रियों में वक्ष कैंसर, दमा, टी.बी. एंव वात विकार जैसे रोग उत्पन्न होते है। इस योग के साथ यदि द्वितीय भाव में कोई पापी ग्रह हो, तो पडोसी से सदैव मानसिक कष्ट उठाना पडता है।

कर्क राशि में:-

इस राशि में चन्द्र हृदय संबंधी रोग, लीवर, कैंसर अथवा हैपेटाइटिस, वीर्य विकार जैसे रोग देता है। यदि सूर्य भी कर्क राशि में हो तो जातक दुबले-पतले शरीर और सदैव रोग ग्रस्त ही बना रहता है। जातक को क्षय जैसे असाध्य रोग का भी सामना करना पड सकता है।

कन्या राशि में:-

इस राशि में चन्द्र के होने पर कोष्ठबद्धता, वीर्य विकार, आंतों का कैंसर अथवा प्लीहा रोग होता है। यदि बुध भी पीडित हो तो जातक शीघ्रपतन, गुप्त रोग अथवा नपुंसक (इन्पोटेंसी) तक का सामना करता है।

तुला राशि में:-

इस राशि का चन्द्र त्वचा रोग के साथ मूत्र संस्थान के रोग भी देता है अथवा जातक को मूत्राशय कष्ट से परेशान रखता है। यदि शुक्र भी पीडित अथवा पाप पीडित हो तो मूत्र के साथ वीर्य रोग भी रहता है।

वृश्चिक राशि में:-

इस राशि में चन्द्र गुदा रोग, मल-मूत्र निष्कासन संबंधी कष्ट, भगन्दर, क्षय एंव स्नायु विकार जैसे रोग देता है।

धनु राशि में:-

इस राशि में चन्द्र के रहने से वक्षस्थल के रोग, रक्त विकार, कमर से निचले हिस्से में सदैव पीडा बनी रहती है। यदि इसके साथ शनि भी पीडित हो तो लकवा तक हो सकता है।

मकर राशि में:-

इस राशि का चन्द्र जातक को अस्थि रोग अवश्य देता है, विशेषकर अस्थि जोडों के रोग। साथ में सूर्य के पीडित होने पर कुष्ठ रोग तथा जल्दी-जल्दी अस्थि भंग का खतरा बना रहता है।

कुंभ राशि में:-

कुंभ का चन्द्र जातक को स्नायु विकार, सांस में अवरोध, घाव का देर से भरना और रक्त विकार देता है। इस चंद्र पर मंगल की क्रूर दृष्टि होने पर कान की शल्य क्रिया का योग बनता है, विशेषकर बायें कान का ऑपरेशन कराना पड सकता है।

मीन राशि में:-

इस राशि में चन्द्र रक्त विकार अधिक देता है, चाहे वह धमनी की समस्या हो अथवा अन्य। यदि द्वादश भाव भी दूषित हो तो जातक अनिद्रा रोग से पीडित रहता है।

चन्द्रमा संबंधी विशेष रोग

ज्योतिष शास्त्र में 'चन्द्रमा' को मन का कारक कहा गया है। अतः यह स्वंय ही मानसिक रोग देता है। यद्यपि अन्य ग्रह की युति हो तो अन्य रोग भी प्रदान करता है। यदि जातक की जन्मकुंडली में चन्द्रमा पापी अथवा पीडित बनकर किसी अशुभ भाव में स्थित हो तो निम्न रोग दे सकता है:-

नेत्र संबंधी रोग:-

- जन्मकुंडली में चन्द्र और सूर्य दोनों के पीडित होने की स्थिति में दोनों नेत्र जबकि केवल चन्द्रमा के पीडित होने पर एक नेत्र में कष्ट होता है। कमजोर चन्द्र के साथ द्वादश भाव में बुध अथवा शनि हो, तो बायें नेत्र में कष्ट रहता है। यदि इस योग को मंगल देख रहा हो तो नेत्र का ऑपरेशन तक कराना पडता है।
- छठवे भाव में चन्द्रमा तथा 8 एंव 12 वें भाव में चन्द्र के साथ मंगल एंव शनि हो तो केवल वात रोग से अंधापन पैदा होता है।
- किसी भी भाव में चन्द्र व राहू हो तो किसी अन्य भाव में तीन पापी ग्रह हों, तो निश्चित ही जातक अंधा होता है।
- द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र के साथ कोई पापी ग्रह बैठा हो तो भी जातक अंधा हो सकता है।
- जन्मकुंडली के किसी भी भाव अथवा राशि में चन्द्रमा के साथ सूर्य की युति बनी हो तो क्षय जैसे जीर्ण रोग की संभावना रहती है।
- सातवें भाव में चन्द्र और शनि पाप मध्यस्थ में आ जाए तो भी क्षय जैसे असाध्य रोग के साथ पीलिया रोग की संभावना रहती है।
- चन्द्र व सूर्य में राशि परिवर्तन योग बना हो तो रक्त अथवा पित्त विकार के साथ क्षय रोग हो सकता है।
- पीडित लग्नेश के साथ चन्द्रमा छठवे भाव में स्थित हो तो भी क्षय जैसे असाध्य रोग एंव हृदय रोग की संभावना रहती है।
- जब प्रथम भाव में चन्द्रता के साथ पाप ग्रह स्थित रहे तो **'सफेद कुष्ठ'** की संभावना रहती है।
- जब मेष अथवा वृष राशि में शनि एंव मंगल चन्द्रमा के साथ बैठे, तो भी श्वेत कुष्ठ रोग की संभावना रहती है।
- जब जन्मकुंडली में बलहीन चन्द्रमा के साथ राहू की युति बनी हो तो **'मिरगी'** जैसे रोग की आशंका रहती है। मेष राशि, लग्न व लग्नेश के पीडित होने पर भी इस रोग की संभावना रहती है।
- प्रथम भाव में शुक्र तथा छठवे भाव में चन्द्र के स्थित रहने पर भी मिरगी हो सकती है।
- शुक्र व चन्द्रमा केन्द्र में तथा अन्य पापी ग्रह आठवें भाव में हों तो भी मिरगी की संभावना रहती है।
- चन्द्रमा के पापी ग्रह की राशि में रहने अथवा युति बनाने से मानसिक रोगों की संभावना बनी रहती है।

चन्द्र महादशा के फल

यदि जन्मकुंडली में चन्दमा पापी, अकारक अथवा पीडित होकर बैठे हो तो उसकी दशाऽन्तर्दशा में अग्रांकित फल प्राप्त होते है। यद्यपि चन्द्र महादशा के फल देखने से पहले जन्मकुंडली का भली प्रकार से अध्ययन करना चाहिए। चन्द्रमा के

साथ किसी ग्रह की युति अथवा दृष्टि से निश्चित बदलाव आते है। शुभ ग्रह, लग्नेश अथवा कारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि से चन्द्रमा के अशुभ फल में कमी आती है। इसी प्रकार चन्द्र छठवें, सातवें, आठवें तथा बारहवें भाव में विशेष अशुभ फल प्रदान करते है। यद्यपि चन्द्रमा पूर्ण पापी अथवा पीडित होने पर दशाऽन्तर्दशा के दौरान निम्न फल प्रदान करते हैः-

लग्नस्थ चन्द्रमा अनेक प्रकर के कष्ट देता है। दूसरे भाव में यह राजदण्ड का भय प्रदान करते है। पांचवे भाव में भी राजदण्ड के साथ अग्नि भय या कोई बडी चोरी का संताप दे सकते है। छठवे भाव में आग से कष्ट, जल से मृत्यु तुल्य कष्ट तथा मूत्र संस्थान के रोग से पीडित रखते है। सातवें भाव में चन्द्रमा से एपिन्डेंक्स का ऑपरेशन कराना पड सकता है अथवा जीवनसाथी के कारण मानसिक संताप बना रहता है। आठवें भाव के चन्द्रमा से जो कष्ट मिलें वही कम रहते है।

चन्द्र महादशा अन्तर्गत अन्य ग्रहों के अन्तर्दशा संबंधी फल

चन्द्र महादशा के उपरोक्त फल महादशा काल में कभी भी घटित हो सकते है, परंतु अन्य ग्रह की अन्तर्दशा में निम्न फल प्राप्त होते है। यथा-

चन्द्र में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में चन्द्रमा यदि उच्च अथवा स्वक्षेत्री अथवा 1, 5, 9 अथवा 11 वें भाव अथवा भाग्येश के साथ हो तो वह जातक को सभी प्रकार का सुख, मान-सम्मान, आर्थिक लाभ, कन्या संतान की प्राप्ति अथवा वैवाहिक सुख की प्राप्ति कराते है। यद्यपि चन्द्र के पापयुक्त, नीच अथवा शत्रु क्षेत्री रहने या 6 अथवा 8 वें भाव में रहने पर जातक को कई तरह की हानि उठानी पडती है। इसके अतिरिक्त राजदण्ड के साथ कारावास का भय, धन हानि, स्थान परिवर्तन, मानसिक संताप अथवा जीवन साथी से विछोह का सामना करना पड सकता है।

चन्द्र में मंगल अन्तर्दशा फलः-

जातक की जन्मकुंडली में यदि मंगल 1, 4, 5, 7, 9 या 10 वें भाव में हो तो इस समय जातक को राज्य से सम्मान, सौभाग्यादि में वृद्धि, अपने क्षेत्र में सफलता, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। यदि मंगल व चन्द्र दोनों ही उच्च अथवा स्वक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ फल प्राप्त होते है। यद्यपि मंगल अथवा चन्द्र के 6, 8 अथवा 12वें भाव में बैठने से विपरीत फल मिलते है। इससे चन्द्र की अशुभता बढती है। इसके साथ ही भाइयों से विरोध अथवा विछोह, रक्त विकार, अग्नि एंव पित्त भय, शत्रु कष्ट व चोरी से हानि उठानी पड सकती है। इस काल में धन के साथ मान-सम्मान की हानि भी उठानी पडती है।

चन्द्र में राहू अन्तर्दशा फलः-

लग्न से राहू 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में होने पर सभी प्रकार का भय, शत्रु पीडा, भाइयों व मित्रों से विरोध, आर्थिक क्षेत्र में हानि एंव अपमान तथा अन्य तरह के दुःख मिलते है। यद्यपि राहू के 3, 6,10 अथवा 11 वें भाव में होने अथवा शुभ दृष्टि रहने पर शुभ फलों में वृद्धि होती है। राहू यदि चन्द्र से 6, 8 अथवा 12 वें स्थान पर बैठे हों तो अत्यधिक अशुभ फल मिलते है, जिसमें संतान से कष्ट, जीवनसाथी को कष्ट, स्थान परिवर्तन, किसी भी प्रकार की अचानक हानि अथवा बीमारी, भोजन विषाक्तता आदि शामिल है। चन्द्र से राहू के केन्द्र में होने पर शुभ फल ही प्राप्त होते है।

चन्द्र में गुरू अन्तर्दशा फलः-

लग्न से गुरू 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में हों अथवा उच्च, स्वराशि में स्थिति हो, तो निश्चित ही राज्य से मान-सम्मान, आर्थिक लाभ, संतान प्राप्ति के साथ अन्य प्रकार के सुख प्राप्त होते है। जातक का स्वभाव धर्मिक एंव दान-धर्म की ओर लगा रहता है। यदि गुरू चन्द्र से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में अथवा नीच, शत्रु क्षेत्री हो तो अशुभ फल अधिक मिलते है। संतान अथवा गुरू समान किसी बुजुर्ग की हानि, स्थान परिवर्तन, दुःख व नित्य नये क्लेश का सामना करना पडता है।

चन्द्र में शनि अन्तर्दशा फलः-

इस दशाऽन्तर्दशा के फल में मतान्तर है। कुछ के अनुसार यह दशा कष्टकारी रहती है। इससे जातक को रोग बहुत सताते है। साथ ही संतान एंव जीवनसाथी के साथ मित्र भी कष्ट पाते है। कोई बहुत बडी विपत्ति का सामना करना पडता है। यदि शनि मारक प्रभाव रखते हो तो मृत्यु भी हो सकती है। जबकि दूसरे मत के अनुसार शनि यदि 1, 4, 5, 7, 9, 10 अथवा 11 वें भाव, उच्च, स्वक्षेत्री अथवा शुभ ग्रह से युति अथवा दृष्ट होकर बैठे तो संतान व धन की प्राप्ति होती है। साथ ही नये मित्र बनते है व व्यापार में लाभ होता है। यद्यपि शनि चन्द्र अथवा जन्मकुंडली में 2, 6, 8, 12 वें भाव में हो अथवा नीच, शत्रु क्षेत्री अथवा किसी अन्य पापी ग्रह से युत या दृष्ट होकर स्थित तो किसी हथियार से चोट अथवा अन्य कष्ट

भोगने पडते है। किसी तीर्थ स्थल पर स्नान का योग भी बनता है। यह योग किसी शुभ अथवा अशुभ कारण से भी बन सकता है।

चन्द्र में बुध अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में बुध के अशुभ स्थान पर होने से अशुभ फल ही प्राप्त होते है, वैसे शुभ फल ही प्राप्त हो सकते है। शुभ फलों में आर्थिक लाभ के साथ वाहन सुख प्राप्त होता है। इसके अलावा आभूषण प्राप्ति, अन्य से सुख प्राप्ति अथवा व्यक्ति का ध्यान ज्ञान प्राप्ति व धर्म कार्य में लगता है। यदि बुध 1, 4, 5, 7, 9, 10 अथवा 11 वें भाव में हो तो राज्य से सम्मान, ज्ञान वृद्धि, संतान प्राप्ति, व्यवसाय में अत्यधिक लाभ, वैवाहिक कार्य सम्पन्न होता है। यद्यपि चन्द्रमा से बुध 2 अथवा 11 वें स्थान में हो, तो अविवाहित रहने पर निश्चित ही विवाह की संभावना बनती है। शरीर पूर्णतः निरोगी बना रहता है। किसी सभा की सदस्यता भी मिल सकती है। बुध यदि चन्द्र से 6, 8 अथवा 12 वें भाव अथवा नीच अथवा शत्रु क्षेत्री हो तो स्वंय के परिवार के सदस्य कष्ट में रहते है। भवन अथवा भूमि की हानि उठानी पडती है। कारावास का योग भी निर्मित हो सकता है। बुध यदि मारकेश भी हो अथवा द्वितीय या सप्तम् भाव के स्वामी हो तो मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट उठाना पडते है।

चन्द में केतु अन्तर्दशा फलः-

इस दशा पर भी विभिन्न मत् प्राप्त होते है। प्रथम मत के अनुसार यह काल जातक के लिए कष्टकारी रहता है। इससे जातक को अचानक रोग प्राप्त होते है। उसके जीवन में समस्याएं आती है। जातक को जलाघात का भी भय रहता है। भाइयों को भी कष्ट अथवा मतभेद उभर सकते है। व्यक्ति को उसके नौकर भारी हानि दे सकते है। जबकि दूसरे मत् के अनुसार केतु के 1, 3, 4, 5, 7, 9, 10 व 11 वें भाव में रहने पर आर्थिक लाभ, सुख में वृद्धि तथा जीवनसाथी व संतान से सुख मिलता है। यद्यपि चन्द्र से केतु के 5, 9 अथवा 11 वें भाव में हो तो सुख की मात्रा कम रहती है, परंतु धन की प्राप्ति अवश्य है। केतु यदि पाप ग्रह से युत अथवा दृष्ट होकर अथवा चन्द्र से त्रिक भाव में हो, तो परिवार में कलह बनी रह सकती है।

चन्द्र में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में जातक को सभी सुख प्राप्त होते है। यदि शुक्र केन्द्र, त्रिकोण अथवा एकादश भाव में स्थित है या उच्च राशि अथवा स्वक्षेत्री है, तो व्यक्ति को बडे से बडे सुख की प्राप्ति होती है। व्यक्ति राज्य शासन में उच्च पद प्राप्त करने के साथ स्त्री वर्ग में भी लोकप्रिय रहता है। ऐसा जातक अधिकार सम्पन्न होता है। स्त्री व संतान सुख भी मिलते है। उसे नये निवास की प्राप्ति होती है। शरीर भी निरोगी बना रहता है। इसमें भी यदि शुक्र के साथ चन्द्र की युति बनी हो तो सोने में सुहागा वाली बात चरितार्थ होती है। अर्थात् जातक को देह एंव मानसिक सुख के साथ शारीरिक सुख भी प्राप्ति होते है। उसके सुख-सम्पत्ति में वृद्धि, जलयान के माध्यम से विदेश यात्रा, आभूषण प्राप्ति होती है। मंगल की दृष्टि होने पर भूमि से लाभ जबकि बुध की दृष्टि होने पर व्यापार में लाभ मिलता है। यद्यपि शुक्र अथवा चन्द्र के नीच, शत्रु क्षेत्री अथवा अस्तगत होकर स्थित रहने पर उपरोक्त फलों का विपरीत प्रभाव होता है।

मैंने अपने शोध के दौरान देखा है कि शुक्र अथवा चन्द्र के नीच, शत्रु क्षेत्री अथवा अस्तगत होकर स्थित रहने पर पूर्ण अशुभ फल नहीं मिलते, अपितु पूर्ण शुभ फल मिलने के स्थान पर 40% शुभ फल ही प्राप्त होते है, जबकि चन्द्र से शुक्र के 6, 8 अथवा 12 वें भाव में होने एंव किसी पापी ग्रह से दृष्ट रहने पर जातक के परदेश में रहने से कष्ट होता है। इस स्थिति में शुक्र यदि दूसरे अथवा सातवें भाव का स्वामी हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट उठाने पड जाते है।

चन्द्र में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

यह दिशा व्यक्ति के लिए लाभकारी रहती है। इस दशा में जातक को राज्यपक्ष से सम्मान मिलता है। व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में साहस से कार्य करता है। रोग मुक्ति मिलती है। शत्रु पराजित होते है। यद्यपि इस दौरान वात एंव पित्त जनित रोग अवश्य सताते है। सूर्य यदि उच्च, स्वक्षेत्री अथवा 1, 4, 5, 9 व 10 वें भाव में हो तो आर्थिक लाभ, पारिवारिक सुख, भूमि लाभ होता है। रूका हुआ सरकारी कार्य पूर्ण होता है। इस दशा में संतान की प्राप्ति अथवा संतान के किसी कार्य से सम्मान की प्राप्ति होती है। लेकिन इसके विपरीत यदि चंद्र से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में सूर्य हो तो नेत्र संबंधी कष्ट, परदेश में जाना पड सकता है और वहां कष्ट उठाना पडता है। इस समय राजदण्ड अथवा किसी चोरी का भी भय रहता है। जबकि सूर्य के दूसरे अथवा सातवें भाव का स्वामी बनने पर मृत्यु तो नहीं होती, परंतु निश्चित ही मृत्यु तुल्य कष्ट उठाने पडते है।

➢ मंगल संबंधी विशेष रोग

मंगल अग्नि तत्व कारक एंव उग्र स्वभाव का ग्रह है। स्वंय की अशुभ स्थिति में होने पर किसी का भी विध्वंस कर देना इसका स्वभाव है। क्योंकि मंगल को पापी ग्रहों में शामिल किया गया है। मंगल गोचर में जब भी त्रिषडाय भाव अर्थात् 3, 6 व 11 भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में अर्थात् 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10 व 12 वें भाव में भ्रमण करता है, तब निश्चित ही रोग कारक बनता है। अग्नि ग्रह होने के कारण मंगल अग्नि तत्व से संबन्धित रोग देता है। जैसे रक्त विकार, मस्तिष्क विकार, मूत्र विकार, निमोनिया, प्लेग, सूजन, गुदा रोग, शस्त्राघात, गर्भपात, रक्त स्त्राव, टाइफाइड, शल्य क्रिया तथा कोई भी अन्य गर्म प्रकृति का रोग। मंगल विशेषकर कर्क, कन्या अथवा मीन राशि में रोग कारक सिद्ध होता है।

प्रत्येक राशिस्थ मंगलकृत रोग

मेष राशि में फलः-

इस राशि में मंगल होने से जातक को प्रायः मानसिक विकार, कुष्ठ रोग, शिरोरोग, गर्मी के कारण होने वोले फोडे-फुन्सी, सांस के रोग, सिर में चोट जन्य रोग, अपस्मार तथा गुदा रोग, मुख्यतः बवासीर, भगन्दर और मल अवरोध के कारण कष्ट उठना पडता है।

वृष राशि में फलः-

मंगल के वृष राशि में होने पर वाणी विकार अर्थात् स्वर में विकृति हो सकती है। इस राशि में लगनस्थ मंगल कंठ एंव मुख रोग के साथ श्वास में अवरोध तथा गुदा रोग का कारण बनता है।

मिथुन राशि में फलः-

मंगल के इस राशि में होने पर शल्य क्रिया अवश्य होती है। मिथुन लग्न में मंगल अशुभ प्रभाव के रूप में गर्दन से लेकर छाती तक अनेक रोग से पररेशान रखते है। इसमें दोनों बांहों के साथ फेंफडों के कष्ट भी सम्मिलित है। यदि सूर्य भी पापी अथवा पीडित हो तो अस्थि भंग के कारण शल्य क्रिया होती है। रोग बिगडने पर रक्त विकार एंव खॉसी, जुकाम अथवा दमा का रोग सताता है।

कर्क राशि में फलः-

इस राशि में मंगल अधिक मैथुन से कष्ट अथवा दौर्बल्य का कारण बनता है। नेत्रों में कष्ट व दांतों में भी विकार बने रहते है अथवा दांत उखडवाने पड जाते है। कर्क लग्नस्थ मंगल शरीर में तरल की कमी (डीहाइड्रेशन), खॉसी, जुकाम, दमा, डिफ्थीरिया, प्लूरसी, फेफडों में पानी पडना अथवा सूखना तथा अनेक संक्रामक रोगों का कारण बनता है। चन्द्र की युति होने पर हृदय रोग अथवा हृदयाघात (हार्ट अटैक) की पूर्ण संभावना रहती है।

सिंह राशि में फलः-

इस राशि में मंगल पेट के रोग विशेषकर अन्दर के कष्ट से श्ल्य क्रिया, आंतों में सूजन, लिवर में संक्रमण के साथ गर्भपात तक की आशंका देता है। सिंह लग्नस्थ मंगल का जातक काम वासना से पीडित होकर रोगों को आमन्त्रण देता रहता है। यद्यपि जातक इस स्थिति में शीघ्र ही रोग मुक्त भी हो जाता है।

कन्या राशि में फलः-

इस राशि में मंगल के होने पर अग्नि जैसे रोग सताते है। जातक के शरीर में पानी की कमी हो सकती है अथवा आंतों में मल जमा होने से भयानक कब्ज बनी रह सकती है या बवासीर, भगंदर जैसे रोग पैदा हो सकते है।

तुला राशि में फलः-

इस राशि का मंगल व्यक्ति को उदासीन रखता है। जातक कुछ समय के लिए वासना से अवश्य पीडित रहता है। यद्यपि कुछ समय उपरांत जातक की कामवासना एकदम शांत हो जाती है। यह मूत्र संस्थान संबंधी रोग भी देता है। शुक्र भी पीडित अथवा पापी हो तो मूत्र के साथ वीर्य रोग भी सताते है। तुला लग्नस्थ मंगल ऐसे रोग देता है जिसमें जातक अत्यधिक काम-वासना से पीडित होकर स्वंय ही यौन रोगों का आमन्त्रण करता है।

वृश्चिक राशि में फलः-

इस राशि में मंगल गुदा के रोग, मल-मूत्र निष्कासन में कष्ट, भगन्दर तथा अग्नि से कष्ट के रोग देता है। इस लग्न में भी मंगल रतिरोग एंव गुदा रोग ही अधिक प्रदान करता है।

धनु राशि में फलः-

इस राशि में मंगल हो तो जातक को अनेक प्रकार के रोगों का सामना करना पडता है। इसमें अचानक चोट लगना, फेफडों के रोग, रक्त मज्जा के रोग व अस्थि ज्वर मुख्य है। इस लग्नस्थ मंगल के कारण अचानक दुर्घटना घटित होना, अग्नि काण्ड अथवा विस्फोट एंव खेल-कूद में चोट आदि लगने का खतरा प्रायः बना ही रहता है।

मकर राशि में फलः-

इस राशि का मंगल आमतौर पर त्वचा रोग, संधि स्थल के कष्ट, शरीर में अधिक गर्मी, वात विकार, कफ विकार, श्वास रोग तथा शल्य क्रिया के बाद के कष्ट देता रहता है। इस लग्न में अग्नि काण्ड, मधुमेह अथवा पुराना घाव उभर आना जैसे रोग बार-बार सताते रहते है।

कुंभ राशि में फलः-

कंभ राशि का मंगल भी त्वचा विकार के साथ पक्षाघात दे सकता है। इस लग्न में मंगल रक्त विकार, बायें कान में कष्ट तथ संसर्ग द्वारा संक्रामक रोग देता है।

मीन राशि में फलः-

इस राशि में मंगल रक्त विकार अधिक देता है, जैसे उच्च्व रक्तचाप, धमनी में अवरोध, हृदय संबंधी कष्ट, खून में हीमोग्लोबिन की कमी, किसी भी व्यसन से हानि, ऊँचे स्थान से गिरना आदि। यदि मीन राशि का मंगल द्वादश भाव में दूषित हो तो संसर्ग से कष्ट देता रहता है। इस लग्न में मंगल किसी भी प्रकार के नशे के आदी होने से रोग तथा उसके अत्यधिक सेवन के कारण होने वाले रोग देता है।

मंगल से होने वाले विशेष रोग

लग्न में मंगल हो साथ ही चन्द्रमा 4, 7 अथवा 8 वें भाव में बैठा हो तो व्यक्ति को नेत्र रोग अथवा नेत्र पीडा, उच्च्व रक्तचाप, सिरदर्द अथवा सिर के रोग सताते है।

इसी प्रकार मंगल एंव चन्द्र जब छठवे भाव में एक साथ बैठे, तो व्यक्ति जल्दी-जल्दी पीलिया रोग से पीडित होता रहता है। चन्द्र-मंगल की युति होने पर व्यक्ति को रक्त की कमी, ज्वर का बिगडना, शरीर में झटके लगना तथा बारबार दुर्घटना का सामना करना पडता है।

मंगल के छठवे, रोग भाव में स्थित रहने पर निम्न रोग परेशान करते है। छठवा भाव रोग भाव कहलाता है, अतः जब मंगल इस भाव में अलग-अलग राशिस्थ रहता है, तो निम्न रोग प्रदान करता हैः-

मेष राशि मेंः-

छठवे भाव में मंगल यदि मेष राशि में हो तो जातक शिरोरोग से कष्ट उठाता है। ऐसे जातक को वाहन चालने में पर्याप्त सावधानी रखनी चाहिए। इस योग से कोमा (गहरी बेहोशी) में जाने का योग बनता है। इसके अतिरिक्त दिमाग की सूजन अथवा बुखार एंव नेत्र पीडा भी हो सकेती है।

वृष राशि मेंः-

मंगल के छठवे भाव एंव वृष राशि में स्थित रहने से श्वसन तंत्र प्रभावित होता है। इससे श्वास नलिका में सूजन अथवा जलन के साथ मूत्र संस्थान में संक्रमण की संभावना रहती है।

मिथुन राशि मेंः-

इस योग में मंगल फेफडों को अत्यधिक प्रभावित करता है। मवाद पडना जैसा कष्ट देता है, साथ ही रक्त विकार, पेट बढना, खॉसी, कफ, सांस के समय खर-खर की आवाज आना तथा दोनों हाथों में सूजन उतरना भी हो सकता है।

कर्क राशि मेंः-

यह योग स्त्री जातक के लिए अधिक कष्टकारी होता है, जिसमें रक्तस्त्राव, श्वेत प्रदर अथवा अन्य स्त्री रोगों से पीडा बनी रहती है। इनके साथ रक्त विकार, वात-पित्त कष्ट, अपच आदि कष्ट भी रहते है।

सिंह राशि मेंः-

यहां पर सिंह राशि में मंगल उच्च्व रक्तचाप, छाती में जलन, पेट के आन्तरिक हिस्से में संक्रमण तथा उदासीनता जैसे रोग देता है।

कन्या राशि मेंः-

कन्या राशि का मंगल छठवे भाव में आंत्र के रोग देता है। इसमें मुख्यतः आंतों की सूजन अथवा संक्रमण रोग शामिल है। इसके साथ रक्त अतिसार, शरीर में पानी की कमी तथा फूड पॉयजनिंग जैसे कष्ट भी हो सकते है।

तुला राशि में:-

इस राशि व भाव का मंगल जातक को प्रायः मूत्र संस्थान के रोग तथा वीर्य विकार देता है।

वृश्चिक राशि में:-

इस योग में स्त्री वर्ग के लिए अधिक कष्ट उठाना पडता है। स्त्रियों में इसके कारण रक्त स्त्राव, प्रसूति संक्रमण तथा मासिक चक्र में अनियमितता के कारण कष्ट बने रहते है। जबकि अन्य रोगों में गुदा संबंधी रोग, रक्त विकार एंव गति में कष्ट, मूत्र संबंधी विकार शामिल रहते है।

धनु राशि में:-

इस राशि व भाव में भी मंगल पीलिया अथवा यकृत रोग, मलोत्सर्ग में कष्ट, गुदा रोग, फेफडों का संक्रमण, शीघ्रपतन, काम वासना का पतन तथा स्त्री वर्ग से दूर रहना जैसे रोग प्रदान करता है।

मकर राशि में:-

छठवे भाव व मकर राशि का मंगल जातक को त्वचा रोग, जोडों का दर्द, आमाशय संबंधी विकार, गैस की समस्या तथा पिंडली अथवा घुटने में चोट का भय देता है। यद्यपि मेरे अनुभव में ऐसा आया है कि शनि भी इस भाव पर पापी दृष्टि रखे तो निश्चित ही जातक को दायें घुटने पर चोट से विकलागंता आती है। इसका समय 8 से 36 वर्ष के मध्य रहता है। इस योग में जातक अपनी बीमारी से सहज ही मुक्त प्राप्त नहीं कर पाता।

कुंभ राशि में:-

इस योग में जातक का बुखार बिगड सकता है या उसे मौसमी बुखार से पीडा बनी रहती है। सूर्य के पीडित होने पर लकवा, अस्थि भंग अथवा हृदयाघात का खतरा बना रहता है। इस योग के दौरान भी रोग ठीक होने में अधिक समय लेते है।

मीन राशि में:-

छठवे भाव में मीन राशि का मंगल रक्त विकार अथवा रक्त की कमी के साथ छती का संक्रमण अथवा अन्य संक्रामक रोग तथा जलीय रोग प्रदान करता है।

मंगल महादशा का फल

यदि जन्मकुंडली में मंगल पापी, अकारक अथवा पीडित होकर स्थित है तो अपनी दशाऽन्तर्दशा के दौरान अग्रांकित फल प्रदान करता है। मंगल अधिकतर लग्न, चतुर्थ, सप्तमृ, अष्टमृ तथा द्वादश भाव में अशुभ फल देता है। यद्यपि मंगल के अशुभ फल का पूर्ण निर्णय मंगल की स्थिति पर निर्भर करता है। जैसे मंगल जन्मकंडली में उच्च, स्वक्षेत्री, कारक अथवा मूल त्रिकोण में हो तो यश, साहस के माध्यम से सफलताएं एंव आर्थिक लाभ प्रदान कराता है। जबकि पूर्ण रूप से पापी अथवा पीडित, अकारक होने पर इसकी महादशा के साथ इसकी अन्तर्दशा में निम्नानुसार फल प्राप्त होते है।

लग्नस्थ मंगल अपने कारक रोगों को अवश्य देता है। **मेष का मंगल** धन लाभ, यश के अतिरिक्त अग्नि कष्ट देता है। **द्वितीय भाव** में मुख रोग, नेत्र कष्ट एंव वाणी में तीव्रता व कटुता लाता है।

वृष राशि में मंगल शारीरिक कष्ट, किंतु किसी अन्य के माध्यम से धन लाभ व जनहित के कार्य करता है। तीसरे भाव में यह राज्य लाभ, भाई से सहयोग, संतान प्राप्ति जैसे फल देता है।

मिथुन राशि में यह खर्च में वृध्दि, पित्त व वायु विकार एंव कान में कष्ट देता है। चतुर्थ भाव में मंगल पद से मुक्ति देकर व्यर्थ-बेकार भटकाता है। इस योग में राजदण्ड, भाइयों से विरोध एंव अग्नि के साथ दुर्घटना भय भी रहता है।

कर्क राशि में मंगल धन लाभ किंतु क्लेश, परिवार से दूर रहना पडे। पंचम भाव में संतान हानि, मतिभ्रम, नेत्र व उदर कष्ट।

सिंह राशि में मंगल राज्य से लाभ के साथ अग्नि पीडा एंव शस्त्राघात से कष्ट देता है। व्यय भी अधिक होता है। रोग भाव में शत्रु वर्ग से हानि, अधिकार च्युत होना व स्त्री वर्ग से विरोध एंव मतभेद सहने पडते है।

कन्या राशि में मंगल भूमि लाभ, धन लाभ एंव पुत्र यश देता है। सप्तमृ भाव में जीवनसाथी का वियोग अथवा रोग, गुप्त व मूत्र संस्थान के रोग से कष्ट प्रदान करता है। यद्यपि चन्द्र की युति में अशुभ फल में कमी आती है।

तुला राशि में मंगल जीवनसाथी की हानि, आर्थिक हानि तथा मानसिक क्लेश देता है। अष्टमृ भाव में यह अशुभ फल अधिक तीव्रता से प्रदान करता है। अग्नि, विस्फोट, रक्तपात एंव दुर्घटना भय अधिक रहते है।

वृश्चिक राशि में मंगल दुर्धटना, अग्नि एंव शस्त्राघात का भय प्रदान करता है। नवम् भाव में यह योग धर्म कर्म में विघ्न-बाधाओं के अतिरिक्त स्थानान्तरण के बाद अवरोध देता है।

धनु राशि में यह राज्य लाभ, आर्थिक लाभ एंव धर्म में रूचि बढाता है। दशम् भाव में यह योग मान-सम्मान में कमी के अतिरिक्त व्यापार अथवा कर्म क्षेत्र में हानि, मातृ सुख में कमी के साथ, धन हानि, संतान कष्ट आदि देता है।

मकर राशि के मंगल से अधिकारों में वृद्धि एंव प्राप्ति, आभूषण, रत्नादि का लाभ व कार्य सिद्धि आदि फल प्राप्त होते है। एकादश भाव में यह आर्थिक लाभ, राज्य लाभ, शत्रुओं पर विजय प्रदान कराता है।

कुंभ राशि में अधिक व्यय, शुभ मानसिकता का अभाव व मानसिक चिंता बनाये रखता है। बारहवें भाव में यह आर्थिक हानि, शैय्या सुख में कमी, शल्य क्रिया का योग, राजदण्ड एंव भूमि-भवन की हानि देता है।

मीन राशि में मंगल ऋणु वृद्धि, त्वचा विकार एंव शारीरिक पीडा बनाये रखता है।

मंगल महादशा अन्तर्गत अन्य ग्रहों के फल

मंगल महादशा के उपरोक्त फल पूर्ण महादशा में कभी भी घटित हो सकते है, परंतु अग्रांकित फल अन्य ग्रह की अन्तर्दशा में प्राप्त होते है। इन फलों का निर्धारण भी मंगल के साथ अन्य ग्रह की अन्तर्दशा में उसके बलाबल एंव शुभाशुभ देखकर ही करना चाहिए। यथा-

मंगल में मंगल अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में मंगल यदि लग्नेश से युति बनाये अथवा 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में स्थित हो, तो निश्चित ही जातक को सुख वृद्धि, संतान लाभ एंव आर्थिक लाभ मिलता है। मंगल के उच्च अथवा स्वक्षेत्री रहने पर भूमि, भवन का लाभ मिलता है। यद्यपि 6, 8 अथवा 12 वें भाव में होने पर यह मूत्र संस्थान के रोग, शस्त्राघात, त्वचा संबंधी रोग एंव चोरी का भय देता है। यदि इसमें कुछ पापी प्रभाव अर्थात् पापी ग्रह की दृष्टि अथवा युति हो तो यह फल और अधिक भीषण रूप ले लेते है। मंगल के अकारक होने पर पित्त रोग अथवा इसके कारण रोग, भाइयों से विरोध, राजदण्ड, चोरी, अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि फल प्राप्त होते है। यद्यपि मेरा अनुभव यह है कि मंगल कारक हो तो व्यक्ति के शत्रु अधिक एंव बलशाली होते है, लेकिन फिर भी अन्त में विजय व्यक्ति की ही होती है। मंगल के मारक भाव का स्वामी होने पर अधिक कष्ट मिलते है।

मगंल में राहू अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में राहू यदि उच्च राशि, मूल त्रिकोण अथवा किसी शुभ ग्रह से युत, दृष्ट होकर अथवा 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10वें भाव में हो तो जातक को राज्य से लाभ, अचानक भूमि लाभ, प्रवास, परिवार सुख आदि फल प्राप्त होते है। इसके विपरीत यदि राहू लग्न अथवा मंगल से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो तो जातक को भूमि हानि, सर्प दंश से भय, राजदण्ड, त्रिरोग- वात, पित्त एंव कफ से कष्ट प्रदान करता है। किसी अन्य पापी ग्रह की दृष्टि होने पर जातक को जेल यात्रा भी हो सकती है। यहां पर मेरा अनुभव है कि राहू यहां भी अचानक लाभ या हानि देता है। यहां शुभ फल जातक को कम ही प्राप्त होते है। यदि राहू पाप ग्रस्त व मंगल अकारक बनकर स्थित है तो व्यक्ति को शास्त्राघात, अग्नि काण्ड, चोरी, शिरोरोग अथवा घर में किसी वृद्ध अथवा गुरू समान व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। राहू पर भी मारक ग्रह की दृष्टि अथवा युति हो तो निश्चित ही मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त होते है।

मंगल में गुरू अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में मगंल-शनि दोनों ग्रहों के अच्छी स्थिति रहने पर इस दशाकाल में प्रायः शुभ फल ही अधिक मिलते है। मेरी शोध का निष्कर्ष भी यही है कि यदि यहां एक ग्रह भी शुभ एंव बली बनकर स्थित है तो दशाफल अच्छा रहती है। जन्मकुंडली के इन भावों में गुरू होने पर और अधिक शुभ फल प्राप्त करने के लिये गुरू संबंधी कुछ उपाय भी आवश्यक हैं। मैंने देखा है कि गुरू इन स्थानों में नैसर्गिक रूप से कारकत्व तथा केन्द्राधिपित दोष से पीडित होते है, इसलिए जितना फल वह देना चाहते है उतना फल दे नही पाते। यहां जन्मकुंडली में गुरू उच्च, मूलत्रिकोण अथवा लग्न या मंगल से 1, 4, 5, 7, 9, 10,11 भाव में हो तो जातक को यश वृद्धि, धन लाभ, कर्म क्षेत्र अथवा व्यापार में लाभ, आरोग्य लाभ, राज्य से लाभ, सम्पत्ति में वृद्धि तथा परिवार में मांगलिक कार्य प्रदान करते है। यद्यपि गुरू जब मंगल अथवा जन्मकुंडली में 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो अथवा नीच, शत्रुक्षेत्री, पापयुक्त अथवा दृष्ट हो तो निश्चित ही आर्थिक हानि, चोरी आदि से नुकसान, कफ रोग, बडे भाई से वियोग, कान में कष्ट जैसे फल प्रदान करते है।

मंगल में शनि अन्तर्दशा फलः-

यह दशा जातक को मिश्रित फल देने वाली होती है। मतान्तर से इस दशा को अत्यधिक कष्ट प्रदान करने वाला माना गया है। जन्मकुंडली में यदि शनि उच्च, मूलत्रिकोण अथवा स्वक्षेत्री हो अथवा 1, 4, 5, 7, 9 या 10 वें भाव में हो, तो वह सत्ता सुख, यश वृद्धि जैसे फल देते है। किंतु शनि मंगल अथवा लग्न से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में अथवा शत्रु क्षेत्री, नीच या पापयुक्त अथवा दृष्ट हो, तो धन सम्पत्ति का नाश करने वाले, संतान कष्ट, शरीर कष्ट, जेलयात्रा एंव परिवार की चिंता जैसे फल प्रदान करते है। शनि मारक भाव के स्वामी हो अथवा मारकेश के साथ युति, दृष्टि हो तो भी मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा मारकेश काल चल रहा हो, तो मृत्यु तक देते है। मतान्तर से कुछ विद्वान इस दशा में व्यक्ति को अनेक प्रकार के कष्ट, चोरी, आर्थिक हानि अथवा वायु के माध्यम से हानि की बात करते है। व्यक्ति अपनों से बुजुर्ग एंव छेटों पर आने वाली विपत्ति से स्वंय कष्ट में रहता है। शत्रु धन-सम्पत्ति छीन लेते है। शनि के मारकेश युति या दृष्ट होकर बैठने से मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त होते है।

मंगल में बुध अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में बुध यदि लग्न अथवा मंगल से 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव या उच्च, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण हो, तो व्यक्ति को कन्या रत्न की प्राप्ति के साथ धर्म कार्य में रूचि बढती है। उसे अच्छा भोजन प्राप्त होता है। वाणी मधुर एंव राज्य व वाणिज्य से लाभ प्राप्त होता है। किंतु बुध यदि दोनों से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो अथवा शत्रु क्षेत्री, नीच, पाप युत या दृष्ट होकर स्थित हो, तो हृदयाघात, धन व मान-सम्मान की हानि, जेलयात्रा, राज्यदण्ड, किसी नीच शत्रु से कष्ट, व्यापार में हानि, जीवनसाथी अथवा संतान कष्ट रहता है। बुध यदि मारकेश भी हो अथवा मारकेश के साथ हो तो कष्ट अत्यधिक बढ सकता है।

मंगल में केतु अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में केतु यदि मंगल अथवा लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10 अथवा 11 वें भाव में किसी शुभ ग्रह से युति करे या दृष्ट हो, तो आर्थिक लाभ, भूमि, भवन लाभ, समाज अथवा कर्म क्षेत्र में कोई पद अथवा सम्मान प्राप्ति, यशवृद्धि जैसे फल प्राप्त होते है। लेकिन इसके विपरीत केतु 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो तो मन में भय, शारीरिक कष्ट या रोग, आर्थिक हानि का सामना करना पडता है। लोग उसके ऊपर अविश्वास करते है। मंगल अथवा केतु किसी पापी ग्रह के प्रभाव में हों तो शस्त्राघात, दुर्घटना, विदेश में हानि अथवा दुर्घटना की संभावना रहती है।

मंगल में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में प्रायः शुभ फल ही अधिक मिलते है। शुक्र यदि उच्च, मूत्रत्रिकोण अथवा स्वक्षेत्री हो अथवा 3, 6, 8 अथवा 12 वें भाव के अतिरिक्त अन्य किसी भी भाव में हो, तो निश्चित ही सुख की प्राप्ति, राज्य में सम्मान, भौतिक वस्तुओं का लाभ, तीर्थयात्रा, संतान प्राप्ति, ऐश्वर्य अथवा जातक के माध्यम से कोई जनकल्याण व परोपकार के कार्य कराते है। यदि शुक्र लग्नेश, सुखेश अथवा कर्मेश से युति करे तो शुभ फल में और अधिक वृद्धि होती है। लेकिन जब शुक्र 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो अथवा नीच, शत्रुक्षेत्री अथवा पापयुत या पापदृष्ट हो, तो किसी क्षेत्र में पराजय, परिवार से दूर रहना पडे, चोरों से हानि, संतान की चिंता, कर्म क्षेत्र में बार-बार हानि अथवा अपमान, बायें नेत्र में कष्ट, शैय्या सुख में कमी और शीघ्रपतन जैसी समस्या का सामना करना पडता है।

मंगल में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

यदि सूर्य उच्च, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोण अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट या युत हो अथवा मंगल या लग्न से 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में हो, तो राज्य से सम्मान, कर्म क्षेत्र में वृद्धि, धन-संपदा की प्राप्ति, वाहन सुख तथा अपने शौर्य से जातक धन एंव सम्मान की प्राप्त करता है। किंतु सूर्य यदि किसी से भी 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो तो कर्म क्षेत्र में अपमान, संताप, शारीरिक एंव मानसिक कष्ट, कार्यों में निरंतर अवरोध, नौकर वर्ग से कष्ट आदि फल प्राप्त होते है। सूर्य अथवा मंगल के पापग्रह के प्रभाव में होने पर अशुभ फल में और भी वृद्धि होती है।

मंगल में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

यदि चन्द्र उच्च, शुभ ग्रह के प्रभाव, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण अथवा लग्न या मंगल से 2, 4, 5, 9 अथवा 10 वें भाव में हो तो अनेक माध्यमों से धन की प्राप्ति, राज्य में लाभ व सम्मान की प्राप्ति, माता-पिता से सुख एंव लाभ, विवाह या किसी विशेष कार्य में सिद्धि, सम्पत्ति लाभ, संतान सुख, शैया सुख में वृद्धि तथा शत्रुओं के ऊपर विजय जैसे फल प्राप्त होते है। यद्यपि इसके साथ ही जातक को किसी गुरू सदृश व्यक्ति का विछोह का सामना भी करना पड सकता है। जातक को कोई फोडा अथवा पित्त संबंधी पीडा भी सता सकती है। यदि चन्द्र 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो अथवा शत्रुग्रह के प्रभाव में अथवा नीच, शत्रुक्षेत्री, पापग्रह से पीडित हो, तो सम्पत्ति में हानि, पशुधन का नुकसान, शत्रु से पीडा अथवा जीवनसाथी

या संतान से पीडा का सामना करना पडता है। ऐसे जातक यदि सम्पत्ति जोडते है तो वह सम्पत्ति कुछ समय बाद गंवानी पडती है।

➢ बुध संबंधी विशेष रोग

बुध मुख्यतः वाणी विकार, गुप्त रोग, नपुंसकता और त्वचा संबंधी रोगों का कारण बनते है। जब जन्मकुंडली में बुध लग्नेश व रोग भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक को पेट संबंधी रोग, भोजन के प्रति अरूचि, अपच, अथवा पित्त रोग देते है।

यदि लग्न भाव में बुध के साथ रोग भाव का स्वामी हो या उसकी दृष्टि भी लग्न पर हो तो गुप्त रोग होते है।

जन्मकुंडली के किसी भाव में प्रत्येक राशि के साथ बुध के अकेले अथवा किसी ग्रह की युति में रहने पर निम्न रोगों की संभावना रहती हैः-

- मेष राशि में बुधादित्य योग बनने पर जातक को बुद्धिभ्रम जैसे रोग की आशंका रहती है।
- वृष राशि में बुध के होने से वाणी विकार अथवा स्वर बिगडने के रोग सताते है।
- मिथुन राशि में बुध छाती के रोग अथवा फेफडों के गंभीर रोग दे सकता है।
- कर्क राशि में बुध मानसिक विकार एंव मस्तिष्क संबंधी रोगों का कारण बनता है।
- सूर्य की सिंह राशि में बुध क्षय जैसे छाती के असाध्य रोग देता है।
- कन्या राशि में बुध मन का भय एंव उदर संस्थान संबंधी रोग अथवा आंतों के रोग देता है।
- तुला राशि में बुध पाप प्रभाव में पडने पर नपुंसकता जैसे रोग दे सकता है।
- वृश्चिक राशि में बुध मन की उदासीनता व स्मरण शक्ति की क्षीणता देता है।
- धनु राशि में बुध के प्रभाव से जातक अधिक परिश्रम नहीं कर पाता। जातक का मन किसी भी काम में नहीं लगता।
- मकर राशि में बुध आलस्य देता है। यह जातक को काम चोर बनाता है।
- कुंभ राशि में बुध मस्तिष्क विकार देता है तथ बुद्धि भ्रम उत्पन्न कर सकता है।
- मीन राशि में बुध त्वचा संबंधी विकार के साथ पैरों में रोग तथा पैरों में दाद जैसे रोग प्रदान करता है।

रोग भाव में बुध जन्य विशेष रोग

जन्मकुंडली का छठवा भाव 'रोग भाव' कहलाता है। शरीर में पैदा होने वाले रोगों को इसी भाव से देखा जाता है। अतः बुध के इस रोग भाव में किस राशि में बैठने पर कौन सा रोग जन्म ले सकता है, इस बात की जानकारी दी जा रही हैः-

मेष राशि मेंः-

छठवे, रोग भाव एंव मेष राशि में स्थित बुध जातक को मस्तिष्क संबंधी रोग देता है। यदि मंगल भी पीडित हो तो सिर की शल्य क्रिया भी संभव है। यद्यपि बुध के सामान्य होने पर सिरदर्द आदि रोग तो प्रायः सताते रहते है।

वृष राशि मेंः-

वृष राशि के बुध यदि रोग भाव में बैठे तो व्यक्ति को श्वसन संस्थान संबंधी रोग, गले में सूजन और यदि इस भाव में शुक्र भी बैठा हो तो जातक के पास पैसा तथा सुख-सुविधा का सामान तो बहुत रहता है, परंतु वह गुप्त एंव यौन संबंधी रोग जैसे शीघ्रपतन व नपुसंकता से पीडित रहता है। जातक जीवनसाथी की अपेक्षा यौन सुख बाहर तलाशता है।

मिथुन राशि मेंः-

मिथुन राशि में बुध की स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती। बुध के इस प्रभाव से व्यक्ति की मृत्यु का योग दम घुटने से बनता है। सामान्य रूप से भी उसे सांस लेने में समस्या आती है। थोडे से श्रम से ही उसकी सांस उखडने लगती है।

कर्क राशि मेंः-

कर्क राशि का बुध व्यक्ति को उदर कष्ट, अपच, गर्मी में शरीर में जल की कमी अथवा अकेले रहने पर घबराहट रहना जैसे रोग देता है।

सिंह राशि मेंः-

बुध इस राशि में स्थिति रहने से जातक को अचानक बेहोशी, कमर अथवा कमर की हड्डी में दर्द अथवा कुछ लोगों को भीड में घबराहट अनुभव करना जैसी रोग सताते है।

कन्या राशि मेंः-

इस राशि में बुध व्यक्ति को पेट के रोगों से कष्ट देता है। इसमें मुख्यतः पेट अथवा आंत में कीडे, अपच, अथवा शौच में कष्ट के साथ रक्त जाना जैसा बातें आमतौर पर देखी जाती है।

तुला राशि मेंः-

तुला राशि में बुध जातक को मूत्र संस्थान में संक्रमण, मूत्र के साथ वीर्य जाना, गुर्दों के विकार तथा राहू की पापी दृष्टि होने पर शीघ्रपतन या नपुसंकता-बांझपन जैसा रोग देता है।

वृश्चिक राशि मेंः-

छठवे भाव का बुध इस राशि में आकर जातक को मूत्र विकार, जननांग संबंधी रोग अथवा संभोग के समय जननांग में कष्ट अथवा पीडा देता है।

धनु राशि मेंः-

बुध के इस भाव व धनु राशि में होने पर जातक को कमर से निचले हिस्से से पैर के पंजों तक पीडा, गुदाद्वार में कष्ट अथवा शल्य क्रिया की आवश्यकता पड सकती है। महिला जातकों को मासिक काल के दौरान अत्यंत पीडा का सामना करना पडता है।

मकर राशि मेंः-

इस योग में जातक को कमर के निचले हिस्से के जोडों में सूजन के साथ, हाथ-पैरों में भी सूजन एंव दर्द बना रहता है। उसे कब्ज भी रह सकती है। ऐसी अवस्था में जातक का रोग अधिक समय तक बना रहता है।

कुंभ राशि मेंः-

इस योग में बुध व्यक्ति को शारीरिक रूप से कमजोर रखता है। वायु विकार तथा हाथ-पैरों के साथ कमर में भी दर्द देता है। महिला जातक में दौरे का रोग (हिस्टीरिया) अथवा अचानक बेहोशी का रोग हो सकता है।

मीन राशि मेंः-

इस योग में बुध के प्रभाव से जातक को थोडे परिश्रम से ही घबराहट के साथ अत्यधिक पसीना आने लगता है। इसके साथ ही जातक को रात्रि में घबराहट एंव मूर्च्छा जैसे रोग सताते रहते है।

बुध महादशा का फल

जन्मकुंडली में बुध पीडित, अकारक अथवा पापी बनकर स्थित रहे, तो उसकी दशा में अग्रांकित फल प्राप्त होते हैः-

यहां एक बार पुनः बुध दशाकाल का फल जानने से पहले जन्मकुंडली के अन्य शुभ-अशुभ योग एंव बुध की स्थिति जान लेना जरूरी रहता है। इसके अलावा बुध के साथ किस ग्रह की युति अथवा किस ग्रह की दृष्टि है? यह जानना भी जरूरी रहता है। शुभ ग्रह, लग्नेश या कारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि होने पर निश्चित ही बुध के अशुभ प्रभाव में कमी आती है। यह ग्रह जिसके साथ बैठता है, उसी ग्रह के आधार पर फल प्रदान करता है। यह अकेला होने पर शुभ ग्रह की श्रेणी में आता है। इसलिए पूर्ण रूप से पापी अथवा पीडित होने पर इसकी महादशा में तथा इसके साथ जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही है, उसमें अग्रांकित फल प्राप्त होते है।

बुध जन्मकुंडली में जब तृतीय अथवा एकादश भाव में बैठता है तो अपनी महादशा के दौरान त्वचा विकार, मानसिक समस्या अथवा मस्तिष्क संबंधी रोगों के साथ नपुंसकता अथवा अग्नि कष्ट का भय देता है। इसके साथ ही गुप्त रोग, यौन रोग, यकृत संबंधी रोग, पित्त विकार, वाणी विकार, शारीरिक एंव मानसिक दुर्बलता भी देता है। यदि किसी विशेष पापी ग्रह, खासकर मंगल की युति अथवा दृष्टि भी हो तो अग्नि से मृत्यु तक संभव है अथवा शरीर के अन्दर अथवा बाहर किसी अंग की शल्य क्रिया हो सकती है। बुध के साधारण पापी अथवा पीडित होने की स्थिति में शरीर पर फोडे-फुन्सी निकलना तो मामूली बात है।

बुध महादशा अन्तर्गत् अन्य ग्रहों के फल

बुध महादशा के उपरोक्त फल पूर्ण महादशा में कभी भी घटित हो सकते है। यद्यपि अन्य ग्रह की अन्तर्दशा के दौरान निम्न फल प्राप्त होते है। इन फलों का निर्धारण बुध के साथ जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही है, उसके बलाबल एंव शुभाशुभ देखकर करना चाहिए। यथा-

बुध में बुध अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में बुध के अशुभ स्थान पर रहने से ही अशुभ फल प्राप्त होते है। यद्यपि अधिकांशतः यह दशा जातक के लिए सामाजिक, आर्थिक एंव पारिवारिक लाभ प्रदान करने वाली रहती है। यदि बुध द्वितीय अथवा सप्तम् भाव का स्वामी हो, तो जातक के परिवार में किसी की मृत्यु इस दौरान हो सकती है। यदि मारकेश की दशा चल रही हो तो स्वयं की मृत्यु भी संभव है। बुध नीच, पीडित अथवा किसी पापी प्रभाव में हो तो मानसिक क्लेश, त्वचा विकार अथवा व्यवसाय में हानि की संभावना रहती है।

बुध में केतु अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में प्रायः अच्छे फल प्राप्त नहीं होते। बुध किसी शुभ प्रभाव में अथवा शुभ ग्रह से युति हो अथवा लग्नेश से युति हो, तो अवश्य कुछ अच्छे फल मिलते है। इस समय संतान प्राप्ति, शारीरिक सुख, विद्या लाभ, धर्म में रूचि अथवा दुर्घटना के बाद भी हानि न होना जैसे फल मिलते है। यद्यपि दोनों में से कोई भी पाप प्रभाव में हो अथवा षडाष्टक योग बनाकर स्थित हो अथवा बुध नीच अथवा पाप प्रभाव में हो, तो वाणी विकार, संभोग से अरूचि अथवा नपुंसकता तक दे सकते है।

बुध में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में जातक को अधिकतर सुख ही प्राप्त होते है। यदि शुक्र केन्द्र, त्रिकोण अथवा एकादश भाव में स्थित हो या फिर उच्च अथवा स्वक्षेत्री हो, तो व्यक्ति को बडे से बडे सुख की सहज प्राप्ति होती है। उसे राज्य में सम्मान, धन संग्रहित होना, भौतिक सुख की प्राप्ति अथवा व्यवसाय में लाभ मिलता है। लेकिन अगर बुध अथवा शुक्र में से कोई भी अस्त, नीच अथवा पापी ग्रह के प्रभाव में हो अथवा किसी दुःस्थान अथवा षडाष्टक योग बनाकर स्थित हो, तो फिर निश्चित ही शारीरिक सुख में कमी के साथ भौतिक सुख की समाप्ति होती है। जीवनसाथी को कष्ट, वीर्य का क्षय अथवा संभोग में अरूचि के साथ नपुंसकता या बांझपन की समस्या पैदा हो सकती है। इन दोनों ग्रहों में से कोई भी मारक भाव का स्वामी हो तथा मारकेश काल चल रहा हो, तो मत्यु भी संभव है।

बुध में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

इस दशा काल में जातक को शुभ फल ही अधिक प्राप्त होते है। यदि बुध अथवा सूर्य उच्च, मूत्र त्रिकोण, स्व या मित्रक्षेत्री हो, तो जातक को राज्य अथवा व्यवसाय में सम्मान के साथ लाभ, भूमि-भवन लाभ, किसी पुराने असाध्य रोग से मुक्ति मिलती है। जातक के शत्रु परास्त होते है। यद्यपि इसके विपरीत बुध अथवा सूर्य नीच, किसी दुःस्थान अथवा पापी ग्रह से युत बनाकर अथवा पीडित होकर स्थित हों, तो जातक को हानि उठानी पडती है। इससे जातक को राज्यदण्ड, चोरी अथवा किसी अन्य प्रकार से हानि हो सकती है। जातक के शत्रु प्रबल अथवा पिता समान व्यक्ति से हानि अथवा अपमान हो सकता है।

बुध में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

यह दशा जातक के लिए कुछ कष्टप्रद रहती है। यदि इन दोनों में से कोई भी ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, स्व अथवा मित्रक्षेत्री हो अथवा लग्नेश से युत या दृष्ट हो, तो जातक को मातृ पक्ष से वसीयत के माध्सम से लाभ होता है। उसे कन्या संतति की प्राप्ति होती है। कर्म क्षेत्र में उन्नति के साथ मन प्रसन्न रहता है। यद्यपि इनमें से कोई ग्रह नीच, पाप प्रभाव अथवा दोनों षडाष्टक योग अथवा कोई भी ग्रह मारक भाव का स्वामी हो तथा मारकेश भी लगा हो, तो व्यक्ति को मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा मृत्यु की संभावना रहती है। तदापि इसमें यह देखना जरूरी है कि चन्द्र कभी भी मारक प्रभाव नहीं देता, परंतु शिरोरोग अथवा सिर की पीडा, त्वचा या नेत्र विकार, गले में संक्रमण या अन्य विकार, धन हानि अथवा मानसिक कष्ट अवश्य दे सकते है।

बुध में मंगल अन्तर्दशा फलः-

जातक के लिए यह दशा प्रायः कष्टकारी रहती है। यदि दोनों ग्रहों में से कोई ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्री अथवा योगकारक ग्रह या लग्नेश के प्रभाव में हो, तो कुछ शुभ फल अवश्य मिलते है। इसमें भूमि-भवन लाभ, प्रकाशन के व्यवसाय में यश के साथ आर्थिक लाभ तथा साहित्य में रूचि जाग्रत होती है। यदि कोई ग्रह शत्रु क्षेत्री, नीच अथवा पाप प्रभाव में हो अथवा दोनों षडाष्टक योग बनाये, तो व्यक्ति को अग्नि भय, भवन की हानि, नेत्र कष्ट, परिवार से दूर जाना पडे अथवा

रक्त एंव त्वचा संबंधी विकार हो सकते है। यदि महिला जातक हो तो उसे मासिक चक्र में समस्या अथवा योनि या गर्भाशय संबंधी रोगों का सामना करना पड सकता है।

बुध में राहू अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में राहू अगर 3, 6, 11 अथवा 10 वें भाव में अथवा दोनों में से कोई भी ग्रह उच्च, शुभ प्रभाव में हो, तो निश्चित ही जातक को राज्य सम्मान, थोडा बहुत धन लाभ, व्यापार में बढोत्तरी होती है। लेकिन यदि कोई ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, पाप प्रभाव अथवा षडाष्टक योग निर्मित करके स्थित हो, तो प्रतिकूल फल के रूप में व्यक्ति को शिरोरोग अथवा सिर में पीडा से शरीर कमजोर, अचानक हानि, जेलयात्रा, अग्नि भय, सम्मान की क्षति अथवा पद मुक्ति जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते है।

बुध में गुरू अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में जातक को प्रायः शुभ फल ही प्राप्त होते है। इसमें भी यदि कोई भी ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, लग्नेश अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा युत है, तो शुभ फल में वृद्धि होती है। समाज में मान-प्रतिष्ठा मिलती है, परिवार में मांगलिक कार्य, तंत्र सिध्दि, धर्म में रूचि जैसे फल प्राप्त होते है। लेकिन दोनों में से कोई भी ग्रह नीच, पाप अथवा शत्रु प्रभाव में हो अथवा षडाष्टक योग में पडे, तो जातक को माता अथवा मातृ पक्ष में मृत्यु, धन हानि, परिवार में क्लेश, धर्म में अरूचि जैसे फल मिलते है। यहां पर महिला जातक को पति के कष्ट रूप में अशुभ फल की प्राप्ति होती है।

बुध में शनि अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में कोई भी ग्रह यदि उच्च, मूलत्रिकोण अथवा शुभ ग्रह के प्रभाव में हो, तो व्यक्ति को राज्य में सम्मान, आर्थिक लाभ अथवा नौकरी जैसे फल प्राप्त होते है। यद्यपि बुध अथवा शनि नीच, अस्त, पाप ग्रह के प्रभाव अथवा षडाष्टक योग निर्मित करें, तो अशुभ फल अधिक मिलते है। नीच वर्ग से अपमान, प्रत्येक क्षेत्र में असफलता, परिवार से दूर जाना पडे तथा वात एंव कफ संबंधी विकार जैसे रोग सताते है। इस योग में शनि यदि मारक भाव अर्थात् द्वितीय अथवा सप्तम् भाव का स्वामी होकर द्वितीय अथवा तृतीय भाव में स्थित हो, तो जातक की मृत्यु तक की संभावना रहती है।

➢ गुरू संबंधी विशेष रोग

गुरू आकाश तत्वीय ग्रह है। गुरू का हमारे शरीर में चरबी, उदर, यकृत, त्रिदोष, विशेषकर कफ तथा रक्त वाहिनियों पर अधिकार रहता है। ज्योतिष शास्त्र में गुरू को संतान कारक ग्रह माना गया है। जिन जातकों की जन्मकंडुली में गुरू शुभ भावस्थ रहते है, वह जातक सदैव इन रोगों से दूर रहते है। वह अच्छे विचार वाला, शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट तथा मानसिक रूप से बहुत बली रहते है। जन्मकुंडली में गुरू यदि पापी अथवा किसी पाप ग्रह से पीडित होकर स्थित हो, तो जातक इन रोगों के अतिरिक्त कर्ण व दांत रोग, अस्थि-मज्जा में विकार, वायु विकार, अचानक मूर्च्छा, ज्वर, आंत की शल्य क्रिया, रक्त विकार के साथ मानसिक कष्ट उठाता है। उसे ऊँचे स्थान से गिरने का भय भी रहता है। आमतौर पर गुरू प्रदत्त इन रोगों में गुरू के 4, 6, 8 अथवा 12 वें भाव में रहने अथवा गुरू के गोचर वश इन भावों में आने पर ही अधिक संभावना रहती है।

जन्मकुंडली में विभिन्न राशि एंव भावों में स्थित होकर गुरू अनेक रोग प्रदान करते है। यथा-

मेष राशि में:-

मेष राशि में गुरू के होने पर जातक को शिरोरोग अधिक सताते है। यदि इस योग में गुरू पर मंगल अथवा केतु की दृष्टि भी हो, तो किसी दुर्घटना के दौरान सिर में गंभीर चोट लगने का भय भी रहता है।

वृष राशि में:-

वृष राशि में गुरू के प्रभाव से जातक को मुख, कण्ठ, श्वसन संस्थान तथा आहार नली में विकार का भय रहता है। यदि वृष राशि के गुरू लग्न में हो तो व्यक्ति के जीवनसाथी को मूत्र संस्थान के रोग तथा स्वंय को उदर विकार की संभावना रहती है। गुरू के पीडित अवस्था में ही यह रोग होते है। यद्यपि मेरे अनुभव में गुरू पीडित हो अथवा नहीं, फिर भी यह राशि वाणी विकार के साथ मुख रोग अवश्य देती है।

मिथुन राशि में:-

मिथुन राशि के गुरू व्यक्ति के कंधों एंव बांहों पर अधिक कष्ट देता है। यदि बुध भी पीडित हो तो त्वचा विकार के साथ रक्त विकार का योग भी बनता है। यदि गुरू अथवा बुध पर किसी पाप ग्रह का प्रभाव हो, तो जातक के 32 वें वर्ष में

किसी दुर्घटना के दौरान अपना हाथ कटवाने का योग बनता है। यहां पर गुरू का बहुत अधिक पीडित रहने तथा बुध का लग्नेश न होने पर ही यह योग घटित होता है।

कर्क राशि में:-

कर्क राशि के गुरू होने पर जातक को फेफडों के रोग, छाती तथा पाचन क्रिया पर असर पडता है। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि यदि गुरू अत्यधिक पीडित हो तथा चन्द्रमा के साथ चतुर्थ भाव एंव उसका स्वामी भी पीडित हो, तो जातक कम आयु में ही उच्च रक्तचाप का रोगी तथा ह्रदयाघात का शिकार बनता है। यदि लग्न भी कर्क है तो जातक बहुत मानसिक कष्ट पाता है। उसे खाने-पीने के मामले में पर्याप्त सावधानी रखनी चाहिए। अगर केवल चन्द्र व गुरू ही पीडित हो तो जातक को गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी के कारण अस्पताल में भर्ती होना पडता है। इसलिए ऐसे जातकों को गर्मी के मौसम में पानी का सेवन अधिक करना चाहिए। अन्यथा गर्मी के कारण उसे अचानक मूर्च्छा आ सकती है।

सिंह राशि में:-

सिंह राशि के गुरू जातक को उदर विकार के साथ ह्रदयाघात का भय देते है। गर्मी के दौरान ऐसे जातक को भी उपरोक्त समस्या आ सकती है।

कन्या राशि में:-

गुरू के कन्या राशि में होने पर व्यक्ति आंतों की व्याधि तथा पेट में तीव्र जलन से अधिक परेशान रहता है। यदि मंगल की दृष्टि भी पड जाए तो जातक को आंतों की शल्य क्रिया अथवा एपिन्डेंक्स का ऑपरेशन तक कराना पडता है। यदि गुरू के साथ शुक्र भी विराजमान हो तो जातक को नपुंसकता अथवा शीघ्रपतन का भय सताने लगता है। यदि शनि की दृष्टि भी हो तो यह रोग निश्चित मानना चाहिए।

तुला राशि में:-

तुला राशि में गुरू मूत्र विकार, जननांग संबंधी रोग, गुर्दा रोग तथा कमर के दर्द से परेशान रखता है। जातक को शीघ्रपतन का रोग परेशान कर सकता है। मेरा स्वंय का अनुभव है कि इस राशि में गुरू यह रोग अवश्य देता है। यद्यपि अधिक बली होने की स्थिति में यह रोग कम होते है। अगर लग्न भी तुला है तो फिर गुरू जितना कम बली हो, तो जातक को किसी के कहने पर गुरू रत्न धारण नहीं करना चाहिए, अन्यथा इन योगों को तो बल मिलेगा साथ ही अस्थि भंग का भी योग निर्मित हो जाएगा। यद्यपि इस स्थिति में गुरू संबंधी पूजा-पाठ से गुरू की अशुभता को शांत करना उचित रहता है। क्योंकि इस योग में लग्न में गुरू जितना अधिक कमजोर होगा, जातक को उतना ही अधिक शुभ प्रभाव देगा।

वृश्चिक राशि में:-

वृश्चिक राशि में गुरू के होने पर व्यक्ति का पाचन संस्थान खराब बना रहता है, मुख्यतः उसे कब्ज अधिक परेशान करती है। जातक को खट्टी डकार, आहार नली में जलन रहती है। उसे गुदा रोग भी अधिक सताते है। गुदारोग भी जीर्ण कब्ज के ही कारण होते है। यदि मंगल की दृटि भी हो तो फिर गुदा की दो बार शल्य क्रिया निश्चित समझें।

धनु राशि में:-

धनु राशि का गुरू कमर के निचले हिस्से में अधिक समस्याएं देता है। इसमें दर्द, स्नायु विकार अथवा संधिवात जैसे रोग मुख्य है। इस राशि में गुरू यदि लग्न भाव में हो तो यह समस्याएं और भी अधिक गंभीर बन जाती है। हालांकि गुरू यहां लग्नेश होते है, फिर भी यह स्थान गुरू के लिए अशुभ माना गया है। ऐसे दुःस्थान में जातक बहुत अधिक शारीरिक कष्ट उठाता है। ऐसे जातकों को अपना खानपान सादा तथा कम ही रखना चाहिए।

मकर राशि में:-

मकर राशि में गुरू जातक को कमर तथा पैरों के दर्द से जीवन भर परेशान रखते है। गुरू उसे ऐसे दीर्घकालीन रोग देते है। ऐसे व्यक्ति के घुटने आमतौर पर 30 वर्ष की आयु से ही खराब होने लगते है। स्नायु विकार का योग भी इन्हें परेशान रखता है। यदि शनि की यहां दृष्टि हो तो यह रोग कम होते है, लेकिन पीडा तो झेलनी ही पडती है।

कुंभ राशि में:-

कुंभ राशि शनि की राशि है। गुरू के इस राशि में होने पर जातक को कमर से नीचे का हिस्सा बहुत ही कमजोर रहता है। उसे उदर रोग, वायु विकार के साथ स्नायु विकार सताते है। मेरा अपना अनुभव है कि ऐसे जातक घुटने की समस्या से अधिक पीडित रहते है। यदि यह योग अष्टम् भाव में शनि से दृष्ट हो, तो जातक को 35 वर्ष की आयु में ही बायें घुटने की विकलांगता आ जाती है।

मीन राशि में:-

मीन राशि के अधिपति तो स्वंय गुरू है। इसलिए इस राशि में गुरू के होने पर जातक के शरीर में रोग प्रतिकारक क्षमता काफी कम हो जाती है। अतः वह मामूली रोग में भी अधिक बीमार बना रहता है। ऐसे जातक को उदर रोग, पाचन रस व जठरान्त्र संबंधी रोग के साथ कंठ एंव छाती में जलन जैसी समस्याएं अधिक परेशान रखती है। इसलिए ऐसे जातकों को भोजन चबा चबा कर कराना चाहिए। यद्यपि गुरू के लग्न भाव में होने पर यह रोग कम होते है।

रोग भाव में गुरू संबंधी विशेष रोग

गुरू के रोग भाव में किस राशि में कौन रोग होते है, इसकी चर्चा करेगें। गुरू किसी भी भाव में रोग भाव के स्वामी के साथ रहते है, तो जातक को जन्म से ही नाभि के नीचे कोई निशान अवश्य रहता है। यदि किसी जातक को जन्म से निशान नहीं है तो फिर उसको किसी शल्य क्रिया अथवा चोट से निशान अवश्य मिलता है। रोग भाव में गुरू के निम्न प्रभाव होते हैः-

मेष राशि मेंः-

गुरू के रोग भाव एंव मेष राशि में होने पर जातक को रक्त की कमी के कारण अचानक मूर्च्छा, निम्न रक्तचाप अथवा चक्कर आने की समस्या रहती है। यदि मंगल भी इस भाव पर दृष्टि डाले तो मूर्च्छा का रोग कम होता है। जातक के शरीर में रक्त की सामान्य मात्रा हो तो गुरू संबंधी इन रोगों से बचने के लिए वर्ष में एक बार रक्तदान अवश्य करना चाहिए।

वृष राशि मेंः-

गुरू यदि रोग भाव में वृष राशि में बैठे, तो व्यक्ति को वात विकार की समस्या अधिक होती है। इस रोग से बचने के लिए जातक को दोपहर के भोजन के बाद थोडा विश्राम तथा रात्रि को भोजन के बाद थोडा टहलना चाहिए। इससे वह कुछ हद तक इस रोग से बचे रहते है।

मिथुन राशि मेंः-

इस राशि में रोग भाव का गुरू जातक को छाती तथा फेफडों से संबन्धित समस्याएं देता है। चन्द्र के पीडित होने पर हृदयाघात का योग भी बनता है। अन्यथा छाती में कफ जमा होने अथवा संक्रामक रोग का आक्रमण होता रहता है।

कर्क राशि मेंः-

इस योग में व्यक्ति को उदर कष्ट, छाती में जलन, गर्मी के दौरान शरीर में जल की कमी तथा दांत संबधी समस्याएं अधिक सताती है। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि ऐसा जातक अपने रोग को बहुत बडे रोग के रूप में अनुभव करता है, परंतु समय पर चिकित्सा नहीं लेता। इसके फलस्वरूप रोग की निरंतर वृद्धि होती रहती है। व्यक्ति मानसिक रूप से भी बहुत कमजोर रहता है।

सिंह राशि मेंः-

रोग भाव में गुरू के सिंह राशि में होने पर जातक को घबराहट, मिरगी, उच्च्य रक्तचाप जैसे रोग परेशान करते है। लेकिन जातक समयानुसार इन पर पर्याप्त ध्यान न देकर उन्हें असाध्य बना लेता है। इससे यह रोग जातक के लिए गंभीर बनते जाते है।

कन्या राशि मेंः-

गुरू के कन्या राशि में होने पर मूत्र संक्रमण, जलन, कम मात्रा में मूत्र आना अथवा मधुमेह जैसे रोग परेशान करते है। मेरे अनुभवों में भी आया है कि इस योग के साथ मिथुन राशि में शुक्र के साथ कोई पापी ग्रह योग बनाये अथवा इसी भाव में गुरू के साथ शुक्र स्थित हो, तो जातक निश्चित ही गुप्त रोगों से पीडित रहता है। वह अपने जीवनसाथी को भी रोगग्रस्त बना देता है।

तुला राशि मेंः-

इस योग में गुरू जातक को वीर्य विकार एंव जननांग संबंधी रोग देता है। साथ ही मूत्र विकार भी होते है। मेरे अनुभव में आया है कि यदि इस योग में शुक्र भी बैठ जाए, तो जातक को बहुत बडा गुप्त रोग हो सकता है। उसका मुख्य कारण अपने जीवनसाथी की अपेक्षा बाहर यौन संबंध बनाना हो सकता है। लग्नेश की दृष्टि हो तो भी गुप्त रोग एंव बांझपन या नपुंसकता पैदा हो सकते है। उसे जीवनसाथी से सदैव धोखा ही मिलता है।

वृश्चिक राशि मेंः-

वृश्चिक राशि में गुरू जातक को वीर्य विकार, उपदंश, जननांग संबंधी अन्य रोग अथवा मूत्र रोग देता है। साथ ही जातक को अति संभोग का फल भुगतना पडता है। जातक गैरों के साथ शारीरिक संबंध बनाता रहता है। इस योग का मुख्य कारण उसके जीवनसाथी का कमजोर होना अथवा उसकी विरक्ति भी संभव है।

धनु राशि में:-

गुरू के इस राशि में रहने पर नितम्ब रोग अथवा कोई फोडा एंव गुदा रोग की संभावना रहती है। उसे नितम्ब की कोई शल्य क्रिया भी करानी पड सकती है। जातक किसी असाध्य रोग से पीडित हो सकता है।

मकर राशि में:-

इस योग में जातक को कमर से नीचे के हिस्से में दर्द अथवा रक्त विकार या फिर त्वचा संबंधी विकार की संभावना बनी रहती है। मैंने अपने अनुभव में ऐसे कई लोगों को दमा और श्वसन संस्थान संबंधी जटिल रोगों से पीडित देखा है।

कुंभ राशि में:-

इस योग में गुरू जातक को वात विकार एंव उदर पीडा से ग्रसित रखता है। जातक को इस स्तर तक पीडा बनी रहती है कि वह सोचता है कि प्राण निकल जायें तो ही अच्छा है। कई बार ऐसे जातक अपंगता का जीवनयापन करने पर मजबूर होते है।

मीन राशि में:-

मीन राशि में गुरू के प्रभाव से जातक मोटापे का शिकार बनता है। चरबी के अतिरिक्त जमाव से जातक की तोंद निकल आती है। यह जातक हृदय संबंधी रोगों के भी शीघ्र शिकार बनते है तथा उनके प्राण भी हृदयाघात से ही जाते है। ऐसा जातक लाख कोशिशें करने पर भी अपने खानपान पर नियन्त्रण नहीं रख पाता।

गुरू महादशा का फल

जन्मकुंडली में गुरू पीडित, अकारक, अस्त, पापी अथवा केन्द्राधिपति दोष से दूषित है, तो इसकी दशाऽन्तर्दशा में अग्रांकित फल प्राप्त होते है। यद्यपि गुरू पर शुभ ग्रह, लग्नेश या योगकारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि से उसके अशुभ फलों में निश्चित कमी आती है अथवा उसके शुभ फलों में वृद्धि होती है।

जन्मकुंडली में जब गुरू वृष, मिथुन अथवा कन्या राशि में हो अथवा किसी नीच ग्रह के प्रभाव में पडे हो अथवा गुरू की किसी राशि में कोई नीच या पापी ग्रह बैठा हो अथवा गुरू स्वंय ही नीचत्व को प्राप्त होकर बैठे हो, तो जातक को दुर्घटना, अग्नि भय, मानसिक कष्ट, राजदण्ड, आकस्मिक पीडा अथवा किसी बडी चोरी से हानि का भय रहता है। इनके अतिरिक्त गुरू किसी त्रिक भाव अथवा त्रिक भाव के स्वामी के साथ हो, तो भी जातक को अत्यंत कष्ट प्राप्त होते है। इसमें भी यदि इन भावों में कोई पापी ग्रह बैठा हो, तो फिर अशुभ फल की कोई सीमा नहीं रहती।

यहां मैं एक बात और स्पष्ट कर रहा हूँ कि गुरू महादशा में गुरू का अन्तर शुभ फल नहीं देता, यदि-

- गुरू द्वितीय भाव में स्थित हो। द्वितीय भाव में गुरू निश्चित ही राजकीय दण्ड अथवा आर्थिक हानि देते है।
- गुरू तृतीय अथवा एकादश भाव में अकेले बैठे हो तो जातक को पश्चिम दिशा की यात्रा अथवा अन्य कष्ट होते है।
- गुरू किसी केन्द्र भाव में हो, तो जातक को राजदण्ड अथवा उच्चाधिकारी के कोप के साथ शारीरिक कष्ट सहना पडता है। इस दौरान मान-सम्मान में भी कमी अथवा संतान पक्ष से पीडा होती है।
- गुरू किसी त्रिकोण में हो तो व्यक्ति को स्त्री वर्ग से कष्ट, राजकीय प्रताडना अथवा कार्यों में अवरोध के साथ अग्नि या दुर्घटना भय रहता है। गुरू किसी त्रिक भाव अर्थात् 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो व्यक्ति को मानसिक कष्ट के साथ अन्य कष्ट भी प्राप्त होते है।
- गुरू यदि तृतीय अथवा एकादश भाव में शनि के साथ बैठे तो अवश्य ही शुभ फल प्राप्त होते है। इसमें भी यदि शनि लग्नेश हो तो फिर शुभ फल की कोई सामी नहीं रहती।
- गुरू के मारकेश होने अर्थात् द्वितीय अथवा सप्तम् भाव का स्वामी होने पर जातक को स्वंय मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा उसके जीवनसाथी को कष्ट प्राप्त होते है।

गुरू महादशा में अन्य ग्रहों का अन्तर्दशा फल

गुरू की महादशा के उपरोक्त फल गुरू महादशा में प्राप्त हो सकते है, परंतु अन्य ग्रह की अन्तर्दशा में निम्न फलों की प्राप्ति होती है। इन फलों का निर्धारण गुरू के साथ जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही है, उसके बलाबल एंव अन्य ग्रह की युति या दृष्टि प्रभाव देखकर करना चाहिए। यथा–

गुरू में गुरू अन्तर्दशा फलः–

मेरे अनुभव में गुरू की इस दशा में प्रायः शुभ फल ही प्राप्त होते है। इसमें भी यदि गुरू किसी उच्च, मूलत्रिकोण, लग्नेश अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट या युत हो, तो शुभ फलों में वृद्धि होती है। समाज में पद-प्रतिष्ठा मिलती है, परिवार में मांगलिक कार्य, सर्व सुविधायुक्त निवास की प्राप्ति, वाहन व आभूषण की प्राप्ति, प्रत्येक क्षेत्र में मान-सम्मान मिलता है। जातक के आन्तरिक गुणों की वृद्धि होती है। आचार्यों में मेल-मिलाप रहता है। मन की इच्छाएं पूर्ण होती है। इसमें गुरू यदि कर्मेश अथवा भाग्येश या सुखेश के प्रभाव में है, तो जातक को संतान सुख के साथ आर्थिक लाभ भी प्राप्त होते है। गुरू यदि नीच अथवा किसी दुःस्थान में बैठे हो तो निश्चित ही जातक को संतान अथा जीवनसाथी की हानि, मान-सम्मान में कमी, सभी क्षेत्रों में दुःख एंव कष्ट तथा व्यापार अथवा कर्म क्षेत्र में हानि उठनी पडती है।

गुरू में शनि अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में कोई ग्रह यदि उच्च, मूलत्रिकोण अथवा शुभ ग्रह के प्रभाव में है, तो व्यक्ति को कर्म क्षेत्र में उन्नति, भूमि-भवन, वाहन आदि का लाभ, पश्चिम दिशा की यात्रा तथा अपने से उच्च स्तर के लोगों के साथ मेल मिलाप बनता है। यद्यपि इसके विपरीत अगर कोई ग्रह नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री अथवा किसी त्रिक भाव में है, तो जातक में अवगुणों की वृद्धि होती है। उनमें लिंग अनुसार अवगुण आते है। जैसे अगर जातक पुरूष है तो वह शराब का सेवन आरम्भ कर सकता है। वह वेश्यागमन करने लगता है। यदि जातक स्त्री है तो वह परिवार में अलगाव, बुजुर्गों का अपमान जैसे कार्य करने लगती है। इसके अतिरिक्त जातक को आर्थिक हानि, मानसिक कष्ट, जीवनसाथी को कष्ट, परिवार में किसी को पीडा, पशुओं की हानि, व्ययों में वृद्धि, नेत्र रोग अथवा संतान कष्ट के साथ अन्य सभी प्रकार के कष्ट भोगने पडते है।

गुरू में बुध अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में दैवज्ञों के विचारों में भिन्नता है। एक वर्ग इस दशा काल को पूर्णतः शुभप्रद मानता है, तो दूसरा वर्ग इस दशा काल को बहुत अशुभ मानता है। यहां पर मैं अपने अनुभव के आधार पर यही कहूंगा कि किसी भी ग्रह के उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री अथवा एक-दूसरे से नव-पंचम् अथवा केन्द्र योग निर्मित करने पर व्यक्ति को चुनाव के माध्यम से किसी सभा की सदस्यता मिलती है। उसे आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। संतान अथवा उच्च विद्या की प्राप्ति, व्यक्ति का देव पूजन के साथ धर्म कर्म में मन लगता है। वह कर्म क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त करता है। यद्यपि किसी ग्रह के नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री अथवा षडाष्टक योग निर्मित करने पर व्यक्ति को निश्चित ही आर्थिक संकट के दौरान मद्यपान में रूचि, वेश्यागमन की आदत, जीवनसाथी का मरण एंव कई प्रकार के रोग, समाज में मान-सम्मान की कमी झेलनी पडती है। जहॉं तक कि किसी ग्रह के मारकेश होने पर मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा मरण तक देखना पडता है। ऐसे जातक ग्रहों के अशुभ होने पर गन्दी भाषा का प्रयोग करने लगते है या अपशब्दों का इस्तेमाल करते है।

गुरू में केतु अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में जातक को प्रायः मिश्रित फलों की प्राप्ति होती है। गुरू अथवा केतु के शुभ, उच्च, मूत्रत्रिकोण अथवा मित्र क्षेत्री होने पर जातक में धर्म के प्रति अत्यधिक रूचि, मन में शुभ विचार तथा अच्छे कार्यों से समाज में आदर मान मिलता है। यद्यपि किसी ग्रह के त्रिक भावस्थ होने, नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री अथवा ग्रह की अन्य राशि में किसी पापी ग्रह का प्रभाव होने पर जातक के शरीर पर दुर्घटना अथवा शल्य क्रिया से कोई चिन्ह लगता है। उसे कारावास भय, आर्थिक हानि, पारिवारिक सदस्यों का कष्ट, किसी गुरू समान व्यक्ति अथवा वृद्धजन से विछोह देखना पडता है। लग्न भाव में गुरू व केतु के नवम भाव में होने पर जातक का मन सन्यास की ओर अग्रसर होता है। गुरू से केतु के केन्द्र अथवा त्रिकोण में होने पर जातक को आर्थिक लाभ एंव व्यवसाय में उन्नति मिलती है। किंतु मारकेश होने पर मृत्यु की भी संभावना रहती है।

गुरू में शुक्र अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में भी मिश्रित फलों की प्राप्ति होती है, क्योंकि यह दोनों ही ग्रह शत्रु है। इस दशा में दोनों में से कोई भी ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण अथवा शुभ भाव में हो, तो जातक को पारिवारिक सुख की प्राप्ति, आर्थिक लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति होती है। जातक तालाब, कुंआ आदि का निर्माण करवाता है। इसमें भी यदि कोई ग्रह किसी शुभ केन्द्रेश से युत हो तो जातक को और अधिक शुभ फल मिलते है। जातक को उच्च वाहन, आभूषण एंव रत्नों की प्राप्ति होती है। जातक सात्विक जीवन व्ययतीत करता है। यद्यपि किसी ग्रह के नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री, पाप प्रभाव, दुःस्थान अथवा षडाष्टक योग में होने पर

उसे आर्थिक हानि, शारीरिक कष्ट, किसी भी प्रकार का बन्धन भय, भौतिक वस्तुओं की हानि, वैवाहिक जीवन से मन का उच्चाटन जैसी स्थिति का सामना करना पडता है। यदि कोई ग्रह मारकेश हो तथा दशाकाल भी मारक की चले तो जातक की मृत्यु भी संभव है।

गुरू में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में जातक को शुभ फल अधिक प्राप्त होते है। ग्रह के उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री अथवा शुभ भाव में होने पर जातक को उच्च पद प्राप्ति, समाज में सम्मान वृद्धि, अचानक लाभ, वाहन प्राप्ति, सरकारी नौकरी मिलना, पुत्र प्राप्ति, किसी महानगर में सर्वसुविधा सम्पन्न निवास प्राप्त होना, जातक की इच्छानुसार कार्य सम्पन्न होना और शत्रु परास्त होते है। यद्यपि किसी ग्रह के नीच, अशुभ भावस्थ, अधिक पापी प्रभाव अथवा षडाष्टक योग में बैठने पर जातक का प्रत्येक क्षेत्र में अपमान, शिरोरोग, पाप कर्मो में लीन, आत्मसम्मान की कमी, मन में घबराहट का भाव तथा शारीरिक स्वास्थ्य में गिरावट का सामना करना पडता है। किसी ग्रह के मारकेश होने पर मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट की भी संभावना रहती है।

गुरू में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

यह दशा जातक की अच्छी व्ययतीत होती है। यदि कोई ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री अथवा शुभ भाव या शुभ ग्रह के प्रभाव में हो अथवा दोनों के केन्द्र स्थान में होने पर जातक सत्य कार्य में लीन, आर्थिक लाभ, यश में वृद्धि, शत्रु हानि, परिवार में वृद्धि अथवा कारोबार में लाभ एंव उन्नति मिलती है। यद्यपि किसी ग्रह के अशुभ प्रभाव में पडने अथवा नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री, किसी अशुभ भाव अथवा पाप प्रभाव अथवा षडाष्टक योग में होने पर जातक के मन में उदासीनता, अपमान, स्थान परिवर्तन, माता की मृत्यु अथवा अत्यधिक कष्ट का सामना करना पडता है।

गुरू में मंगल अन्तर्दशा फलः-

मेरे अनुभव में यह दशा भी जातक की अच्छी रहती है। यदि इनमें कोई ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, एक-दूसरे से केन्द्र स्थान, शुभ भाव, शुभ ग्रह के प्रभाव में हो, तो जातक को निश्चित ही भूमि-भवन लाभ, तीर्थयात्रा, नये कार्यो से यश की प्राप्ति होती है। यद्यपि इनमें से किसी ग्रह के नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री, त्रिक भाव अथवा अधिक पाप प्रभाव में पडने पर जातक को भाई से विरोध अथवा वियोग, किसी दुर्घटना अथवा शल्य क्रिया, रक्त विकार, अचानक झगडे, भूमि-भवन का नाश, नेत्र रोग, अचानक शल्य क्रिया का सामना करना पडता है। मंगल अथवा गुरू के मारकेश होने पर जातक को मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट का सामना भी करना पड सकता है।

गुरू में राहू अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में राहू यदि 3, 6, 11 अथवा 10 वें भाव में हो अथवा दोनों में से कोई भी ग्रह उच्च, शुभ प्रभाव में हो, तो जातक को राज्य सम्मान, अचानक धन लाभ, विदेश यात्रा, व्यापार में बढोत्तरी मिलती है। यद्यपि इनमें से किसी ग्रह के नीच, शत्रु क्षेत्री, पाप प्रभव अथवा षडाष्टक योग में बैठने पर व्यक्ति को शिरोरोग अथवा सिर पीडा, सिर के रोग, शारीरिक कमजोरी का सामना करना पडता है। उसे अचानक हानि, जेल यात्रा, विद्युत भय, अग्नि भय, सम्मान में हानि अथवा पद मुक्ति का सामाना भी करना पड सकता है।

➢ शुक्र संबंधी विशेष रोग

शुक भोग कारक ग्रह है। इसका प्रभाव जातक के भोग पर अधिक पडता है। जातक को यौन एंव जननेन्द्रिय संबंधी रोगों का सामना करना पडता है। जन्मकुंडली में शुक्र के निर्बल अथवा पीडित होने अथवा शुक के गोचर काल में जातक को गुप्त रोग, जननेन्द्रिय के गंभीर रोग, स्त्रियों को प्रदर रोग, संतान बंध्यत्व, स्तन रोग, वक्ष ग्रन्थि के विकार, पुरूष को शीघ्रपतन, नपुंसकता, लिंग सिकुडना, उपदंश, मूत्र संस्थान के रोग, दवा की विपरीत प्रतिक्रिया, कैंसर जैसे गंभीर रोग, गंडमाला, अत्यधिक शारीरिक कमजोरी अथवा चन्द्र एंव चतुर्थ भाव के पीडित होने पर हृदय संबंधी रोग अथवा हृदयाघात का सामना करना पडता है।

शुक के रोग भाव के स्वामी के साथ स्थित रहने पर जातक के नेत्र में चिन्ह या विकार रहता है। शुक्र की महादशा अथवा अन्तर्दशा के दौरान जातक को विभिन्न रोग सताते है। शुक यदि द्वितीय भाव में है तो हृदय रोग, नेत्र विकार, मानसिक कष्ट, चौर्य के माध्यम से धन हानि, राज प्रकोप अथवा शत्रु से कष्ट प्रदान करता है। जबकि शुक्र के तृतीय अथवा एकादश भाव में रहने पर राजा अर्थात् उच्चाधिकारी से दण्ड, अग्नि काण्ड, भाई से कष्ट तथा कई अन्य तरह से कष्ट हो सकते है। शुक त्रिकोण अर्थात् लग्न, पंचम अथवा नवम् भाव में होने पर जातक अपनी बुद्धि का सही प्रयोग नहीं कर पाता।

वह सदैव शंका व संशय में ही जीता है। शारीरिक एंव मानसिक कष्ट भी प्राप्त होते है। इस स्थिति की संभावना शुक के 4, 6, 8 अथवा 12 वें भाव में होने पर अथवा शुक के गोचरवश इन भावों में भ्रमण करने पर अधिक रहती है।

यद्यपि शुक्र संबंधी सभी फलादेश जन्मकुंडली में शुक्र की स्थिति एंव बलाबल को ध्यान में रखकर ही करने चाहिए। यथा–

मेष राशि में शुक्रः–

शुक्र यदि मेष राशि में हो तो जातक को शिरोरोग, शूल, नेत्र रोग तथा सिर पर चोट लगने का भय रहता है।

वृष राशि में शुक्रः–

शुक्र के वृष राशि में होने पर जातक को तभी रोग सताते है, जब शुक अत्यधिक पीडित रहते है। इनमें आहार नली का संक्रमण, गुलसुए, टॉन्सिल, मुख व जीभ पर छाले जैसे रोग अधिक परेशान करते है।

मिथुन राशि में शुकः–

शुक के मिथुन राशि में होने पर जातक को कई तरह के गुप्त रोग, चेहरे पर मुंहासे आदि परेशान रखते है। यदि लग्नस्थ शुक है तो चर्म विकार के साथ रक्त विकार की भी संभावना रहती है।

कर्क राशि में शुक्रः–

शुक्र के कर्क राशि में होने पर जातक को जलोदर, वक्ष सूजन, अपच, वमन अथवा जी मिचलाना जैसे रोग सताते है। मंगल की दृष्टि होने पर अक्सर शरीर में जल की कमी से रोगी गंभीर रूप से परेशान रहता है।

सिंह राशि में शुक्रः–

शुक्र के सिंह राशि में होने पर जातक को हृदय संबंधी विकार, रीढ की हड्डी की पीडा एंव रक्त धमनियों के रोग अथवा धमनी में रक्त का थक्का जमने से हृदयाघात का योग बनता है।

कन्या राशि में शुक्रः–

शुक्र के कन्या राशि में होने पर जातक को खूनी अतिसार, थोडा भी खाने–पीने पर शौच के लिए जाना तथा भोजन का ठीक से न पचना जैसे रोग परेशान रखते है।

तुला राशि में शुक्रः–

शुक्र के तुला राशि में होने पर जातक को मूत्र संस्थान संबंधी रोग, शीघ्रपतन तथा गुरू के पीडित होने पर मधुमेह जैसे रोग पीडित रखते है।

वृश्चिक राशि में शुक्रः–

शुक्र के वृश्चिक राशि में होने पर पुरूष जातक को अण्डकोष, अल्पवीर्यता, हर्निया की शल्य क्रिया, उपदंश तथा स्त्री जातक को गर्भाशय संक्रमण एंव योनि संबंधी रोग, श्वेत प्रदर व गुदाद्वार के रोग सताते है।

धनु राशि में शुक्रः–

शुक्र के धनु राशि में होने पर जातक को गुदा रोग अथवा शल्य क्रिया, फिशर, गुप्तेन्द्रिय संबंधी रोग, स्नायु रोग, कमर की पीडा, दुर्घटना में कमर उतरना जैसे रोग अधिक परेशान रखते है।

मकर राशि में शुक्रः–

शुक्र के मकर राशि में होने पर जातक को घुटनों की पीडा एंव सूजन, त्वचा संबंधी रोग, कमर से निचले हिस्से में पीडा व स्नायु विकार के रोग सताते है।

कुंभ राशि में शुक्रः–

शुक्र के कुंभ राशि में होने पर जातक को रक्त वाहिनी संबंधी रोग, घुटने में पीडा अथवा सूजन, रक्त विकार, स्फूर्ति में कमी, काम में मन न लगना आदि रोग परेशान रखते है।

मीन राशि में शुक्रः–

शुक्र मीन राशि में होने पर जातक को पैरों के पंजों के रोग अधिक परेशान रखते है तथा गुरू के भी पीडित होने पर मधुमेह रोग की संभावना भी बढ जाती है।

रोग भाव में शुक संबंधी विशेष रोग

शुक किसी भी भाव में रोग भाव के स्वामी के साथ स्थित रहे, तो जातक को जन्म से ही नेत्र अथवा ऑख के आसपास कोई व्रण अवश्य रहता है।

- रोग भाव में शुक्र के मेष राशि में होने पर जातक को श्वास संबंधी विकार, त्वचा रोग अथवा कम गर्मी में भी त्वचा पर फफोले उठना, गुप्तेन्द्रिय से रक्त प्रवाह जैसे रोग हो सकते है।
- रोग भाव में शुक्र वृष राशि में हो, तो जातक को वाणी विकार एंव गले के रोग सताते है। बुध भी यदि पापी अथवा पीडित हो तो हकलाना अथवा तुतलाना भी संभव है। किसी पापी ग्रह का प्रभाव होने पर जातक गन्दी भाषा का प्रयोग करता है।
- रोग भाव का शुक्र यदि मिथुन राशि में हो, तो जातक को सांस के रोग, दमा अथवा दम घुटने के रोग होते है।
- कर्क राशि का शुक्र यदि रोग भाव में बैठा हो, तो जातक को छाती के रोग एंव उदर संबंधी रोग देता है। यदि चन्द्र का चतुर्थ भाव भी पीडित हो तो जातक को अवश्य ही हृदयाघात का सामना करना पडता है।
- सिंह राशि का शुक्र छठे भाव में बैठकर छाती के अनेक रोग, मूर्च्छा तथा अस्थि भंग जैसे रोग देता है।
- रोग भाव में कन्या राशि का शुक्र जातक को उदर रोग, अपच एंव बडे होने तक पेट के कीडों से पीडित रखता है। यहां पर जातक खाने के बाद वमन के रोग से भी पीडित रह सकता है।
- इस भाव में तुला राशि का शुक्र जातक को मूत्र संस्थान के रोग, शीघ्रपतन तथा मूत्र के धात जाना जैसे रोग देता है।
- वृश्चिक राशि का शुक्र रोग भाव में बैठकर जातक को क्षय रोग अथवा फेंफडों के अन्य विकार, गुर्दा संबंधी रोग, एंव शौच में रक्त जाना व पीडाएं देता है।
- मकर राशि का शुक्र रोग भाव में बैठकर जातक को कई तरह के उदर रोग, पेट में संक्रमण, कृमि रोग, खाने में मन न लगना जैसे अनेक रोग देता है। शनि भी पीडित हो तो जातक के घुटनों में कष्ट रहता है तथा घुटने कमजोर बने रहते है।
- कुंभ राशि का शुक्र यदि रोग भाव में हो, तो शरीर में रक्त की कमी, स्नायु विकार तथा किसी भी कारण से बार-बार शल्य चिकित्सा करवानी पडती है। स्त्री की जन्मकुंडली में मासिक काल में रक्त की कमी से रक्त चढाना पड सकता है। केतु के पीडित होने पर स्त्री पिशाच बाधा से पीडित रह सकती है।
- मीन राशि का शुक्र यदि रोग भाव में बैठे तो जातक को बार-बार सर्दी लगने का डर सताता है। जातक को भारी गर्मी में भी जुकाम से परेशान रखता है। यदि गुरू भी पीडित हो तो जातक को मधुमेह रोग हो सकता है।

शुक्र महादशा का फल

जन्मकुंडली में शुक पीडित, अकारक, अस्त, पापी अथवा दूषित हो तो उसकी दशाऽन्तर्दशा में निम्न फल प्राप्त होते है। यद्यपि शुभ ग्रह, लग्नेश या कारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि से शुक के अशुभ फलों में निश्चित कमी आती है। फिर भी यह आवश्यक नहीं कि शुक्र की अशुभ स्थिति में सभी कष्ट भोगने ही पडे या फिर शुक्र अपनी शुभ स्थिति में पूर्णतः भोग ही प्रदान करे।

शुक ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जो अपने अशुभ काल में भी कुछ ऐसे कार्य कराता है जिसका अन्त अत्यंत बुरा ही रहता है। फिर भी जातक उसे बहुत ही अच्छा मानते है। उदाहरण के लिए अशुभ शुक्र की स्थिति में जातक बलात्कार जैसे निकृष्ट कार्य भी कर सकता है और इस काम को जातक अच्छा भी मान सकता है, पर यथार्थ में गोचर अथवा दशाकाल में शुक के अशुभ प्रभाव से यह कार्य होते है तथा आगे चलकर उसे भयावह परिणाम झेलने पडते है।

शुक्र जन्मकुंडली में सिंह अथवा कर्क राशि में हो अथवा किसी नीच ग्रह के प्रभाव में हो अथवा गुरू की किसी राशि में कोई नीच या पापी ग्रह बैठा हो अथवा शुक्र स्वंय नीचत्व को प्राप्त हो, तो ऐसे जातक को प्रायः गुप्त रोग, चोरी के माध्यम से भौतक वस्तुओं की हानि अथवा किसी पापी कर्म से मानहानि का भय सताता है। इसके अतिरिक्त शुक किसी त्रिक भाव में हो अथवा त्रिक भाव के स्वामी के साथ हो, तो जातक को अत्यंत कष्ट प्राप्त होते है। इसमें भी यदि इन भावों का स्वामी कोई पाप ग्रह हो तो फिर अशुभ फल की कोई सीमा नहीं रहती। वैसे शुक की महादशा में जातक भोग विलासता भरा जीवन व्यतीत करता है। उसे भोग सामग्री की प्राप्ति होती है। वाहन, आभूषण, नये वस्त्र, आर्थिक लाभ आदि की प्राप्ति होती है। उसे विपरीत लिंग से सुख एंव सम्मान मिलता है। जातक की ज्ञान वृद्धि होती है। जातक जल मार्ग से विदेश यात्रा

करता है तथा राज्य में मान-सम्मान प्राप्त करता है। मेरे अनुभव में यह सारे कार्य शुक्र के शुभ एंव शक्तिशाली होने पर ही संभव होते है। जातक के घर-परिवार में कोई मांगलिक कार्य अवश्य सम्पन्न होता है।

शुक्र महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा के फलः-

- शुक्र यदि द्वितीय भाव में है तो जातक हृदयाघात, नेत्र कष्ट, शत्रु क्लेश, राजभय तथा चोरी का भय रहता है।
- शुक्र जन्मकुंडली में तृतीय अथवा एकादश भाव में हो तो समाज में सम्मान, अचानक धन लाभ तथा राज्य से लाभ प्राप्त होते है। जबकि अशुभ स्थिति में होने पर जातक को शारीरिक कष्ट, आर्थिक हानि, अग्नि से हानि एंव कारागार का भय रहता है।

यद्यपि यह फल तो शुक्र महादशा अन्तर्गत शुक्र अन्तर्दशा में ही मिलते है, लेकिन निम्न फल शुक्र की पूर्ण महादशा में कभी भी मिल सकते हैः-

सिंह राशि में शुक्र की महादशा जातक को अत्यधिक शारीरिक कष्ट देती है। शुक्र यदि कन्या राशि में है तो हृदयाघात अथवा फेंफडों में व्याधि की आशंका बनी रहती है। शुक्र रोग भाव में हो तो जातक को शत्रु से कष्ट, मुकद्मे में पराजय के बाद राजदण्ड एंव चोरी का भय रहता है। शुक्र यदि मेष, धनु अथवा मीन राशि में हो तो गुप्त रोग अथवा गुदाद्वार या किसी फोडे की शल्य चिकित्सा दे सकते है।

शुक्र में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

शुक्र की महादशा का आरम्भ अधिकतर शुभ ही रहता है। इसमें भी यदि शुक्र बली होकर 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में बैठे तो जातक को नये भवन एंव अच्छे वस्त्राभूषण की प्राप्ति के साथ आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। जातक का मन अच्छे कार्य एंव भोग-विलासता में लगता है। उसे पुत्र संतान की प्राप्ति, राज्य से सम्मान के साथ सम्पत्ति भी प्राप्ति होती है। यदि शुक्र उच्च, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण के होकर 1, 5 अथवा 9 वें भाव में बैठे, तो जातक किसी एक अथवा अनेक बडे ग्रन्थों के लेखक का कार्य करता है। यद्यपि शुक्र के नीच, अस्त, पाप ग्रह के प्रभाव में रहने अथवा शुक्र के साथ 6, 8 अथवा 12 वें भाव में राहू के विराजमान रहने से जातक को राजदण्ड, मृत्युतुल्य कष्ट के अतिरिक्त आर्थिक हानि उठानी पडती है।

शुक्र में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में जातक को प्रायः मिश्रित फल प्राप्त होते है। शुक्र अथवा सूर्य उच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्री हो अथवा नव-पंचम् योग निर्मित कर रहे हो या दशमेश से सूर्य केन्द्रगत हो, तो जातक को राज्य सम्मान, कार्य क्षेत्र में उन्नति, भाई से लाभ के साथ उसकी उन्नति, माता-पिता को सुख मिलते है। यद्यपि कोई ग्रह नीच, पाप प्रभाव अथवा षडाष्टक योग अथवा 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो अस्थि भंग, नेत्र पीडा, राजदण्ड, पिता से अथवा किसी गुरू समान वृद्धजन से कष्ट देखने पडते है।

शुक्र में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

यह दशा जातक की अच्छी व्ययतीत होती है, लेकिन और अधिक अच्छी के लिए दोनों में से किसी एक ग्रह का उच्च, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोण अथवा शुक्र से चन्द्र का त्रिकोण अथवा केन्द्रगत होना आवश्यक है। इस योग से जातक को विपरीत लिंगी सुख तथा स्त्री वर्ग में सम्मान, आर्थिक लाभ, कर्म क्षेत्र में उन्नति अथवा उच्च पद की प्राप्ति, कन्या सन्तति की प्राप्ति जैसे फल प्राप्त होते है। लेकिन किसी ग्रह के पाप प्रभाव में होने पर, नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री अथवा षडाष्टक योग निर्मित करने पर जातक को अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट भोगने पड सकते है। इसमें मुख्यतः मानसिक भय, दांत, सिर, नाखून की पीडा, आर्थिक संकट, टी.बी. अथवा गुल्म (तिल्ली) जैसे असाध्य रोग होते है।

शुक्र में मंगल अन्तर्दशा फलः-

यह दशा जातक को शुभ फल की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक प्रदान करती है। यदि शुक्र से मंगल त्रिकोण, केन्द्रगत अथवा एकादश भाव में हो अथवा कोई ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण या स्वक्षेत्री होने पर जातक को कार्य सिद्धि, आर्थिक लाभ अथवा भूमि लाभ मिलता है। यद्यपि किसी ग्रह के अस्त, नीच, पाप प्रभाव, शत्रु क्षेत्री अथवा षडाष्टक योग में होने पर जातक का किसी से अवैध संबंध, रक्त विकार, हाथ का कार्य छोडना, आर्थिक हानि, बुद्धि अथवा स्थान भ्रंश अथवा दुर्घटना का सामना करना पडता है।

शुक्र में राहू अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में भी जातक को मिश्रित फल की प्राप्ति होती है। शुक्र से राहू यदि त्रिकोण, केन्द्रगत अथवा एकादश भाव में हो अथवा कोई ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण या स्वक्षेत्री है, तो जातक को व्यवसायिक एंव आर्थिक लाभ, सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति, पुत्र संतान की प्राप्ति, शत्रु विजय, कुल का सम्मान जैसे फल प्राप्त होते है। यद्यपि इनमें से कोई ग्रह दुःस्थान, नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री, पाप प्रभाव अथवा षडाष्टक योग निर्मित करे तो जातक को प्रायः बहुत कष्ट उठाने पडते है। इन ग्रह योग में जातक को विष, अग्नि, दुर्घटना, करंट लगने का भय रहता है अथवा जातक अचानक जेल जा सकता है।

शुक्र में गुरू अन्तर्दशा फलः-

मेरे अनुभव में जातक की यह दशा प्रायः अच्छी ही रहती है। इसमें भी यदि शुक्र से गुरू केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो अथवा कोई ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण या शुभ प्रभाव या स्वक्षेत्री हो, तो जातक को संतान प्राप्ति, आर्थिक लाभ, परिवार में मांगलिक कार्य, राज्य पद एंव यश प्राप्ति के अतिरिक्त भजन-पूजन आदि में मन लगता है। यद्यपि कोई ग्रह नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री, पाप प्रभाव में अथवा षडाष्टक योग निर्मित करे, तो जातक को आर्थिक कष्ट, चौर्य भय, शारीरिक पीडा तथा गुरू मारक हो तो मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य पीडा का सामना करना पडता है।

शुक्र में शनि अन्तर्दशा का फलः-

मेरे अनुभव में जातक को इस दशा में अच्छे फल ही मिलते है। यदि दोनों ग्रह में से कोई ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण, त्रिकोण अथवा केन्द्रगत अथवा शुभ ग्रह के प्रभाव में हो, तो व्यक्ति को कर्म क्षेत्र में उन्नति, भूमि-भवन एंव वाहन का लाभ, राज्य में सम्मान, विशेषकर पुलिस या सेना से सम्मान, अनेक प्रकार से आर्थिक लाभ, भौतिक सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। यद्यपि इनमें से कोई ग्रह बली तथा एक निर्बल हो, तो जातक को उपरोक्त फल प्राप्त हो सकते है। लेकिन यदि दोनो ग्रह बली अथवा लग्नेश अथवा शुक्र से शनि षडाष्टक योग निर्मित करे, नीच, अस्त अथवा पाप प्रभाव में हो, तो जातक को आर्थिक हानि, क्लेश, आय से अधिक व्यय, व्यापार में हानि जैसे फल प्राप्त होते है। यदि शनि मारकेश हो तो जातक को अकाल मरण अथवा मृत्युतुल्य कष्ट का सामना करना पडता है।

शुक्र में बुध अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में जातक को शुभ फल अधिक तथा अशुभ फल कम मिलते है। इसमें भी यदि कोई ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण, स्वक्षेत्री, केन्द्र अथवा त्रिकोणगत् हो, तो जातक को संतान सुख, सम्पत्ति प्राप्ति, कार्यों में सफलता, शत्रु विजय, साहित्यिक क्षेत्र में यश एंव धन की प्राप्ति जैसे अनेक फल प्राप्त होते है। लेकिन कोई ग्रह नीच, अस्त, पाप प्रभाव में अथवा षडाष्टक योग निर्मित करे, तो जातक त्रिदोष अर्थात् वात, पित्त एंव कफ जन्य किसी रोग से पीडा हो सकती है। उसे अपयश, कुटुम्ब में क्लेश जैसे फल प्राप्त होते है।

शुक्र में केतु अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में जातक को प्रायः अशुभ फलों की प्राप्ति अधिक होती है। यदि शुक्र उच्च, मूल त्रिकोण, स्वक्षेत्री, केन्द्र अथवा त्रिकोणगत् हो अथवा केतू 3, 6 अथवा 11 वें भाव में हो, तो जातक को अल्प लाभ, सम्मान व थोडा सुख मिल सकते है। यदि कोई ग्रह नीच, अस्त, पाप प्रभाव में अथवा षडाष्टक योग निर्मित करे, तो भाई से वियोग, शत्रु पीडा, सुख में कमी, सिर में पीडा अथवा चोट लगने, फोडे-फुन्सी निकलना, अग्नि भय, सम्पत्ति हानि अथवा अवैध संबंध बनने जैसे फलों की प्राप्ति होती है।

➢ शनि संबंधी विशेष रोग

शनि एक मन्दगति ग्रह है। इसका प्रभाव जातक के प्रत्येक क्षेत्र में अवश्य पडता है। यद्यपि इसका रत्न ऐसा है जो त्वरित गति से प्रभाव देता है। जन्मकुंडली में जब शनि के प्रभाव से कोई रोग जन्म लेता है तो वह बहुत मन्द गति से ही ठीक होता है। अर्थात् जातक स्वस्थ्य होने में बहुत समय लगाता है। जन्मकुंडली में शनि निर्बल अथवा पीडित होने अथवा शनि के गोचर काल में जातक को स्नायु रोग अथवा स्नायु दुर्बलता संबंधी रोग, सन्धि रोग, कैंसर, लकवा, सन्निपात, अधिक श्रम से मानसिक थकान, हर्निया, पक्षाघात, कफ विकार, पसलियों में विकार अथवा पीडा, कमर से निचले हिस्से, विशेषकर पिण्डलियों में पीडा, क्षय रोग, भूत-पिशाच बाधा, दुर्घटना से शरीर के आन्तरिक अंगों में चोट लगना तथा अत्यधिक रक्त स्त्राव, अस्थि भंग, गूंगापन, वाणी विकार, इसमें विशेषकर हकलाना, शरीर एंव पसीने में दुर्गन्ध आना, यकृत संबंधी विकार, जननांग संबधी रोग, प्लीहा के रोग, ऊँचाई से गिरने अथवा पत्थर से चोट लगना, पीलिया, शरीर में अचानक शीत अथवा

उष्णता बढना, वातशूल, चलते-चलते लडखडाना और गठिया जैसे असाध्य रोगों का सामना करना पडता है। शनि संबंधी सभी रोग प्रायः असाध्य रूप में ही सामने आते है और ठीक होने में अधिक समय लगाते है।

शनि दशाऽन्तर्दशा के दौरान प्रायः जातक का निम्न रोग सताते हैः-

शनि यदि लग्न भाव में है तो वह शारीरिक कष्ट एंव शिरोरोग अथवा वायु विकार का कारण बनता है। शनि के द्वितीय भाव में होने पर नेत्र विकार, मानसिक संताप, राज्य से दण्ड अथवा पारिवारिक क्लेश का सामना करना पडता है। तृतीय भाव में शनि उत्साह में कमी, बुद्धि भ्रम देता है। चतुर्थ भाव में यह अग्नि काण्ड से पीडा, विशेषकर वाहन, चोरी अथवा राज्य दण्ड से हानि का कारण बनता है। पंचम भाव में शनि मानसिक कष्ट, विशेषकर संतान पक्ष से कष्ट या विद्या के कारण मानसिक कष्ट देता है। शनि के षष्ठम् भाव में होने पर यह साढे साती अथवा गोचर में तो लाभ देता है, परंतु किसी अन्य पाप प्रभाव अथवा इस भाव के स्वामी से योग करे, तो निश्चित ही चोरी से हानि, शत्रुओं का प्रबल विरोध, विष धर जन्तुओं से भय अथवा किसी अन्य माध्यम से विष पीडा का भय देता है। शनि के सप्तम् भाव में होने पर मूत्र संस्थान के विकार, जीवनसाथी की मृत्यु अथवा किसी अन्य कारण से मानसिक संताप अथवा शत्रु द्वारा आघात मिलता है। शनि अष्टम् भाव में होने पर मृत्युतृल्य कष्ट देते है, यद्यपि जातक की मृत्यु नहीं होती। लेकिन उसे नेत्र की शल्य चिकित्सा करानी पड सकती है।

शनि दशाऽन्तर्दशा में यदि केन्द्र में हो तो जातक को राज्य से दण्ड, किसी बडे अग्नि काण्ड अथवा किसी बडी चोरी से हानि उठानी पडती है। शनि यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक को वाणी विकार, शारीरिक कष्ट तथा शौच में रक्त जाने से पीडा का सामना करना पडता है। शनि के त्रिकोण अर्थात् पंचम या नवम् भाव में होने पर वात विकार, रीढ की हड्डी में पीडा तथा नेत्र संबंधी विकार से कष्ट रहता है। शनि के किसी दुःस्थान अर्थात् 6, 8 अथवा 12 वें भाव में रहने पर जातक को कोई पुराना रोग, गुप्त रोग अथवा गुदारोग उभर सकता है। उसे अग्नि काण्ड या विष से भय रहता है। शनि के 4, 6, 8 अथवा 12 वें भाव में होने पर अथवा शनि के गोचरवश इन भावों में आने पर रोगों की संभावना अधिक रहती है। यद्यपि फलकथन से पूर्व जन्मकुंडली में शनि की वास्तविक स्थिति को ठीक से अवश्य समझ लेना चाहिए।

शनि के किस राशि में होने पर किस रोग की संभावना रहती है, इसे हम निम्नवत् समझ सकते हैः-

मेष राशि में शनिः-

शनि मेष राशि में आकर जातक को शिरोरोग, कर्ण रोग, शीत रोग, अचानक मूर्च्छा, बधिरता एंव लकवा जैसे रोगों की संभावना प्रदान करते है।

वृष राशि में शनिः-

शनि के वृष राशि में आने पर जातक गले के विकार, बार-बार टॉन्सिल का कष्ट एंव गला संबंधी अन्य रोगों का शिकार बनता है।

मिथुन राशि में शनिः-

शनि के मिथुन राशि में आने पर जातक के हाथों के अस्थि भंग, शीत रोग एंव निमोनिया का डर बना रहता है।

कर्क राशि में शनिः-

शनि के कर्क राशि में आने पर पाचन संस्थान की गडबडी, आंतों की शल्य क्रिया अथवा अन्य विकार सताते रहते है।

सिंह राशि में शनिः-

शनि सिंह राशि में आयें तो जातक की पाचन क्रिया अव्यवस्थित बनी रहती है। जातक को सन्धिवात रोग की पीडा भी रहती है।

कन्या राशि में शनिः-

शनि कन्या राशि में हो तो जातक अकेलापन तथा उदासीनता अनुभव करता है। वह सदैव आलस्य में रहता है।

तुला राशि में शनिः-

शनि तुला राशि में आकर जातक को नपुंसकता, शीघ्रपतन एंव अन्य गुप्त रोगों से पीडित रखते है। यह स्त्री जातक को बांझपन तक प्रदान करते है।

वृश्चिक राशि में शनिः-

शनि के वृश्चिक राशि में आने पर जातक को मूल-मूत्र निकास के समय परेशानी आती है और कई तरह के विकार सताते है।

धनु राशि में शनिः-

शनि धनु राशि में आकर जातक को हैजा, शीत ज्वर, मलेरिया, वात विकार एंव सन्धिवात जैसे रोग देते है।

मकर राशि में शनिः-

मकर राशि में आकर शनि जातक को कमर से निचले हिस्से में निरंतर पीडा का कष्ट देते रहते है।

कुंभ राशि में शनिः-

कुंभ राशि में शनि हो तो जातक का मन शंकालु बना रहता है। मन में जीने की इच्छा नहीं रहती। यदि चन्द्रमा भी पीडित हो तो मन सदैव आत्महत्या का विचार करता रहता है।

मीन राशि में शनिः-

मीन राशि में शनि हो तो जातक को जोड संबंधी दर्द, गठिया, शीत विकार एंव जी मिचलाने का रोग सताता है।

रोग भाव में शनि जन्य विशेष रोग

अभी तक हमने शनि के प्रत्येक राशि में होने पर पैदा होने वाले रोगों की चर्चा की। अब हम शनि के रोग भाव में किस राशि में आने पर कौन सा रोग हो सकता है, इसकी चर्चा करते है। यद्यपि शनि के संबध में एक सामान्य बात अवश्य समझ लेनी चाहिए कि शनि किसी भी भाव में लग्नेश के साथ बैठे, तो जातक को जन्म से ही वात विकार, जोडों में दर्द, अपच अथवा पाचन संस्थान के विकार देते है।

- रोग भाव में शनि **मेष राशि** में हो तो जातक को अचानक सिर की चोट, सिरदर्द, पीलिया, उदर विकार, दांतों में ठंडा लगना, नेत्र विकार तथा अग्नि काण्ड से भय अवश्य देते है।
- रोग भाव का शनि **वृष राशि** में बैठकर जातक को कण्ठ विकार, टॉन्सिल, बहरापन अथवा जल्दी-जल्दी नजला-जुकाम होना, छाती में दर्द जैसे रोग देता है।
- शनि के रोग भाव में **मिथुन राशि** में आने पर फेफडों के रोग, दमा, निमोनिया एंव टी.बी. जैसे रोग ज्यादा परेशान करते है।
- रोग भाव में शनि **कर्क राशि** में होने पर जातक को दमा, अपच, उदर पीडा एंव सांस संबंधी रोग देते है।
- रोग भाव के शनि **सिंह राशि** में बैठकर व्यक्ति को स्पॉन्डिलाइटिस जैसा कमर दर्द, यकृत कैंसर, अस्थि भंग जैसे रोगों के अतिरिक्त हृदयाघात जैसी भीषण पीडा दे सकते है।
- रोग भाव में **कन्या राशि** का शनि जातक को उदर पीडा के साथ वायु अधिक बनाता है। जातक कब्ज, बवासीर, पाचन संस्थान में गडबडी तथा बुध के भी पापी होने पर नपुंसकता तक का रोगी बन देता है।
- इस रोग भाव में **तुला राशि** का शनि मूत्र संबंधी विकार, धातु रोग, मूत्र-वृक्क की पथरी एंव अन्य यौन रोग देता है।
- छठवे भाव में **वृश्चिक राशि** का शनि गुदा रोग, जिसमें बवासीर, भगन्दर, अति रक्तस्त्राव आदि प्रदान करता है।
- रोग भाव में शनि **धनु राशि** में हो तो वह फेंफडों से संबन्धित रोग, पैंरों में दर्द तथा रक्त की कमी का कारण बनता है।
- रोग भाव में **मकर राशि** में शनि पुरानी कब्ज, जीर्ण ज्वर, त्वचा रोग एंव संधिवात जैसे रोग देता है।
- इस रोग भाव में **कुंभ राशि** का शनि जातक को रीढ की हड्डी की समस्याएं, पेट निकलना, नेत्र विकार जैसे रोग प्रदान करता है।
- शनि के रोग भाव में **मीन राशि** पर होने से जातक को पैरों व जोडों में दर्द, क्षय रोग, पैर के पंजों में सूजन, ऐडी फटना तथा बार-बार ठोकर लगने से चोट लगकर, रक्त स्त्राव होना जैसी व्याधि सताती है।

शनि महादशा का फल

जन्मकुंडली में शनि पीडित, अकारक, अस्त, पापी अथवा दूषित बनकर स्थित है तो वह अपनी दशाऽन्तर्दशा के दौरान विभिन्न तरह के फल प्रदान करते है। यद्यपि फल देखने से पहले जन्मकुंडली में शनि की स्थिति का अवलोकल अवश्य कर लेना चाहिए। शुभ ग्रह, लग्नेश या योगकारक ग्रह की युति अथवा दृष्टि होने पर शनि के अशुभ फल में निश्चित ही कमी आती है।

शनि को लेकर लोगों के मन में एक विचित्र प्रकार का भय व्याप्त है कि यह समस्त प्रकार से जातक का अहित ही करते है, चाहे साढे साती हो अथवा दशाकाल। यद्यपि यह सत्य नहीं है। शनि भी अन्य ग्रहों के जैसा ही फल प्रदान करते है। यदि जन्मकुंडली में शनि अशुभ स्थित में है, तो वह आपके कर्म भी ठीक नहीं रहते, तो फिर शनि देव से आपको कोई नहीं बचा सकता। अतः इनसे बचने के लिये उनकी शरण में ही जाना चाहिए। शनि कलियुग में विश्व के मुख्य न्यायाधीश माने गये है तथा उनकी अदालत में अपील की सुविधा है। यदि आपसे कोई गलत कार्य हुआ है अथवा आपकी जन्मकुंडली में शनि की स्थिति शुभ नहीं है तो आप शनि आराधना एंव शनि सेवा से निश्चित ही मुक्ति प्राप्त कर सकते है। अनेक लोगों को शनिदेव की महादशा अथवा साढेसाती में इतना कुछ प्राप्त हुआ, जितना वे अपने पूरे जीवन में भी प्राप्त नहीं कर पाये। आप इतना समझ लें कि शनि भी एक 'देव' है और कोई भी देव अपने भक्तों का अहित नहीं करता।

जन्मकुंडली में शनि की स्थिति के आधार पर मिलने वाले फल निम्नवत् रहते है। जन्मकुंडली में शनि यदि अपनी उच्च राशि, स्वराशि, मित्र राशि, मूल त्रिकोण, स्वनवांश या उच्चांश या भाग्य भाव, तृतीय अथवा एकादश भाव में बैठे हो, तो निश्चित ही वह जातक को राज्य सम्मान, सुख, वैभव, विद्या, वाहन जैसे समस्त प्रकार का सुख, यश, कीर्ति, आर्थिक लाभ आदि प्रदान करते है। किंतु शनि यदि किसी अशुभ भाव- 6, 8 अथवा 12 वें भाव अथवा नीच राशि, अस्तगत् होने पर स्थान परिर्वतन, पदच्युत, माता-पिता से वियोग, जीवनसाथी अथवा संतान को कष्ट, राज्य कष्ट, किसी बंधन अर्थात् जेल यात्रा तथा कोई बहुत अधिक अनिष्ट योग निर्मित करते है। इनके अतिरिक्त शनि यदि केन्द्र, त्रिकोण अथवा एकादश भाव अथवा धनु या मीन राशि में हो, तो जातक को राज्य लाभ, वाहन लाभ व वस्त्राभूषण की प्राप्ति होती है।

इनके अतिरिक्त शनि महादशा में शनि का अंतर निम्न फल दे सकता हैः-

- शनि के अष्टम् स्थान पर होने पर जातक को नेत्र कष्ट अथवा मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त होते है।
- शनि द्वितीय स्थान पर रहने से नेत्र विकार, मानसिक कष्ट अथवा राज्य भय प्राप्त हो सकता है।
- शनि के लग्न भाव में होने पर शिरोरोग व शरीर में पीडा बनी रह सकती है।
- चतुर्थ भाव में शनि के होने पर अग्नि भय एंव राज्यदण्ड मिल सकता है।
- पंचम् भाव में शनि हो तो संतान कष्ट तथा राज्य भय की संभावना रहती है।
- शनि यदि सप्तम् भाव में हो तो मूत्र संस्थान में संक्रमण एंव जीवनसाथी की मृत्यु संभव है। शनि यदि मारकेश भी है तो शत्रु के माध्यम से हानि कराते है।

उपरोक्त फल शनि एंव अन्य ग्रहों के आधार पर संपूर्ण महादशा में कभी भी प्राप्त हो सकते है।

शनि महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा फल

शनि के फलों का निर्धारण शनि के साथ जिस ग्रह की अन्तर्दशा है, उसके बलाबल एंव उस पर अन्य ग्रह की युति या दृष्टि तथा उसके शुभाशुभ देखकर करना चाहिए। यथा-

शनि में शनि अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में शनि उच्च, मूल त्रिकोण, स्व या मित्र क्षेत्री अथवा केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो जातक को यश, सम्मान, चौपायों से लाभ व उनकी वृद्धि, नौकरों में वृद्धि, उच्च पद की प्राप्ति, किसी अन्य भाषा का ज्ञान तथा परिवार में वृद्धि जैसे फलों की प्राप्ति होती है। शुक्र यदि पाप पीडित है तो किसी अधिक आयु के विपरीत लिंगी से अवैध संबंध का योग बनता है। शनि यदि नीच, शत्रु क्षेत्री, अस्त, अपने भाव से अथवा किसी अशुभ भाव अर्थात् 6, 8 या 12 वें भाव अर्थात् इनमें से किसी भाव का स्वामी हो या पाप प्रभाव में हो, तो निश्चित शल्य क्रिया, नौकरों से हानि, अचानक रक्त स्त्राव, वात रोग अथवा चौपायों की मृत्यु जैसे फल प्रदान करते है। मारकेश अर्थात् द्वितीय या सप्तम् भाव का स्वामी होने पर मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट की संभावना भी बनी रहती है।

शनि में बुध अन्तर्दशा फलः-

शनि से बुध यदि किसी केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो अथवा उच्च, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, मूल त्रिकोण या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक को यश, आर्थिक लाभ, व्यवसाय में लाभ अथवा नये व्यवसाय का आरम्भ, शारीरिक सुख, राज्य लाभ, विपरीत लिंगी साथी की प्राप्ति जैसे अनेक फल प्राप्त होते है। बुध यदि शनि से अशुभ भाव में अर्थात् 6, 8 या 12 वें भाव में हो, नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री अथवा किसी पाप प्रभाव में हो, तो व्यवसाय में हानि, चर्म रोग, वात, पित्त या कफ में से कोई

रोग, भाई–बहिन अथवा पुत्र में से किसी को कष्ट, स्वबुद्धि से लाभ, अपमृत्यु, शीत ज्वर एंव अतिसार जैसे रोग प्रदान करते है।

शनि में केतु अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में केतु यदि किसी शुभ ग्रह से युत या दृष्ट है, तो जातक को अशुभ फल अधिक प्राप्त होते है। इसमें स्थान परिवर्तन, गृह क्लेश, आर्थिक हानि, वायु या अग्नि से हानि, शत्रु से पीडा, सर्प दंश का भय, जीवनसाथी या पुत्र हानि अथवा लडाई-झगडे जैसे फल प्राप्त होते है। केतु यदि शनि से 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो अथवा लग्नेश के साथ हो तो फिर भी कुछ फल प्राप्ति की आशा कर सकते है।

शनि में शुक्र अन्तर्दशा फलः–

शनि की महादशा का आरम्भ आमतौर पर शुभ ही रहता है। इसमें यदि शुक्र बली होकर 1, 4, 5, 7, 9 व 10 वें भाव में अथवा उच्च, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण बैठा हो, तो जातक को नये भवन एंव अच्छे वस्त्राभूषण की प्राप्ति, आर्थिक लाभ, आरोग्य लाभ, राज्य सम्मान के साथ सम्पत्ति की प्राप्ति, यश एंव उन्नति मिलती है। मैंने अपने अनुभवों में देखा है कि यदि स्थिति ठीक हो तो जातक का यश बहुत फैलता है। किंतु शुक्र नीच, अस्त, पाप ग्रह के प्रभाव में हो अथवा 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो ऐसे जातक को राज्यदण्ड, किसी वृक्ष से गिरने का डर, बारबार ज्वर आना, दांत रोग तथा आर्थिक हानि का सामना करना पडता है। मैंने अपने अनुभवों में एक बात और देखी है कि यदि इन दोनों ग्रह में से एक ग्रह बली एंव दूसरा ग्रह निर्बल हो तो जातक को बहुत अधिक शुभ फल प्राप्त होते है। वह रंक से राजा बनता है। यदि इसके विपरीत स्थिति हो अर्थात् दोनों ही ग्रह बली या निर्बल हो तो राजा भी रंक बन जाता है। इसलिए एक ग्रह निर्बल व दूसरा ग्रह बली रहना ही अच्छा है।

शनि में सूर्य अन्तर्दशा फलः–

इस दशा में जातक को शुभ फल कम एंव अशुभ फल अधिक प्राप्त होते है। यदि सूर्य उच्च, स्व या मित्र क्षेत्री, भाग्येश के साथ अथवा एकादश या किसी केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो निश्चित ही पुत्र संतान की प्राप्ति, यश वृद्धि, उच्च पद की प्राप्ति, जीवन में परिवर्तन तथा नये कर्म क्षेत्र में प्रवेश जैसे फल प्राप्त होते है। इसके विपरीत सूर्य यदि लग्न या शनि से दुःस्थान अर्थात् 6, 8 अथवा 12 वें भाव में, नीच, शत्रु क्षेत्री हो, तो जातक को पिता अथवा संतान से विरोध, हृदयाघात, नेत्र की शल्य चिकित्सा, सम्मान हानि, कोई गलत कार्य के बाद घोर पश्चाताप, गुरू भी रोग पीडित हो, तो उदर विकार, मृत्युतुल्य कष्ट अथवा शत्रु से भय या आर्थिक हानि का सामाना करना पडता है।

शनि में चन्द्र अन्तर्दशा फलः–

जन्मकुंडली में चन्द्र व शनि केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो, उच्च, स्व या मित्र क्षेत्री, मूल त्रिकोण अथवा चन्द्र पर गुरू की दृष्टि हो, तो जातक को भाग्य लाभ, माता–पिता को लाभ, व्यवसाय में लाभ तथा जल के कार्यों से लाभ जैसे अनेक फल प्राप्त होते है। चन्द्र यदि क्षीण, नीच, ग्रहण योग, शत्रु क्षेत्री, पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो जातक को माता–पिता से विरोध, मानसिक कष्ट, आर्थिक हानि, जीवनसाथी की मृत्यु, बार–बार रोग, जल अथवा वायु से हानि तथा मित्र एंव हितैषियों पर भी विपत्ति जैसे फल प्राप्त होते है।

शनि में मगंल अन्तर्दशा फलः–

शनि अथवा लग्न से एकादश या किसी केन्द्र अथवा त्रिकोण, उच्च, स्व या मित्रक्षेत्री हो, तो जातक को समस्त प्रकार का सुख, आर्थिक लाभ, नये भूमि, भवन का लाभ, नये करखाने की प्राप्ति तथा पराक्रम जैसे फल प्राप्त होते है। मंगल यदि अस्त, नीच, शत्रु क्षेत्री अथवा पाप प्रभाव में हो, तो निश्चित ही परदेश गमन, कारावास, भवन हानि, व्यवसाय बंद होना, मजदूर वर्ग से हानि, पद हानि अथवा नौकरी छूटना, नेत्र अथवा हार्निया की शल्य क्रिया, विष, अग्नि अथवा शस्त्र से हानि जैसे फल प्राप्त होते है। मंगल यदि मारकेश हो तथा गोचर में भी अष्टम् में हो तो मृत्यु भी संभव है।

शनि में राहू अन्तर्दशा फलः–

यह दशा अधिकतर अशुभ ही रहती है। राहू यदि स्वक्षेत्री, उच्च अथवा एकादश भाव में हो तो अवश्य कुछ सुख, आर्थिक लाभ तथा सम्पत्ति का लाभ प्राप्त होता है, अन्यथा अन्य स्थानों पर यह हानि, क्लेश, पीडा, कारावास, अचानक करंट लगना, दुर्घटना, शल्य क्रिया, मित्रों से हानि जैसे फल प्रदान करता है।

शनि में गुरू अन्तर्दशा फलः–

जन्मकुंडली में गुरू उच्च, मूल त्रिकोण, शुभ ग्रह के प्रभाव में, किसी केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो जातक को संतान का सुख, मनोरथ सिद्धि, राज्य अथवा समाज में सम्मान, आर्थिक लाभ, लोग उसके दिखाये मार्ग पर चलें, धर्म में रूचि,

पारिवारिक सुख की प्राप्ति जैसे अनेक फल प्राप्त होते है। गुरू शनि या लग्न से किसी दुःस्थान अर्थात् 6, 8 अथवा 12 वें भाव में अथवा नीच, शत्रुक्षेत्री, पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो जातक को भाइयों से विरोध, धन हानि, परदेश में कष्ट, कुष्ठ अथवा यकृत रोग, पुत्र संतान की हानि अथवा राजदण्ड जैसे फल मिलते है।

➢ राहू संबंधी विशेष रोग

राहू पूर्णतः शनि की तरह फल देने वाला है। इसका प्रभाव जातक के प्रत्येक क्षेत्र पर पडता है। जब जन्मकुंडली में राहू के प्रभाव का कोई रोग होता है, तो वह बहुत मन्द गति से ही ठीक होता है अर्थात् जातक को स्वस्थ्य होने में बहुत समय लगता है। चूंकि राहू एक छाया ग्रह है, इसलिए किसी भी रोग में राहू की प्रत्यक्ष भूमिका तो नहीं रहती, फिर भी राहू रोग देने में अपनी भूमिका निभाता है। जन्मकुंडली में यह जिस किसी ग्रह को प्रभावित करता है अथवा अपना पाप प्रभव जिस पर डालता है, उसी ग्रह के कारक रोग को जन्म देता है। राहु मुख्यतः जातक को उन्माद, फोडे-फुन्सी, त्वचा संबंधी रोग, मस्तिष्क विकार, हिस्टीरिया, भूत-प्रेत बाधा, मन में भय, अचानक बेहोश, अपस्मार, रक्त विकार आदि रोगों की संभावना जगाता है। इनके अतिरिक्त व्यक्ति को जो भी अचानक रोग होते है जैसे अपघात अथवा ह्रदयाघात, उनमें भी राहू का अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप रहता है।

जन्मकुंडली में राहू यदि लग्नेश के साथ हो तो अचानक होने वाले रोगों में वृद्धि हो जाती है। अष्टमेश अथवा रोग भाव के स्वामी के साथ हो तो शरीर अथवा मुख पर कोई निशान अवश्य रहता है। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि राहू अपनी महादशा, भुक्ति अथवा गोचर में छठवे भाव को प्रभावित करके अधिक रोग देता है।

यहां हम जन्मकुंडली में राहू के किस राशि में होने पर किस रोग की संभावना रहती है, इसकी चर्चा करेगें।

मेष राशि में राहूः-

राहू मेष राशि में आकर जातक को शिरोरोग, अचानक मूर्च्छा, चेहरे अथवा सिर पर कोई निशान एंव लकवा जैसे रोगों की संभावना देता है।

वृष राशि में राहूः-

राहू के वृष राशि में होने पर जातक को गले के रोग, बारबार गला बैठना जैसे अनेक रोगों का सामना करना पडता है।

मिथुन राशि में राहूः-

राहू के मिथुन राशि में होने पर जातक को हाथों की अस्थि भंग, त्वचा फटना एंव निमोनिया जैसे घातक रोग का सामना करना पडता है।

कर्क राशि में राहूः-

राहू कर्क राशि में हो तो फेफडों से संबन्धित रोग अथवा ह्रदयाघात जैसे रोग ज्यादा परेशान करते है।

सिंह राशि में राहूः-

राहू सिंह राशि में हो तो जातक की अस्थि भंग, मन में भय, अकेले में घबराहट, संधिवात रोग की संभावना अधिक बनी रहती है।

कन्या राशि में राहूः-

राहू कन्या राशि में हो तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखहीन, उदासीनता से भरा रहता है। ऐसे जातक दाम्पत्य सुख के लिए सदैव ललायित रहते है। यह सदैव आलस्य में ढूबे रहते है।

तुला राशि में राहूः-

राहू तुला राशि में आकर जातक को मूत्र रोग, शीघ्रपतन एंव गुप्त रोगों से पीडित रखते है।

वृश्चिक राशि में राहूः-

राहू के वृश्चिक राशि में होने पर गृह कलह, विष भय, गुदा रोग की पीडा बनी रहती है।

धनु राशि में राहूः-

राहू के धनु राशि में रहने पर जातक को मानसिक रोग, मलेरिया, प्रेत बाधा एंव सन्धिवात जैसे रोग अधिक परेशान करते है।

मकर राशि में राहूः-

राहू के मकर राशि में होने पर जातक कमर से निचले हिस्से में निरंतर पीडा का कष्ट भोगता रहता है।

कुंभ राशि में राहू:-

कुंभ राशि में राहू हो तो जातक का मन शंकालु ही बना रहता है। जातक के मन में सदैव कोई न कोई शंका बनी ही रहती है।

मीन राशि में राहू:-

मीन राशि में राहू हो तो जातक को सर्प दंश का भय, भोजन में विष मिलाने का भय, विषैले जीव के डंक का खतरा सदैव बना रहता है।

रोग भाव में राहू जन्य विशेष रोग

अभी तक हमने राहू के प्रत्येक राशि में होने पर पैदा होने वाले रोगों की चर्चा की। लेकिन राहू अकेला अपने बल पर रोग नहीं देता, क्योंकि यह एक छायाग्रह है। परंतु जो राशि, भाव अथवा ग्रह राहू से पीडित रहता है अथवा राहू के प्रभाव में आता है, जातक को उस ग्रह, राशि एंव भाव के अनुसार ही रोग की संभावना रहती है। इसमें राहू की इतनी ही भूमिका रहती है कि वह रोग की तीव्रता बढा देता है।

यदि कोई ग्रह रोग भाव अर्थात् छठवे भाव में हो तो वह उस ग्रह के प्रतिनिधि रोग की संभावना को बढा देता है। लेकिन रोग भाव में अकेला राहू जातक को निरोगी रखने में अधिक भूमिका निभाता है। यह हो सकता है कि राहू रोग भाव में बैठा हो लेकिन कोई अन्य ग्रह उससे पीडित हो, तो उस पीडित ग्रह के रोग होने की संभावना बनी रहती है।

- लग्न भाव में राहू अचानक सिर में चोट देता है। मंगल भी प्रभाव में हो तो इस चोट की गंभीरता अधिक रहती है। प्रथम भाव में राहू चन्द्र से मिलकर ग्रहण योग बनाये, तो जातक को शिरोरोग होता है। यदि इस योग के साथ किसी अन्य त्रिकोण अर्थात् पंचम या नवम् में शनि हो तो प्रेत-पिशाच बाधा भी हो सकती है। यदि शनि के स्थान पर मंगल हो तो जातक पिशाच बाधा में अपने सिर पर स्वंय चोट कर लेता है अथवा दुर्घटना आदि में चोट लग सकती है। इस भाव में राहू के साथ शनि हो तो भी प्रेत बाधा का भय रहता है।
- द्वितीय भाव में राहू दुर्घटना में वाणी जाने का भय देता है अथवा जातक अपनी वाणी के प्रभाव का गलत उपयोग करता है। राहू के साथ शनि हो तो प्रेत बाधा हो सकती है।
- सुख भाव में राहू तथा दशम् भाव में किसी अशुभ भाव का स्वामी हो, तो जातक को राजदण्ड अवश्य मिलता है। इस कारण वह मानसिक रोगी बन सकता है।
- पंचम भाव में रोग भाव के स्वामी के साथ राहू के रहने पर जातक की संतान को प्रेत बाधा का भय रहता है। जातक स्वंय भी मानसिक रोग से पीडित रह सकता है।
- सप्तम् भाव में राहू जातक अथवा उसके जीवनसाथी को प्रेत-पिशाच बाधा देता है।
- अष्टम् अथवा द्वादश भाव में राहू के साथ क्षीण चन्द्र हो तथा इनके साथ शनि अथवा मंगल भी हो, तो जातक की प्रेत अथवा पिशाच बाधा से मृत्यु तक संभव है। अष्टम् भाव में राहू के साथ क्षीण चन्द्र हो, द्वितीय भाव में भी कोई अन्य पाप ग्रह हो, तो भी प्रेत-पिशाच बाध से मृत्यु संभव है।

राहू महादशा का फल

जन्मकुंडली में राहू किसी अन्य पापी ग्रह से पीडित अथवा दूषित हो तो इसकी दशा में विभिन्न फल प्राप्त होते है। शुभ ग्रह, लग्नेश या योगकारक ग्रह की युति अथवा दृष्ट से राहू के अशुभ फल में कमी आती है। राहू जन्मकुंडली में यदि त्रिषडाय भाव में हो तो शुभ फल भी अवश्य देते है।

ज्योतिष शास्त्र में राहू को सर्प का मुख कहा गया है। फिर कैसे आशा कर सकते है कि सांप के पास जायें और सांप आपको नुकसान न पहुंचाये? राहू नागदेव के प्रतिनिधित्व करते है। इसलिए इन्हें नाग का मुख कहा गया है। नाग दंश के लिये कहा गया है कि नाग केवल तीन कारणों से डसता है, प्रथम- पूर्वजन्म के प्रभाव से, द्वितीय- ईश्वरीय आदेश से और तृतीय- उसको छेडने से।

ज्योतिष शास्त्र भी यही कहता है कि राहू की जन्मकुंडली में स्थिति जातक के पूर्वजन्म से प्रभावित रहती है। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि राहू की महादशा में ईश्वर स्मरण एंव नागदेव की सेवा से निश्चित ही अन्तर आता है।

राहू राजनीति का कारक है। नेता जितनी तीव्र गति से उच्च पद प्राप्त करते है, उससे अधिक गति से उनका पतन भी होता है। जन्मकुंडली में राहू यदि अपनी उच्च राशि, स्वराशि, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, स्वनवांश या उच्चांश या तृतीय अथवा एकादश भाव में हो तो जातक को राजनीति प्रवेश, राज्य सम्मान, सुख, वैभव, वाहन आदि समस्त प्रकार का सुख, कीर्ति प्रदान करते है। राहू अपनी दशा के आरंभ में शारीरिक कष्ट, आर्थिक हानि तथा मानसिक कष्ट अवश्य देते है।

महर्षि पाराशर के अनुसार राहू यदि स्वराशि अर्थात् कन्या राशि में हो तो अपना दशा के दौरान अनेक सुख, धन एंव सम्पत्ति का लाभ प्रदान करते है। मित्र राशि अथवा ग्रह से युत हो तो वाहन प्राप्ति के साथ विदेश यात्रा का योग बनते है। राहू यदि शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा युत हो या किसी अशुभ भाव में हो तो राज्य लाभ, नीच राजा या अधिकारी से कार्य सिद्धि होती है। अष्टम् अथवा द्वादश भाव में होने पर समस्त प्रकार के कष्ट प्राप्त होते है। राहू यदि पाप ग्रह से युत, दृष्ट या प्रभाव में हो अथवा नीच राशि अथवा मारकेश ग्रह के प्रभाव में हो, तो निश्चित ही मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट, स्थान च्युत एंव मानसिक रूप से भ्रष्ट, जीवनसाथी अथवा पुत्र सुख की हानि तथा खराब भोजन मिलता है।

राहू महादशा तथा राहू की दशा में राहू अन्तर्दशा के कुछ मुख्य फल निम्न प्रकार रहते हैः-

- लग्नस्थ राहू विष, शत्रु एंव अग्नि भय देता है।
- द्वितीय भाव में राहू आर्थिक हानि प्रदान करता है।
- तृतीय भाव का राहू पराक्रम वृद्धि, परंतु चोरी अथवा अग्नि से भय देता है।
- सुख भाव का राहू मानसिक कष्ट, कारावास, भय, वाहन चोरी का भय आदि देता है।
- पंचम भाव का राहू प्रमेह, एपेंन्डिक्स की शल्य चिकित्सा, त्वचा रोग, फेफडों के रोग आदि दे सकता है।
- छठवे भाव में राहू शत्रु कष्ट दूर करता है।
- सप्तम् भाव में राहू सर्प भय, जीवनसाथी को कष्ट, अग्नि भय, राजदण्ड, नेत्र रोग अथवा बडी हानि का भय देता है।
- अष्टम् भाव का राहू जो कष्ट दे वह कम होते है। इससे नौकरी छूटना अथवा रिश्वत लेते पकडे जाना या किसी पुराने केस का अचानक खुलना, मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य अन्य प्रकार के कष्ट, घर में निरंतर क्लेश, मानसिक रोग अथवा कष्ट या किसी द्वारा विष दिया जाना मुख्य रहते है।
- नवम् भाव का राहू कष्ट, भाग्य हानि, धर्म से विमुख एंव आर्थिक हानि दे सकता है।
- दशम् भाव के राहू में पिता को कष्ट, कर्म क्षेत्र में पीडा, अग्नि पीडा व परिवार कष्ट दे सकता है।
- एकादश भाव का राहू आर्थिक लाभ के साथ चोरी एंव अग्नि का भय व दायें कान में कष्ट देता है।
- द्वादश भाव का राहू भी बहुत कष्ट देता है। इससे शैय्या सुख में कमी, नींद का न आना एंव अन्य कष्ट मिल सकते है।

राहू महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

राहू महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा के फल निम्न प्रकार रहते हैः-

राहू में राहू अन्तर्दशा फलः-

राहू की दशा अधिकतर बहुत ही अशुभ रहती है। यदि राहू कर्क, वृष, वृश्चिक अथवा धनु राशि में हो अथवा त्रिषडाय भाव अर्थात् 3, 6 अथवा 11 वें भाव में राहू उच्च, मूल त्रिकोण, शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट हो, तो जातक को राज्य से लाभ व मान-सम्मान, व्यापारिक लाभ, उच्च पद की प्राप्ति होती है। मन में उत्साह भरा रहता है तथा वह निरंतर उन्नति करता है। यदि राहू किसी अशुभ भाव अर्थात् 6, 8 व 12 वें भाव में हो अथवा नीच, किसी पापी ग्रह के प्रभाव में या युत या दृष्ट हो, तो ऐसा जातक कटु भाषा बोलने वाला, विष अथवा जल से हानि उठाने वाला, भाई-बन्धु से वियोग, किसी अन्य से संबंध बनें। व्यर्थ की चिन्ता के साथ झंझट हो तथा ऐसे योग में शत्रु भी कष्ट देते है।

राहू में गुरू अन्तर्दशा फलः-

यह दशा भी प्रायः शुभ ही रहती है। राहू अथवा लग्न से गुरू किसी केन्द्र या त्रिकोण में उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री हो, तो जातक निरोगी रहता है। उसका मन धर्म कार्य में लगता है। उसे आर्थिक लाभ के साथ पुत्र प्राप्ति, वाहन सुख, शत्रु नाश एंव अन्य प्रकार के सुख मिलते है। वह किसी आकर्षक जातक के संपर्क में आता है तथा उसका अधिक समय

धार्मिक विचार-विमर्श में व्यतीत होता है। यद्यपि कोई भी ग्रह किसी अशुभ भाव अथवा नीच, अस्त या शत्रु राशि में या पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो निश्चित ही आर्थिक हानि, पारिवारिक कष्ट, अचानक बाधाओं का कारण बनता है।

राहू में शनि अन्तर्दशा फलः-

राहू अथवा लग्न से शनि किसी केन्द्र या त्रिकोण या आय भाव या उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक के परिवार में कोई उत्सव होता है। उसे सम्मान की प्राप्ति के साथ बडे जनहित कार्य अथवा किसी जलीय स्त्रोत जैसे तालाब आदि का निर्माण से यश मिलता है। इसके विपरीत यदि कोई भी ग्रह किसी अशुभ भाव में अथवा नीच, अस्त या शत्रु राशि में अथवा पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो जातक के परिवार में झगडा अथवा जीवनसाथी अथवा पुत्र को मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु का सामना करना पडता है। वह पद च्युत होकर नौकर से धोखा खाता है अथवा उसे और भी कष्ट उठाने पडते है। जातक को दुर्घटना अथवा किसी अन्य कारण से चोट लगती है अथवा वात-पित्त के रोग सताते है। शनि यदि मारकेश हो तथा जन्मकुंडली में भी मृत्यु योग हो, तो इस समय मृत्यु भी संभव है।

राहू में बुध अन्तर्दशा फलः-

लग्न में राहू अथवा राहू से बुध किसी केन्द्र या त्रिकोण या उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र क्षेत्री या शुभ प्रभाव में बली हो, तो जातक को कर्म क्षेत्र से आर्थिक लाभ, विद्या प्राप्ति, परिवार में वैवाहिक कार्यक्रम, पुत्र प्राप्ति, मन में प्रसन्नता, वाक् चातुर्य से लाभ प्राप्त होते है। यद्यपि इनमें से कोई ग्रह किसी अशुभ भाव अर्थात् 6, 8 या 12 वें भाव में अथवा राहू से बुध 6, 8 या 12 वें भाव में अथवा नीच, अस्त या शत्रु राशि में या पाप ग्रह विशेषकर शनि के प्रभाव में अथवा शनि की राशि हो तो जातक को हानि, संकट, राज्यदण्ड अथवा संतान वियोग का सामना करना पडता है।

राहू में केतु अन्तर्दशा फलः-

इस दशाकाल में जातक को अधिकतर हानि ही उठानी पडती है। केतु यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में अथवा युत हो, तो थोडा आर्थिक लाभ, समाज में सम्मान एंव अन्य सुख के साथ भूमि लाभ मिलता है। यदि केतु केन्द्र या त्रिकोण या अष्टम् या द्वादश भाव में हो, तो जातक को समस्त प्रकार से हानि एंव बहुत कष्ट उठाने पडते है। इसमें मुख्यतः शस्त्र, विष एंव अग्नि से हानि, शत्रुघात, शिरोरोग, मित्र वर्ग से धोखा तथा शरीर पर कोई निशान बनना आदि शामिल है।

राहू में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

शुक्र किसी केन्द्र या त्रिकोण या आय भाव या उच्च, मूल त्रिकोण, मित्र क्षेत्री या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक के मान-सम्मान में वृद्धि, पुत्र प्राप्ति, वाहन प्राप्ति, वैभव एंव ऐश्वर्य प्राप्ति होती है। पुरूष जन्मकुंडली में इस योग में किसी अन्य सुन्दर स्त्री से शारीरिक संबंध बनते है। लग्न अथवा राहू से शुक्र 6, 8 या 12 वें भाव में अथवा नीच, अस्त या शत्रु राशि में या पाप ग्रह, विशेषकर मंगल या शनि के प्रभाव में हो, तो जातक को अपने ही लोगों का विरोध सहना पडता है। वात पित्त-जनित रोग सताते है। भाई की किसी भी रूप में हानि, जीवनसाथी को कष्ट, शूलरोग, अचानक संकट आना, झूठा दोषारोपण जैसे फल प्राप्त होते है।

राहू में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में सूर्य यदि स्वक्षेत्री, उच्च, त्रिकोण या आय भाव में हो, तो जातक को आर्थिक उन्नति, कीर्ति, विदेश यात्रा, राज्य लाभ एंव राज्य से आर्थिक लाभ जैसे फल प्राप्त होते है। सूर्य यदि राहू से 6, 8 या 12 वें भाव में हो अथवा नीच का हो, तो अनेक प्रकार के कष्ट, शत्रु पीडा, अस्थि एंव नेत्र संबंधी रोग, राज पीडा या राजदण्ड, अग्नि या विष से हानि, मित्र वर्ग से धोखा मिल सकता है। जीवनसाथी अथवा पुत्र को कष्ट होता है। यह दशा अधिकतर अशुभ ही रहती है।

राहू में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में चन्द्र यदि बलवान होकर किसी केन्द्र या त्रिकोण या आय भाव में या उच्च, मूल त्रिकोण, मित्र क्षेत्री या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक को मान-सम्मान, सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। लेकिन लग्न अथवा राहू से चन्द्र किसी 6, 8 या 12 वें भाव अथवा नीच, अस्त या शत्रु राशि में या पाप ग्रह, विशेषकर मंगल या शनि के प्रभाव में हो, तो जातक को जल से भय, अनेक प्रकार के कष्ट, कोई विवाद अथवा मुकद्मा आरम्भ हो सकता है या वह हार सकता है। उसे आर्थिक हानि, खेती, भूमि एंव पशु हानि के साथ मन में विचित्र प्रकार के भय समाये रहते है।

राहू में मंगल अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में मंगल यदि किसी केन्द्र या त्रिकोण या आय भाव में या उच्च, मूल त्रिकोण, मित्र क्षेत्री या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक को निश्चित ही भूमि, भवन में वृद्धि, शारीरिक कष्ट, किसी प्रकार की विपत्ति में अचानक फंसना, कार्य क्षेत्र या नौकरी या व्यवसाय में परिवर्तन होना, उच्च पद की प्राप्ति भी संभव है। यद्यपि राहू अथवा लग्न से मंगल 6, 8 या

12 वें भाव में हो अथवा नीच अथवा पाप प्रभाव में हो, तो जातक को अनेक विपत्तियों, जीवनसाथी एंव संतान अथवा भाई को कष्ट, राज्य भय, अग्नि या शस्त्र या विष से हानि, शरीर में रोग विशेषकर हृदय अथवा नेत्र रोग होते है। जातक अपने कर्त्तव्य से डिग जाये अथवा हट जाये अथवा जातक का पद छिन जाये। जातक किसी भी कारण से शरीर में चोट लगा बैठता है।

➢ केतु संबंधी विशेष रोग

केतु भी एक छायाग्रह है। यह पापी ग्रह होने के साथ अति शुभ ग्रह भी माना गया है। इसलिए किसी भी रोग में केतु की प्रत्यक्ष भूमिका नहीं रहती। जन्मकुंडली में केतु जिस किसी ग्रह को प्रभावित करेगा अथवा जिस पर अपना पाप प्रभाव डालेगा अर्थात् कोई ग्रह केतु से पीडित होगा, तो ही जातक रोग ग्रस्त बनता है। यद्यपि केतु स्वंय किसी रोग के लिए उत्तरदायी नहीं रहता। केतु के प्रभाव से मुख्यतः सिर में चोट लगना, उन्माद रोग, उदर विकार, गर्भस्त्राव, विष रोग, जलोदर, हिस्टीरिया, भूत-प्रेत बाधा, किसी वाहन से अचानक गंभीर रूप से चोट लगना, हृदयाघात, मधुमेह, विषाक्त कीटाणुओं का शरीर में प्रवेश, अचानक बेहोश होना, अपस्मार, रक्त विकार, मूत्र संस्थान संबंधी रोग, यौन रोग, हर्निया, अण्डकोष वृद्धि, रसौली, सूजाक, जोडों का दर्द, रीढ की हड्डी एंव श्वेत कुष्ठ की संभावना रहती है। केतु यदि मारक प्रभाव में हो अथवा स्वंय मारक होकर किसी अन्य पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो केवल पित्त रोग की अधिक संभावना रहती है।

इनके अतिरिक्त मेरा अनुभव है कि व्यक्ति को जो भी अचानक रोग होते है, उदाहरण के लिये अपघात अथवा हृदयाघात, तो उनमें भी राहू की तरह केतु का अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप अवश्य रहता है। जन्मकुंडली में केतु यदि लग्नेश के साथ हो तथा लग्नेश पर रोग भाव के स्वामी का प्रभाव हो, तो अचानक होने वाले रोगों में वृद्धि हो जाती है। अष्टमेश अथवा रोग भाव के स्वामी के साथ हो तो अवश्य ही शरीर अथवा मुख पर कोई निशान रहता है। मैंने अपने अनुभव में पाया है कि केतु भी राहू की तरह अपनी महादशा, भुक्ति अथवा गोचर में छठवे भाव को प्रभावित करने पर अधिक रोग देता है। यथा-

- प्रथम भाव में केतु सिर में चोट या अचानक दुर्घटना देता है।
- द्वितीय भाव में केतु के कारण मानसिक रोग, वाणी विकार अथवा नेत्र संबंधी रोग की संभावना रहती है।
- तृतीय भाव में केतु दोनों हाथों में नियमित पीडा रखता है अथवा पाप प्रभाव में होने पर दुर्घटना द्वारा बाहों को क्षति ग्रस्त करता है।
- चतुर्थ भाव में केतु हृदयाघात, फेंफडो में गंभीर रोग अथवा निमोनिया जैसे रोग का कारण बनता है।
- पंचम भाव में केतु पुत्र संतान की पीडा के साथ राजदण्ड दे सकता है। राजदण्ड के कारण मानसिक अपघात का भय रहता है।
- रोग भाव में केतु अग्नि भय, शस्त्र भय अथवा विष भय देता है।
- सप्तम् भाव में केतू मूत्र रोग के साथ शीघ्रपतन अथवा संभोग में क्षीणता देता है।
- अष्टम् भाव में केतु गुदा रोग, अस्थि भंग, शस्त्र भय तथा विष भय से जातक को पीडित रखता है।
- नवम् भाव में केतु के द्वारा जातक को जांघों में पीडा, सायटिका, कफ रोग तथा क्षय रोग की संभावना रहती है।
- दशम भाव में मानसिक रोग, मन में विचित्र सा भय तथा अचानक पिता को कष्ट हो सकता है।
- एकादश भाव में केतु के प्रभाव से कमर से निचले हिस्से में पीडा बनी रह सकती है।
- द्वादश भाव में केतु नेत्र विकार के साथ नेत्र हानि तथा निद्रा सुख में कमी करता है।

केतु महादशा का फल

जन्मकुंडली में केतु यदि किसी अन्य पापी ग्रह से पीडित अथवा दूषित है, तो उसकी दशा में विभिन्न फल प्राप्त होते है। यद्यपि केतु के शुभ ग्रह, लग्नेश या योगकारक ग्रह से युति अथवा दृष्टि होने पर केतु के अशुभ फल में निश्चित ही कमी आती है।

केतु यदि अपने घर में किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में हो तो साथ वाले ग्रह की शुभता में चौगुनी वृद्धि करते है। इसलिए केतु को भी शुभ ग्रह में स्थान प्राप्त है। केतु किसी भी केन्द्र, एकादश भाव, त्रिकोण अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट या

उसके प्रभाव, शुभ ग्रह के वर्ग में हो, तो निश्चित ही अपनी दशा में जातक को राज्य से लाभ, मन सदैव उत्साहित रहना, कोई उच्च पद प्राप्ति होना, वाहन लाभ, पुत्र-संतान की प्राप्ति, विदेश यात्रा तथा ऐश्वर्य प्राप्ति कराते है। केतु त्रिषडाय अर्थात् 3, 6 अथवा 11 वें भाव में भी सुख प्रदान करते है। किंतु इसकी दशा का अन्त थोडा कष्टदायक रह सकता है। इसमें कहीं की यात्रा होती है, तो वहां पर कष्ट मिलते है। केतु यदि 2, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, पाप ग्रह के प्रभाव में हो, दृष्ट या युत में हो, तो निश्चित ही रिश्तेदार एंव बंधु-बांधवों की हानि, स्थान परिवर्तन तथा मानसिक कष्ट प्रदान करते है।

केतु महादशा अन्तर्गत अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा फल

केतु अन्तर्गत अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा के निम्न फल मिलते हैः-

केतु में केतू अन्तर्दशा फलः-

इस दशा में केतु यदि केन्द्र, त्रिकोण अथवा लाभ भाव में है, तो जातक को भूमि लाभ, धन-धान्य की प्राप्ति, चतुष्पद लाभ, स्त्री एंव पुत्र की प्राप्ति कराता है। किंतु केतु यदि अस्त, नीच या पापी ग्रह के प्रभाव में अथवा त्रिक भाव 6, 8 अथवा 12 वें भाव में है, तो जातक को रोग, धन-सम्पत्ति का नाश, संतान या पत्नी को पीडा, शत्रुओं से कष्ट, मित्र शत्रु बने, नित अशुभ बातें सुनने को मिलें अथवा अन्य के घर जाकर रहना पडे, जैसे फल प्रदान करते है। केतु का द्वितीय अथवा सप्तम् भाव के स्वामी से संबंध मृत्युतुल्य कष्ट प्रदान करता है।

केतु में शुक्र अन्तर्दशा फलः-

शुक्र यदि उच्च, स्वराशि, मित्र क्षेत्री अथवा केन्द्र-त्रिकोण अथवा आय भाव में केतु से युत है, तो जातक को राज्य लाभ, आर्थिक लाभ मिलते है। कर्मेश अथवा भाग्येश से युत होने पर यह राज्यपक्ष से आर्थिक लाभ, सुख-सौभाग्य की प्राप्ति एंव उन्नति देता है। लग्न अथवा केतु से शुक्र 6, 8 अथवा 12 वें भाव में नीच, पाप ग्रह के प्रभाव में है, तो भी जीवन साथी एंव कुल का विरोध कराता है, मान-हानि, आर्थिक कष्ट, अवनति एंव कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

केतु में सूर्य अन्तर्दशा फलः-

सूर्य यदि उच्च, स्वराशि, मित्र क्षेत्री अथवा केन्द्र-त्रिकोण अथवा आय भाव में है, तो दशा आरम्भ में सर्वसुख, परंतु मध्य में कुछ कष्ट देता है। लग्न अथवा केतु से सूर्य 6, 8 अथवा 12 वें भाव में नीच, पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो गुरू की मृत्यु, राजदण्ड, शारीरिक पीडा, माता-पिता का वियोग, विदेश यात्रा से लाभ, अपने ही लोगों से विरोध तथा वात, कफ व ज्वर से पीडा देता है। सूर्य यदि द्वितीय भाव का स्वामी हो तो अत्यंत शारीरिक कष्ट देता है।

केतु में चन्द्र अन्तर्दशा फलः-

चन्द्र यदि उच्च, स्वराशि, मित्र क्षेत्री हो तो जातक को राज्य से लाभ, कन्या रत्न की प्राप्ति, भूमि लाभ, व्यवसाय में उन्नति एंव धन संचय में सफलता, पुत्र संतान से सुख जैसे फल प्राप्त होते है। चन्द्र यदि नीच, पापी या क्षीण (कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक) अथवा 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो जातक को कई तरह के भय, शरीर में रोग की पीडा, बहुत आर्थिक लाभ एंव उससे अधिक हानि भी तुरंत देता है। जातक किसी झूठे मुकद्मे में फंस सकता है। घर में प्रसूति होना परंतु उसमें भी बहुत कष्ट उठाना, नौकर व कन्या सन्तति का लाभ होता है।

केतु में मंगल अन्तर्दशा फलः-

मंगल यदि केतु अथवा लग्न से उच्च, स्वराशि, मित्र क्षेत्री अथवा केन्द्र-त्रिकोण अथवा आय भाव में हो, तो जातक को इस दशा में भूमि लाभ, शत्रुओं पर विजय, पुत्र संतान का जन्म, शैय्या सुख एंव व्यापार में वृद्धि होती है। राज्य लाभ के साथ राज्य से सम्मान की प्राप्ति भी संभव है। केतु से मंगल द्वितीय अथवा 6, 8 अथवा 12 वें भाव में हो या नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री हो तो देश या शहर छूटना, अवनति, अपमान, व्यवसाय में हानि, अपने भाईयों की हानि, शत्रु कष्ट, परिवार के बडे लोगों से कलह-क्लेश, जननांग रोग अथवा सर्प, अग्नि, विष, शस्त्र या दुर्घटना भय रहता है। मंगल यदि मारक हो या द्वितीय भाव का स्वामी हो, तो मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट, पागलपन अथवा अन्य भीषण कष्ट हो सकते है।

केतु में राहू अन्तर्दशा फलः-

यदि जन्मकुंडली में राहू उच्च, स्वराशि, मित्रक्षेत्री, लग्नेश या शुभ प्रभाव में हो, तो जातक को धन-सम्पत्ति का लाभ, सुख प्राप्ति, पदोन्नति जैसे फल प्राप्त होते है। राहू यदि 7, 8 अथवा 12 वें भाव में किसी पाप ग्रह के प्रभाव में या उससे युत है, तो आर्थिक हानि, पदोपनति, प्रमेह रोग, नेत्र रोग, शत्रुओं से पीडा, नीच लोगों की संगति मिलती है। स्वयं भी दूसरों को हानि का कारण बनता है। अग्नि, राज्यदण्ड या बडी चोरी का भय रहे।

केतु में गुरू अन्तर्दशा फलः-

गुरू यदि उच्च, स्वराशि, मित्रक्षेत्री अथवा केन्द्र-त्रिकोण अथवा आय भाव में हो, तो जातक को इस दशा में विद्या लाभ, यश-कीर्ति में वृद्धि, मान-सम्मान, आय वृद्धि, विदेश यात्रा, पुत्र संतान का जन्म तथा भूमि अथवा भूमि के माध्सम से धन प्राप्ति, राज्य से सम्मान की प्राप्ति एंव अनेक उपहार मिलते है। गुरू यदि केतु से 6, 8 या 12 वें भाव में या नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री हो तो धन-सम्पत्ति की हानि, आचार-विचार की हानि, जीवनसाथी से वियोग जैसे फल प्राप्त होते है।

केतु में शनि अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में शनि यदि 8 अथवा 12 वें भाव में हो, तो इस दशा में जातक को अनेक प्रकार के कष्ट, मन में भय एंव दुःख, आर्थिक हानि जैसे फल प्राप्त होते है। शनि यदि उच्च, मूल त्रिकोणी, त्रिषडाय भाव अर्थात् 3, 6 अथवा 11 वें भाव में हो, तो अल्प एंव सामान्य सुख, सम्मान मिलता है तथा कार्य सिद्धि जैसे सामान्य फल प्राप्त होते है। शनि यदि केतु से किसी अशुभ भाव अर्थात् 6, 8 या 12 वें भाव में हो तो फिर अशुभ फलों की कोई सीमा नहीं रहती। इसमें भीषण रोग, दूसरे लोगों के साथ अपने भी कष्ट एंव दुःख दे। शत्रुओं से भय एंव हानि, स्थान परिवर्तन अथवा नौकरी छूटना अथवा शहर छूटना, किसी दुर्घटना में अंग भंग होना अर्थात् किसी अंग की हानि अथवा मृत्यु भी संभव है। मैंने अपने अनुभव में इस दशा के अनिष्ट फलों को देखा है।

केतु में बुध अन्तर्दशा फलः-

जन्मकुंडली में बुध यदि किसी केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो जातक को ऐश्वर्य प्राप्ति, यश लाभ, अच्छी संगत मिले, पुत्र-संतान की प्राप्ति हो, भूमि-भवन व धन लाभ हो, उच्चाधिकारी की प्रशंसा मिले। परंतु जब बुध लग्न या केतु से किसी अशुभ भाव अर्थात् 6, 8 या 12 वें भाव में अथवा नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री, पाप ग्रह के प्रभाव में हो, तो पुराने शत्रु द्वारा कोई बडी हानि हो, व्यय बडे, अपना घर छोडकर कहीं और रहना पडे, किसी बंधन में बंधे, पशु अथवा खेती की हानि जैसे फल प्राप्त होते है।

अध्याय-छह
ज्योतिष शास्त्र में प्रायोगिक रोग विचार

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अगर जन्मकालीन ग्रह शुभ स्थिति में है, तो निश्चित ही जातक का जीवन सुखमय एंव स्वस्थ्यप्रद बना रहता है। लेकिन इसके विपरीत अगर जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति अशुभ बन जाए, तो जातक का जीवन निश्चित ही कष्ट, दुःख एंव रोग सम्पन्न बनकर रह जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में रोगों का एक कारण 'कर्मज' माना है। यथा-

'पूर्व जन्मकृत दोषेण व्याधिरूपेण बाध्यते।'

अर्थात्-पूर्व जन्म के बुरे कर्म व्यक्ति को व्याधि काटने पर विवश करते है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोग विशेष की उत्पत्ति जातक की जन्मकालीन में ग्रह, राशि, नक्षत्र की विशेष स्थिति पर निर्भर करती है एंव उन्हें समय से पहले ज्ञात किया जा सकता है। यदि जन्मकुंडली में पाप एंव अशुभ ग्रहों की स्थितियां विद्यमान है, उनके ऊपर पापी ग्रहों की दृष्ट या युति से प्रभाव है, तो निश्चित ही रोगों की उत्पत्ति होती है। इन्ही ग्रह स्थितियों से उनके साध्य-असाध्य की सूचना मिलती है। इसी प्रकार जन्मकुंडली में जो ग्रह रोग भाव या रोग कारक बनकर बैठते है, वह ग्रह अपनी दशाऽर्न्तदशा के अनुसार जातक के लिए रोग कारक या मारक प्रभाव वाले सिद्ध होते है।

ग्रहों में बृहस्पति को सबसे शुभ और शनि को सबसे अशुभ ग्रह माना गया है। इसलिए निर्बल एंव अशुभ शनि को रोग और गरीबी का सबसे प्रमुख कारक माना है। अतः शनि की दशाऽर्न्तदशा के साथ-साथ शनि की साढे साती का समय सबसे प्रभावशाली सिद्ध होता है।

देखने में आया है कि शनि लग्न पर स्वगृही दृष्टि डालें तो स्वयं जातक के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है और जातक शाररिक रूप से विकलांग हो सकता है। इससे उसका स्वास्थ्य भी सदैव खराब बना रहता है। जब शनि की द्वितीय भाव पर स्वगृही दृष्टि पडे तो यह नेत्र संबंधी व्याधि का कारण सिद्ध होती है। जातक का परिवार सीमित हो सकता है। वाणी दोष भी संभव है। तृतीय भाव पर शनि की स्वगृही दृष्टि अनुज सुख नहीं रहने देती या अनुज की शीघ्र मृत्यु का कारण बनती है। यह अनुज के साथ जातक के संबंध सामान्य नहीं रहते देते। जातक के सुनने की क्षमता कमजोर हो सकती है। जातक थायरॉयड या कर्ण विकार का रोगी भी बन सकता है। चतुर्थ भाव पर शनि की स्वगृही दृष्टि से जातक को मातृ सुख का अभाव रहता है। उसे छाती या हृदय विकार हो सकते है। जातक की आकस्मिक हार्ट अटैक से मृत्यु हो सकती है। ऐसे जातक का अन्य लोगों के साथ संबंध भी सामान्य नहीं रहते। पंचम भाव पर शनि की स्वगृही दृष्टि पुत्र अर्थात् संतान सुख से वंचित रखती है। संतान न्यून होती है या संतान की अकारण मृत्यु संभव है या फिर संतान दीर्घकालीन रोग का शिकार बनती है। जातक स्वंय भी पाचन संस्थान संबंधी (उदर रोग) रोगों का शिकार रहता है।

शनि की रोग भाव अर्थात् छठवें भाव पर स्वगृही दृष्टि जातक को मातृपक्ष, ननिहाल का सुख कम देती है। जातक गुर्दे, बडी आंत्र, मूत्र संस्थान संबंधी रोग, गठिया रोग से ग्रसित रहता है। सप्तम् भाव पर शनि की स्वगृही दृष्टि जातक के विवाह में विघ्न-बाधाएं, अधिक आयु में दाम्पत्य सुख में न्यूनता देता है। तलाक, अनवन, प्रजनन संस्थान संबंधी विकार देता है। जातक जीर्ण कब्ज से पीडित रहता है। अष्टम् भाव में शनि की स्वगृही दृष्टि से पति की आकस्मिक मृत्यु, गर्दे विकार, गुप्त रोग, स्त्री सुख में कमी की स्थिति बनती है। नवम् भाव में शनि की स्वगृही दृष्टि पितृ सुख में कमी, मनोविकार, उदर विकार, संतान सुख में कमी, पक्षाघात या कूल्हे के जोडों में विकार का कारण बनती है। दशम् भाव में शनि की स्वगृही दृष्टि के फलस्वरूप विकलांगता, घुटने के रोग, जोडों में विकार की स्थित बनती है। ग्यारहवें भाव में शनि की स्वगृही दृष्टि से बडे भाई के सुख में कमी, कर्ण विकार सताते है, जबकि द्वादश भाव में शनि की स्वगृही दृष्टि से निद्रा सुख में कमी, ऑखों के विकार, विशेषकर बायीं ऑख में विकार हो सकते है।

इस प्रकार जन्मकुंडली में ग्रह एंव राशियों की अलग-अलग स्थितियां एंव योग अलग-अलग रोगों का कारण बनती है। इस संबंध में कुछ रोगों का व्यावहारिक ज्ञान हम निम्न जन्मकुंडलियों के अध्ययन से ले सकते हैः-

ज्योतिष शास्त्र में रोगों का व्यावहारिक ज्ञान

1- ज्योतिष शास्त्र में उदर रोग

वर्तमान में उदर (पेट) संबन्धी व्याधियां एक नई समस्या बन गयी है। अस्सी फीसदी से ज्यादा लोग किसी न किसी प्रकार की उदर संबन्धी व्याधि से ग्रस्त, परेशान देखे जा रहे है। यद्यपि उदर संबंधी व्याधियों में ज्योतिषीय परामर्श, रत्न धारण एंव अन्य उपायों से पर्याप्त लाभ उठाया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में पेट रोगों का मुख्य कारक सूर्य का चंद्र युति में शत्रु राशि में जाकर बैठना तथा अष्टम् भाव में राहु अथवा केतु का स्थित रहना माना जाता है। इसके साथ लग्न अथवा लग्नेश के ऊपर शनि की अशुभ दृष्टि पडने से भी व्यक्ति निश्चित ही प्रतिकूल ग्रह दशा में उदर संबन्धी जटिल व्याधियों से ग्रस्त रहता है। अगर इन ग्रह, भाव आदि के ऊपर अशुभ एंव क्रूर ग्रहों यथा-मंगल, राहु, केतु आदि का प्रबल पापी प्रभाव भी पड जाए, तो निश्चित ही रोगी को सर्जरी करानी पडती है या फिर मृत्युतुल्य कष्ट का सामना करना पडता है। कुछ विशेष ग्रह स्थितियों में इन ग्रहों के अत्यधिक पीडित रहने पर रोग इतने गंभीर बन जाते है कि व्यक्ति के लिए मृत्यु कारक ही सिद्ध होते है।

ज्योतिष शास्त्र में चंद्र, बृहस्पति, सूर्य, बुध आदि ग्रहों को उदर और उसके अन्दर स्थित अंगों का कारकत्व प्रदान किया गया है। जैसे चंद्र या बृहस्पति को यकृत, प्लीहा का कारक, बुध को आंत्र का कारक, सूर्य एंव मंगल को पित्त, रक्त एंव पाचक रसों का कारक, शुक्र को वीर्य, पौरूष क्षमता, वासना का कारक एंव शनि को उदरस्थ वायु का कारक माना गया है। इसी प्रकार जन्मकुंडली के पंचक भाव और पंचमेश को उदर का प्रतिनिधित्व दिया गया है। जबकि छठवां भाव आन्तरिक अंगों का कारक माना गया है।

अतः पचंम भाव के मूल कारक सूर्य की उदर संबंधी रोगों की उत्पत्ति एंव निवृत्ति में महत्वूपर्ण भूमिका रहती है। जन्मकुंडली के पंचम भाव पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि पडे, कोई अशुभ एंव पापी ग्रह पंचम भाव में अशुभ बनकर बैठा हो, पंचमेश स्वंय भी पाप पीडित होकर स्थित हो, तो जातक को रोगकारक ग्रह की दशाऽन्तर्दशा अथवा गोचर भ्रमण के दौरान निश्चित ही **'उदर रोग'** का सामना करना पडता है। यद्यपि इसमें नवांश कुंडली की अशुभता भी निर्णायक बनती है।

जब किसी जन्मकुंडली में षष्ठेश चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ युति बनाकर स्थित रहे, पंचम भाव में शनि-चंद्र की युति बनी हो या लग्नेश, सप्तमेश एंव चंद्रमा पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड रही हो, तो व्यक्ति उदर संबन्धी रोग, मुख्यतः यकृत संबन्धी रोग एंव डायबिटीज की संभावना रहती है।

चंद्रमा और बृहस्पति के पापी ग्रहों के प्रभाव में पडने से भी उदर संबन्धी रोगों की समस्याएं प्रायः बनी रहती है। ऐसे लोगों को यकृत संबन्धी रोग बार-बार सताते है। अन्य ग्रहों की अशुभ स्थिति में इन्हें उदर की शल्य चिकित्सा तक करानी पडती है।

इसी प्रकार जन्मकुंडली में चंद्रमा जिस राशि में बैठे और वह राशि और षष्ठेश, दोनों पाप ग्रहों के प्रभाव में पड जाएं, साथ ही बृहस्पति के ऊपर भी पाप प्रभाव पड जाएं, या बृहस्पति स्वंय निर्बल बनकर बैठे, तो निश्चित ही जातक को उदर संबन्धी व्याधियों, खासकर पीलिया, रक्ताल्पता जैसे रोगों का सामना करना पडता है।

उदर संबंधी व्याधियों से संबन्धित कुछ प्रमुख योग निम्न प्राकर हैः-

- लग्न भाव पर शनि की दृष्टि और लग्नेश का संबन्ध रोगेश के साथ बन जाए, तो जातक को उदर संबन्धी व्याधियां जैसे कब्ज, बवासीर, अपच, अर्जीण, अम्लपित्त की शिकायतें बनी रहती है।
- पंचम भाव एंव पंचमेश का पाप पीडित होकर बैठना या पापकर्तरी योग में पडना भी उदर संबन्धी व्याधियों की संभावना बढाता है। यदि सूर्य भी निर्बल या पाप प्रभाव में हो, तो जातक को ऑपरेशन तक कराना पड जाता है।
- पंचम भाव में सूर्य और शनि एक साथ युति बनाकर बैठें, पंचम भाव पर अन्य पापी ग्रहों का अशुभ प्रभाव हो, तो भी कष्टकारक उदर व्याधियां जन्म लेती है। पंचम भाव उदर का कारक भाव है। सूर्य पंचम भाव के कारक है। अतः दोनों पर शनि के अशुभ-पापी प्रभाव से पंचम भाव से संबन्धित रोग की संभावना बढती है।
- इसी तरह अगर पंचम भाव में बुध पापी ग्रहों के साथ विराजमान हो जाए, पंचमेश बुध के ऊपर पापी ग्रहों का अशुभ प्रभाव पडे, तो भी जातक आंत्र संबन्धी रोगों से पीडित रहता है। जहां तक कि उसे सर्जरी तक करानी पडती है। रोगी को खूनी बवासीर का सामना करना पडता है। रोगी के उदर में रसौली बन सकती है। उसे रक्त स्त्राव का सामना करना पड सकता है।

- यदि जन्मकुंडली के छठवे और आठवें भाव में शनि-मंगल की युति बन जाए और चंद्रमा सिंह राशि में पाप पीडित होकर स्थित हो, तो निश्चित ही उदर संबन्धी व्याधियां, विशेषकर यकृत, पित्ताशय, आमाशय, आंत्र संबन्धी रोग सताते है।
- सप्तम् भाव में राहु, लग्न भाव में केतु एंव चंद्रमा शनि का पाप प्रभाव लेकर तथा अष्टम् भाव में शनि का अशुभ प्रभाव बन जाए, तो भी प्रायः उदर रोगों की संभावना रहती है।
- यदि लग्न भाव में राहु बुध के साथ और सप्तम् भाव में शनि के साथ मंगल स्थित हो, तो भी व्यक्ति को कई तरह के उदर संस्थान संबंधी रोग सताते है।
- जन्मकुंडली के द्वितीय भाव में शनि या राहु के अशुभ प्रभाव से भी उदर संबन्धी रोगों की संभावना रहती है। कारकांश कुंडली में पंचम भाव में केतु भी जातक को दस्त, संग्रहणी जैसे रोगों की संभावना देता है।
- तृतीय भाव में लाभेश और केन्द्र-त्रिकोण स्थानों में सिंह राशि में बृहस्पति एंव शुक्र बैठे, तो भी उदर रोगों की संभावना बनी रहती है।

उदर रोगों में ज्योतिषीय उपायः-

जो लोग उदर संबन्धी व्याधियों से ग्रस्त रहते है। अगर वह लोग सूर्य-चंद्र से संबन्धित दोषरहित एंव श्रेष्ठ क्वलिटी का कंधारी अनार रंग का माणिक्य और गौदांत रंग का उत्तम क्वालिटी एंव उपयुक्त वजन का मोती क्रमशः स्वर्ण एंव चॉदी की अंगूठी में जडवाकर शरीर पर धारण कर लें, साथ ही दशाऽर्न्तदशा अनुसार राहू-केतु, शनि आदि अशुभ ग्रहों से संबन्धित उपाय सम्पन्न कर लें, उनसे संबन्धित वस्तुओं का दान-पुण्य करें, तो निश्चित ही उदर संबन्धी व्याधियों से मुक्ति पा सकते है। उदर संबंधी रोगों के दौरान शनि से संबन्धित वस्तुओं का दान एंव पूजा-पाठ का भी विशेष महत्व रहता है। इनसे अशुभ ग्रह का प्रभाव शीघ्र शान्त होता है।

अनेक बार उदर संबन्धी व्याधियों के पीछे पितृदोष या कालसर्प दोष भी देखे जाते है। अतः जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में उपरोक्त योग विद्यमान हो, तो उनकी शान्ति के लिए भी यथासंभव प्रयास किए जाने चाहिए।

जन्मकुंडली नं.1

यह **'उदरशूल'** से ग्रस्त रहे एक ऐसे जातक की जन्मकुंडली है जो बुध महादशा के दौरान कई वर्ष तक अपने उदर शूल से परेशान रहा। एक समय इसे पेट के अल्सर का रोगी भी घोषित किया गया। यद्यपि ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय सम्पन्न करने से इसे शीघ्र अपने उदरशूल से मुक्ति मिल गई।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह एक मिथुन लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में कोई राशि नहीं है, लेकिन इसके चतुर्थ भाव में कन्या राशि में केतु, षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि में सूर्य, चंद्रमा, मंगल और वक्री बुध, सप्तम् भाव में धनु राशि के बृहस्पति, अष्टम् भाव में मकर राशि के शुक्र, दशम् भाव में मीन राशि के राहू और द्वादश भाव में वृष राशि के शनि स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में षष्ठेश मंगल तथा सप्तमेश गुरू (राहू नियंत्रक एंव बाधकेश) की लग्न भाव पर दृष्टि तथा लग्नेश बुध का षष्ठस्थ होना विषम रोग का कारण बन रहा है।

चंद्रमा नीचस्थ व पक्षबल में क्षीण होकर लग्नेश एंव षष्ठेश के साथ रोग भाव में अष्टमेश शनि से दृष्ट है। जन्म कुंडली में पंचमेश शुक्र अष्टमस्थ होकर केतु से दृष्ट है। षष्ठ भाव में सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध की युति तथा शनि एंव राहू की पापी दृष्टियां रोग को अति गंभीर रूप प्रदान कर रही है।

पंचमेश तथा षष्ठेश का दुःस्थान में होना तथा अष्टमेश शनि का व्यय भाव में जाकर बैठना, षष्ठ भाव के साथ-साथ सूर्य, चंद्रमा, मंगल और बुध के ऊपर अपनी दृष्टि डालने से निश्चित ही **'उदरशूल'** की पुष्टि हो रही है।

जन्मकुंडली नं.2

यह एक बालिका की जन्मकुंडली है, जो केवल साढे तीन साल तक ही जीवित रह पायी। यह जन्मजात रूप से रोग ग्रस्त थी। यह अपने संक्षिप्त जीवन में जिंदा रहने के लिए संघर्ष करती रही और अन्ततः हार कर मृत्यु की गोद में जा बैठी। इस बालिका के उपचार पर मां-बाप ने लाखों रूपये डॉक्टरी इलाज पर खर्च कर डाले, फिर भी उसका जीवन नहीं

बचा पाये। यह बालिका अपने मां-बाप को कर्जदार बना गई। बालिका के जन्म से ही आहार नाल नहीं थी। अहार नाल पाचन संस्थान का एक मुख्य अंग रहता है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह धनु लग्न की जन्मकुंडली है। लग्नेश बृहस्पति राहू के साथ द्वितीय भाव में मकर राशि में स्थित है। मकर राशि में ही बुध और मंगल बैठे है। जन्मकुंडली के तृतीय भाव में कुंभ राशि के सूर्य चंद्र एक साथ स्थित है। चतुर्थ भाव में मीन राशि के शुक्र, अष्टम् भाव में कर्क राशि के केतु और नवम् भाव में सिंह राशि के वक्री शनि स्थित है। बालिका का जन्म गुरू महादशा के दौरान बुध अन्तर्दशा में हुआ और उसी महादशा के दौरान केतु अन्तर्दशा में वह मृत्यु का ग्रास बन गई।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस बालिका का जन्म 26 फरवरी, 2009 के दिन हुआ। जन्म के तुरंत बाद ही उसे डॉक्टरी मदद की जरूरत पड गई। बालिका की जन्मकुंडली में लग्नेश बृहस्पति अपनी नीच राशि में गुलिक के साथ बैठे है। बृहस्पति चांडाल योग में भी है। जन्मकाल से बालिका को बृहस्पति की महादशा प्राप्त हुई, जो लग्नेश के साथ राजयोग कारक भी है। त्रिशांक कुंडली में भी बृहस्पति मीन राशि में स्थित है। त्रिशांश लग्नेश बुध, त्रिशांश में अपनी नीच राशि में है। लग्नेश की महादशा जो त्रिशांश में स्वराशि के है, बालिका में गंभीर रोग की पुष्टि करते है।

इस बालिका की जन्मकुंडली में काल पुरूष की चतुर्थ राशि कर्क में केतु, कर्क राशि स्वामी चंद्रमा सूर्य के साथ अस्त होकर एंव शनि से दृष्ट है। चतुर्थ भाव में रोगेश शुक्र एंव चतुर्थेश बृहस्पति अपनी नीच राशि में गुलिक के साथ पीडित होकर निश्चित ही चतुर्थ भाव से संबंध अंगों को नष्ट करने का संकेत दे रहे है। चतुर्थ भाव में आहार नाल भी आता है। अतः बालिका में रोग की पुष्टि हो रही है।

बालिका को गंभीर रोग की पुष्टि जन्म के तुरंत बाद ही हो गई। बालिका के पेट में आहार नाल अनुपस्थित थी। अतः बालिका को जन्म से ही नली डालकर फीडिंग करानी पडी। साढे तीन साल तक बालिका एक तरह से नली द्वारा ही जीवित रही। बालिका के दो-तीन बार ऑपरेशन भी हुए।

2- ज्योतिष शास्त्र में बवासीर रोग

बवासीर नामक इस रोग ने भी आज एक सामान्य रोग का रूप ले लिया है। क्योंकि अब हरेक चौथा वयस्क व्यक्ति ही बवासीर से ग्रस्त देखा जा रहा है। इस रोग के दौरान व्यक्ति के गुदाद्वार पर मस्से उभर आते है। उसे शौच के वक्त तो तीव्र पीडा एंव जलन का सामना करना पडता ही है, साथ ही साथ उसे कुर्सी के ऊपर बैठने या पलंग पर बैठते वक्त भी खासी दिक्कत उठानी पडती है। बवासीर के मस्सों के कट-फट जाने पर उनसे रक्त स्त्राव होने लगता है तब यह रोग नई एंव गंभीर परेशानी देता है। इसके कारण रोगियों के शरीर में शीघ्र ही रक्त की कमी (एनीमिया) होने लगती है।

ज्योतिषीय दृष्टि में बवासीर से ग्रस्त रोगियों की जन्मकुंडली के सातवें भाव में पापी ग्रह और उनके ऊपर मंगल जैसे क्रूर ग्रहों की दृष्टि अवश्य देखी जाती है। जब आठवें भाव में केतु अथवा शनि एंव राहु बैठ जाएं, तो इस रोग की भयानकता और भी बढ जाती है। सूर्य-चंद्र की युति से भी इस रोग की शुरूआत होते देखी जाती है।

- लग्न में शनि और सप्तम् भाव में मंगल स्थित हो, तो भी बवासीर रोग की संभावना रहती है।
- अष्टमेश सप्तम् भाव में और षष्ठेश अष्टम् भाव में स्थित हो, तो जातक में रक्त बवासीर का खतरा बढ जाता है।
- अष्टमेश की राशि में चन्द्रमा हो और उसके ऊपर राहू की अशुभ दृष्टि पडे, तो भी जातक को बवासीर रोग की संभावनी रहती है।

बवासीर का ज्योतिषीय उपायः-

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में बवासीर रोग से मुक्ति पाने के लिए सर्जरी ही एक मात्र एंव कारगर उपाय माना जाता है। यद्यपि इस रोग पर ज्योतिष संबन्धी उपायों से भी सहज नियंत्रण पाया जा सकता है। इसके लिए इन रोगियों को शुद्ध चांदी की कुंडलाकृति अगूंठी पहनने या चांदी की अंगूठी में **'माहे मरीयम'** नामक पत्थर जडवाकर धारण करने से चमत्कारिक लाभ मिलता है। इसके बाद इन रोगियों को न तो सर्जरी की जरूरत पडती है और न ही उनके गुदाद्वार से रक्त ही गिरता है।

यदि सूर्य-चन्द्र की युति एंव आठवें भाव की अशुभता के कारण बवासीर की उत्पत्ति हुई हो, तो इन रोगियों को प्रवाल या मून स्टोन अथवा रक्तवर्णीय मूंगा धारण करने तथा अशुभ एंव पापी ग्रहों की शान्ति कराने से पर्याप्त आराम मिलता है। ऐसे उपचार से इन रोगियों को किसी तरह की सर्जरी कराने की आवश्यकता नहीं पडती।

3- ज्योतिष शास्त्र में ऑन्त्रपुच्छ शोथ (एपेंन्डीसाइटिस)

ज्योतिष शास्त्र में छठवां भाव भी आंत्र संस्थान (आंत्र के आन्तरिक अंग) से संबन्धित माना गया है। इसके साथ कन्या राशि का संबंध भी उदर एंव आंत्र संस्थान के अंदर स्थिति अंगों के साथ स्थापित किया गया है। इसके अलावा बृहस्पति का कारकत्व भी उदर संस्थान और उसमें स्थिति अंगों को दिया गया है। सूर्य-चन्द्र भी उदर संस्थान के ऊपर अपना विशेष प्रभाव रखते है। इनका भी उदर संस्थान से संबन्धित रोगों के साथ कुछ न कुछ संबंध अवश्य रहता है। जबकि मंगल और राहू का छठवें भाव, षष्ठेश, कन्या राशि के अतिरिक्त बृहस्पति, सूर्य- चंद्र आदि के ऊपर क्रूर, पापी प्रभाव पडने से इन रोगों की पीडा एंव तीव्रता जटिल बन जाती है। राहू के प्रभाव से उदर संस्थान संबंधी कई रोग असाध्य बन जाते है, जबकि मंगल के प्रभाव से इनकी पीडा इस हद तक बढ जाती है, इतनी गंभीर हो जाती है कि तत्काल ऑपरेशन की नौबत बनने लगती है। कई बार ऐसी स्थिति से अकाल मत्यु की संभावना भी बन जाती है।

ऑत्रपुच्छ शोथ (एपेंन्डीसाइटिस) उदर संस्थान से संबन्धित एक ऐसा रोग है, जिसमें रोगी उदर में अत्यंत तीव्र पीडा अनुभव करता है। इस रोग में तत्काल ऑपरेशन कराने की नौबत बन जाती है।

- सूर्य और चन्द्रमा जब त्रिक भावस्थ हो अथवा त्रिकेश के साथ सूर्य-चंद्र युति बना कर बैठ जाए, तो ऑत्रपुच्छ शोथ जैसे गंभीर रोगों की उत्पत्ति होती है। चन्द्र एंव सूर्य जब शनि या राहू द्वारा पीडित होते है तब भी ऐसे ही उदर रोग सामने आते है।
- इसी तरह षष्ठ भावेश (रोगेश) स्वयं पाप ग्रहों से पीडित हो जाए, कन्या राशि और कन्या राशि स्वामी बुध भी पाप पीडित हो, तो भी ऐसे गंभीर रोग अर्थात् ऑत्रपुच्छ शोथ की स्थिति बनती है।
- अगर उपरोक्त कारकों के साथ लग्न भाव और लग्नेश भी पाप पीडित या निर्बल बनकर स्थित हो, तो निश्चित ही षष्ठेश, अष्टमेश की दशाऽर्न्तदशा अथवा गोचर भ्रमण के समय षष्ठेश, शनि, राहू अशुभ राशिगत् हो, तो ऐसे उदर रोगों की शुरूआत होती है। कई बार इस अवधि में पहले से विद्यमान रोग एकाएक जटिल और उग्र बनने लगते है। अतः उदर संस्थान से संबन्धित ऐसे रोगों के निदान एंव उपाचार पर तत्काल ध्यान देना चाहिए।

ऑत्रपुच्छ शोथ संबंधी कुछ उदाहरण-

जन्मकुंडली नं.3

यह एक ऐसे व्यक्ति की जन्मकुंडली है जिसे बीस वर्ष की उम्र में अचानक तीव्र **'उदरशूल'** का शिकार बनना पडा। चार महीने तक इसका अलग-अलग जगह इलाज चलता रहा, परंतु इसके रोग का निदान नहीं हो पाया। अन्ततः उसमें **'ऑत्रपुच्छ शोथ'** का निदान हुआ। डॉक्टरों ने तत्काल ऑपरेशन द्वारा उसे निकलवाने का परामर्श दिया, जिसे रोगी ने सहज स्वीकार कर लिया। रोगी को उदरशूल से मुक्ति पाने के लिए ऑत्रपुच्छ का ऑपरेशन कराना पडा।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मेष लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में शनि स्थित है। चतुर्थ भाव में कर्क राशि में च्रंद्रमा, पंचम भाव में सिंह राशि में केतु, अष्टम् भाव में वृश्चिक राशि में मंगल, गुरू, नवम् भाव में धनु राशि में शुक्र, दशम् भाव में मकर राशि में सूर्य और बुध, एकादश भाव में कुंभ राशि में राहू स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में बाधापति तथा राहू नियंत्रक शनि अपनी नीच राशि के होकर लग्न में स्थित है। शनि से षष्ठ स्थान पर मंगल है। शनि पंचमस्थ केतु से दृष्ट है। लग्नेश मंगल अष्टम भाव में व्ययेश गुरू से युक्त है। एकादश भाव से राहू का पंचम भाव पर पापी प्रभाव है। पंचमेश सूर्य की षष्ठेश बुध से युति तथा बाधापति शनि से दृष्टि लेकर बैठे है। सूर्य स्व भाव से छठवें स्थान पर है। अतः इन सबसे उदर रोग की पुष्टि हो रही है।

चंद्रकुंडली में भी पंचम भाव में पंचमेश मंगल की षष्ठेश गुरू से युति उदर रोग की पुष्टि कर रही है।

जातक का सिंतबर 1993 में शुक्र महादशा अन्तर्गत राहू अन्तरर्दशा एंव शनि प्रयन्तर दशा के दौरान ऑत्रपुच्छ शोथ (एपेंन्डीसाइटिस) का ऑपरेशन हुआ, जो सफल रहा।

इस जन्मकुंडली में शुक्र दोहरे मारकेश होकर चंद्रमा से षष्ठस्थ होने के कारण रोग कारक सिद्ध हुए। राहू चंद्रमा से अष्टमस्थ होने से शल्य क्रिया द्वारा अंग काटकर बाहर निकालने का कारक बना। शनि जन्मलग्न में होने से ऑपरेशन की सफलता प्रदान कर रहे है।

जन्मकुंडली नं.4

यह जन्मकुंडली भी **'ऑत्रपुच्छ शोथ'** से पीडित रहे एक रोगी की है। यह रोगी पांच वर्ष तक उदर व्याधि से गंभीर रूप से पीडित रहा। अन्ततः इसे ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय सम्पन्न कराने के बाद ही अपनी उदर पीडा से मुक्ति मिल सकी।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मिथुन लग्न की जन्मकुंडली है। इस जन्मकुंडली के चतुर्थ भाव में कन्या राशि में राहू, छठवें भाव में वृश्चिक राशि में मंगल, अष्टम् भाव में मकर राशि में सूर्य के साथ शुक्र, नवम् भाव में कुंभ राशि में बुध, दशम् भाव में मीन राशि में केतु के साथ चंद्रमा और एकादश भाव में मेष राशि में बृहस्पति के साथ शनि स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

ज्योतिष शास्त्र में छठवें भाव तथा कन्या राशि को उदर संस्थान का प्रतिनिधित्व दिया गया है। जबकि चन्द्र और सूर्य इस रोग के कारण माने गये है। मंगल एंव राहु इस रोग को मुख्यतः पीडा पहुंचाने में विशेष कारक बनकर अपनी भूमिका निभाते है।

जब चंद्रमा तथा सूर्य त्रिक भावस्थ होते है अथवा त्रिकेश सूर्य चंद्र से योग करके इसको पीडित करते है, तो निश्चित ही उदर संस्थान से संबधित गंभीर रोग पैदा हो जाते है या फिर चंद्र एंव सूर्य शनि या राहु द्वार पीडित हो जाए, तो भी उदर संबंधी ऐसे रोग पैदा होने लगते है।

षष्ठ भाव अथवा षष्ठेश पाप ग्रहों से पीडित हो जाए, कन्या राशि भी पीडित हो, तो भी उदर संस्थान से संबन्धित गंभीर रोग जन्म लेते है। इस संबंध में हम लग्न के महत्व का भी अवमूल्यन नहीं कर सकते। यह रोग षष्ठेश, अष्टमेश अथवा शनि, राहु अशुभ राशिगत हो तब शुरू होते है।

अतः उपरोक्त जन्मकुंडली में मंगल षष्ठ भावस्थ है और केतु द्वारा दृष्ट होकर पीडित है। लग्न एंव लग्नेश बुध त्रिकेश मंगल तथा शनि द्वारा दृष्ट होकर लग्न पीडित है। सूर्य का योग त्रिकेश शुक्र से है तथा यह राहु एंव त्रिकेश शनि से दृष्ट होकर पीडित है। कन्या राशि भी राहु से पाप पीडित है।

अतः निश्चित ही उपर्युक्त विश्लेषण से षष्ठ भाव, चंद्र, सूर्य, लग्न, लग्नेश एंव कन्या राशि पीडित है। इसलिए इस जन्मकुंडली में भी ऑत्रपुच्छ शोथ (एपेंन्डीसाइटिस) की पुष्टि हो रही है।

जन्मकुंडली नं.5

यह जन्मकुंडली भी उदर पीडा से त्रस्त रहे एक व्यक्ति की है। यह व्यक्ति एक दशक तक अपनी पीडा से परेशान रहा। अन्त में उसमें **'ऑत्रपुच्छ शोथ'** की पुष्टि हुई। यद्यपि इस जातक से अपना ऑपरेशन नहीं कराया। यह जातक कई वर्ष तक दर्दशामक दवाओं के साथ आयुर्वेदिक उपचार लेता रहा। अन्ततः उसने ज्योतिष शास्त्र का आसरा लिया। इसे भी ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय सम्पन्न कराने के बाद अपनी उदर पीडा से मुक्ति मिल गयी।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह तुला लग्न की जन्मकुंडली है। इस जन्मकुंडली के द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि में मंगल के साथ बृहस्पति, तृतीय भाव में धनु राशि में शुक्र के साथ बुध, चतुर्थ भाव में मकर राशि में सूर्य, पंचम भाव में कुंभ राशि में राहू, सप्तम् भाव में मेष राशि में चंद्रमा और शनि तथा एकादश भाव में सिंह राशि में केतु विराजमान है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में षष्ठ भाव पापकर्तरी योग में विद्यमान है। चंद्रमा की युति भी शनि के साथ है तथा वह केतु के पाप प्रभव में भी है। अतः जन्मकुंडली में चंद्रता पर्याप्त रूप से पीडित है। सूर्य भी शनि से दृष्ट होकर पीडित है। लग्न शनि

एंव राहू से तथा लग्नेश केतु से दृष्ट होकर पीडित है। षष्ठेश का योग मंगल से है। अतः षष्ठेश भी पर्याप्त रूप में पीडित है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यही कहा जा सकता है कि जन्मकुंडली में सूर्य, चंद्रमा, लग्न, लग्नेश के साथ-साथ षष्ठ भाव एंव षष्ठेश सभी पर्याप्त रूप में पडित होकर स्थित है। निश्चित ही उदर व्याधि (एपेन्डिसाइटिस) का योग बन रहा है।

जन्मकुंडली नं.6

यह भी उदर पीडा से त्रस्त रहे एक युवक की जन्मकुंडली है। यह युवक अपने किशोरवय काल से ही उदर पीडा से परेशान रहा। फिर यह युवक भारतीय सेना में भरती हो गया। सेना में भर्ती होने के बाद ही इसमें ऑत्रपुच्छ शोथ का निदान संभव हो पाया। तीव्र उदर पीडा उठने पर इसका गहन परीक्षण हुआ तब इसके रोग का निदान संभव हो पाया। उसके बाद सेना के अस्पताल में ही इसका ऑपरेशन भी हुआ। प्रथम ऑपरेशन सफल नहीं हो पाया तो डेढ वर्ष के बाद ही इसका दूसरा ऑपरेशन करना पडा। यद्यपि ज्योतिष संबंधी कुछ उपायों की भी मदद ली गई। इस जातक की जन्मकुंडली में पितृदोष के विद्यमान रहने के कारण इसके हाथों पितृपूजा का कार्य भी सम्पन्न कराया गया। तब जाकर इसे अपनी उदर पीडा से स्थायी रूप में आराम मिल पाया।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मेष लग्न की जन्मकुंडली है। इस जन्मकुंडली के लग्न भाव में शुक्र स्थित है, जबकि द्वितीय भाव में वृष राशि में चंद्रमा के साथ बृहस्पति और सूर्य, तृतीय भाव में मिथुन राशि में मंगल के साथ बुध, चतुर्थ भाव में कर्क राशि में केतु, षष्ठ भाव में कन्या राशि में शनि, दशम् भाव में मकर राशि में राहू स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली के षष्ठ भाव में कन्या राशि में शनि से युति करके तथा मंगल द्वारा दृष्ट होकर पीडित है। सूर्य एंव चंद्र की युति त्रिकेश बृहस्पति से बन रही है और वह राहू से भी दृष्ट है, अतः जन्मकुंडली में सूर्य एंव चंद्र दोनों पाप पीडित है। इस जन्मकुंडली में पितृदोष भी विद्यमान है। लग्नेश मंगल स्वंय त्रिकेश है। अतः लग्नेश स्वंय भी पर्याप्त पीडित है। अतः इस जन्मकुंडली में भी निश्चित उदर संस्थान के गंभीर रोग की संभावना बन रही है।

4- ज्योतिष शास्त्र में हृदय संबंधी रोग

हृदय रोगों के अनेक प्रकार देखने में आते है। इन सबके पीछे अलग-अलग तरह के कारण रहते है। जैसे कुछ लोगों का हृदय रक्त आपूर्ति में बाधा आने के कारण कमजोर पडने लगता है तो कुछ लोगों में रक्त नलिकाओं के अवरूद्ध होने पर हृदय अपना काम एकाएक बंद कर देता (हृदयाघात) है। अनेक बार हमारा हृदय किसी वाल्व की खराबी के कारण अपना काम ठीक से नही कर पाता। जबकि कुछ रोगियों में रक्तचाप के निरंतर बढे रहने के कारण हृदय विफलता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

यद्यपि हृदय से संबन्धित रोगियों में एक बात अवश्य देखी जाती है कि ऐसे अधिकांश रोगियों की जन्म कुंडलियों में ग्रह-नक्षत्रों की कुछ खास स्थितियां उपस्थित रहती है। साथ ही तत्संबन्धी ज्योतषीय उपाय करने से उन्हें यथाशीघ्र एंव अप्रत्याशित लाभ भी मिलते देखा जाता है। ऐसे उपायों से अचानक उत्पन्न हुआ मौत का खतरा भी इनके सिर से टल जाता है। ज्ञातव्य है कि वर्तमान समय में विकसित और विकासशील सभी देशों में हृदय रोग मौत का एक प्रमुख कारण बन गया है।

ज्योतिषीय दृष्टि में हृदय रोग की विवेचना के लिए इन रोगियों की जन्म कुंडलियों में मुख्यतः चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, कर्क राशि, कर्क राशि स्वामी चन्द्रमा और आत्मकारक सूर्य के ऊपर पर्याप्त पाप एंव अशुभ प्रभाव देखे जाते है। अतः यदि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में चतुर्थ भाव और उसके स्वामी के साथ चन्द्रमा और सूर्य पर राहु का अशुभ प्रभाव पड जाए, साथ ही उसे राहु या छठेश अथवा अष्टमेश की दशाऽन्तर्दशा का समय चल रहा हो, तो निश्चित ही वह व्यक्ति हृदय रोग से ग्रस्त हो सकता है।

हृदय रोगों के उपाय

हृदय रोग से पीडित रोगियों के लिए ज्योतिष संबन्धी निम्न उपाय निश्चित ही लाभप्रद सिद्ध होते हैः-

- हृदय संबंधी रोगियों को हृदय रोग से मुक्ति पाने के लिए सबसे पहले उत्तम क्वालिटी और दोषरहित सूर्य रत्न या उसका उपरत्न उपयुक्त धातु में जडवाकर अपनी अंगुली में धारण करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें उत्तम क्वालिटी का एक मोती के साथ तीन या एक पंचमुखी रूद्राक्ष भी अपने शरीर पर धारण करना चाहिए।
- इसके अलावा इन्हें राहू-शनि के लिए त्रिधातु अर्थात् तांबा, लौहा और कांसा के उपयुक्त अनुपात से बना कडा भी शनिवार के दिन अपने हाथ में पहनना चाहिए। रोग अति गंभीर हो तो चतुर्थेश का रत्न भी धारण करना उपयुक्त रहता है। यदि रोगी मोटापे का भी शिकार है, तो उसे उत्तम क्वालिटी का सरसों पुष्पी रंग का पुखराज भी धारण करके रखना चाहिए। इससे मोटापे में लाभ मिलता है।
- मेरे निजी अनुभवों में ऐसा आया है कि रोगी को उपयुक्त रत्न धारण कराने के साथ, उसके लिए जो ग्रह रोग कारक बना है या कष्टकारी सिद्ध हो रहा है, उस ग्रह से संबन्धित वस्तुएं भी दान करानी चाहिए एंव अन्य उपायों की भी मदद लेनी चाहिए।
- पुराने जमाने में हृदय रोगों से सुरक्षित रहने या हृदय रोगों से मुक्ति पाने के लिए सम्पन्न वर्ग के लोग प्रायः मोती भस्म, मुक्ता पिष्टी, माणिक्य भस्म आदि का प्रयोग करते थे। आज भी यह भस्में अपनी चमत्कारिक प्रभाव प्रदान करती देखी गई है। इन उपायों से हृदय रोग से पीडित एंव लंबे समय तक बिस्तर पर पडे रोगियों को सामान्य जिन्दगी जीते देखा गया है।
- हृदय रोग के दौरान जब शरीर में शक्ति और गर्मी की कमी से रोगी का दिल कमजोर हो जाये, रोगी का चेहरा पीला पडा हो, रोगी लो ब्लड प्रैशर, हृदय की कमजोरी, रक्ताल्पता से बेहोश में जाने लगे, तो उसे सोने की अंगूठी में उपयुक्त वजन का कंधारी अनार रंगी माणिक्य पहनाने से शक्ति एंव गर्मी मिलती है। इससे दिल, शरीर और मस्तिष्क संबंधी कमजोरियां तुरंत दूर होने लगती है। माणिक्य सूर्य की शक्तिदायक किरणों का भंडार है। इससे रोगी में शक्ति और गरमी पैदा होकर उपरोक्त रोग और गर्मी की कमी से उत्पन्न रोग दूर हो जाते है।

जन्मकुंडली नं.7

यह हृदय रोग से पीडित रहे एक व्यक्ति की जन्मकुंडली है। यह जातक पंद्रह से अधिक वर्ष तक हृदय रोग से पीडित रहा। एक समय इसे बाईपास सर्जरी कराने का परामर्श भी दिया गया, परंतु जातक इसके लिए तैयार नहीं हुआ। फिर भी ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय अपनाने से इसे पर्याप्त आराम मिला। जातक की मृत्यु एक सडक दुर्घटना के दौरान हुई।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह धनु लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में केतु बैठे है। लग्नेश बृहस्पति द्वितीय भाव में मकर राशि के होकर स्थित है। जबकि जन्मकुंडली के तृतीय भाव में वृष राशि में चंद्रमा, पंचम भाव में मेष राशि के मंगल, सप्तम् भाव में मिथुन राशि के राहू एंव द्वादश भाव में वृश्चिक राशि के सूर्य, शनि, शुक्र और बुध एक साथ स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली के लग्न भाव में केतु बैठे है। लग्न भाव के ऊपर राहू की अशुभ दृष्टि है। जबकि लग्नेश बृहस्पति द्वितीय भाव में शनि की अशुभ दृष्टि लेकर बैठे है। शनि में व्ययेश मंगल का प्रभाव भी समाहित है।

चतुर्थ भाव, अष्टमेश चंद्रमा तथा व्ययेश मंगल के कारण पाप मध्यस्थ में है। चतुर्थेश बृहस्पति पर व्यय स्थान से शनि (व्ययेश से दृष्ट भी) की अशुभ दृष्टि है। अतः जन्मकुंडली का चतुर्थ भाव पर्याप्त रूप में पीडित है।

पंचम भाव में पंचमेश मंगल स्वगृही बनकर बैठे है तथा षष्ठ भाव बाधापति बुध से दृष्ट है। केतु की दृष्टि पंचम भाव को पर्याप्त अशुभता प्रदान कर रही है तो मंगल अष्टम भाव, बाधकेश बुध तथा शनि को देखने के कारण अशुभ बन गये है।

जन्मकुंडली में व्यय भाव में स्थित सूर्य की षष्ठेश शुक्र तथा शनि से युति बनी है। अष्टमेश चंद्रमा पर राहू की अत्यंत अशुभ दृष्टि है। मंगल पर बाधापति बुध तथा लग्नस्थ केतु की दृष्टि अशुभता प्रदान कर रही है।

इस प्रकार मंगल-शनि के परस्पर संबंध से रक्त संबंधी विकार की संभावना स्पष्ट हो रही है। यदि इस योग में कर्क राशि या चंद्रमा भी सम्मिलित हो जाए, तो हृदय रोग की स्पष्ट रूप में पुटि होती है। यहां पंचमस्थ मंगल, अष्टम भाव में कर्क राशि तथा व्यय भाव में लग्नेश नियंत्रक, शनि पर पाप प्रभाव डाल रहा है। शनि स्वंय भी षष्ठ स्थान तथा चंद्र दृष्ट सिंह राशि को देख रहे है। अतः निश्चित ही जातक के हृदय रोग से पीडित रहने की ग्रह स्थिति बन रही है।

5- ज्योतिष शास्त्र में गुर्दा और पथरी रोग

वर्तमान में गुर्दा रोग से पीडित रोगियों की संख्या निरंतर बढ रही है। गुर्दा संबंधी रोग के पीछे कई तरह के कारण देखे जाते है। इनमें डायबिटीज, उच्च्व रक्तचाप, मादक द्रव्यों का सेवन, शराब व रासायन आधारित दवाओं का लगातार सेवन करना, कीटनाशक दवाओं के सम्पर्क में आना आदि कुछ प्रमुख कारण है। इनके अलावा पूर्व जीवन के संचित कर्म भी गुर्दो संबंधी रोगों का प्रमुख कारण बनते है। हमारे देश में प्रतिवर्ष चार से पॉच लाख लोगों की गुर्दो की विफलता के कारण मौत का सामना करना पडता है, तो दूसरी तरफ करोड लोग मूत्र मार्ग या गुर्दे में पथरी की समस्या से परेशान होते है।

ज्योतिषीय दृष्टि में गुर्दा रोग और पथरी बनने के पीछे कई ग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। यद्यपि इन रोगियों में एक बात अवश्य देखी जाती है कि अगर इन्हें अन्य उपायों के साथ चॉदी की शुद्ध अंगूठी में **'किडनी स्टोन'** जडवाकर धारण करवा दिया जाए, साथ ही मोती भस्म या प्रवाल पिष्टी का कुछ दिनों तक मलाई के साथ सेवन कराया जाए, तो उन्हें उपरोक्त व्याधियों में अप्रत्यासित लाभ मिलता है। उपरोक्त उपचार से छः महीने के बाद ऐसे आधे से अधिक रोगियों को न तो किसी ऑपरेशन कराने की आवश्यकता पडती है और न ही किसी अन्य उपचार की। इतना ही नहीं, इस उपचार से उनके गुर्दा या मूत्र संस्थान में पुनः पथरी बनने की संभावना भी नहीं रहती। उनके गुर्दे पुनः अपना सामान्य काम करने लगते है। डायलिसिस जैसे उपचार की भी इन्हें मदद नहीं लेनी पडती।

ज्योतिषीय दृष्टि में जिन लोगों की जन्मकुंडली के लग्न या सप्तम् भाव में कोई अशुभ-पापी ग्रह नीच बनकर बैठता है, तो उन्हें गुर्दा संबंधी रोग या गुर्दे की पथरी की समस्या का सामना करना पडता है। इसी प्रकार जब कर्क राशि में शनि तथा मकर राशि में तीन या तीन से अधिक अशुभ ग्रह एक साथ बैठते है, तो भी ऐसी विषम स्थितियां निर्मित होने लगती है। जन्मकुंडली में सूर्य अपनी नीच राशि के बनकर बैठ जाएं, तो भी उन लोगों में पथरी बनने की आशंका कई गुना बढ जाती है।

जन्मकुंडली नं.8

यह जन्मकुंडली एक ऐसे व्यक्ति की है जो कई वर्ष तक गुर्दा रोग की पीडा झेलता रहा। दो वर्ष तक वह डायलिसिस के ऊपर निर्भर रहा। अन्ततः गुर्दों की विफलता के कारण ही उसकी मृत्यु हुई। यद्यपि यह जातक समय रहते ज्योतिष संबंधी उपायों की मदद लेता तो निश्चित ही उसकी जिंदगी लंबी हो सकती थी।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह कन्या लग्न की जन्मकुंडली है। इसके पंचम भाव में मकर राशि के शनि, षष्ठ भाव में कुंभ राशि के राहू, नवम् भाव में वृष राशि के चंद्रमा और मंगल, दशम् भाव में मिथुन राशि के सूर्य और शुक्र, एकादश भाव में कर्क राशि के बृहस्पति और बुध तथा द्वादश भाव में सिंह राशि के केतु स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जातक की जन्मकुंडली में लग्नेश बुध की गुरू बाधकेश से युति तथा पंचमेश-षष्ठेश शनि के अशुभ प्रभाव के कारण भयंकर उदर पीडा झेलनी पडी। षष्ठस्थ राहू का व्ययेश सूर्य से दृष्टि संबंध तथा अष्टमेश मंगल की चंद्रमा से युति एंव व्यय भाव में स्थित केतु पर दृष्टि ऑपरेशन (शल्य क्रिया) की स्थिति को दर्शा रहा है। यद्यपि इस जातक ने ऑपरेशन नहीं कराया। चंद्रकुंडली में षष्ठेश शुक्र का बुध की राशि में केतु नियत्रंक सूर्य से युति करना तथा पंचमेश बुध की एकादशेश गुरू से युति भी गंभीर गुर्दा रोग की पुष्टि कर रही है। ज्योतिष के अनेक विद्वानों ने शनि को पथरी रोग का कारक माना है। यहां षष्ठेश शनि की सप्तम् भाव पर दृष्टि तथा तुला राशि पर शनि एंव राहू का अशुभ प्रभाव गुर्दे में पथरी बनने के साथ गुर्दों की विफलता का स्पष्ट संकेत दे रहा है।

जन्मकुंडली नं.9

यह जन्मकुंडली भी गुर्दो की विफलता (किडनी फेल्योर) से ग्रस्त स्त्री की है। यह स्त्री डायलिसिस के सहारे कई वर्ष तक जिंदा रही। यह जातिका मधुमेह रोग से भी ग्रस्त थी। एक समय डायलिसिस से भी इसका जिंदा बचना मुश्किल लग रहा था, परंतु जब से इसने ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय अपनाने शुरू किए, इसके स्वास्थ्य में भी तेजी से सुधार आने लगा। जातिका डायलिसिस के सहारे पिछले पंद्रह से अधिक वर्ष से जिंदा है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह कन्या लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में कन्या राशि के राहू, द्वितीय भाव में तुला राशि के गुरू, तृतीय भाव में वृश्चिक राशि के शनि, सप्तम् भाव में मीन राशि के केतु, नवम् भाव में वृष राशि के चंद्रमा और मंगल तथा द्वादश भाव में सिंह राशि में सूर्य, शुक्र और बुध एक साथ स्थित है। जन्मकुंडली में लग्नेश बुध द्वादश भाव में व्ययेश के साथ स्थित है। लग्नेश बुध पर अष्टमेश एंव तृतीयेश मंगल, केतु गुलिक की दृष्टि भी है। त्रिशांश कुडंली में त्रिशांशेष अष्टम् भाव में स्थित है। त्रिशांश में महादशा पति शनि वर्गोत्तम एंव चंद्रमा नीचस्थ है, जो पुनः गंभर रोग की पुष्टि कर रहे है। जातिका को शनि महादशा अन्तर्गत चंद्र अन्तर्दशा के दौरान ही मधुमेह और फिर गुर्दो रोग का निदान हुआ।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में काल पुरूष की छठवीं राशि कन्या पाप मध्यस्थ में है। राशि स्वामी बुध भी पर्याप्त रूप से पीडित है। लग्न भाव में राहू एंव छठवे भाव पर द्वाददेश की क्रूर दृष्टि एंव षष्ठेश शनि पर अष्टमेश का प्रभाव गुर्दा रोग की पुष्टि कर रहा है। जन्मकुंडली में लग्नेश बुध द्वादश भाव में व्ययेश के साथ स्थित है। लग्नेश बुध पर अष्टमेश एंव तृतीयेश मंगल, केतु गुलिक की दृष्टि भी है। त्रिशांश कुडंली में त्रिशांशेष अष्टम् भाव में स्थित है। इस जातिका में मधुमेह रोग का निदान शनि महादशा अर्न्तगत चंद्रमा की अन्तर्दशा के दौरान हुआ। शनि अन्तर्गत चंद्र, केतु की प्रत्यन्तर दशा के दौरान अप्रैल 2009 में इसे किडनी विफलता का रोगी घोषित किया गया। जन्मकुंडली में शनि रोगेश और चंद्रमा शनि, मंगल और राहू के प्रबल अशुभ प्रभाव में है।

गुर्दा रोग में ज्योतिषीय उपायः-

गुर्दा रोग से पीडित रोगियों या पथरी रोग से ग्रसित लोगों के लिए पीतांबरी नीलम, लाल इटैलियन मूंगा अथवा मून स्टोन के साथ सरसों पुष्पी पुखराज धारण करने से अतिशीघ्र लाभ मिलता है। इन्हें धारण करने से रोगियों के शरीर से पथरी तक धीरे-धीरे घुलकर निकल जाती है और गुर्दा की कार्यक्षमता में सुधार आता है।

6- ज्योतिष शास्त्र कमर दर्द

कमर दर्द की पीडा भी आज के समय एक सामान्य समस्या बन गई है। कमर की पीडा के कारण व्यक्ति वे-बजह एंव असमय ही चलने-फिरने, उठने-बैठने में मुश्किल अनुभव करने लगता है। कमर दर्द का प्रभाव एक तरह से व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व के ऊपर ही पडता है। ऐसे रोगी कुछ समय के उपरांत एक तरह से अपंग बनकर घर बठ जाते है या निज कामों के लिए भी दूसरों के ऊपर आश्रित बन जाते है। कमर दर्द के साथ इनके शरीर के निचले अंगों में भी पीडा बनी रहती है।

यद्यपि कमर दर्द के लिए कई तरह के कारण जिम्मेदार रहते है, जिनमें अस्थि भंगुरता से लेकर स्नानु तन्त्रिकाओं की विकृत, क्षय रोग या मोटापा तक शामिल है। फिर भी इस रोग का वास्तविक कारण एंव उसका कारगर उपचार अभी तक संभव नहीं हो पाया है। स्पाइनल सर्जरी के बाद कुछ रोगियों को थोडा बहुत आराम मिलते हुए देखा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में कमर दर्द का संबन्ध स्नायु तन्त्रिकाओं के साथ जोडते हुए **'शनि ग्रह'** के साथ स्थापित किया गया है। अतः जिस व्यक्ति की जन्मकुंडली में शनि पीडित या पाप ग्रस्त होकर बैठते है, उन लोगों को कमर और शरीर के निचले हिस्से से संबन्धित अंगों, विशेषकर पैर, पिंडलियों, टखनों, पंजों के रोग सताते है। शनि के अतिरिक्त कन्या राशि का संबन्ध भी कमर एंव निचले हिस्से से जोडा गया है। अतः जिस जन्मकुंडली में शनि के साथ कन्या राशि के ऊपर भी पर्याप्त पाप प्रभाव रहता है, कन्या राशि में चन्द्र-शनि युति बनाकर एंव पीडित होकर बैठते है, तो निश्चित ही उन लोगों को प्रतिकूल ग्रह की दशाऽन्तर्दशा या गोचर के अनुसार कमर दर्द के साथ पैरों की पीडा का सामना करना पडता है।

कमर दर्द का ज्योतिषीय उपायः-

कमर दर्द से मुक्ति पाने के लिए इन लोगों को शनि के पाप ग्रस्त रहने पर लौह धातु से बना कडा (लौह का कडा यदि घोडे की नाल या नाव की कील से बना हो तो अति उत्तम) धारण करने के साथ, सूर्य रत्न माणिक्य अथवा मंगल रत्न मूंगा भी अंगूठी में जडवाकर धारण करना चाहिए। यदि जन्मकुंडली में शनि पीडित है, तो उन्हें लौह के कडे के साथ शनि रत्न नीलम भी धारण करना चाहिए। कन्या राशि के पीडित रहने पर बुध का रत्न 'पन्ना' धारण करना इनके लिए अनुकल रहता है।

अनुभव में आया है कि इन लोगों को शनि रत्न नीलम के साथ गोमेद धारण करवाने से तत्काल आराम मिलता है।

7- ज्योतिष शास्त्र में पक्षाघात (लकवा)

शरीर का आशिंक या पूरी तरह से पक्षाघात ग्रस्त होने से व्यक्ति की जिंदगी एकाएक नर्क बनकर रह जाती है। इसमें व्यक्ति जिंदा तो रहता है, लेकिन स्नायु तन्त्रिका के क्षतिगस्त हो जाने से उसके संपूर्ण शरीर या शरीर के कुछ अंग यथा हाथ-पैर, ऑख, गला आदि पर पक्षाघात का बुरा असर पडता है एंव वह अंग एक तरह से बेकार हो जाते है। फलतः व्यक्ति को अपंगता का जीवन जीने पर विवश होना पडता है।

ज्योतिष शास्त्र में पक्षाघात नामक इस रोग का संबन्ध भी स्नायु संस्थान के साथ स्थापित करते हुए शनि और बुध जैसे ग्रहों के साथ स्थापित किया गया है। अतः जब किसी व्यक्ति की जन्मकंडली में बुध निर्बल, नीच या पाप पीडित होकर बैठते है, शनि भी पाप पीडित रहते है और किसी राशि पर शनि-राहू, सूर्य, केतु का प्रबल पापी प्रभाव पडता है, तो प्रतिकूल ग्रह की दशाऽन्तर्दशा या गोचर के अनुसार शरीर का अंग विशेष या सारे शरीर ही बेकार होते जाते है।

जन्मकुंडली नं.10

यह अपंगता के शिकार रहे व्यक्ति की जन्मकुंडली है। यह व्यक्ति बचपन में ही अपंगता का शिकार बन गया और आज भी अपंगता का जीवन जी रहा है। आज से तीस-चालीस वर्ष पहले ऐसे गंभीर रोग का कोई इलाज संभव नहीं था। अतः जातक ने स्वंय को विवशता के भरोसे ही छोड दिया था।

इस जातक को युवावस्था में शनि का प्रकोप सहना पडा। जातक वात रोग के कारण बचपन से चलने-फिरने में लाचार हो गया। गोचर में अष्टम शनि रहते यह कष्ट प्रारंभ हुआ। उस समय चिकित्सा भी कराई। शनिकृत कष्टों को दूर करने हेतु डाकोत (एक जाति विशेष) से शनि शमन करवाया एंव 43 दिन निरंतर तेल में गुड डालकर एंव गुलगुले उठने पर भिखारी को दान दिया। इस पात्र का दान छाया पात्र के रूप में किया गया। तत्पश्चात् सामान्य चिकित्सा ने अपना कुछ प्रभाव दिखाया एंव सात वर्षो की दीर्घकालीन पीडा के बाद जातक चलने-फिरने में समर्थ हो सका। यद्यपि सामान्य व्याधि प्रकोप अब भी कभी-कभार देखने को मिलता है। पंचमस्थ शनि उदर विकार का कारक भी है। शनि एंव राहू की दशमेश मंगल पर दृष्टि एंव शनि की शुक्र पर दृष्टि शुक्र चलित में लगनस्थ है। वातरोग कारक एंव पितृदोष बृहस्पति से है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मेष लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में मेष राशि के केतु, द्वितीय भाव में वृष राशि के बृहस्पति, तृतीय भाव में मिथुन राशि के चंद्रमा, चतुर्थ भाव में कर्क राशि के शनि, छठवे भाव में कन्या राशि के सूर्य और बुध और सप्तम् भाव में तुला राशि में मंगल, शुक्र और राहू एक साथ युति बनाकर स्थिति है। नवांश लग्न वृष राशि का है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस मेष लग्न की जन्मकुंडली में लग्नेश मंगल सप्तम् भाव में राहू, शुक्र के साथ शनि की अशुभ दृष्टि लेकर बैठे है। जबकि लग्न भाव में केतु स्थित है। शनि कर्क राशि के बनकर चतुर्थ भाव में बैठकर दशम् भाव के ऊपर अपनी स्वगृही दृष्टि डाल रहे है। ज्योतिष शारूत्र में दशम् भाव घुटनों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि शनि स्नायु संस्थान के ऊपर अपना प्रभाव रखते है। शनि विकलांगता के प्रमुख कारक माने गये है। अतः शनि की लग्न भाव पर नीच की दृष्टि है। लग्न पर राहू की भी अशुभ दृष्टि है। लग्लेश के ऊपर शनि एंव राहू का प्रबल अशुभ प्रभाव है। अतः प्रस्तुत जन्मकुंडली एक विकलांगता पीडित व्यक्ति की सिद्ध होती है। इतना ही नहीं, नवांश कुंडली में भी शनि की राहू एंव मंगल से युति बनी हुई है।

जातक राहू महादशा के दौरान ही विकलांगता का शिकार बना। जातक को अक्टूबर, 1967 में राहू महादशा की शुरूआत हुई। राहू महादशा अन्तर्गत शनि अन्तर्दशा के दौरान उसे दिसंबर, 1981 में लकवा का दौरा पडा। दरअसल जातक पोलियो का शिकार है।

पक्षाघात का ज्योतिषीय उपायः-

पक्षाघात के मामले में रोगियों को यथाशीघ्र माणिक्य के साथ मूंगा धारण करना चाहिए। इसके साथ उत्तम क्वालिटी का एक दोषरहित मून स्टोन भी धारण करना चाहिए। इससे रोगियों को यथाशीघ्र लाभ मिलता है। इस रोग का काफी हद तक संबन्ध 'बुध' के साथ भी रहता है। अतः इन रोगियों को निरोगी बनाने के लिए बुध की अशुभता दूर करने के लिये बुध संबन्धी कुछ उपाय यथा उससे संबन्धित पूजा-पाठ, मंत्र-अनुष्ठान भी कराने चाहिए। बुध की वस्तुओं का दान-पुण्य भी करना भी उपयुक्त रहता है। इसके अलावा इन रोगियों के लिए प्रत्येक नवरात्रि के दौरान नौ दिनों तक देवी पूजन, कन्या

पूजन एंव कन्याओं को दान-दक्षिणा देकर उनका आर्शीवाद लेना भी उत्तम रहता है। देवी पूजन को बुध पूजा के रूप में ही देखा जाता है।

8- ज्योतिष शास्त्र में अस्थमा (दमा)

दमा यानी अस्थमा रोग का संबंध फेंफडों के साथ रहता है। अस्थमा के दौरान व्यक्ति के फेंफडों के वायु कोष्ठक और सूक्ष्म श्वसन नलिकाएं शोथ युक्त बन जाती है। इससे रोगी को श्वास अन्दर भरने एंव बारह छोडने में अवरोध महसूस होने लगता है। इसलिए व्यक्ति को बाहर से श्वास भरने में खासी मशक्कत करनी पडती हैं। इस समय व्यक्ति को अपनी श्वांस घुटने जैसा अहसास होता है। रोगी को ऐसा लगता है जैसे उसका जीवन खतरे में पड गया है।

ऐसा देखने में आया है कि मेष लग्न एंव कर्क राशि में राहु, शनि, सूर्य अथवा मंगल में से कोई ग्रह विराजमान हो अथवा व्यक्ति के अष्टम् भाव में नीच के चन्द्र, नीच राहु अथवा सूर्य बैठे हो, तो उन लोगों के दमा ग्रस्त होने की सर्वाधिक संभावना रहती है। इसी प्रकार अमावस्या के आसपास जन्म लेने वाले बच्चों में भी अस्थमा रोग की संभावना ज्यादा देखी जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में दमा का संबंध चंद्रमा, शनि, बुध आदि ग्रहों के साथ स्थापित किया जाता है।

जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली का तृतीय भाव, तृतीयेश, मिथुन राशि और बुध के साथ-साथ लग्न भाव एंव चन्द्रमा के ऊपर पर्याप्त पापी एंव क्रूर ग्रहों के अशुभ प्रभाव पडते है, तो उन लोगों को प्रतिकूल ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा अथवा गोचर के दौरान दमा संबंधी गंभीर समस्याएं झेलनी पडती है। यदि उपरोक्त कारकों के साथ बुध एंव चन्द्रमा के ऊपर भी राहू की युति बन जाए, तो व्यक्ति का दमा और भी गंभीर बन जाता है।

सिंह अथवा धनु लग्न में नीच चन्द्रमा, राहु अथवा शनि के साथ बैठे, धनु लग्न में चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, शनि और राहु एक साथ युति बनाकर बैठे, तो भी इन लोगों में अस्थमा की संभावना बढ जाती है।

जन्मकुंडली में बुध नीच या अस्तगत् होकर शनि-केतु के साथ अपनी नीच राशि अथवा 3, 4, 8, 12 वें भाव में जाकर बैठ जाए, तो भी अस्थमा रोग की संभावना रहती है।

दरअसल अस्थमा रोग का संबंध चन्द्रमा के साथ गहराई से जुडा है। ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को मन, शीतलता, उद्वेग, मधुरता, कफ आदि का कारक माना है। दमा रोग का संबंध भी एक तरह से कफ, शीतलता आदि के साथ ही रहता है। अस्थमा के संबंध में एक बात और देखी गई है। अस्थमा सोमवार एंव बुधवार केन्द्रित तथा अमावस्या के दिन, 15 जनवरी से 15 फरवरी, 15 सितंबर से 15 अक्टूबर, 15 नवंबर से 15 दिसंबर तक अधिक परेशान करता है।

चन्द्र ग्रहण के आसपास भी अस्थमा के दौरा पडने की संभावना एकाएक बढ जाती है।

अस्थमा का ज्योतिषीय उपायः-

अस्थमा रोग का निदान एंव उसकी चिकित्सा जन्मकुंडली में स्थिति ग्रह-नक्षत्रों के योग का विश्लेषण करके सहज ज्ञात की जा सकती है। अतः समय रहते ज्योतिष संबंधी उपयुक्त उपाय (यथा उपयुक्त रत्न पहनना, पूजा-पाठ, मंत्रजप, हवन-अनुष्ठान कराने एंव जडी-बूटियों का प्रयोग करने) से दमा से निश्चित ही मुक्त पायी जा सकती है।

दमा रोगियों को पन्ना, मोती, लहसुनिया आदि पहनने से भी पर्याप्त आराम मिलता है।

- **केस विवेचनाः-**

चंडीगढ के एक जाने-माने चिकित्सक है। देश-विदेश की अनेक डिग्रियां उनके पास है। फिर भी उनकी पत्नी एक असाध्य बीमारी से ग्रस्त हो गईं। वह कई वर्ष तक अपनी पत्नी का इलाज चंडीगढ से लेकर दिल्ली और अमेरिका तक कराते रहे। इस दौरान उनकी पत्नी के दो ऑपरेशन भी हो गए। उपरोक्त उपचार से बीच-बीच में उन्हें थोडा-बहुत लाभ तो अवश्य मिलता, किंतु फिर थोडे दिनों बाद ही उनकी पूर्ववत् स्थिति बन जातीं। लेकिन जब से उन्होंने अपनी पत्नी की ग्रह स्थिति को ध्यान में रखकर उन्हें पीतांबरी पुखराज धारण करवाया, बीमारी ससे उन्हें अप्रत्यासित आराम मिला है।

इसी प्रकार दिल्ली के एक प्रसिद्ध सर्जन (चिकित्सक) है। वह भी कई वर्ष तक अपने इकलौते बेटे के बार-बार दुर्घटना ग्रस्त होते रहने से बहुत परेशान रहे। उनका बेटा एक बार बाईक दुर्घटना में अपनी एक टांग टुडवा बैठा, तो दूसरी बार एक अन्य दुर्घटना के दौरान अपना बायां हाथ टुडवा बैठा था। छोटी-मोटी चोट तो उसे अक्सर लगती ही रहती। अपने बेटे की स्थिति को लेकर वह बहुत चिंतित रहते थे। लेकिन जब से उनके बेटे को भी उसकी ग्रह दशा के अनुसार सिन्दूरी

रंग का तिकोनी मूंगा और बेरिल पहना दिया, तब से वह ऐसी विषम परिस्थितियों से पूर्ण सुरक्षित है। इन्हें धारण करने के बाद उसके शरीर से एक बार भी रक्त नहीं बहा।

इस संबंध में एक अन्य उदाहरण तो बहुत मजेदार है। यह घटना एक बडे समाचार पत्र के संपादक से संबंन्धित है। वह सज्जन भी अनेक वर्षों से अस्थमा रोग से पीडित रहे। कई बार तो बीमारी के कारण उनके सामने ऐसी जटिल परिस्थितियां बन जाती कि वह अपनी बीमारी के कारण जरूरी काम वश भी अपने शहर से बाहर नहीं जा पाते। ठंडी रातों, विशेषकर नवंबर, दिसंबर, जनवरी, फरवरी के दौरान तो उन्हें रात को थोडा अधिक समय काम करने में ही परेशानी होने लगती थी। निरंतर दवाएं लेते रहने के बावजूद उनका स्वास्थ कमजोर बना हुआ था। परंतु जब से इन्होंने भी अपनी जन्मकुंडली के आधार पर 'श्वेत मूंगा' के साथ 'रक्तमणि' धारण की है तब से उनके स्वास्थ्य में बहुत सुधार आया है।

दमा रोग से बचने के लिए इन लोगों को चंद्रमा, मंगल, और बुध के लिए मूंगा और पन्ना के साथ रक्तमणि एंव अन्य उपयुक्त रत्न धारण करवाये जाते है। यदि इनकी जन्मकुंडली में बुधादि के ऊपर राहु या शनि का प्रबल अशुभ प्रभाव भी बना हो, तो इन्हें चॉदी के लॉकेट में पन्नादि के साथ उपयुक्त वजन का मोती भी धारण करना चाहिए। साथ ही काली रंग की रेशम की डोरी में पॉच मुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। शनि शांति के लिए इन्हें भैरव देव की पूजा-अर्चना करते रहना चाहिए। प्रत्येक रविवार के दिन इन्हें भैरव देव को उडद से बनी इमरती या पकौडे का प्रसाद चढाना चाहिए और उस प्रसाद को बच्चों के बीच बॉटवा देना चाहिए।

9- ज्योतिष शास्त्र में क्षय रोग

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार क्षय रोग के दौरान भी दमा की भांति तृतीय भाव और तृतीयेश पीडित देखे जाते है। यद्यपि इन रोगियों में चौथा भाव और उसका स्वामी भी पाप पीडित रहते है। जब तृतीय भाव, तृतीयेश, चतुर्थ भाव एंव चतुर्थेश के साथ चंद्रमा, बुध और लग्न एंव लग्नेश के ऊपर भी शनि अथवा राहू का अशुभ प्रभाव पडने लगता है, तो निश्चित ही 'क्षय' जैसे भंयकर रोग की स्थिति बन जाती है।

इन लोगों को स्वास्थ्य लाभ के लिए ज्योतिषीय उपचार के रूप में उपयुक्त भार वाला **'पन्ना'** और **'मोती'** के साथ हाथी दॉत, चन्द्रमणि के साथ एक सात मुखी रूद्राक्ष धारण कराने से अतिशीघ्र लाभ मिलता है। यद्यपि चन्द्र-बुध एक-दूसरे के साथ शत्रुता का भाव रखते है, फिर भी क्षय रोग से पूर्णतः मुक्ति पाने के लिए ज्योतिष शास्त्र में बुध रत्न 'पन्ना' और चन्द्र रत्न 'मोती' धारण करने के लिए कहा गया है। इनके अलावा चतुर्थेश को सबल बनाने के प्रयास भी किये जाते है। राहू की अशुभता शान्ति के लिए भी इन्हें राहू संबन्धित वस्तुओं का दान-पुण्य भी करना चाहिए।

10- ज्योतिष शास्त्र में एड्स रोग

एड्स एक विषाणु जनित गंभीर संक्रामक रोग है। इस रोग का संबन्ध व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक शक्ति के साथ रहता है। इस गंभीर रोग के दौरान व्यक्ति का रोग प्रतिरोधक तंत्र इतना कमजोर बन जाता है कि उसके शरीर में साधारण से साधारण संक्रामक रोग भी गंभीर सिद्ध होते है। उदर और श्वसन संस्थान संबंधी साधारण संक्रमण भी इनके लिए मृत्यु कारक सिद्ध होते है। ऐसे साधारण संक्रामक रोग इनके लिए अकाल मृत्यु का कारण बन जाते है।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में इस रोग का संबन्ध शुक्र ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। जब शुक्र के ऊपर अशुभ ग्रहों का प्रभाव पडता है, राहू-मंगल भी कष्टप्रद बन जाते है, शुक्र अथवा मंगल वृष अथवा वृश्चिक राशि में एक साथ बैठ कर राहु की अशुभ दृष्टि में रहते है, तो इस रोग की शुरूआत होती है। क्योंकि इन ग्रह स्थितियों के प्रभाव से व्यक्ति अनेक लोगों के साथ अनैतिक संबन्ध स्थापित करता रहता है और अकारण ऐसा गंभीर रोग ग्रहण कर लेता है। यदि उपरोक्त ग्रह स्थितियों के साथ जन्मकुंडली के लग्न भाव में मंगल तथा शनि के ऊपर भी चन्द्रमा की सप्तम् दृष्टि पड जाय, तो ऐसे यौन संबंधी रोगों की संभावना और बढ जाती है।

एड्स का ज्योतिषीय उपायः-

एड्स जैसे यौन संबंधी रोगों के निर्वाणनार्थ इन रोगियों को शुक्र को प्रबल बनाने के लिए 'त्रिधातु' निर्मित अंगूठी में एक उत्तम क्वालिटी का फिरोजा और मून स्टोन जडवाकर धारण करना चाहिए। इनके लिए हीरा धारण करना भी शुभ रहता है। इनके अतिरिक्त गुरू अथवा शनि के पीडित होने पर फिरोजा के साथ पीतांबरी नीलम अथवा फिरोजा के साथ श्यामुखी पुखराज धारण करना भी लाभदायक रहता है।

11- ज्योतिष शास्त्र मे गुप्त रोग

यौन संबंधी अन्य रोगों के लिए निम्न ग्रह स्थितियां कारण बनती है:-

- आठवें भाव में शुक्र या शनि हो, तो यौन संबन्धी रोगों की संभावना बन जाती है।
- कन्या लग्न में सप्तम् भाव में शनि और वृश्चिक राशि का बुध हो, तो भी जातक को यौन संबन्धी विकार या नपुंसकता की शिकायत बनी रहती है।
- सप्तमेश क्रूर ग्रह हो एंव बुध और शुक्र की युति बनी हो, तो यौन रोग की संभावना रहती है।
- अष्टमेश मंगल के साथ शुक्र की युति बनी हो और उसके ऊपर शनि की पापी दृष्टि पड रही हो, तो वीर्य स्त्राव संबंधी रोग होता है।
- कर्क राशि स्थिति सूर्य पर मंगल की क्रूर दृष्टि पडे, तो भी व्यक्ति प्रायः भगंदर रोग से परेशान रहता है।
- लग्न में शनि और अष्टम् भाव में शुक्र हो और उसके ऊपर सूर्य की दृष्टि पड रही हो, तो मूत्र संबंधी रोग, मूत्र के साथ वीर्य जाने की शिकायत शुरू हो जाती है।
- यदि पंचम भाव में नीच का सूर्य या मंगल हो, तो गर्भ का ऑपरेशन अवश्य रहता है।
- कुंभ लग्न में प्रथम भाव में केतू, दूसरे भाव में मंगल, चौथे भाव में शनि, सातवें भाव में राहु, आठवें भाव में सूर्य के स्थित रहने से व्यक्ति को गुर्दा संबन्धी रोग या ऑपरेशन कराना पडता है।
- लग्नेश मंगल छठवें भाव में सूर्य, शुक्र, राहु के साथ युति बनाकर स्थित तो, भी वीर्य संबंधी रोग, पौरूषता की कमी या बांझपन की शिकायत रहती है।
- यदि सप्तमेश शनि के साथ हो, शुक्र और सूर्य दोनों नीच के होने पर गुप्तेन्द्रिय संबंधी रोग अवश्य होते है। यदि शुक्र नीच का होकर केतू के साथ हो, तो गुप्त रोग या कैंसर जैसे जटिल रोग कीं संभावना बढ जाती है।
- लग्न में नीच का मंगल, सप्तम् में वृष का मंगल एंव सुखेश छठे भाव में तथा पंचम् भाव में बुध, सप्तमेश अष्टम् भाव में हो, तो स्त्री अपनी कामवासना को शांत करने के लिए कुमार्ग पर चल पडती है।
- शनि, बुध और मंगल तीनों एक साथ स्थित हो एंव शुक्र व सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो, तो लडकियां नीच कर्म में तत्पर रहती है
- षष्ठेश लग्न भाव में एंव पंचमेश छठे भाव में हो तो गर्भ होने या प्रसव संबंधी परेशानी खडी होने की आशंका बनी रहती है।
- अगर सातवें या नवांश में मंगल, शनि, सूर्य हो तो भी व्यक्ति को यौन संबन्धी रोग परेशान करते है।

ज्योतिष शास्त्र में नपुंसकता

नपुंसकता के पीछे कई तरह की स्थितियां काम करती है। इसके कारण पुरूष अपनी पत्नी के साथ सहवास करने में अक्षम बन जाता है या उसके वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या घट जाती है या पूरी तरह से समाप्त हो जाती है। इस अवस्था में पुरूष संतोनोत्पत्ति में सक्षम नहीं रहता।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में इस रोग का संबन्ध शुक्र ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। जब किसी जन्मकुडंली में शुक्र निर्बल बनकर बैठते है, साथ ही चन्द्रदेव भी पाप प्रभाव में पड जाए, तो वह पुरूष प्रतिकूल ग्रह की दशाऽन्तर्दशा अथवा गोचर के दौरान अनायास नपुंसकता का शिकार बनता है। इन ग्रह स्थितियों के अतिरिक्त पंचम अथवा सप्तम् भाव पर पाप प्रभाव पडने तथा शुक्र-मंगल अथवा सूर्य से पीडित तथा सप्तम् भाव या बुध शनि की युति व्यक्ति को नपुंसक बना देती है।

जन्मकुंडली नं.10

यह जन्मकुंडली नपुंसकता के शिकार रहे एक व्यक्ति की है। इस जातक का विवाह हुआ परंतु उसकी पत्नी प्रथम मास में ही उसे त्याग कर चली गई और फिर दोबारा एक बार भी लौट कर नहीं आयी। बाद में पता चला कि जातक नपुंसकता का शिकार है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह वृष लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में वृष राशि के चंद्रमा और राहू, द्वितीय भाव में मिथुन राशि के मंगल, पंचम भाव में कन्या राशि के बुध, षष्ठ भाव में तुला राशि के सूर्य, सप्तम् भाव में वृश्चिक राशि के शुक्र, शनि और केतु तथा द्वादश भाव में मेष राशि के बृहस्पति बैठे है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

जन्मकुंडली में लग्न में चंद्रमा की राहू से युति तथा शनि युक्त षष्ठेश शुक्र एंव केतु की दृष्टि है। लग्न व्ययेश मंगल तथा अष्टमेश बृहस्पति के कारण पाप मध्यस्थ में है। षष्ठस्थ सूर्य अपनी नीच राशि में स्थित होकर अष्टमेश बृहस्पति व्ययस्थ से दृष्ट है। सूर्य की सिंह राशि पर शनि तथा व्ययस्थ बृहस्पति की दृष्टि पापत्व बढा रही है।

जन्मकुंडली में यद्यपि उच्चस्थ बुध शुभ एंव बली जान पडते है, किंतु लग्नस्थ राहू तथा व्ययेश मंगल से दृष्ट होने के कारण यह भी पर्याप्त अशुभ एंव दूषित हो गये है।

अष्टमेश बृहस्पति का व्यय भाव में स्थित होकर षष्ठ एंव अष्टम् भाव से दृष्टि संबध बनाना पौरूष क्षमता में कमी की पुष्टि करता है। बाधापति शनि की शुक्र लग्नेश-षष्ठेश से सप्तम् भाव में युति तथा लग्नस्थ चंद्रमा राहू युत पर दृष्टि पुनः नपुसंकता की पुष्टि कर रही है। यह जातक नपुंसकता का दंश झेलने पर मजबूर है।

नपुंसकता का ज्योतिषीय उपायः-

नपुंसकता की दशा में इन रोगियों के लिए सबसे पहले शुक्र को प्रबल बनाने के लिए उत्तम क्वालिटी का शुक्र रत्न 'हीरा' धारण करवाना चाहिए। साथ ही शुक्र की अशुभता दूर करने के लिए शुक्र संबन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए। अगर हीरा के साथ पुखराज भी धारण कर लिया जाए, तो इन्हें विशेष लाभ मिलता है। अगर नपुंसकता के पीछे बुध-शनि का हाथ हो, तो इन ग्रहों से संबन्धित रत्न भी धारण करने चाहिए। यद्यपि बुध और शुक्र के रत्न एक साथ धारण नहीं करने चाहिए, क्योंकि बुध-शुक्र के मध्य जन्मजात शत्रुता मानी गई है।

हालिया अनुभवों से पता चला है कि यौन संसर्ग के मामलों में जो पुरूष स्वंय को फिसड्डी अनुभव करते है। अगर वह पुरूष अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगुली में उपयुक्त वजन का दोषरहित हीरा पहन लें, तो निश्चित ही कुछ दिनों के भीतर वह स्वंय को यौन क्रीडा के लिए पूर्णतः सक्षम अनुभव करने लगते है। अर्थात् उपयुक्त वजन का दोषरहित हीरा धारण करने से वह स्वंय को पूर्ण सक्षम पौरूष अनुभव करने लगते है। इसी तरह सेक्स के मामले में ठंडी पड चुकी महिलाओं को भी अगर उनके बायें हाथ की अनामिका उंगुली में हीरा जठित अंगूठी पहना दी जाए, तो उनकी जिंदगी में भी पुनः बहार खिल उठती है। जन्मकुंडली में शुक्र के नीच अथवा शत्रु राशि में स्थित रहने से सेक्स, चमडी के रोगों के साथ-साथ शुक्राणुओं की संख्या में कमी, लिंगोत्थान की कमी जैसी स्थितियां बनने लगती है। ऐसी सभी स्थितियों में हीरा पहनना अनुकूल रहता है।

12- ज्योतिष शास्त्र में मुँहासे

ज्योतिषीय आधार पर मेष अथवा वृश्चिक राशि वाले जातकों को यह रोग अधिक परेशान करता है। क्योंकि यह दोनों राशियां मंगल प्रधान राशियां मानी गई है और मंगल का सीधा संबन्ध फोडे-फुन्सियों के साथ रहता है। जब कभी मेष, तुला अथवा मकर राशि में शुक्र और केतु परस्पर युति बनाकर बैठते है और उनके ऊपर शत्रु ग्रहों की दृष्टि पडती है, तो प्रतिकूल ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा अथवा गोचर के दौरान इन लोगों के चेहरे पर अनायास ही कुरूपता जन्य मुंहासे निकलने लगते है।

मुँहासों से पीडित इन लोगों को चाँदी की अंगूठी में मूंगा, मोती जडवाकर मध्यमा उंगुली में तथा शनि रत्न 'लेपिस लजूली' कनिष्ठा उंगुली में धारण करके रखना चाहिए, तो शीघ्र उनके चेहरे पर निखार आने लगता है एंव उनके मुँहासे अदृश्य होने लगते है।

13- ज्योतिष शास्त्र में दुग्ध विकार

जन्म के समय जब किसी बच्चे की जन्मकुंडली में रोग अर्थात् छठवे अथवा मातृ भाव अर्थात् चतुर्थ भाव में चंद्रमा बैठ जाएं, तो ऐसे बच्चे को अपनी मां का दूध नसीब नहीं होता, चाहे उसके पीछे कुछ भी कारण क्यों न रहे। यदि ऐसे

चंद्रमा के ऊपर शत्रु प्रभाव भी पड जाए, तो बच्चे की मां कष्ट में रहती है। जन्मकुंडली के छठवें या चतुर्थ भाव में चंद्रमा को शुभ नहीं माना गया है।

मेरे पास समय-समय पर ऐसे बच्चों की जन्मकुंडली आती रही, जिन्हें जन्मजात रूप से कई तरह की व्याधियों का सामना करना पडा, जहां तक कि बिना रोग के भी उन्हें निरंतर कई तरह की दवाएं लेनी पडी, एंव बार-बार अस्पताल में भरती होना पडा। जबकि उनकी व्याधि के वास्तविक कारण का निदान करने से उनकी समस्या का तत्काल समाधान हो गया।

दरअसल ऐसे बच्चों के दुर्बल स्थास्थ का वास्तविक कारण यही रहता है उनकी जन्मकुंडली में चन्द्रमा अशुभ भाव में स्थित रहते है। ऐसे ही एक कर्क लग्न के बच्चे की जन्मकुंडली के छठवें भाव में चन्दमा विराजमान था। चंदमा के ऊपर द्वितीय भाव से राहू अपनी पंचम् दृष्टि से अशुभ प्रभाव बनाये हुए थे। ऐसी ग्रह रचना में राहू दो प्रकार से अनिष्टकारी सिद्ध होता है। एक तो चंद्रमा को पीडित करके और दूसरा द्वितीय भाव पर अपनी अत्यंत विध्वंसकारी प्रभाव डालकर।

इस बच्चे के चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र कन्या राशि अर्थात् अपनी नीचि राशि में स्थित थ। मां भाव का स्वामी नीच प्रभाव में पडा था। इसी कारण इस बच्चे को अपनी मां का दूध नसीब नहीं हुआ। क्योंकि यह बच्चा अपनी मां के दूध को ठीक से हजम नहीं कर पा रहा था। दूसरी ओर बच्चे के साथ बच्चे की मां को भी कष्ट झेलना पड रहा था। यद्यपि जब इस बच्चे को चॉंदी में चन्द्रमा का रत्न **'मोती एंव पारद का चंद्रमा'** जडवाकर धारण करवाने से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला। चंद्र रत्न मोती और चन्द्र धातु चॉंदी के साथ पारद का चंद्रमा धारण करने के एक महीने के भीतर ही बच्चे की सेहत में पर्याप्त सुधार आ गया।

अध्याय–सात

ज्योतिष शास्त्र में जटिल रोगों की विवेचना

वैसे तो मनोरोगों का अस्तित्व उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का। सती के पिता दक्ष प्रजापति द्वारा अपने पति (शिवजी) को अपमानित करने के अपमान को सह न पाने के कारण यज्ञ कुंड में कूद कर प्राण त्यागने की घटना को एक सदमे के रूप में ही देखा जाता है। इस प्रकार के सहस्त्रों अन्य उदाहरण भारतीय वैदिक शास्त्र में देखने को मिलते है। इनसे पता चलता है कि अवसाद और दूसरे प्रकार के मनोरोग उस समय भी लोगों को परेशान करते थे। इनके अतिरिक्त अनेक ऐतिहासिक पुस्तकों में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में सैंकडों महान समझे गये लोग हिस्टीरिया और मिरगी जैसे अनेक मनोरोगों से लेकर स्कीजोफ्रेनिया, सनक, उन्माद, अवसाद (मेनिक डिप्रेशन) तक से पीडित रहे है।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात, अरस्तु, जूलियस सीजर, नेपोलियन, महान वैज्ञानिक न्यूटन, नोवेल पुरस्कार की शुरूआत करने वाले महान रसायनिज्ञ अल्फ्रेड से लेकर अनेक विश्व प्रसिद्ध खिलाडी, वैज्ञानिक, साहित्यकार, चित्रकार, राजनैतिज्ञ, और फिल्मी कलाकर तक मिरगी से लेकर अवसाद और कई अन्य प्रकार के मनोरोगों से पीडित रहे है।

कहते है मुगल बादशाह जहांगीर को हिस्टीरिया जैसे दौरे पीडित थे। ऐसे ही एक दौरे के दौरान दिल्ली के पुराने किले की सीढियों से फिसल जाने के कारण उसकी मृत्यु हुई थी।

अन्य ऐतिहासिक अध्ययनों से पता चलता है कि अमेरिका के सबसे लोकप्रिय राष्ट्रपति इब्राहम लिंकन, राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट, ब्रिटेन के सबसे चर्चित प्रधानमन्त्री विस्टन चर्चिल, विश्व प्रसिद्ध लेखक चार्ल्स डिकेन्स, लार्ड बायरन, अंग्रेजी के प्रसद्धि साहित्यकार अर्नेस्ट हेमिंग्वे, विश्व प्रसिद्ध चित्रकार विसेंट वान गॉग और विश्व प्रसिद्ध उद्योगपति टेड टर्नर जैसी अनेक हस्तियां मेनिक डिप्रेशन से पीडित रही है। आज भी दुनिया में अनेक जाने माने लोग अवसाद से पीडित देखे जा रहे है।

यद्यपि अवसाद तो मनोरोगों का एक आयना भर है, जबकि प्राचीन समय से ही दुनिया भर में मनोविकारों के अनेक रूप देखे जाते रहे और विशेष चर्चा का विषय भी बने। ऐसे ही कुछ प्रमुख मनोरोग निम्न प्रकार है।

चीन, मलेशिया, इण्डोनेशिया जैसे अनेक पूर्वी देशों में **'अमोक'** नामक एक मनोरोग का उल्लेख मिलता है। इस रोग से पीडित व्यक्ति एकाएक क्रोध में आकर लोगों पर अंधाधुंध तलवार से हमला कर उन्हें घायल करने या मारने लगता है। जब तक वह अपने होशोहवास में वापिस आता है तब तक सैंकडों लोग गंभीर रूप से घायल या मर चुके होते है। होश में आने पर अमोक पीडित रोगी एक दूसरे प्रकार की मनोदशा में चला जाता है। इस मनोदशा में वह गहरी निराशा में डूबा जाता है और अन्ततः आत्महत्या कर लेता है।

यद्यपि परंपरागत् रूप में इस रोग को चीन आदि देशों में राक्षस का आक्रमण माना जाता रहा लेकिन हालिया मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि यह एक गंभीर मनोविकार है। यह मनोविकार घोर निराशा और व्यक्ति के साथ किये गये किसी अन्याय के फलस्वरूप जन्म लेता है। ऐसा माना जाता है कि पुराने दिनों में चीन, मलेशिया जैसे देशों में निरकुंश शासन और उच्च्य वर्ग के लोग आम जनता को सताने, अपमानित करने एंव गुलाम बनाकर रखते थे। उस परंपरा से सताये और अपमानित लोग ही आगे चलकर 'अमोक' जैसे रोग के शिकार बनते थे।

इण्डोनेशिया, साइबेरिया, अफ्रीका और कुछ उत्तरी अमरीकी देशों में **'लाटीह'** नामक एक अन्य मनोरोग देखा जाता है। यह महिलाओं से संबन्धित मनोरोग है। इस मनोरोग से पीडित महिलाएं दूसरों की नकल करना शुरू करती है। लाटीह पीडित महिलाएं बातचीत और शारीरिक हरकतों के द्वारा अपने को पुरूषों की तरह ताकतवर और साहसी दिखाने का प्रयास करती है। वह पुरूषों के लहजे में जोर–जोर से बात करने लगती है। उनका व्यवहार पुरूषों की तरह मर्दानगी भरा प्रतीत होता है। इतना ही नहीं पुरूषों की तरह वह अन्य महिलाओं पर अपना प्रभाव डालने लगती है।

लाटोह नामक इस मनोरोग के पीछे भी मनोवैज्ञानिक समाज में पुरूषों का दबदबा और पुरूषों द्वारा महिलाओं के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किये जाने को ही दोषी ठहराते है। क्योंकि उन समाजों में पुरूषों को एक साथ कई–कई महिलाएं रखने एंव महिलाओं द्वारा ही परिपोषित होने का अधिकार प्राप्त है। वहां के पुरूष मजे की जिन्दगी जीते है परंतु महिलाओं

को घर के काम काज के साथ मेहनत भरे काम भी निपटाने पडते है। बावजूद इसके पुरूष महिलाओं के साथ गुलामों जैसा व्यवहार ही करते है। ऐसी स्थिति में कुछ महिलाएं अपने साथ की गई जोर जबरदस्ती या अतृप्ति यौनवासना के कारण एकाएक बागी हो उठती है और मर्दों जैसा व्यवहार दर्शाने लगती है।

एस्किमो महिलाओं में भी एक मनोरोग देखा जाता है। इस मनोरोग से पीडित महिलाएं एकाएक जोश में आकर घर के बर्तनों और अन्य चीजों को फैंकना-तोडना शुरू कर देती है। यहां तक कि अपने कपडों को फाड कर पागलों की तरह इधर से उधर भागती फिरती है। फिर एकाएक शान्त पडकर घर के भीतर ही स्वंय को बिस्तर में छिपा लेती है। नींद से जागने पर उन्हें अपने व्यवहार की कुछ भी स्मृति नहीं रहती।

मनोवैज्ञानिक के अनुसार इस मनोरोग की जन्म 'भय' के कारण होता है। यह भय कुदरती कहर, हिम स्खलन की त्रादसी, यौन संबन्धों के मामले में जोर जबरदस्ती किये जाने, पुरूषों द्वारा निरंतर सताने एंव सांस्कृतिक परंपराओं के बंधन आदि से संबन्धित हो सकता है। क्योंकि एस्किमो समाज में सामाजिक बंधन बहुत सख्त रहते है। महिलाओं के ऊपर न केवल कई तरह की परिवारिक जिम्मेदारियां रहती है, बल्कि उन पर कई तरह की पाबन्दियां भी रहती है। इसीलिए बहुत सी नाजुक स्वभाव वाली महिलाएं भय के कारण मनोरोग की शिकार बन जाती है।

सेडिज्म, माशोशिज्म (सेक्स बांडेज), ट्रांसवेस्टिज्म और सेक्स एडिक्शन जैसे अनेक रोगों का संबन्ध भी मनोरोगों के साथ ही रहता है। ऐसे सेक्स संबन्धी मनोरोगों से पीडित व्यक्ति यौन सुख पाने के लिए उदण्डता का व्यवहार करने लगता है।

कुछ प्रमुख मनोरोग निम्न प्रकार हैः-

1- ज्योतिष शास्त्र में मिरगी रोग

मिरगी की समस्या किसी को भी हो सकती है। हमारा मस्तिष्क करोडों कोशिकाओं से मिलकर बना है, जो परस्पर एक-दूसरे के साथ गहरे से जुडी रहती है। दो भिन्न कोशिकाओं के बीच सिग्नल की भाषा रासायनिक तथा विद्युतीय आवेग रूप में रहती है। जब मस्तिष्कीय कोशिकाएं अनुचित और बहुत अधिक मात्रा में विद्युतीय संदेश भेजने लगती है, तो उनका रासायनिक संदेश गडबडाने लगते है। इसके कारण शरीर की मांसपेशियों में झटके लगने शुरू हो जाते है और व्यक्ति कुछ मिनटों के लिए अपना होश खो बैठता है। इसे ही **'मिरगी का दौरा'** कहते है।

दरअसल, मिरगी को अंग्रेजी में एपिलेप्सी के नाम से जाना जाता है। यह केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र (सेण्ट्रल नर्वस सिस्टम) से संबन्धित एक ऐसा रोग है, जिसके कारण मस्तिष्क की तन्त्रिकाओं में गडबडी उत्पन्न होने लगती है। यह तो सर्व विदित ही है कि मस्तिष्क शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। मस्तिष्क शरीर की समस्त क्रियाओं- खाना-पीना, चलना-फिरना, उठना-बैठना, पाचन, मल-मूत्र विसर्जन, हदय की धडकन, फेंफडों की गति, यकृत, वृक्क जैसे अंगों की क्रियाओं, मॉसपेशियों और स्नायुओं की गतिविधियों, सूंघने, सुनने, देखने जैसी समस्त गतिविधियों पर नियन्त्रण बनाये रखता है। मिरगी के समय मस्तिष्क की संवेदनाओं के केन्द्र अर्थात् नाक, कान, आंख, जीभ (स्वाद) आदि एंव ज्ञान और अनुभूतियों से संबन्धित केन्द्र अनियन्त्रित होने लगते है। ऐसी दशा में रोगी अपनी सुख-बुध खोकर अचेत होकर जमींन पर लुढक जाता है। इस बेचैनी की अवस्था में वह मुख से झाग उगलने हुए तडपता प्रतीत होता है। दौरे के समय एक विशेष प्रकार की चीख भी उसके मुंह से निकलने लगती है। रोगी जब पूर्णतः बेहोश हो जाता है एंव उसे जल्दी जल्दी रोग के दौरे पडने लगते है तो उसके मस्तिष्क के ज्ञान संस्थान की कोशिकाएं तेजी से नष्ट होने लगती है।

मिरगी रोग के लक्षण महीने, सप्ताह, दिन, घंटे और मिनटों के समयान्तराल से बार-बार प्रकट होते रहते है। अतः यह रोग दौरों (फिट्स) के रूप में चलता है। दौरे के शांत होने एंव अगला दौरा पडने के मध्य रोगी अपना सामान्य कामकाज स्वंय करने में सक्षम रहता है। इस अवधि में वह पूर्णतः सामान्य एंव स्वस्थ्य प्रतीत होता है। कुछ लोगों में इस रोग के लक्षण कई महीने या वर्षों में दो-चार बार प्रकट होकर स्वतः ही सदैव के लिए अदृश्य हो जाते है। इस तरह शेष जीवन भर वह पूर्णतः स्वस्थ्य रहते है, जबकि कुछ लोगों में रोग के दौरे जीवन भर ही पडते रहते है। ऐसे व्यक्तियों के लिए यह रोग उनके जीवन का एक अभिश्राप बनकर रह जाता है।

मिरगी रोग से मिलता-जुलता एक अन्य रोग भी है, जिसे **'हिस्टीरिया'** के नाम से जाना जाता है। यह रोग पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों, विशेषकर कुवांरी लडकियों में अधिक देखने को मिलता है। यद्यपि 'मिरगी' और 'हिस्टीरिया' दोनों अलग-अलग तरह के रोग है और दोनों के लक्षणों में भारी अंतर रहता है। अतः इनके लक्षणों के आधार पर सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी सहजता से दोनों रोगों को भिन्न रूप में पहचान लेता है।

ज्योतिष में मिरगी संबंधी ग्रह योग

ज्योतिष में मिरगी रोग से संबन्धित निम्न ग्रह स्थितियां देखी जाती है:-

- जब षष्ठ अथवा अष्टम् भाव में शनि-मंगल की युति बने तो मिरगी की संभावना रहती है।
- अष्टम् भाव में चन्द्र-राहू की युति से भी मिरगी की संभाबना पता चलती है।
- किसी भी भाव में शनि-चंद्र की युति तथा उसके ऊपर मंगल की पापी दृष्टि से भी मिरगी की संभावना रहती है।
- पंचम तथा अष्टम् भाव में पाप ग्रह हो तथा केतु में पाप ग्रह से दृष्ट बुध-चंद्र की युति हो तो मिरगी की सूचना मिलती है।
- लग्न में राहू तथा षष्ठ भाव में चंद्रमा, लग्न अथवा अष्टम् भाव में सूर्य, चंद्र और मंगल की युति हो अथवा ये सभी पाप ग्रह से युक्त हों, तो भी मिरगी की संभावना रहती है।
- किसी भाव में मंगल-शनि की युति हो तथा चंद्रमा पर मंगल की दृष्टि पड रही हो, लग्न में राहू तथा षष्ठ भाव में चंद्रमा हो अथवा सभी पाप ग्रह अष्टम् भाव में बैठे हो तथा चंद्र-शुक्र केन्द्र में हों, अथवा चंद्रमा और बुध पाप ग्रह से दृष्ट होकर केन्द्र में हो तथा पंचम एंव अष्टम् भाव में पाप ग्रह हो, तो भी जातक को मिरगी रोग हो सकता है।

जन्मकुंडली नं.12

यह एक ऐसे युवक की जन्मकुंडली है जो आठ वर्ष की उम्र से मिरगी रोग से पीडित है।

- **जन्मकुंडली संरचना**

यह मेष लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न भाव में बृहस्पति और द्वितीय भाव में बृष राशि के बुध स्थित है। जन्मकुंडली के तृतीय भाव में मिथुन राशि के सूर्य, शुक्र और शनि, चतुर्थ भाव में कर्क राशि के केतु, पंचम भाव में सिंह राशि के मंगल, दशम् भाव में मकर राशि के राहू और द्वादश भाव में मीन राशि के चंद्रमा स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचना**

व्ययेश गुरू का लग्नस्थ होना देह सुख में कमी या व्याधि का संकेतक है। षष्ठ भाव तथा षष्ठेश बुध पर राहू की दृष्टि स्नायुविक दुर्बलता या अचेतनता का रोग दे सकती है। चतुर्थ भाव मन राहू अक्ष में तथा पाप मध्यरूथ में होने से हीन बली हो जायगा है। चतुर्थेश एंव नैसर्गिक कारक चंद्रमा व्यय भाव में मंगल, शनि तथा केतु से दृष्ट है। यही सब योग मिरगी यानी अपस्मार का मुख्य कारण बने है।

इस जातक को प्रथम बार मिरगी का दौरा बुध महादशा अन्तर्गत चंद्र अन्तर्दशा के दौरान पडा। जन्मकुंडली में बुध रोग भाव के कारक बनकर द्वितीय भाव में और चंद्रमा द्वादश भाव में जाकर स्थित है।

इस जातक को बीस वर्ष की उम्र के समय ज्योतिष संबंधी कुछ उपाय सम्पन्न कराये गये थे, जिसमें मुख्यतः उसे **'हरी तुरमली'** और **'किडनी स्टोन'** के साथ चंद्र रत्न को चांदी की अंगूठी में जडवाकर धारण करने के लिए और राहू-शनि की अशुभता की शान्ति के लिए विशेष हवन सम्पन्न करवाया गया था। तब से यह जातक काफी हद तक स्वस्थ्य है।

2- ज्योतिष शास्त्र में मनोविक्षिप्ति

ज्योतिष शास्त्र में मस्तिष्क, मानसिक शक्ति, मनोविकार, बुद्धि, विद्या, ज्ञान आदि के लिए अगल-अलग कारकों का अध्ययन किया जाता है। जैसे लग्न भाव एंव लग्नेश से मस्तिष्क की अवस्था, जातक के विकास, उसकी सामान्य-असामान्य अवस्था, यश-अपयश आदि का पता चलता है। चतुर्थ भाव एंव चतुर्थेश का संबन्ध जातक की भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभूतियों आदि के साथ रहता है। जबकि बुध को बुद्धि का मुख्य कारक निर्धारित किया गया है। इसके अलावा पंचम भाव से बुद्धि तथा जातक की मन्त्रणा शक्ति का पता चलता है। चन्द्रमा का अध्ययन मानोरोगों के लिए मुख्य कारक के रूप में किया जाता है। चन्द्रमा मनुष्य की संवेदनशीलता (फीलिंग) तथा स्मृति का मुख्य कारक है। अगर किसी जन्मकुंडली में चन्द्रमा चतुर्थेश होकर त्रिक् भाव अर्थात् छटवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठ जाए, वह पाप प्रभाव से पीडित हो, तो चन्द्रमा की इस स्थिति से न केवल उस व्यक्ति के मन में भय एंव संशय के भाव रहते है, अपितु उसकी मानसिक संवेदना एंव स्मृति भी

विकृति होती जाती है। वह मिगरी या हिस्टीरिया जैसे भयानक रोगों से भी पीडित हो जाता है। चन्द्रमा राहू, केतू जैसे छाया ग्रहों से भयभीत रहता है। इसीलिए ज्योतिष शास्त्र में राहू, केतू का एक नाम **'सूर्यचन्द्रविमार्दनौ'** पड गया है।

ज्योतिष शास्त्र में षष्ठ भाव को रोग, शत्रु, ऋण का स्थान एंव षष्ठेश को रोग, ऋण आदि का कारक माना गया है। अतः मानसिक रोगों के अध्ययन के लिए मुख्यतः लग्न, लगनेश, चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, पंचम भाव एंव पचंमेश, बुध, और चन्द्रमा की शुभाशुभ स्थितियों एंव बलाबल का गहन अध्ययन किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में यह सभी कारक पर्याप्त रूप में पीडित पाये जाएं तो निश्चित ही गंभीर मानसिक रोगों का संकेत मिलता है। इनके द्वारा निर्मित योगों से ही डिप्रेशन (अवसाद) से लेकर मैनिक डिप्रेशन (पागलन), मंद बुद्धिहीनता (मेंटल रिटार्डेशन), मिरगी, हिस्टीरिया तक अनेक मनोरोगों का निदान होता है।

ज्योतिष शास्त्र में मनोविक्षिप्तता एंव उन्माद रोग

ज्योतिष शास्त्र में मनोविक्षिप्तता एंव उन्माद जैसे रोगों के पीछे मुख्यतः निम्न ग्रह स्थितियां देखी जाती हैः-

- यदि द्वादश भाव में क्षीण चन्द्र तथा शनि की युति बना हो।
- लग्न भाव में गुरू अथवा सूर्य तथा सप्तम् भाव में मंगल स्थित हो।
- लग्न भाव में शनि तथा सप्तम् भाव अथवा त्रिकोण में मंगल स्थित हो।
- लग्न भाव में गुरू तथा सप्तम् भाव में शनि बैठे हो। शुक्र कर्क लग्न में हो।
- लग्न में शनि राहू ग्रस्त होकर तथा नवम् अथवा पंचम भाव में पाप ग्रह मंगल हो।
- लग्न भाव में शनि, द्वादश भाव में सूर्य तथा त्रिकोण में चंद्र-मंगल की युति बनी हो।
- लग्न अथवा त्रिकोण में सूर्य-च्रंद, केन्द्र में शनि और गुरू हो।
- चंद्र, शनि और मंगल की परस्पर युति हो अथवा दृष्टि संबंध स्थापित हो रहे हों, अथवा
- षष्ठ भाव में चंद्र-मंगल की युति बनी हो, तो जातक निश्चित ही मनोविक्षिप्त, उन्माद, पागल अथवा चित्तभ्रम का शिकार बनता है।

गंभीर मनोरोगों से पीडित पाए गये अनेक लोगों की जन्मकुंडली के अध्ययनों से यह तथ्य काफी हद तक स्पष्ट होता है। ऐसी कुछ जन्मकुंडलियां निम्न प्रकर हैंः-

जन्मकुंडली नं.13

यह एक मंदबुद्धहीनता से ग्रस्त रहे बालक की जन्मकुंडली है। यह बालक जन्मजात रूप से ही मंदबुद्धि लेकर पैदा हुआ। यह बालक पंद्रह वर्ष की उम्र तक भी अपने निजी कार्य तक नहीं कर पाता था। बाद में इसे ज्योतिष संबंधी उपायों से काफी आराम मिला।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मीन लग्न की जन्मकुंडली है। इसके लग्न भाव में मीन राशि के षष्ठेश सूर्य स्थित है। द्वितीय भाव में मेष राशि में बुध, शुक्र और शनि स्थित है। तृतीय भाव में वृष राशि का चंद्रमा और मंगल, षष्ठ भाव में सिंह राशि में केतु, अष्टम् भाव में तुला राशि के वक्री गुरू और द्वादश भाव में कुंभ राशि के राहू स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में षष्ठेश की लग्न भाव में स्थिति तथ लग्नेश बृहस्पति का अष्टम् भाव में स्थित रहना गंभीर मनोरोग का स्पष्ट संकेत दे रहा है। लग्नेश बृहस्पति के ऊपर शनि के अतिरिक्त राहू का अशुभ प्रभाव भी है। यह योग भी जातक के विवेकहीन एंव मेधा शक्तिहीन बने रहने का संकेत दे रहा है।

इस जन्मकुंडली में भी शनि राहू अनियंत्रक राशि तथा व्ययेश का होकर, अष्टमेश शुक्र के साथ द्वितीय भाव में बाधापति बुध की युति में बैठा है। अतः शनि अत्यंत पापी बनकर स्थित है। बुध की शनि से युति तथा बुध की मिथुन राशि एंव चतुर्थ भाव पर शनि व राहू की पापी दृष्टि, बुध को हीनबली बना रही है। इससे फलस्वरूप जातक की बुद्धि विकसित नहीं हो पायी। ज्योतिष शास्त्र में बुध को ही बुद्धि का मुख्य कारकत्व दिया गया है।

इस जन्मकुंडली में लग्नेश बृहस्पति अष्टम् भाव में स्थित रहने से हीनबली है। अतः जातक के गुरू को बली करने के लिए सबसे पहले पुखराज ही पहनाया गया। यद्यपि अंगूठी सोने की जगह चांदी की बनवाई गई। क्योंकि स्वर्ण को सूर्य से संबन्धित धातु माना गया है, जबकि जन्मकुंडली में सूर्य स्वयं ही रोगेश बनकर बैठे है। शनि व राहू दोनों ही गुरू पर पाप प्रभाव डाल कर उसे बलहीन बना रहे है। राहू व्यय भाव में स्थित रहने से विशेष पापी है तथा शनि की राशि में स्थित है। अतः राहू की शान्ति कराने से शनि के अशुभ प्रभाव पर प्रभाव पडेगा। जातक को राहू की अशुभता दूर करने के लिए विशेष पूजा सम्पन्न करायी गयी।

जन्मकुंडली नं.14

यह मनोरोग से ग्रस्त रही एक युवती की जन्मकुंडली है। दरअसल यह युवती अठारह साल की उम्र से ही सिजोफ्रेनिया नामक एक मनोरोग से ग्रस्त है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

तुला लग्न की इस जन्मकुंडली में लग्नेश छठवें भाव में अपनी उच्च तुला राशि में नीच के बुध के साथ मंगल और सूर्य-केतु के मध्य पापकर्तरी योग में विद्यमान है। इतना ही नहीं उसके ऊपर गुलिक चंद्रमा की दृष्टि भी है। लग्न में रोगेश बृहस्पति एंव राहू स्थित है। त्रिशांश में त्रिशांश लग्नेश यानी शनि भी नीच राशि में स्थित है तथा लग्न में पाप ग्रह राहू, केतु मंगल स्थित होकर जातक को निश्चित ही मनोरोगी होने की पुष्टि दे रहे है। जातक मानसिक रोग से ग्रस्त है और उसे वहम का रोग है। जैसे उस पर किसी ने जादू-टोना करवा दिया हो या लोग उसकी जासूसी करते फिर रहे है। उसे वहम है कि लोग पीछा करके उसका नुकसान करना चाहते है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

जातिका की जन्मकुंडली के प्रथम, लग्न भाव में पाप प्रभाव से वह पर्याप्त पीडित है तथा कालपुरूष की प्रथम राशि मेष में भी केतु, सूर्य स्थित है, तो मेष राशि के स्वामी मंगल पर भी पापी राहू का अशुभ प्रभाव है। मन कारक चंद्रमा के ऊपर भी पापी एंव क्रूर मंगल का अशुभ दृष्टियां उसके मनोरोगी होने की पष्टि कर रही है।

जन्मकुंडली नं.15

यह जन्मकुंडली गंभीर मानसिक रोग से पीडित एक उच्च शिक्षित व्यक्ति की है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जातक की जन्मकुंडली के लग्न भाव में नीच का मंगल राहू के साथ और अष्टमेश शनि की पापी दृष्टि लेकर स्थित है। लग्नेश चन्द्र भी नीच का होकर पंचम भाव में राहू की दृष्टि लेकर बैठा है। चतुर्थ भाव पर नीच के मंगल और अष्टमेश शनि की पापी दृष्टि है। चतुर्थ भाव में बुद्धि भाव का स्वामी सूर्य भी नीच का बैठा है, साथ ही उस पर नीच के मंगल एंव अष्टमेश शनि का प्रभाव है। इसके अतिरिक्त चतुर्थ भाव में द्वाददेश बुध अशुभ होकर स्थित है। चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र अस्त होकर तथा मंगल एंव शनि की पापी दृष्टियां लेकर स्थित है। सूर्य और शुक्र पर पुनः षष्ठेश बृहस्पति की दृष्टि है। यद्यपि पंचमेश और योग कारक मंगल की लग्न भाव में स्थिति एंव बुद्धि कारक बुध का अपने मूल त्रिकोण राशि में स्थित रहने से जातक के कर्म क्षेत्र एंव विद्या क्षेत्र के अच्छे संकेत है। इसीलिए मानसिक रूप से ग्रस्त रहने पर भी जातक डॉक्ट्रेट तक की शिक्षा प्राप्त करने में कामयाव रहा। यद्यपि भाग्येश बृहस्पति के अष्टम् भाव में कुंभ राशि में बैठने एंव अपने से द्वादश स्थान में स्थित रहने एंव नवम् भाव पर अष्टमेश शनि की कुदृष्टि से जातक के भाग्य में निरंतर उतार-चडाव के दौर आते रहे। इन्हीं सब योगों के कारण जातक के भाग्य एंव स्वास्थ्य (मानसिक) में निरंतर अस्तव्यस्तता बनी रही।

जातक को बुद्ध महादशा के दौरान एक डिग्री कॉलेज में शिक्षक की नौकरी प्राप्त हो गयी, लेकिन इसी बुध महादशा के दौरान लग्नेश चन्द्र की अर्न्तदशा लगते ही जातक ने बिना सोच विचार किए अपनी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। फिर काफी प्रयास और जुगत लडाने पर ही उसे एक अन्य इन्टर कॉलेज में शिक्षक की नौकरी करने पर मजबूर होना पडा।

जातक को शुक्र महादशा में भी कई तरह की परेशानियां उठानी पडी। शुक्र जन्मकुंडली में पंचम भाव में नीच और दुर्बल चन्द्र के साथ स्थित है। अतः शुक्र का संपूर्ण पीरियड जातक के लिए परेशानियां भरा रहा। इस दौरान उसकी मानसिक स्थिति, घर गृहस्थी, जर्मीन-जायदाद आदि पर बुरे प्रभाव पडे। स्वास्थ्य के साथ गृहस्थ संबन्धी परेशानियां बनी रही।

यद्यपि शुक्र महादशा में मंगल की अर्न्तदशा तक स्थिति कुछ हद तक नियन्त्रण में रही, लेकिन शुक्र में राहू की अर्न्तदशा लगते ही स्थितियां एकाएक भयाभय बन गई। इस दौरान जातक ने दवा लेना पूर्णतः छोड दिया। शिक्षक की नौकरी

से भी एक बार पुनः त्याग पत्र दे डाला। पारिवारिक सदस्यों से सलाह मशविरा किये ही अपना मकान बचने पर लगा दिया। फिर घर से निकलना एकदम छोड दिया।

यद्यपि इस अवधि में राहू की शान्ति के लिए **'भैरव'** अनुष्ठान सम्पन्न कराने एंव जातक को विल्लौरी स्फटिक की एक माला के साथ रक्तमणि एंव गोदन्ता धारण कराने से कुछ सुधार हुआ। अनुष्ठान सम्पन्न कराने एंव मणियों को धारण करने के बाद उसके सोचने-विचाने में बदलाव हुआ। उसने ठीक से उपचार लेना और फिर से कॉलेज जाना शुरू कर दिया। कॉलेज में भी स्टाफ ने उसे फिर से नौकरी पर रख लिया। पिछले पांच साल से जातक अपनी पत्नी एंव बहन-भाई से सलाह लेकर ही काम करता है। इस अवधि में जातक की हालत काफी हद तक नियन्त्रण में ही बनी रही।

जन्मकुंडली नं.16

यह जन्मकुंडली एक किशोर की है जो अपने जन्म से लेकर सन् 2000 तक बिलकुल सामान्य था। फिर रोग कारक शनि की अन्तिम अवधि में बृहस्पति की अर्न्तदशा लगते ही उसे मानसिक परेशानी शुरू हो गयी। वह एकाएक जडबुद्धि जैसा व्यवहार दर्शाने लगा।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

बच्चे की जन्मकुंडली में रोग कारक एंव पापी शनि का सीधा प्रभाव लग्न भाव, चतुर्थ भाव, चतुर्थेश मंगल के साथ-साथ चन्द्रमा पर पड रहा है। चतुर्थ भाव में द्वाददेश नीच का चन्द्रमा राहू के साथ बैठा है। साथ ही वह षष्ठेश शनि एंव मंगल से भी पीडित है। चतुर्थ भाव राहू की उपस्थित, शनि, मंगल की पापी दृष्टियों से पर्याप्त रूप में पीडित है। बृहस्पति पर भी मंगल का अशुभ प्रभाव है। इतना ही नहीं, जन्मकुंडली में बृहस्पति वक्री होकर बैठे है।

यद्यपि जन्मकुंडली में लग्नेश दशम में, दशमेश एकादश में स्वगृही एकादेश बुध के साथ, नवमेश नवम् भाव में, सप्तमेश सप्तम् भाव में स्थित है। जन्मकुंडली में चन्द्रमा बहुत पीडित है। वह राहू के साथ, सूर्य, मंगल, शनि से पीडित होकर स्थित है। इतना ही नही, जन्मकुंडली में मन्द बुद्धिहीनता तथा हरिहर ब्रह्म योग भी साथ-साथ बने है। चन्द्र लग्न से भी लग्न भाव, लग्नेश, चतुर्थ भाव, चन्द्रमा और बुध आदि काफी पीडित है। बुध की चन्द्रमा से शत्रुता है। अतः उसकी स्थिति और भी बिगडने की संभावना लगती है।

यद्यपि रोग कारक शनि की शन्ति के लिए भैरव संबन्धी विशेष अनुष्ठान सम्पन्न कराने तथा चन्द्रमा एंव बुध को बल प्रदान करने के लिए मूंगा, गारनेट एंव हरितमणि के साथ विल्लौरी स्फिटिक की माला धारण कराने से बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के कुछ अच्छे संकेत मिले। इन्हें धारण करने के बाद बच्चे ने पढाई-लिखाई में पुनः थोडी-बहुत रूचि लेनी शुरू कर दी है। उसका व्यवहार, बर्ताव में भी पहले की अपेक्षा सुधरने लगा है।

जन्मकुंडली नं.17

यह जन्मकुंडली एक **30** वर्षीय युवती की है। मार्च, 1998 तक उसकी मानसिक दशा बिलकुल ठीक-ठाक थी। फिर अचानक उसकी मानसिक दशा में बदलाव आने लगा। उसने एकाएक अपने बीए फाइनल परीक्षा के दो पेपर स्वेच्छा से बीच में ही छोड दिए। साथ ही उसने ऊंट-पटांग हरकतें करनी शुरू कर दी। उसकी नींद एकाएक गायब हो गयी। वह कभी नवाज बढने लगती तो कभी पारिरिक सदस्यों को मारने-कूटने के लिए उनके पीछे पड जाती। यद्यपि कई तरह के उपचार लेते रहने एंव पूजा-पाठ कराने से उसकी स्थिति में कुछ सुधार तो हुआ और ढाई-तीन वर्ष तक उसकी स्थिति लगभग नियंत्रण में बनी रही। इस दौरान उसका विवाह भी सम्पन्न हो गया और वह एक बच्ची की मां भी बन गयी। लेकिन 2001 से उसकी स्थिति में एक बार फिर से बदलाव आने लगा। इस बार उसकी मानसिक हालत पहले से भी ज्यादा खराब हो गई। साथ ही किसी दवा-दारू ने भी अपना कोई असर नहीं दिखाया। जातिका की यह दशा 2004 तक ज्यों की त्यों बनी रही।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

जातका की जन्मकुंडली में लग्नेश और चतुर्थेश बृहस्पति पंचम भाव में अपनी मित्र राशि में स्थित है, पर उनके ऊपर अष्टम भाव से शनि की पूर्ण पापी दृष्टि है। पंचम भाव भी पर्याप्त रूप में पीडित है। पंचमेश मंगल अष्टम भाव में नीच के बनकर पापी शनि के साथ बैठे है। रोगकारक शुक्र स्वंय ही षष्ठ भाव में सूर्य के साथ स्थित है। चन्द्रमा यद्यपि अपनी उच्च राशि में है, किन्तु वह रोग कारक शुक्र एंव सूर्य के साथ बैठा है और पर्याप्त रूप में निर्बल बना हुआ है। बुद्धि कारक बुध भी षष्ठ भाव में सूर्य, शुक्र आदि के साथ पर्याप्त रूप में पीडित है।

जातिका पर नवबंर, 1993 से नवंबर, 2011 तक राहू की महादशा रही। मार्च 1989 से जातिका पर राहू महादशा अर्न्तगत लग्नेश बृहस्पति की अर्न्तदशा रही। इसी दौरान उसकी मानसिक स्थिति में एकाएक बदलाव आने लगा। बृहस्पति की अर्न्तदशा जातिका पर नवबंर, 2001 तक रही। इसके उपरान्त क्रमशः शनि, बुध और केतु आदि की अर्न्तदशाएं बनी रही। फिर शुक्र की अर्न्तदशा शुरू हुई तो उसकी दशा फिर से बिगडने लगी। यद्यपि रोग कारक शुक्र को प्रसन्न करने के लिए भगवती त्रिपुर सुन्दरी (दस महाविद्याओं में से एक) का विधिवत् अनुष्ठान सम्पन्न कराने तथा जातिका को विल्लौरी स्फटिक की माला के साथ जबरजद नामक एक पत्थर अंगूठी में जडवाकर धारण कराने से काफी लाभ मिला।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि स्त्रियों के प्रसव कष्ट के समय जबरजद को धारण कराने से भी शीघ्र प्रसव क्रिया सम्पन्न होती है। इसी प्रकार अगर मीन राशि के समय जबरजद पर घोडे की सुन्दर आकृति खुदवा कर उसे किसी आभूषण या अंगूठी में जडवा कर दाहिने हाथ की अंगुली में पहन लिया जाए, तो अनेक प्रकार के मानसिक रोग (अपस्मार, अवसाद, सिजोफ्रेनिया आदि) स्वतः ही दूर हो जाते है। इससे मन को शान्ति मिलती है। जबरजद ने अपना पूर्ण प्रभाव जातिका का प्रदान किया।

3- ज्योतिष शास्त्र में त्वचा संबंधी रोग

'त्वचा' यानी स्किन हमारे शरीर का सबसे बाहरी आवरण है। यह हमें एक विशेष व्यक्तित्व, आकर्षण एंव चुम्बकीय आभा प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न रोग कारक जीवाणुओं, विषाणुओं, फंगस, मक्खी, मच्छर जैसे कीट-पंगतों से भी सुरक्षा प्रदान करती है। यही हमें अत्यधिक शीत, ताप, घूल, मिट्टी, रसायन, सूर्य की तप्त रश्मियों आदि से भी सुरक्षा प्रदान करती रहती है। यही हमें चोट, दुर्घटना आदि में गंभीर रूप से क्षति ग्रस्त होने से बचाये रखती है।

चूँकि त्वचा शरीर की सबसे प्रथम सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती है, इसलिए शरीर पर सर्वाधिक रोग भी त्वचा के ऊपर ही देखे जाते है। त्वचा संबंधी इन रोगों में फोडे-फुन्सी निकलना या चोट आदि से बने घाव तो आमतौर पर देखे जाते है। इसके अलावा भी दाद, खाज, एक्जिमा, रसौली, गांठ, त्वचा कैंसर तक देखे जाते है। त्वचा के ऊपर बनने वाले दाग, धब्बे, त्वचा का श्वेत कुष्ठ (फुलबहरी रोग) या त्वचा के ऊपर झुर्रियां पडना तो आमतौर पर देखा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में त्वचा का कारकत्व बुध ग्रह को दिया गया है। इसलिए जब तक बुध शुभ स्थिति में बने रहते है, तब तक व्यक्ति की त्वचा भी अत्यंत स्निग्ध और आभा युक्त बनी रहती है। उसे किसी रोग आदि का सामना भी नहीं करना पडता। लेंकिन जब यही बुध पाप युक्त या पाप दृष्ट हो जाता है और त्रिक भावों में स्थित रहता है तो अचानक ही उस व्यक्ति की त्वचा की आभा को नष्ट करने लगता है। इसके साथ ही त्वचा में नाना प्रकार के रोग, दाग-धब्बे से उभरने लगते है। इसके बाद ही कई तरह के त्वचा संबंधी गंभीर रोग भी सामने आने लगते है।

त्वचा संबंधी ऐसे रोगों के लिए बुध के अतिरिक्त शनि, राहू जैसे पापी ग्रहों की भी विशेष भूमिका रहती है। त्वचा रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों की जन्मकुंडलियों में शनि, राहू, मंगल या क्षीण चंद्रमा की विशेष भूमिका रहती है।

चूँकि सारे शरीर के ऊपर ही त्वचा का एक आवरण सा चढा रहता है, इसलिए त्वचा संबंधी रोगों में किसी एक भाव की जगह सभी भावों की भूमिका रहती है। अर्थात् भाव के कारकत्व के अनुसार ही अलग-अलग अंगों पर त्वचा संबंधी रोग पैदा होते देखे जाते है। यद्यपि इनमें लग्न भाव और रोग भाव की सबसे अहम भूमिका रहती है।

शारीरिक सुख स्वास्थ्य के लिए सर्वप्रथम लग्न भाव का अध्ययन, विश्लेषण ही किया जाता है। लग्न एंव लग्नेश के बली होने पर व्यक्ति रोगों से पूर्णतः मुक्ति प्राप्त कर लेता है, तो बुध के पाप ग्रहों से पीडित रहने पर व्यक्ति को त्वचा रोग सताते है। यद्यपि लग्न और लग्नेश के शुभ प्रभाव में रहने पर वह रोग शीघ्र ही ठीक भी हो जाते है। षष्ठ भाव को तो रोग भाव ही माना गया है। बुध का षष्ठ भाव और षष्ठेश के साथ अन्य पापी ग्रहों के साथ स्थित रहने पर जटिल रोगों की संभावना बनी रहती है।

ज्योतिष शास्त्र में जन्मकुंडली के द्वादश भाव विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व करते है। अतः जन्मकुंडली में बुध पाप ग्रहों से पीडित होकर जिस भाव में स्थित रहता है, उसी भाव से संबन्धित अंग की त्वचा पर रोग का कारण बनता है। अतः त्वचा संबंधी रोगों को जानने के लिए अन्य संबन्धित भावों के साथ-साथ लग्न, षष्ठ भाव को भी प्रमुखता देनी चाहिए एंव ग्रहों में बुध एंव शनि के अतिरिक्त राहू, मंगल पर भी विचार करना चाहिए। इनके अलावा अशुभ सूर्य के साथ क्षीण या पापी चंद्रमा की स्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए।

जन्मकुंडली नं.18

फुलबहरी यानी ल्यूकोडर्मा नामक त्वचा रोग से ग्रस्त एक व्यक्ति की जन्मकुंडली है।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह मिथुन लग्न की जन्मकुंडली है। इस जन्मकुंडली के चतुर्थ भाव में कन्या राशि में राहू, पंचम भाव में तुला राशि में सूर्य, गुरू और शुक्र, षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि में चंद्रमा और बुध, सप्तम् भाव में धनु राशि में शनि, दशम् भाव में मीन राशि में केतु और द्वादश भाव में वृष रशि में मंगल विराजमान है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली के तीन केन्द्र भावों में पाप ग्रह स्थित है तथा व्ययस्थ मंगल राहू से दृष्ट होकर शनि को देख रहा है। केन्द्र स्थान में चार ग्रहों का, पापत्व अशुभ व अनिष्ट का संकेत दे रहा है। लग्नेश बुध की चंद्रमा से युति तथा षष्ठेश मंगल की दृष्टि त्वचा संबंधी रोग देती है। षष्ठेश मंगल की अष्टमेश शनि पर दृष्टि मंगल को अधिक पापी बना देती है। यहां तो लग्नेश पर मंगल तथा केतु की दृष्टि फुलबहरी का निश्चित कारण बन रहा है।

चंद्रकुंडली में भी चंद्रमा पर षष्ठेश मंगल की दृष्टि तथा अष्टमेश एकादशेश व राहू नियंत्रक बुध की युति है। षष्ठेश मंगल पर राहू की दृष्टि तथा षष्ठ भाव पर सूर्य, सिंह राशि पर मंगल की दृष्टि, गुरू, धनु व मीन शनि केतु की स्थित से पीडित तथा व्ययेश शुक्र की दृष्टि, व्यय भाव में होना पुनः त्वचा रोग की पुष्टि होती है।

4- ज्योतिष शास्त्र में कर्ण संबंधी रोग

ज्योतिष शास्त्र में निम्न ग्रह स्थितियां कर्ण रोग का कारण बनती हैः-

- ज्योतिष शास्त्र में शनि से चतुर्थ भाव में बुध स्थित हो, तो जातक को कम सुनाई देता है।
- द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो जातक को बायें कान से कम सुनाई देता है।
- यदि द्वितीय अथवा द्वादश भाव में शुक्र अथवा मंगल हो तो जातक के कान में पीडा होती है अथवा ऑख के गड्ढे में विकार होता है।
- यदि तृतीय एंव एकादश भाव गुरू, शनि तथा मंगल से युक्त अथव दृष्ट हो तो कर्ण विकार की संभावना रहती है।
- मंगल द्वितीयेश के साथ लग्न में बैठा हो अथवा तृतीयेश जिस भाव में स्थित हो, उस भाव का स्वामी यदि अष्टम् भाव में हो तो जातक के कानों में पीडा होती है।
- शुक्र षष्ठेश होकर लग्न में बैठा हो और उस पर चंद्रमा तथा पाप ग्रह की दृष्टि भी हो, तो जातक के दायें कान में और यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो, बुध षष्ठ भाव में एंव शुक्र दशम् भाव में हो, तो जातक के बायें कान में रोग होता है।
- तृतीय भाव स्थित पाप ग्रह अथवा तृतीय भाव किसी पाप ग्रह से दृष्ट हो अथवा तृतीय अथवा एकादश भाव स्थित पाप ग्रह पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो अथवा लग्न में तृतीयेश एंव मंगल की युति हो, तो भी जातक को कर्ण रोग होते है।

जन्मकुंडली नं.19

यह एक ऐसा व्यक्ति की जन्मकुंडली है जिसे बांये कान अचानक 6 जनवरी, 2010 के दिन सुनना बन्द हो गया। उसकी अनेक तरह की मेडीकल जांचें हुई, पर उनमें किसी विशेष रोग का कोई निदान संभव नहीं हो पाया।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जन्मकुंडली में राहू और केतु के मध्य अन्य सातों ग्रह स्थिति है, अतः जन्मकुंडली में कालसर्प दोष की रचना भी हुई है। यह कालसर्प दोष राहू के पंचम भाव और केतु के लाभ भाव में बैठने से हुआ है। यह **'पद्‌म'** नामक कालसर्प योग है। ऐसा देखने में आया है कि इस अशुभ योग के कारण ही जातक की शिक्षा, बुद्धि, संतान सुख में अनेक परेशानी आती है। संतान से दूर या अलग रहना पडता है, विशेषकर वृद्धावस्था के दौरान जातक की बुद्धि भ्रमित रहती है। इस समय मित्र भी काम नहीं आते या विश्वासघात कर जाते है। काम का अपयश मिलता है। व्यक्ति मानसिक चिन्ता, उलझन और भय में डूबा रहता है। जातक का जीवन संघर्षशील बना रहता है।

यद्यपि जन्मकुंडली में भाग्येश और धनेश के रूप में शुक्र अपनी उच्च राशि व सप्तम् भाव में बैठे है। शुक्र अपनी उच्च राशि और केन्द्र स्थान में बैठकर पंचमहापुरूष योग की भी रचना कर रहे है। इससे जातक निश्चित ही कला, नृत्य, संगीत में अत्यन्त निपुण और दक्ष्य होता है। अगर इस योग को अन्य शुभ योगों का साथ भी मिल जाए तो ऐसा व्यक्ति कला के क्षेत्र में विश्व विख्यात होता है। वह अपनी कला से सभी को सम्मोहित करने की सामर्थ रखता है। यद्यपि इस जन्मकुंडली में पद्‌म नामक कालसर्प दोष एंव भाग्य स्थान पर द्वाददेश सूर्य, षष्टेश शनि और अष्टमेश मंगल की युति बनने से इस अत्यन्त शुभ योग की पर्याप्त कीलित कर रखा है। अतः यह योग अपना पूरा प्रभाव देने में सक्षम नहीं है।

ज्योतिषीय सिद्धान्त के अनुसर तृतीय भाव दाहिने कान के लिए, जबकि एकादश भाव बायें कान का कारक माना गया है। अगर जन्मकुंडली में तृतीय अथवा एकादश भाव गुरू, शनि तथा मंगल से युक्त या दृष्ट होकर स्थित हो, तृतीयेश या एकाददेश भी पाप पीडित हो, तो निश्चित ही कर्ण रोग पैदा होने की स्थिति बनती है। इस जन्मकुंडली में एकादश भाव पर शनि एंव राहू की अशुभ दृष्टि है। एकाददेश चन्द्र भी शनि-राहू के प्रबल पाप प्रभाव में है। शनि को मंगल, सूर्य एंव बृहस्पति की युति लाभ मिल रहा है।

इस जातक को जब राहू दशा अन्तर्गत द्वाददेश सूर्य की अन्तर्दशा का समय शुरू हुआ, तो अचानक उसकी सुनने की शक्ति समाप्त हो गई। राहू का सीधा प्रभाव एकादश स्थान एंव लाभेश के ऊपर है। राहू के प्रभाव एकाएक रूप में ही सामने आते है तथा उसी तरह एकाएक रूप में ही अदृश्य हो जाते है। अतः आशा की जा सकती है कि राहू अन्तर्गत जब चन्द्र अन्तर्दशा की शुरूआत होगी तो मेडीकल सहायता से जातक को पर्याप्त मदद मिलेगी। फिर भी इस जातक को समस्या के निराकरण के लिए लग्नेश बुध का रत्न 'पन्ना' धारण कराया गया।

5- ज्योतिष शास्त्र मूक-बधिर रोग

ज्योतिष शास्त्र में रोगों के अध्ययन के लिए मुख्यतः जन्मकुंडली के भाव, षोडश वर्गों, अवस्थाओं, दशाऽन्तर्दशा आदि से विचार किया जाता है। ज्योतिष में तीन तरह के रोग माने गये है, यथा- आधिभौतिक, जो दैनिक खानपान, दिन चर्या, जीवनशैली के दोष जन्य उत्पन्न होते है, आधिदैवीय रोग, जो जन्मजात अर्जित संस्कारों, माता-पिता के आनुवांशिक गुण तथा प्रकृति प्रदत्त प्रभाव जन्य उत्पन्न होते है और तीसरे अभिश्राप जन्य, जो ईश भजन में प्रमाद, कुसंस्कार एंव पर पीडा व श्रापवश उत्पन्न होते है।

जातकालकार ग्रंथ के संज्ञाध्याय में जन्मकुंडली के पांचवे भाव को वाणी का स्थान माना गया है यथा **'वाक्‌स्थान पञचमं स्यात्'**।

अतः वाक् स्थान के स्वामी अथवा गुरू के छठे, आठवें या बारहवें भाव में निर्बल बनकर बैठने, रोगेश, क्रूर ग्रह या पाप ग्रह से युक्त होकर बैठने से **'मूक-बधिर रोग'** की उत्पत्ति मानी गई है। यथा-

वाक् स्थानेशो गुरूर्वा व्ययरिपुविलमस्थानगो वाग्विहीन-
श्चैवं पित्रादिकानां पतम इह युता मूकता स्याव्य तेषाम्।

इसी तरह फलदीपिका नामक एक अन्य ग्रंथ के चौदहवें अध्याय में बुध को गले के रोग तथा गुरू को कर्ण रोग से संबन्धित किया है।

दरअसल मूक-बधिर रोग मुख (वाणी)ा व कानों से संबन्धित रोग है। काल पुरूष के इस हिस्से में वृष राशि का वास माना गया है। इसलिए इन योगों में वृष राशि की स्थित पर भी विचार किया जाता है।

जन्मकुंडली के दूसरे एंव बारह वें भाव का संबंध नेत्र एंव तृतीय एंव एकादश भाव का संबंध कान के माना गया है। छठवा भाव रोगकारक, उसका स्वामी रोग उत्पादक कहा गया है। इसलिए जब इन सबका परस्पर संबन्ध किसी ग्रह स्थान से स्थापित होता है, तो तत्संबन्धी रोग की उत्पत्ति मानी जाती है। रोग कारक ग्रहों की दशा तथा षष्ठेश के अन्तर, प्रत्यन्तर में रोग के पैदा होने की संभावना रहती है।

वाणी दोष

ज्योतिष शास्त्र में निम्न ग्रह स्थितियां वाणी दोष का कारण बनती हैः-

- जब बुध चतुर्थ, अष्टम् अथवा द्वादश भाव में हो तथा चंद्रमा से दृष्ट सूर्य चतुर्थ भाव में हो, तो वाणी दोष की संभावना रहती है।

- द्वितीय भाव में चन्द्र-शनि की युति हो, द्वितीय भावस्थ बुध निर्बल हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो, तो वाणी दोष की संभावना रहती है।
- द्वितीयेश कोई निर्बल शुभ ग्रह हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो, अथवा षष्ठेश बुध के साथ लग्न भाव में बैठा हो, अथवा शुक्ल पक्ष का जन्म हो तथा लग्न में चंद्रमा-मंगल की युति में हो तो, जातक हकलाता है।
- बुध-सूर्य के सान्निध्य में अस्त होकर कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि में हो और उस पर चंद्रमा की दृष्टि भी हो, यदि राहू द्वितीय भव में बैठा हो, तो वाणी दोष की संभावना रहती है।
- यदि बुध मकर अथवा कुंभ राशि में बैठा हो अथवा बुध धनु अथवा मीन राशि में हो और उस पर शनि की पूर्ण दृष्टि भी हो, तो जातक का 'कण्ठ स्वर' अच्छा नहीं होता।

जन्मकुंडली विवेचनाः-

इस जन्मकुंडली के दूसरे भाव में गुरू के साथ केतु बैठे है। वाणी कारक गुरू पापी केतु के साथ दूसरे भाव को पीडित कर रहे है। गले का प्रतिनिधि बुध भी नीचाभिमुख सूर्य तथा नीच द्वाददेश शुक्र के साथ अपनी राशि का चौथे भाव में बैठा है। सप्तम् भाव में आठवें भाव के स्वामी शनि तथा सातवें भाव का स्वामी मारकेश गुरू दूसरे मारक स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मुख कारक राशि पर छठे भाव का स्वामी एंव रोगेश मंगल बैठकर रोग स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। दूसरा भाव गुरू, बुध तथा वृष राशि पर शुभ ग्रहों की दृष्टि एंव युति नही है। इस प्रकारं मूक-बधिर योग की स्पष्ट रूप से रचना हो रही है।

ज्योतिष में इस रोग निदान के लिए परंपरागत् उपचार के साथ-साथ मंगल, देवी उपासना के अतिरिक्त वाक्य दोष, तुतलाना, हकलाना के लिए 'पन्ना' के साथ 'लेपिस लजूली' आदि धारण करने के लिए कहा गया है।

6- ज्योतिष शास्त्र कैंसर रोग

कैंसर एक भंयकर व्याधि का नाम है। इस रोग का नाम सुनते ही रोगी का चेहरा एकाएक भक्क सा पड जाता है। कुछ समय पहले तक तो यही माना जाता था कि कैंसर की शुरूआत बुढापे में जाकर होती है, लेकिन आजकल दुंध मुंहे बच्चों से लेकर नब्बे वर्ष के वृद्धजनों तक में कैंसर के विभिन्न रूप देखने को मिल रहे है। कैंसर रोग के अनेक रूप तो ऐसे है, जो एक तरह साल-छः महीने के भीतर ही व्यक्ति को मौत के मुंह में पहुंचा देते है, तो दूसरी तरफ रोगी के परिवार को कंगाल कर जाते है। आज के समय में मृत्यु का दूसरा प्रमुख कारण कैंसर रोग ने ले लिया है।

ज्योतिषीय आधार पर कैंसर जैसी भयानक और अति कष्टकारी रोग के लिए मुख्यतः राहू, केतु तथा शनि जैसे अत्यंत अशुभ एंव पापी ग्रहों को जिम्मेदार माना जाता है। यद्यपि राहु-केतु प्रत्यक्ष तो इस रोग का कारण नहीं बनते, क्योंकि यह दोनों ही छाया ग्रह माने गये है। परन्तु यह छाया ग्रह अन्य अशुभ ग्रहों के साथ मिलकर कैंसर जैसे असाध्य रोगों के पीछे अपनी विशेष भूमिका निभाते है।

ज्योतिष में केतु को गुप्त रोग का कारक, शनि रोग को अधिक समय तक अर्थात् रोग को दीर्घावधि तक बनाये रखने एंव राहु रोग को वीभत्स बनाने का मुख्य कारण माना है। इसलिए किसी विशेष भाव, राशि तथा अंग विशेष के प्रतिनिधि ग्रह एक साथ इन तीनों ग्रहों से पीडित हो, तो कैंसर जैसी अति गंभीर बीमारियां जन्म लेती है। केतु गुप्त रोग देता है। कैंसर भी ऐसी ही एक गुप्त रोग है। कैंसर की शुरूआती अवस्था में इसका पता नहीं चलता। जब यह रोग पूरी तरह अपनी जड जमा लेता है तभी इस रोग का पता लगता है, पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। शनि के कारण रोग अधिक गंभीर बन जाता है तथा अधिक समय तक चलता रहता है। इसके बाद राहु उस रोग को वीभत्स रूप प्रदान करता है।

इसलिए जब कभी कोई विशेष भाव, भाव का स्वामी, राशि तथा अंग विशेष से संबन्धित भाव, राशि या भावेश के ऊपर राहू-केतु जैसे पापी ग्रहों का प्रभाव पडने लगे, तो उसके फलस्वरूप कैंसर जैसे रोगों की उत्पत्ति होती है। यदि सभी कारकों पर राहू-केतु और शनि तीनों का प्रभाव एक साथ पड रहा हो, तो निश्चित ही कैंसर जैसा भयानक रोग काफी समय तक गुप्त बना रहता है और फिर अनायास भंयकर रूप में प्रकट होकर एक दिन रोगी की जान लेकर ही जाता है। यदि इन तीन ग्रहों के साथ अन्य अशुभ बने ग्रहों का प्रभाव भी संबन्धित भाव, भावेश, राशि, ग्रह आदि के ऊपर पड जाए, तो उसके कारण कैंसर की पीडा और भी असाध्य एंव दुसाध्य रूप ले लेती है। जैसे यदि उपरोक्त कारकों के साथ मंगल भी

पीडित हो जाए, तो रक्त कैंसर, बुध पीडित हो जाए, तो त्वचा संबन्धी कैंसर, सूर्य-चंद्र के पीडित होने से अस्थि एंव मस्तिष्क में ब्रेन ट्यूमर की आशंका बन जाती है।

कैंसर व्याधि का उल्लेख आयुर्वेद से संबन्धित ग्रंथों में **'कर्कट रोग'** के रूप में किया गया है। आयुर्वेद मनीषियों ने इसे कर्मज व्याधि के रूप में मान्यता प्रदान की है।

'कर्मज' वह रोग होते है जिनका संबन्ध व्यक्ति के पूर्व जन्म के पाप कृत्यों के साथ रहता है। पूर्व जन्मों में किए गये पाप कर्मों के फलस्वरूप व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन में कैंसर जैसे लाइलाज और पीडादायक रोग की यातना झेलने पर विवश होता है।

ज्योतिष मर्मज्ञों ने कैंसर जैसे कर्मज व्याधि और पितृदोष या पितृश्राप जैसे पीडादायक रोगों का संबन्ध मुख्यतः राहू और केतू जैसे पृथक्ताकारी ग्रहों के साथ स्थापित किया है। इन छाया ग्रहों को ही कर्म नियन्ता ग्रह माना गया है। राहू-केतू नामक यह छाया ग्रह सूर्य (पितृ एंव आत्मबल, वृद्धिकारक, पुरूषार्थ कारक) और चन्द्र (मन, मनोबल, भावना, सुख आदि के कारक) जैसे प्रबल ग्रहों को पीडित करके व्यक्ति को ऐसे दुसाध्य रोग से ग्रस्त करते है। अतः कैंसर पीडित व्यक्ति में रोग की संभावना या उसके निदान के लिए सर्वप्रथम जन्मकुंडली में राहू-केतू की स्थिति के साथ-साथ राहू-केतू से विस्थापित ग्रहों की स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

जैसे यदि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में राहू और केतु शुभ भावस्थ है, तो उस व्यक्ति को कैंसर जैसे गंभीर रोग का खतरा कम रहता है या न के बराबर ही रहता है।

ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति को सबसे शुभ ग्रह माना गया है, लेकिन ज्योतिष में रोग निदान के लिए बृहस्पति की भूमिका को ही सर्वप्रथम देखा जाता है। बृहस्पति जैसे शुभ ग्रह के प्रतिकूल स्थिति में पडने के कारण शरीर में उत्पन्न होने या रोग के जटिल, गंभीर, असाध बनने की संभावना रहती है।

जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में बृहस्पति राहू अथवा केतु से युक्त होकर बैठते है, अथवा राहू-केतु के नक्षत्र में स्थित रहते है, या फिर राहू-केतु बृहस्पति के नक्षत्र में स्थित होकर अथवा युत या दृष्टि होकर अपना प्रभाव डालता है, तो ऐसी ऐसी समस्त ग्रह स्थितियों में बृहस्पति प्रबल पाप प्रभाव में आ जाते है और अन्ततः कैंसर जैसी व्याधि का कारण बनते है।

ज्योतिष शास्त्र में कर्क राशि और उसके स्वामी चन्द्रमा का संबन्ध मन के साथ स्थापित किया है। अतः जब किसी ग्रह स्थिति में चन्द्रमा पाप ग्रहों के प्रभाव में पडते है, तो निश्चित ही रक्त विकार उत्पन्न होने की संभावना बढ जाती है। ऐसे रक्त विकारों का संबन्ध एनीमिया, एलर्जी, रक्त विषाक्तता और हीमोफीलिया जैसे रोगों से लेकर रक्त कैंसर तक देखा जाती है। ऐसी ही स्थितियां आगे चलकर कैंसर जैसी व्याधि का रूप भी ग्रहण कर लेती है।

कर्क राशि के स्वामी चन्द्रदेव माने गये है। अतः व्याधि की जीर्णता जानने के लिए चन्द्रमा किस नक्षत्र या किस ग्रह के नवांश में स्थित है, इस बात पर भी विचार किया जाता है।

कैंसर व्याधि की तीव्रता या उसके प्रसार को जानने के लिए बुध की स्थिति को भी देखा जाता है। यदि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में बुध पापक्रांत होकर बैठे या मंगल से युक्त होकर अथवा मंगल के नक्षत्र में स्थित हो या फिर मंगल और बुध के मध्य परस्पर राशि-परिवर्तन योग बने या बुध राहू-केतू के अशुभ प्रभाव में बैठे, तो प्रतिकूल ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा या गोचर वश कैंसर कोशिकाएं शीघ्र ही अनियन्त्रित एंव अव्यवस्थित होकर फैलने लगती है। इससे शीघ्र ही वह व्याधि अत्यंत गंभीर रूप धारण कर लेती है।

ज्योतिष शास्त्र में द्वितीय तथा सप्तम् भाव के स्वामी को 'मारकेश' कहा गया है। जबकि तृतीय तथा अष्टम् भाव के स्वामी अथवा उनमें स्थित ग्रहों को 'काल सूचक' (मृत्यु से संबन्धित) ग्रह माना गया है। अष्टम् भाव को आयु भाव ही कहते है, जबकि तृतीय भाव अष्टम् से अष्टम् स्थान पर स्थित रहने के कारण आयु भाव या आयु निर्धारक कारक बन जाता है। यद्यपि तृतीय भाव से द्वादश स्थान (द्वितीय भाव) अथवा अष्टम् भाव से द्वादश स्थान (सप्तम् भाव) मृत्यु कारक (मारकेश) ही सिद्ध होते है। अतः इन सभी भावों के स्वामी अथवा इन भावों में स्थित ग्रह और राहू-केतू, बृहस्पति एंव बुध जैसे रोग कारक ग्रहों से प्रभावित रहते है, तो भी कैंसर जैसी व्याधि के उत्पन्न होने की आशंका बढ जाती है।

कैंसर व्याधि के निदान के लिए जन्मकुंडली में शनि, मंगल की स्थिति को भी देखना जरूरी है। यदि शनि और मंगल 6, 8 अथवा 12 वें भाव से संबन्धित होकर बृहस्पति, बुध, राहू या केतू के साथ किसी भी रूप में प्रभावित हों, तो भी कैंसर की संभावना बढ जाती है।

कुछ अन्य रोग, व्याधियों से संबन्धित ग्रह स्थिति निम्न प्रकार निर्मित होती हैः-

- यदि चन्द्रमा के साथ लग्नेश या षष्ठेश युति बनाकर 6, 8 अथवा 12 वें भाव में स्थित हो जाए, तो उस व्यक्ति के शरीर में कही न कहीं कोई जटिल व्याधि जन्म लेती ही है। यह व्याधि ट्यूमर सदृश्य भी हो सकती है।
- चन्द्रमा यदि कैंसरकारी उपरोक्त ग्रह योगों से प्रभावित हो जाए, तो भी उदर और अंतडियों से संबन्धित कैंसर जैसी असाध्य व्याधि के जन्म लेने की संभावना बढ जाती है।
- यदि चन्द्रमा किसी पाप ग्रह से पीडित होकर बैठ जाए तो व्यक्ति कंठ स्थित किसी गंभीर रोग का शिकार बनता है।
- यदि षष्ठ भाव में स्थित होकर सूर्य अथवा राहू जैसे क्रूर ग्रह शनि और मंगल के ऊपर अपना अशुभ एंव क्रूर प्रभाव डाले, तो भी व्यक्ति किसी न किसी गंभीर रोग से ग्रस्त रहता ही है।
- यदि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में लाभेश षष्ठ भाव में स्थित हो, तो भी व्यक्ति किसी न किसी गंभीर व्याधि की चपेट में आता है।
- यदि चंद्रमा कर्क, वृश्चिक अथवा कुंभ के नवांश में जाकर बैठ जाए, साथ ही शनि भी उसके साथ युति बनाकर बैठे, तो भी ऐसी ग्रह स्थिति में व्यक्ति के शरीर में कोई न कोई जटिल व्याधि उत्पन्न होती है। यह व्याधि ट्यूमर के रूप में भी हो सकती है।
- शुक्र के पापाक्रांत होकर बैठने से मुंह से संबन्धित कैंसर जैसी व्याधि के जन्म लेने की आशंका रहती है।
- यदि कोई क्रूर और पापी ग्रह षष्ठेश के रूप में लग्न स्थान पर स्थित हो जाए या लग्नेश को प्रभावित करे अथवा अष्टम् भाव और अष्टमेश अथवा दशम् भाव को प्रभावित करे, तो भी कैंसर जैसी व्याधि की प्रबल संभावना रहती है।
- यदि बृहस्पति अथवा बुध षष्ठेश के रूप में शनि, मंगल, राहू अथवा केतु से प्रभावित होकर बैठे, तो भी कैंसर की प्रबल संभावना रहती है।
- षष्ठ भाव का स्वामी क्रूर ग्रह तब ही बनता है, जब लग्न सिंह, कन्या, वृश्चिक, मीन अथवा मिथुन रहते है। षष्ठेश के लग्न भाव में जाकर बैठने से निश्चित ही व्यक्ति की शारीरिक क्षमता, पौरूष सामर्थ, ओजस्वता, कर्मठता आदि के साथ प्रतिरक्षक शक्ति भी प्रभावित होती है। यही स्थिति आगे चलकर कैंसर जैसी व्याधियों की नींव रखती है।
- यदि किसी जन्मकुंडली में कैंसरकारी ग्रह स्थितियां बन रही हो और वह ग्रह योग मंगल आदि से भी पीडित हो जाएं, तो उदर संबन्धी, विशेषकर गॉल ब्लैडर से संबन्धित व्याधि की संभावना बनती है। इसी तरह शनि षष्ठ भाव में राहू के नक्षत्र- आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा में से किसी एक में बैठे, तो भी कैंसर जैसे रोग की संभावना रहती है।
- शनि और मंगल आदि राहु के आर्द्रा या स्वाति नक्षत्र व षष्ठ भाव में स्थित हों, तो भी कैंसर योग की स्थिति बनती है।
- यदि लग्नेश और षष्ठेश दशम् अथवा चतुर्थ भाव में जाकर बैठे तथा उनमें से एक ग्रह बृहस्पति हो अथवा बृहस्पति इन ग्रहों के साथ युति बनकर बैठे तथा यह ग्रह युति मंगल और शनि के पाप प्रभाव में आ जाए, तो छाती से संबन्धित जटिल रोग की संभावना रहती है। वक्ष कैंसर से पीडित महिलाओं में यह ग्रह स्थिति देखी जाती है।
- जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में उपरोक्त ग्रह स्थितियां विद्यमान रहें और उन्हें बृहस्पति या राहु की दशाऽन्र्तदशा के दौरान या 6, 8, 12 वें भाव स्वामी अथवा मारकेश की दशाऽन्र्तदशा का समय लग जाए, तो या तो उनके शरीर में अनायास किसी दुसाध्य रोग की शुरूआत होती है या फिर उनका वह रोग एकाएक गंभीर रूप धारण करने लगता है।

कैंसर रोग में ज्योतिषीय उपायः-

अगर ज्योतिष विश्लेषण से किसी व्यक्ति में कैंसर का निदान हो, तो यथाशीघ्र अर्थात् रोग की शुरूआती अवस्था में ही उस अंग विशेष अर्थात् जन्मकुंडली के पीडित भाव, राशि तथा ग्रह को शुभत्व प्रभाव प्रदान करने के लिए उपयुक्त रत्न धारण करना चाहिए एंव अशुभ ग्रहों की शान्ति के लिए उनसे संबन्धित वस्तुओं का दान-पुण्य एंव मंत्र जाप करना चाहिए।

कैंसर जैसे भंयकर रोग को नियन्त्रित करने में रत्न, धातुएं और ज्योतिष आधारित कई तरह के उपाय काफी मददगार सिद्ध होते है। ऐसा देखने में आया है कि शरीर का जो अंश व्याधि ग्रस्त हुआ है, उस अंग से संबन्धित भाव,

राशि तथा ग्रह को शुभत्व प्रदान करने, बल प्रदान के लिए उसका रत्न धारण करने से रोग की वीभत्सता घटने लगती है। अतः इन रोगियों को दोषरहित श्रेष्ठ क्वालिटी एंव पर्याप्त वजनी केतु रत्न लहसुनिया या राहु रत्न गोमेद, कांसे या पंच धातु निर्मित अंगूठी में जडवाकर धारण कराने से आराम मिलता है। इसके साथ अशुभ ग्रहों की दोष शान्ति के उपाय करने से कैंसर रोगियों को तुरंत आराम मिलने लगता है।

मैंने रक्त कैंसर के अनेक मामलों में केतु रत्न के साथ मूंगा धारण करवाकर साथ ही राहू-केतु, शनि आदि पापी ग्रहों की वस्तुओं के दान-पुण्य एंव अन्य उपायों की मदद से अनेक रोगियों की जटिलता कम होते देखी है। इस प्रकार के उपायों के साथ कैंसर रोग संबंधी परंपरागत चिकित्सा के भी अनुकल परिणाम मिलते है। इस प्रकार यह रोगी कैंसर जैसी व्याधि से पीडित होने के बावजूद दीर्घजीवन जी लेते है

जन्मकुंडली नं.20

यह महिला दीर्घकाल तक स्तन कैंसर से पीडित रही। परंतु इसे निम्न उपायों से लाभ मिला।

- **जन्मकुंडली संरचनाः-**

यह सिंह लग्न की जन्मकुंडली है। लग्न स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ राहू विराजमान है। जबकि जन्मकुंडली के द्वितीय भाव में कन्या राशि में सूर्य, मंगल, वक्री बुध, शुक्र एंव शनि एक साथ युति बनाकर स्थित है। जन्मकुंडली के सप्तम् भाव में केतु स्थित है।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

लग्न भाव में व्ययेश चंद्रमा की राहू से युति तथा लग्नेश सूर्य के द्वितीय (मारक) भाव में षष्ठेश शनि से युत बनाना दीर्घकालीन रोग की पुष्टि कर रहा है। केन्द्र व त्रिकोण भाव में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। पंचमेश बृहस्पति (अष्टमेश भी) की सप्तम्, नवम तथा एकादश भाव पर दृष्टि निश्चित ही पति, पुत्र व भाग्य सुख का संकेत दे रही है। भाग्येश मंगल की धनेश-लाभेश बुध से धन भाव में युति तथा भाग्य एंव कर्म भाव पर दृष्टि, राजयोग कारक बनकर, आर्थिक स्थित को सुदृढ बना रही है। कभी दुर्बल व अनिष्टप्रद कुंडली को मात्र एक या दो ग्रह की दृष्टि-युति कियी प्रकार का शुभत्व प्रदान करते है। ये कुंडली इसका ज्वलंत प्रमाण है। चतुर्थेश मंगल की शनि से युति तथा षष्ठेश शनि की चतुर्थ भाव पर दृष्टि, स्तन कैंसर का कारण बन रही है। किंतु भाग्येश मंगल के कारण इस जातिका को रोग से पूर्णतः मुक्ति मिल गई।

इस महिला को मई 1991 के दौरान राहू अन्तर्गत गुरू अन्तर्दशा के दौरान अपने बाएं स्तन में एक गांठ बनने का पता चला। जिसे बाद में कैंसर की गांठ घोषित किया गया। अक्टूबर 1995 में स्तन विच्छेदन करके कैंसर गांठ को काट कर निकाल दिया गया। इससे महिला को कैंसर से मुक्ति मिल गई। लेकिन महिला को 16 अगस्त, 2004 में दायें अंग का पक्षाघात हुआ। महिला कई माह तक बिस्तर पर लेटी रही, अन्ततः उपचार एंव ज्योतिष संबंधी उपायों से उसे पर्याप्त आराम मिला। पक्षाघात के बाद भी यह महिला चार वर्ष तक जिंदा रही।

जन्मकुंडली नं.21

यह जन्मकुंडली मस्तिष्कीय ट्यूमर ग्रस्त एक महिला की है। यह महिला कई वर्ष तक अपने सिर में तीव्र पीडा झेलती रही। अन्ततः उसे ब्रेन ट्यूमर से ग्रस्त पाया गया। इस जातिका में रोग निदान 2007 के दौरान हुआ, जब उसे चंद्र महदशा के दौरान शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी। इस दौरान जातिका के सिर में एकाएक तीव्र दर्द उठने के बाद उसे अस्पताल में भरती करवाया गया था तब एम.आर.आई.जांच से उसमें रोग की पुष्टि हुई थी।

- **जन्मकुंडली विवेचनाः-**

इस जातिका की जन्मकुंडली में लग्नेश बुध स्वगृही है, जबकि त्रिशांश कुंडली में लग्नेश शुक्र द्वादश भाव में अपनी नीच राशि में चले गये है, जो निश्चित ही जातिका के सिर में गंभीर रोग उत्पन्न होने की पुष्टि कर रहे है। जातिका में रोग की शुरूआत चन्द्र महादशा अन्तर्गत शुक्र अन्तर्दशा के दौरान एकाएक तीव्र दर्द के रूप में हुई थी।

काफी समय तक जातिका का उपचार चलता रहा, अन्ततः मस्तिष्क की एम.आर.आई. जांच से पता चला कि उसके मस्तिष्क में ट्यूमर विकसित हो रहा है। रोग की पुष्टि के बाद 2008 में जातिका का ऑपरेशन करके ट्यूमर को निकाला गया, परंतु सितबंर 2009 में जातिका को पुनः तीव्र सिरदर्द रहने लगा तो पनुः ऑपरेशन की जरूरत पडी।

इस जन्मकुंडली में दशापति चंद्रमा एंव त्रिशांश कुंडली में मीन राशि में वर्गोत्तम है तथा अन्तर्दशा स्वामी शुक्र जन्म लग्न में स्वराशि एंव त्रिशांश कुंडली में नीच के होकर गंभीर रोग की पृष्टि कर रहे है। लग्न भाव में मंगल, केतु एंव गुलिक

बैठे है। कालपुरूष की जन्मकुंडली में मेष राशि में शनि एंव राहू की अशुभ दृष्टियां पड रही है। इस सबसे पुनः जातिका के मस्तिष्क में रोग की पुष्टि हो रही है।

इस जातिका को रोग की अत्यंत गंभीर अवस्था में जाकर कुछ उपाय सम्पन्न कराये गये। उन उपायों से उसकी पीडा तो निश्चित कम हुई, परंतु उसकी जान नहीं बच पायी।

अध्याय-आठ

पितृदोष और रोग विचार

पितृदोष भी एक ऐसा दोष है कि जिसके जन्मकुंडली में विद्यमान रहने पर जातक और उसक परिवार एंव सगे-संबन्धी सभी नाना प्रकार के दुःख, दर्द, कष्ट और रोगादि भोगने पर मजबूर होना पडता है। पितृदोष के प्रभाव से स्वयं जातक को ही नही, अपितु उसकी संतान और उसके परिवार के अन्य सदस्यों को भी दुःख, संताप एंव विघ्न-बाधाओं का सामना करना पडता है। ऐसे परिवार के सदस्यों के वैवाहिक कार्य एंव संतान प्राप्ति में नाना प्रकार की विघ्न-बाधाएं खडी होती है। जहां तक कि परिवार के अनेक सदस्य जीवन भर के लिए अविवाहित या निःसंतान ही रह जाते है। पितृदोष के कारण ऐसे परिवार जीवन भर निर्धन रहकर कलंकित-अपमानित जीवनयापन करने पर विवश होते है। इन्हें बार-बार झूठे दोषारोपण का सामना करना पडता है, ऐसे दोषारोपण के कारण उन्हें अपनी नौकरी तक से हाथ धोने पड जाते है या फिर जेल यात्रा करने पर मजबूर होना पडता है। ऐसे परिवार या तो निर्धन, अभाव ग्रस्त रहते है या फिर धन, दौलत, जमींन, जायदाद होने के बावजूद निर्धन, अभाव ग्रस्त व रोगी बनकर जीवनयापन करते है।

पितृदोष का सबसे गहरा प्रभाव तो परिवार के सदस्यों के गृहस्थ जीवन, पति-पत्नी के परस्पर व्यवहार पर देखा जाता है। पितृदोष का एक अन्य दुष्प्रभाव परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य पर देखा जाता है। ऐसे परिवारों में प्रायः कोई न कोई सदस्य हमेशा बीमारी ही बना रहता है। परिवार का एक सदस्य ठीक होता है, तो तुरंत दूसरा सदस्य बीमार पड जाता है। जहां तक कि इन्हें अकाल मृत्यु का सामना भी करना पडता है। ऐसे परिवारों में ही अचानक दिल का दौरा पडने (हृदयाघात), मस्तिष्कीय आधात, एक्सीडेंट, कैंसर जैसी व्याधियों, डूबने, विषघात आदि का सामना भी अधिक करना पडता है। (पितृदोष संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए आप मेरी **'पित्तरदोष-कारण और समाधान**' नामक पुस्तक का अध्ययन कर सकते है। लेखक)

अनेक बार तो पितृदोष जन्य ऐसा व्याधियां पीछे लग जाती है, जिनका वर्षों तक निदान संभव नहीं हो पाता। डॉक्टर बार-बार अनेक तरह के टेस्ट्स कराकरा के थकहार जाते है, रोगी को किसी दवा-दारू से रत्ती भर भी आराम नहीं मिलता। वर्षों तक उनकी अज्ञात बीमारी पीछा नहीं छोडती और उसके कारण घर-परिवार की आर्थिक, मानसिक स्थितियां बिगडती जाती है। यद्यपि ऐसे असाध्य और लाइलाज बने रोग **'त्रिपिण्डी श्राद्ध, नारायण बली, नागबली श्राद्ध**' अथवा पित्तरों के निमित्त विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न किए **'पिंडदान, पितृ तर्पण'** जैसे कर्म के बाद चमत्कारिक ढंग से अदृश्य हो जाते है। क्योंकि ऐसे अधिकांश लाइलाज रोगों के पीछे पितृदोष की ही प्रमुख भूमिका रहती है।

पितृदोष जन्य ऐसे सैंकडों मामलों को मैंने देखा है। एक बैंक ऑफीसर आठ वर्ष तक अपनी पत्नी का इलाज करा-करा थक गये। इस दौरान दो बार उनकी पत्नी का ऑपरेशन भी हो गये और कई लाख रूपये भी इलाज के ऊपर खर्च कर डाले। बावजूद इनके उनकी पत्नी का पेट दर्द दूर नही हुआ। किंतु उनकी पत्नी का यही पेट दर्द पितृ पूजन का कार्य सम्पन्न कराते एंव एक धर्म स्थल पर गऊ दान करते ही एक सप्ताह के भीतर ही एकाएक अदृश्य हो गया।

इसी तरह एक अन्य मामले के दौरान, एक बडे परिवार की जवान पुत्री को पडने वाले मिरगी सदृश्य दौरे भी पितृ दोष की शान्ति कराते ही शान्त हो गये। यह परिवार भी दस से अधिक वर्ष तक पितृदोष का संताप भोगता रहा। इस दोष के कारण उनकी बडी बेटी, जो सोलह वर्ष की उम्र तक अति मेधावी छात्रा मानी जाती थी, अचानक मिरगी रोग की शिकार बन गई। इस रोग के कारण उसकी पढाई तो बीच में अधूरी छूटी ही उसका जीवन जीना भी दूभर हो गया। इस परिवार ने भी अपनी बेटी का अनेक जगह से इलाज कराया, लेकिन उसको दौरे पडने बंद नहीं हुए। दवाएं लेते रहने के बावजूद उसे महीने में तीन-चार बार तो दौरों का सामना करना ही पडता था।

एक अन्य परिवार में प्रथम दो संताने जन्म से ही मंदबुद्धि लेकर पैदा हुई। जबकि उस परिवार में उनसे पहले सभी लोग सामान्य बौद्धिक क्षमता वाले थे। संतान की इस हालत को देखकर परिवार के अन्य सदस्य भी संतान पैदा करने से भय खाने लगे, तो परिवार में वंश वृद्धि खतरा पैदा हो गया। लेकिन पितृश्राप पीडित इस परिवार को भी 'नारायण बली

श्राद्ध' और पितृतीर्थ पर जाकर **'पिंडदान'** आदि कर्म सम्पन्न कराने के उपरांत सामान्य बुद्धि वाली संतान की प्राप्ति में ज्यादा देरी नहीं हुई।

एक अन्य मामले में तो परिवार के चार बेटों में से कोई न कोई या तो बीमारी पडकर अस्पताल में भरती रहता या फिर उन्हें बार-बार दुर्घटनाओं में घायल होकर अस्पताल जाना पडता था। उस परिवार में बीमारी और दुर्घटनाओं का यह सिलसिला पिछले बारह-तेरह वर्षों तक निरंतर इसी तरह जारी रहा। अन्ततः परिवार के मुखिया की जन्मकुंडली के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि वह लोग पितृश्राप से पीडित है। अतः उन्हें भी पितृदोष की शान्ति कराने का परामर्श दिया गया। यद्यपि वह परिवार स्वंय को ज्यादा पढा-लिखा समझता था। वैसे भी उस परिवार के आधे सदस्य वर्षों से यूएसए में रहते थे। इसलिए वह लोग पितृदोष जैसी बातों को अंधविश्वास के रूप में लेते थे।

पितृदोष की शान्ति कराने का निर्णय लेने में उस परिवार को पूरे दो साल का समय लग गया। परिवार के बडे पुत्र का बेटा जब एक गंभीर दुर्घटना में घायल हुआ और उसके बचने की संभावना न के बराबर लगने लगी तब मजबूरी वश उन्होंने पितृदोष शान्ति के लिए संपर्क किया। यद्यपि पितृदोष शान्ति का फल भी उन्हें हाथों हाथ मिल गया। उस उपाय से उनके नाती की जान बच गई। यद्यपि इलाज के लिए उसे पूरे चार महीने तक अस्पताल में भती रहना पडा। पितृदोष की शान्ति कराने के बाद से उस परिवार के ऊपर से बीमारी और दुर्घटनाओं को खोफ भी काफी हद तक समाप्त हो चुका है।

दरअसल, पितृदोष एक ऐसा अभिषाप है, जिसमें किन्हीं कारणों से या तो घर के पित्तर किसी कारण अपनी संतान से रूष्ठ हो जाते है या अगर परिवार के किसी सदस्य की अकाल मृत्यु हुई हो अथवा किसी असाध्य रोग को भोगते हुई हो, और उसकी मृत्यु के उपरांत उसकी अन्त्येष्टि कर्म विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न न करायी जाए, तो ऐसी स्थिति में अकाल मृत्यु को प्राप्त हुई दिवंगत आत्मा को मुक्ति प्राप्ति नहीं हो पाती। उस दिवंगत आत्मा को फिर प्रेत योनि में भटकने पर विवश होना पडता है। प्रेत योनि में गई यही जीवात्मा परिवारिक सदस्यों को नाना प्रकार से दुःख, दर्द, कष्ट आदि प्रदान करके उन्हें अपनी स्मृति कराती रहती है, ताकि वह लोग उसकी मुक्ति करा सकें। **(पितृदोष के विषय में विस्तृत जानकारी एंव उससे मुक्ति पाने के उपायों के संबंध अधिक जानकारी के लिए आप मेरी 'पित्तरदोष- कारण और समाधान' नामक पुस्तक का अध्ययन कर सकते है।)**

ज्योतिष शास्त्र में पितृदोष के योग

ज्योतिष शास्त्र में पितृदोष के लिए मुख्यतः सूर्य, चंद्र, पंचम भाव, द्वादश भाव, शुक्र, राहू, केतु जैसे ग्रहों की अशुभ स्थिति को कारण माना जाता है। दरअसल जन्मकुंडली के नवमू, पंचम स्थान पूर्व पुण्य कर्मों के जबकि छठवा, आठवा और द्वादश स्थान पूर्व अशुभ कर्मों के माने गये है। शनि पूर्व कर्मों का फल प्रदान करने वाले मुख्य नियन्ता व कारक माने गये है। सूर्य से पिता के पूर्व कर्मों का, चंद्रमा से माता के पूर्व कर्मो कां, राहू से परिवार के पूर्व कर्मों का, शुक्र से पत्नी एंव गुरू से संतान, बुध से संगति के पूर्व कर्मों का संबध माना गया है। अतः जन्मकुंडली में इन ग्रहों की विशिष्ट योग या युति से पितृदोष का पता चलता है। जन्मकुंडली में सूर्य, चंद्र के ऊपर राहू, शनि का अशुभ पडना, सूर्य का नीच राशि में स्थित रहना आदि पितृदोष के योग माने गये है।

पितृदोष शान्ति के उपाय

ज्योतिष शास्त्र और कर्मकाण्ड संबन्धी विविध ग्रंथों में पितृदोष निवारण हेतु अनेक उपायों का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है। इन उपायों को विधिवत् सम्पन्न कराने से निश्चित ही व्यक्ति व उसका परिवार पितृदोष संबन्धी कष्टों से मुक्ति पा लेता है।

शास्त्रमत् में नारायण बली, नागबली, त्रिपिण्डी श्राद्ध, पितृतीर्थ जाकर पित्तरों को पिंडदान, तर्पण, गऊ-ब्राह्मण को दान-दक्षिणा सहित भोजना कराना, कन्जका पूजन करना जैसे उपाय पितृ पूजन एंव पितृयज्ञ के निमित्त सम्पन्न कराये जाते है।

पितृदोष निवारण के लिए अन्य उपायों के साथ-साथ दिवंगत आत्मीयजनों का श्राद्ध कर्म सम्पन्न करना भी एक अनिवार्य विधान माना गया है। श्राद्ध कर्म के रूप में पितृ पूजन, पितृ तर्पण, ब्राह्मण भोजन, कुलीन ब्राह्मण को वस्त्र, फल, अनाज आदि को दान-दक्षिण देकर उनका आर्शीवाद लेने से पितृ संतुष्ट होते है और अपने कुलजनों को आर्शीवाद स्वरूप विभिन्न भोग एंव ऐर्श्वय पूर्ण जीवनयापन में मदद करते है।

पितृदोष निवारणार्थ कुछ अन्य प्रमुख हैः-

1 श्राद्धपक्ष के दौरान प्रतिदिन पंद्रह दिन तक **'सर्प सूक्त'** का पाठ करते हुए तर्पण देना।

2 किसी योग्य विद्धान ब्राह्मण, आचार्य से महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप व अनुष्ठान सम्पन्न कराना।
3 कच्चा नारियल बहते पानी में प्रवाहित करना। बहते पानी में मसूर की दाल डालनी चाहिए।
4 प्रत्येक पुष्य नक्षत्र को महादेव पर जल एवं दुग्ध चढाते रूद्र का जप एवं अभिषेक करना चाहिए।
5 नित्य या अमावस के दिन कुलदेवता की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।
6 पित्तरों की प्रसन्नता हेतु श्राद्ध पक्ष में किसी मन्दिर परिसर अथवा उद्यान इत्यादि में पीपल वृक्ष का एक पौधा रोपना या पित्तरों की स्मृति तिथि पर कुआ, बावडी या पंप लगवाना। रोपित वृक्ष को नियमित रूप से जल से सींचे तथा वहीं बैठकर 'ऊँ नमो भगवते वासु देवाय' मंत्र की एक माला का जाप करें। मंत्र जाप के पश्चात् हाथ जोडकर पीपल में स्थित देवताओं से अपने पूर्वजों की सद्गति की प्रार्थना करें।
7 नित्य पीपल को सींचते, विष्णु मंत्र जाप करने तथा जानवरों से पौधे की सुरक्षा करने से निश्चित ही पित्तरों एंव अन्य देवी-देवता प्रसन्न होते है।
8 यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आ रही हो तो पत्नि के साथ सात शुक्रवार नियमित रूप से किसी देवी मन्दिर में सात परिक्रमा लगाकर पान के पत्ते में मक्खन और मिश्री रखकर प्रसाद चढायें। पति-पत्नि एक-एक सफेद फूल अथवा सफेद फूलों की माला देवी माँ के चरणों में अर्पित करें।

कालसर्प दोष जन्य रोग

पितृदोष की तरह जन्मकुंडली में कालसर्प दोष विद्यमान रहे तो भी नाना प्रकार की विघ्न-बाधाएं एंव कष्ट, दुःख, दुर्भाग्य से लेकर संतान कष्ट, असाध्य रोगों तक का सामना करना पडता है।

जिन लोगों की जन्म कुंडलियों में कालसर्प योग विद्यमान रहता है उन लोगों के जीवन में दाम्पत्य का सूत्र भी बाधित होता है। हमारे विचार में 'सुखद दाम्पत्य' जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। यदि किसी व्यक्ति जीवन में सब कुछ हो, परंतु वह दाम्पत्य सुख से वंचित हो, पत्नी से प्रतिदिन कलह रहती हो, विचारों में असहनीय मतभेद हो, एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप के कारण वैवाहिक जीवन टूटने के कगार पर पहुंच गया हो, उन्हें शीघ्र ही अपने कालसर्प योग से मुक्ति के प्रयास करने चाहिए।

जिन जन्म कुडंलियों में कालसर्प योग विद्यमान रहता है उन्हें बार-बार शारीरिक कष्ट भी सहने पडते है। विशेष रूप से यदि अष्टम् भाव में राहू तथा द्वितीय भाव में केतु हो अथवा राहू षष्ठ भाव में तथा केतु द्वादश भाव में एंव अन्य समस्त ग्रह राहू और केतु की धुरी के मध्य स्थित हों। कालसर्प योग के कारण शारीरिक कष्ट के साथ रोग भी बार-बार सताते रहते है। निरंतर चिकित्सा लेने के उपरांत भी व्याधियां पीछा नहीं छोडती। कभी चोट, कभी दुर्घटना, तो कभी ऐसी व्याधि जिसका कारण तक ज्ञात न हो पाए, तो कभी असाध्य रोग शरीर की समस्त शान्ति, उत्साह और उल्लास का पतन कर डालते है।

किसी विधवा स्त्री को स्वप्न में देखना अथवा किसी स्त्री की गोद में मृत बालक देखना भी कालसर्प योग के लक्षण माने गये है। जब इस प्रकार की बाधाएं, दुःस्वप्न, व्याधि, दारिद्रता, दाम्पत्य विघटन तथा आर्थिक और व्यावसायिक विसंगतियां जीवन के सुख को ग्रहण लगा दें तो जीवन का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

राहू के प्रभाव से जातक को मुख्यतः उन्माद, फोडे-फुन्सी, त्वचा संबंधी रोग, मस्तिष्क विकार, हिस्टीरिया, भूत-प्रेत बाधा, मन का भय, अचानक बेहोश होना, अपस्मार, रक्त विकार जैसे अनेक रोगों की संभावना रहती है। इनके अतिरिक्त मेरे अनुभव में आया है कि व्यक्ति को जो भी अचानक रोग होते है, जैसे अपघात, हृदयाघात, मस्तिष्कीय आघात, सडक दुर्घटनाएं, विषपान आदि उनमें निश्चित ही राहू का अप्रत्यक्ष प्रभाव रहता है। राहू जनित यह रोग दीर्घ अवधि तक चलते है।

कालसर्प योग की शान्ति के उपाय

कालसर्प योग शान्ति के लिए निम्न उपाय सम्पन्न कराये जाते हैः-

1 इन्हें कालसर्प योग ***'यंत्र'*** की प्राण प्रतिष्ठा करवाकर उसकी स्थापना करवानी चाहिए एंव उसका नित्य पूजन करना चाहिए।
2 नित्य प्रातःकाल पक्षियों को जौ के दाने खिलाने चाहिए।
3 प्रतिदिन ***'ऊँ नमः शिवाय'*** मंत्र की कम से कम एक माला जप करनी चाहिए। नाग पंचमी का व्रत रखना चाहिए और उस दिन नाग प्रतिमा की अंगूठी बनवाकर पहननी चाहिए।

4 राहु एवं केतु के नित्य 108 बार मंत्र जप से यह योग शिथिल पडता हैं। राहु माता सरस्वती एवं केतु श्री गणेश की पूजा से भी प्रसन्न होते हैं।
5 हर पुष्य नक्षत्र को महादेव पर जल एवं दुग्ध चढाएं तथा रूद्र का जप एवं अभिषेक करें।
6 राहु-केतु की वस्तुओं का दान करें। राहु का रत्न गोमेद पहनें।
7 शिव लिंग पर तांबे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक चढ़ाएं। पारद का शिवलिंग प्राण प्रतिष्ठित पूर्वक अपने घर स्थापित करावें।
8 एक साल तक गेहूॅं या उड़द के आटे की सर्प मूर्ति बनाकर पूजन के बाद नदी में छोड़ते रहे और तत्पश्चात नाग बलि कराने से कालसर्प योग शान्त होता हैं।

अध्याय-नौ

रोग के दौरान विशिष्ट उपाय/कर्मकाण्ड

रोग उपचार के निमित्त दुनिया भर में ही विभिन्न तरीके इस्तेमाल किया जाते रहे है। इनके एक तरीका अपनी निष्ठा अनुसार अपने इष्टदेव से प्रार्थना, पूजा-अनुष्ठान करने का भी रहा है। और अब आधुनिक परीक्षणों से भी यह बात बिलकुल स्पष्ट हो चुकी है कि ईश्वर से प्रार्थना करने पर तत्काल उनका आर्शीवाद प्राप्त होता है। ईसाई जगत में तो सामूहिक प्रार्थना का सर्वत्र प्रचलन रहा है। हमारी सनातन प्रणाली में भी हजारों सालों से विभिन्न देवों से संबन्धित मंत्रजाप, पूजा-अर्चना, हवन-यज्ञ, अनुष्ठान आदि सम्पन्न कराने की परंपरा रही है। हिंदुओं में मुख्यतः सूर्य, गायत्री, ललिता, हनुमान शिव, विष्णु, गणेश, नृसिंह आदि देवों की पूजा-अर्चना करने की परंपरा है। यद्यपि इनके अतिरिक्त भी अन्य देवी-देवताओं के तंत्र आधारित विभिन्न अनुष्ठान भी होते है।

सूर्य उपासना

हमारे जीवन में ग्रहों का कितना महत्व रहता है और उनके क्या प्रभाव पडते है, इस तथ्य का पता इससे चलता है कि प्राचीन समय से ही **'नवग्रह पूजन'** की उपयोगिता सर्वत्र स्वींकार की गई है। हमारे सभी तरह के रीत-रिवाज, पूजा-अर्चनाएं, भवन निर्माण से लेकर मूर्ति स्थापना और यन्त्र आदि को बनाने व उन्हें प्रतिष्ठित करने तक, सभी जगह नवग्रहों को भगवान शिव, विष्णु और देवी की तरह ही स्थापित किया जाता है। सभी मांगलिक एंव शुभ अवसरों पर नवग्रह पूजा एक अनिवार्य अंग के रूप में सम्पन्न करने की परंपरा है, ताकि उन देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना, यज्ञ-हवन आदि का कार्य निर्विघ्न रूप में समाप्त हो सके।

हमारे जीवन में नवग्रह पूजा का इतना महत्व रहा है कि वैदिक पूजा-पद्धति की समस्त क्रियाएं, यज्ञ-हवन से लेकर हमारे जीवन के साथ जोडे गये सोलह संस्कारों तक को सम्पन्न करते समय भी नवग्रह पूजा को विशेष रूप से सम्मिलित किया जाता रहा है। इन संस्कारों को सम्पन्न करते समय सर्वप्रथम नवग्रहों की ही स्थापना एंव पूजा सम्पन्न की जाती है।

बच्चे के नामकरण संस्कार से लेकर उसके उपनयन संस्कार, उसके मुण्डन संस्कार, जनेऊ संस्कार, विवाह संस्कार तक सभी जगह नवग्रह पूजा, एक विशेष पूजा अंग बनी रही है।

यद्यपि अब यह प्राचीन परंपरा भूलती जा रही है, अन्यथा बच्चों को पाठशाला भेजने के प्रथम दिन ही, सरस्वती पूजा के साथ नवग्रह पूजा का कार्य भी एक अनिवार्य कर्म के रूप में सम्पन्न करने का विधान था। नवग्रह पूजा से समस्त कार्य निर्विघ्न समाप्त होते है।

नवग्रहों में **'सूर्य'** तो आदि देव रहे है। यह आरोग्य के प्रदाता और जीवनदायिनी शक्तियों के स्वामी माने गये है, यथा- 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत'। अर्थात् सूर्य की आराधना आरोग्य प्रदाता मनी गयी है। प्रातःकाल सूर्योदय से एक या डेढ घंटे पहले उठकर उष्णकाल की ललिमा के सुहावने वातावरण में मंद गति से खुली हवा में भ्रमण करना, सूर्य रश्मियों को स्वंय में आत्मसात करना, उदित होते सूर्य का दर्शन करना तथा प्रातःकाल सूर्य को ताम्रपात्र से जल समर्पित करना आरोग्यप्रद माना गया है। सूर्य को इस प्रकार जलांजलि देनी चाहिए, ताकि जल बहकर पावों में न आवे। साथ ही अर्घ्य देते समय जल धाराओं में से मंडल का दर्शन भी करना चाहिए, साथ ही **'ॐ मित्राय नमः, ॐ रवये नमः, ॐ सूर्याय नमः, ॐ भानवे नमः, ॐ खगाय नमः, ॐ पूष्णे नमः, ॐ हिरण्य गर्भायनमः, ॐ मरीचये नमः, ॐ अदित्याय नमः, ॐ सवित्रे नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ भस्काराय नमः,** इन बारह आदित्य मंत्रों के साथ सूर्य नमस्कार अति उत्तम रहता है। अर्घ्य जल में लाल चंदन, अक्षत तथा जपा कुसुम के पुष्प (गुडहल के पुष्प अथवा उनके अभाव में रक्त पुष्प) डालकर दें।

भगवान सूर्य का ध्यान- **'ध्येय सदा सवितृ मंडल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः। केयूरवान मकर कुंडलवान किरीटी, हारी हिरण्मय, वपुर्धृत शंखचक्र।**' मंत्र से करें। रवि का व्रत करें। व्रत वाले दिन लवण रहित भोजन करें। साथ ही महर्षि वाल्मीक प्रणीत आदित्य हृदय स्तोत्र अथवा याज्ञवल्क्य रचित सूर्यकवच का पाठ करें। सूर्य उपासना के साथ सूर्य को बल प्रदान करने के लिए स्वर्ण अंगूठी में सूर्य रत्न जडवा कर भी धारण करें।

इस प्रकार सूर्य उपासना से आत्मबल में वृद्धि होती है और अनेक रोगों से सहज रूप में मुक्ति मिल जाती है।

गायत्री उपासना

मां गायत्री समस्त वेदों की माता, ब्रह्मा और सूर्य की शक्ति तथा समस्त कामनायें प्रदान करने वाली है। सात्विक आहार-विहार पूर्वक श्रद्धा के साथ स्वंय रोगी को स्नान, संध्या, पूजन के पश्चात् अथवा रोगी के असमर्थ होने पर उसके परिवारजन, शुभेच्छु द्वारा एक निर्धारित समय पर निश्चित सख्ंया में गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए। जप करते समय मुंह से आवाज न निकले, न होठ हिलें। यह जप रोगी द्वारा लेटे-लेटे भी किये जा सकते है। गायत्री मंत्र है- **'ॐ भुर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।'** इसका मंत्र का शुद्ध उच्चारण किसी विद्वान से सीख लेना चाहिए। कफज रोगों में इस मंत्र के पश्चात् बीज मंत्र **'एं'** का संपुट लगाना चाहिए, पित्तज रोगों में **'ऐं'** बीज मंत्र का संपुट लगाए, जबकि वातज रोगों के साथ **'हँ'** बीज मंत्र का संपुट लगाना चाहिए।

जप करते समय हृदय, मस्तिष्क तथा नेत्रों पर हाथ फेरते रहना चाहिए। जप के पश्चात् ताम्र पात्र में भरे हुए शुद्ध जल में तुलसी पत्र तथा काली मिर्च घोंटकर रोगी को पिलाना चाहिए। रोगी की रक्षार्थ उसे गायत्री कवच धारण करना लाभदायक तथा आकस्मिक हृदयाघात, मस्तिष्कीय आघात एंव दुर्घटनाओं से सुरक्षित रखता है। कवच बनाने के लिए किसी रविपुष्य, गुरूपुष्य, अक्षय तृतीया, अक्षय नवमी इत्यादि शुभ तिथि को जब रोगी के गोचर में चंद्रमा चौथे, आठवें एंव बारहवें भाव में न हो, किसी विद्वान कर्मकांडी ब्राह्मण, आचार्य अथवा स्वंय रोगी के हितेच्छु परिजन द्वारा प्रातःकाल स्नान, पूजन, जप के पश्चात् केशर, जायफल, जावित्री, गोरोचन तथा कस्तूरी आदि को एक साथ घोंटकर इनकी मिश्रित स्याही एंव अनार की कलम से रजत पत्र अथवा भोज पत्र पर 'पॉच ॐ तथा गायत्री मंत्र अंकित करना चाहिए। बाद में इसे चांदी के कवच में भरकर केशरिया या लाल रंग के डोरे में डालकर रोगी को धारण करवा देना चाहिए। यह कवच रोगी की प्राण रक्षा करते है। यद्यपि इस प्रकार के कवच को धारण करके शमशन, शवयात्रा आदि में शमिल नहीं होना चाहिए।

भारतीय पौराणिक ग्रंथों में 'दत्तात्रेय वज्र कवच या वरद दत्त रक्षा स्तोत्र, महागणपति कवच, श्री नृसिंह कवच, त्रैलोक्य मंगल कवच, नारायण कवच, देवी कवच, हनुमान कवच, अमोघ शिव कवच, संकट मोचक हनुमाष्टक कवच आदि अनेक दिव्य रक्षा कवच, स्तोत्र एंव मंत्र का वर्णन आया है। इनमें से अपनी सुविधानुसार किसी का चुनाव करके विधिवत् पूजा-अर्चना एंव ईष्ट प्रार्थना के बाद बीज मंत्र सहित पाठ करने से अत्यंत लाभ मिलेत देखा गया है।

वैदिक मंत्र जप

शुक्ल यजुर्वेदीय रूद्राष्टाधायी की सस्वर नियमित पारायण, विशेष रूप से पंचम अध्याय के छियासठ मंत्रों का स्नान भस्म व रूद्राक्ष धारण सहित पाठ करना निश्चित ही लाभदायक रहता है। इससे रोगी की प्राण रक्षा होती है। इसी प्रकार निम्न दोनों वैदिक मंत्र भी प्रभावशील माने गये है।

प्रथम मंत्रः-

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि।।
बलमसि बलिमयि धेहि। ओजोऽसि ओजोमयि धेहि।
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।

दूसरा मंत्र हैः-

ॐ अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उभेइसे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तात् अभयं उत्तरादिभयंनोरतु।
अभयं मित्रादभयममित्रात् अभयंज्ञातादभयं पुरोयः।
अभयं नक्तभययं दिवानः सर्वाऽऽ आशा ममभित्रं भवन्तु।

इसी प्रकार श्रीमद् भगवात् के चतुर्थ स्कन्ध के नवम् अध्याय का छटा पद स्वय रोगी मन ही मन जप करता रहे तो समस्त रोगों से मुक्ति मिलती है। यह पद निम्नवत् हैः-

योन्तः प्रविष्य मम् वाच मिमां प्रसुप्तां,
संजीवयत्श्खिल शक्तिधरः स्वधाम्ना
अन्याश्च हस्त चरण श्रवण त्वगादीन्
प्राणान् नमो भगवते पुरूषय तुभ्यमु।

इसी प्रकार श्रीमद् भगवात के दशम् स्कन्ध के तेतीसवें अध्याय का चालीसवां श्लोक भी गंभीर रोगी की आत्मरक्षा करता है। यह श्लोक निम्नवत् हैः-

विक्रीडितं व्रजवधूमिरिदं च विष्णोः
श्रद्धान्वितो आनृश्रुणुयादथ वर्णयेद् यः।
भक्ति परां भगवति प्रतिलभ्यं कामं।
हृद्रोग माश्व पहिनोत्य चिरेण धीरः।

यदि उपरोक्त मंत्रों का जप शुरू करने से पूर्व किन्हीं संत, महंत, गुरू आदि से गुरूमंत्र एंव गुरूदीक्षा लेकर तत्पश्चात् इनकी उपासना की जाए, अथवा पंचाक्षरा मंत्र, षडक्षर, अष्टाक्षर आदि मंत्रों का नियमित जप किया जाए, तो निश्चित ही रोगी को लाभ मिलता है, उसकी प्राण रक्षा होती है।

प्रणव और अन्य मंत्र जप

ओंकार अथवा प्रणव स्वंय ही महाभिमंत्र है। इसका सर्वत्र अनिवार्यतः सर्वप्रथम उच्चारण किया जात है। अतः सच्चे मन से निंरतर ओंकार मंत्र का जप सभी आपदाओं से बचाता है।

विभिन्न तंत्र ग्रंथों में वर्णित बीज मंत्र भी अद्भुत शक्ति सम्पन्न रहते है। पूर्ण विधि विधान के अनुसार इनका जप करने से अद्भुत परिणाम मिलते है। **'ह्रीं'** बीज मंत्र का मानसिक जप हृदय रोगनाशक है। इसी प्रकार लघु मंत्रों में **'ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्यायनमः','ॐ ह्रीं दु दुर्गायै नमः, 'ॐ ह्रीं नमः', 'ॐ जूं सः ॐ ल ललितादेव्य नमः', ॐ हृद्य परमेश्वराय नमः', 'ॐ दण्डाये महादंडाय स्वाहा', 'ॐ हौं जूं सः** में से किसी एक तान्त्रिक मंत्र का स्वंय रोगी द्वारा अथवा रोगी के हित चिंतक किसी शास्त्रज्ञ विद्वान से विधिपूर्वक दीक्षित होकर निर्धारित विधि से निरंतर एक निर्धारित संख्या में जप करना चाहिए। इसके लिए पहले संकल्प करना चाहिए, फिर जपोपरांत उसका दशमांश हवन अथवा दशांश जप करना चाहिए। ध्यान रहे पूजा, जप दशांश होम या जप के साथ योग्य वैद्य, डॉक्टर द्वारा उपचार भी जारी रखना चाहिए।

महामृत्युंजय जप अनुष्ठान

भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए, ओढरदानी शिव का आर्शीवाद प्राप्त करने, शिव को प्रसन्न करने के उद्देश्य एंव अनिष्टकारी ग्रहों के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए अति प्राचीन काल से ही शिव पूजा-अर्चना, शिव आराधना और शिव अर्चना से संबन्धित रूद्राष्टक स्तोत्र, रूद्राभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र अनुष्ठान आदि की विशेष मान्यता चला आ रही है। मेरे निजी अनुभव में भी यह प्रयोग एंव पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि अत्यन्त प्रभावपूर्ण सिद्ध हुए है।

शिव के महामृत्युंजय अनुष्ठान का प्रयोजन तो सहस्त्रों कार्यो के निमित्त किया जाता है। इसे ही शास्त्रों में **'मृत संजीवनी विद्या'** का नाम दिया गया है। अनेक अवसरों पर इस अनुष्ठान द्वारा लोगों को अकाल मृत्यु के बाहु पाश से वापिस लौटते, असाध्य रोगों के चक्र-व्यू से बाहर आते, आर्थिक एंव अन्य तरह की मृत्यु तुल्य कठिनाइयों से निकलते देखा गया है। जहॉ तक कि जिन जन्मकुंडलियों में कालसर्प दोष की रचना बन जाती है या जिन लोगों को पितृदोष का संताप भोगना पड रहा है, अगर उन्हें भी महामृत्युंजय अनुष्ठान विधिवत् सम्पन्न करवा दिया जाए अथवा गुरू या विद्वान पिरोहित या अचार्य के सानिध्य में सम्पन्न कर लिया जाए तो अत्यन्त अनुपम लाभ मिलते है।

महामृत्युंजय अनुष्ठान को मुख्यतः निम्न प्रयोजनों के निमित्त सम्पन्न किया जाता हैः-

- कोई व्यक्ति लाइलाज बीमारी की चपेट में आ गया हो। निरंतर इलाज से भी बीमारी नियंत्रण में न आ रही हो।
- नगर, बस्ती में किसी भयानक संक्रामक रोग ने दस्तक दे रखी हो।
- ज्योतिषी ने अकाल मृत्यु का फलकथन किया हो।
- किसी कारण वश पारिवारिक सदस्यों (पति-पत्नी) के मध्य कलह, क्लेश एंव अविश्वास का भाव बनने लगा हो।
- बंधु-बांधवों के मध्य वियोग की आशंका उत्पन्न होने लगी हो।
- व्यक्ति अनायास किसी दुर्घटना का शिकार बन गया हो या उसका जीवन एकाएक खतरे में आ गया हो।
- राजसत्ता, मंत्री पद प्राप्ति में बाधाएं खडी हो रही हो, पदोन्नति की जगह पद अवनति, नौकरी से सस्पेंड होने की नौबत बन गई हो।
- सरकारी केस या मुकद्मा बन गया हो। पुलिस आदि का मामला बन हो गया हो। अपने ऊपर कोई झूठा दोषारोपण लगा हो।

उपरोक्त समस्त स्थितियों में महामृत्युंजय मंत्र के अलग-अलग तरह के अनुष्ठान सम्पन्न कराने से बहुत चमत्कारिक परिणाम मिलते है।

एक मित्र है। बैंक के उच्च्य पदाधिकारी है। कई वर्ष पहले उनकी जन्मकुंडली देखकर किसी ज्योतिष विद्वान ने उन्हें सचेत किया था कि उनके जीवन के लिए आगामी तीन-चार वर्ष बहुत ही नाजुक एंव संकटप्रद सिद्ध हो सकते है। अतः उन्हें इस अवधि में बहुत सावधान रहना चाहिए।

ज्योतिषी की बात सुन कर वह सज्जन दो-चार दिन तो बहुत परेशान रहे, फिर आहिस्ता-आहिस्ता उनके मन से यह बात रफूचक्कर होती गई। इस फलकथन से कोई डेढ साल बाद अचानक एक घटना घटित हुई। वह सज्जन अपने कुछ मित्रों के साथ मसूरी घूमने गये हुए थे, उसी दौरान अचानक उनके साथ एक गंभीर घटना घटित हुई। मंसूरी के पास उनकी कार एकाएक दुर्घटनाग्रस्त हो गई। उनकी कार अचानक एक खाई की तरफ लुढक गई। दुर्घटना से ठीक पहले वह अपनी बंद कार में ड्राइबिंग सीट पर बैठे हुए मजे से आईसक्रीम खा रहे थे। तब ही अचानक उनकी कार एक तरफ खाई में लुढकती चली गई। बचाव दल ने दो-ढाई घंटे की मशक्कत के बाद उन्हें खाई से बाहर निकाला और एम्बुलेंस के द्वारा देहरादून भेजकर अस्पताल में भर्ती करवाया। शुरू में उनकी गंभीर हालत देखकर उनके बचने की बहुत कम संभावना दिखाई पड रही थी।

मित्रों ने उसके साथ घटी दुर्घटना और उनके गंभीर रूप से घायल होने की सूचना तुरन्त उनके घर दी, तो उनके घर में एकाएक कोहराम सा मच गया। यद्यपि उनकी पत्नी ने साहस व बुद्धिमत्ता दिखाते हुए देहरादून रवाना होने से पूर्व सम्पर्क साधकर उनकी जन्मकुंडली की विवेचना करवाई। उस समय की ग्रह स्थिति के अनुसार गोचरवश मंगल अष्टम् भाव में, शनि व राहू की अशुभ युति में अनिष्टकारी योग बनाकर स्थित थे और एक महीने तक उनके जीवन के लिए गंभीर स्थिति बनी हुई थी। अतः उनके ग्रहों की अशुभ स्थिति को देखकर अन्य उपायों के साथ, उनकी जीवन रक्षा के लिए उन्हें 'महामृत्युंजय' मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न कराने की सलाह भी दी गई। महामृत्युंजय मंत्र का यह अनुष्ठान तीसरे दिन अर्थात् शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि के दिन सोमवार को ही शुरू करवा दिया गया।

उधर अस्पताल के डॉक्टर पूरे दस दिन तक उनकी गंभीर स्थिति को लेकर पेशोपेश की स्थिति में बने रहे। उसके जिन्दा बचने की उन्हें बहुत कम संभावना दिखाई दे रही थी। चिकित्सक उन्हें चण्डीगढ के पीजीआई भेजना चाहते थे, किंतु उसकी दयनीय स्थिति को देखते हुए इतनी दूर भेजने का रिस्क भी नहीं ले सकते थे। इसी समय अकस्मात ही एक चमत्कार सा घटित हुआ। भगवान भोले शंकर की कृपा से, अनुष्ठान के सातवें दिन से उसके स्वास्थ्य में सुधार के संकेत मिलने लगे। अस्पताल के चिकित्सक भी उनके शारीरिक अंगों के पुनः अपना कार्य शुरू कर देने पर विस्मय जैसी स्थिति में दिखाई दिए। इसके बाद से तो उनके स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आने लगा और वह अगले पन्द्रह दिन के भीतर ही इस स्थिति में आ गये कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद अपने घर वापिस जा सके। एक तरह से यह महामृत्युंजय अनुष्ठान का ही स्पष्ट प्रमाण था।

एक दूसरा उदाहरण एक स्त्री रोगिणी से संबन्धित है। यह स्त्री काफी लंबे समय तक एक अज्ञात रोग की शिकार रही। तीन वर्ष तक लगातार चिकित्सक विभिन्न तरह के परीक्षण कराते रहे, ताकि उसके रोग का ठीक से निदान हो सके, परन्तु अफसोस लाखों रूपये परीक्षणों के ऊपर खर्च करने एंव तरह-तरह की दवाएं खाते रहने के बावजूद उनके स्वास्थ में कोई सुधार नहीं आया। जहां तक कि उन परीक्षणों से उसकी व्याधि तक का भी पता नहीं चल सका। डॉक्टर उसके रोग का निदान नहीं कर पा रहे थे। एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, इण्डोस्कोपिक, एम.आर.आई. जैसे अनेक परीक्षण कराने के बावजूद उसका रोग पकड में नहीं आ रहा था।

उस स्त्री को पेट के मध्य भाग में, पसलियों के बीचों बीच दर्द सा बना रहता था, जो कभी-कभी असहनीय रूप भी धारण कर लेता था। कभी-कभी उसका दर्द स्वतः ही महीने-पन्द्रह दिनों के लिए शान्त भी हो जाता था।

स्त्री ने अपने रोग से मुक्ति पाने के लिए आधुनिक चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद चिकित्सा, होमियोपैथी और प्राकृतिक उपचार तक, सभी को अजमा कर देखा। कई जगह की तीर्थ यात्राएं भी की। जगह-जगह जाकर मन्नतें भी मांग कर देखी। उस स्त्री ने कई जगह हाजरियॉं भी भरी। लेकिन सभी जगह उसे निराशा ही मिली। उसने ज्योतिष के अनेक उपाय भी अजमाये। नासिक (त्रम्बकेश्वर) जाकर पितृदोष की पूजा भी सम्पन्न करायी, परन्तु वहां भी उसे अपनी पीडा से मुक्ति नहीं मिल पायी।

वह स्त्री पांच वर्ष तक निरंतर अपनी पीडा को इसी तरह झेलती रही। अन्ततः शनि महादशा अन्तर्गत बृहस्पति अन्तर्दशा के दौरान उसे महामृत्युंजय अनुष्ठान को विधिवत् अपने घर सम्पन्न कराने की सलाह दी गई। शुरू में तो वह और

उसका परिवार इस अनुष्ठान को सम्पन्न कराने के लिए तैयार नहीं हुए, किंतु तीन महीने बाद अचानक स्त्री की हालत और भी ज्यादा बिगडने तथा चिकित्सकों द्वारा ऑपरेशन कराने का दबाव बढाने के बाद अचानक वह लोग महामृत्युंजय अनुष्ठान सम्पन्न कराने पर राजी हो गये।

महामृत्युंजय मंत्र का वह अनुष्ठान स्त्री से संकल्प लेकर एक प्राचीन शिवालय में बैठकर शुरू किया गया। इस अनुष्ठान के समय अन्य प्रक्रियाओं के साथ-साथ नियमित रूप से एक माला विशिष्ठ समिधा युक्त हवन करने की व्यवस्था भी की गई। अनुष्ठान के दौरान प्रत्येक दिन स्त्री के हाथ से गाय, कौआ, कुत्ता, चीटियों आदि जीवों को खाद्य वस्तुएं खिलाते रहने के लिए भी कहा गया।

अनुष्ठान शुरू होने के पन्द्रह दिन तक भी उस स्त्री के शरीर में स्वास्थ्य सुधार के कोई लक्षण दिखाई नहीं दिए, लेकिन जैसे-जैसे अनुष्ठान का कार्य आगे बढता रहा, उसमें एक नये उत्साह का संचार अवश्य दिखाई देने लगा। उसके बाद से स्त्री रात्रि को ठीक से सोने लगी और ठीक प्रकार से खाने-पीने भी लग गई। तकरीबन पच्चीसवें दिन से उसके दर्द में लाभ आने लगा। उसके बाद से चिकित्सकीय परामर्श लेकर दर्द की दवाएं धीरे-धीरे कम की जाने लगी। अनुष्ठान समाप्त होते-होते उसने स्वंय बिस्तर से उठकर नहाना, धोना और अनुष्ठान में आकर बैठना, हवन के समय अग्नि में अपने हाथ से आहूतियां डालना शुरू कर दिया।

अनुष्ठान के सम्पन्न हुए भी अब पांच वर्ष से अधिक का समय व्ययतीत हो चुका है। वह स्त्री अब तक बिलकुल ठीक-ठाक है। यद्यपि अब वह पहले से ज्यादा आस्तिक और ईश्वर पर विश्वास रखने लगी है।

इस तरह महामृत्युंजय मंत्र के विशिष्ठ तान्त्रिक अनुष्ठान ने एक और स्त्री को असाध्य बीमारी की पीडाएं भुगतने से बचा लिया।

महामृत्युंजय अनुष्ठान से संबन्धित एक तीसरा उदाहरण भी बहुत मजेदार है। यह उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है, जिसे लाल किताब से फल कथन करने वाले एक ज्योतिषी महोदय ने, एक विचित्र फलकथन करके अत्यधिक भयक्रान्त कर दिया था। दरअसल इस व्यक्ति की पुत्र वधु गर्भवती थी। भावी संतान कैसी होगी, संतान का भविष्य कैसा रहेगा? बेटा-बहु के जीवन पर उनकी भावी संतान का कैसा प्रभाव पडेगा इत्यादि अनेक शंकाओं के समाधान के लिए वह सज्जन अनेक ज्योतिषियों के पास बहु-बेटे की जन्मकुंडलियां लेकर गये थे। उसी दौरान एक ज्योतिष विद्वान ने उन्हें अपने फलकथन से गहरी परेशानी में डाल दिया था। उस ज्योतिषी का कहना था कि बेटे के घर जो संतान जन्म लेगी, अगर जन्म के समय उसकी दादी उसे देखे तो उनमें से कोई एक ही जिन्दा रहेगा। और इस दोष से बचने का भी कोई उपाय नहीं है और न ही इसका कहीं कोई समाधन ही उपलब्ध है। अतः दादी और पोते को कम से कम 43 दिनों तक एक-दूसरे से अलग ही रखना पडेगा।

यद्यपि उन लोगों की परेशानी यह थी कि आजकल के सामाजिक तंत्र में यह कैसे संभव हो सकता है कि प्रसव काल या प्रसूती काल में सास अपनी बहू से अलग रहे या अपने नवजात पोते या पोती का मुंह तक न देखे। दूसरा उन्हें अपनी पत्नी या पाते/पोती की मृत्यु का भय भी डरा रहा था।

दरअसल, लाल किताब में एक ऐसा योग बताया गया है। अगर किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली के ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा बैठा हुआ हो, तो ऐसी अशुभ स्थिति बन जाती है। अगर पोते के जन्म के समय उसकी दादी उसका मुंह देखे, तो लाल किताब के अुनसार उन दोनों में से कोई एक ही जिन्दा बचता है। इतना ही नहीं, उस व्यक्ति की आठवें वर्ष तक, वह दोनों ही जीवित नही बचते। लाल किताब में इस अनिष्टकारी योग का कोई उपाय भी नहीं बताया गया है।

लाल किताब में चौथे भाव को चन्द्रमा का स्थान और ग्यारहवें घर को शनि का घर माना गया है। चौथे भाव से ग्यारहवां घर अष्टम् स्थान पर पडता है। चन्द्रमा का अपने घर से अष्टम् स्थान पर बैठना चन्द्रमा को नीच बना देता है। इसलिए यह अशुभ योग निर्मित होता है।

उपरोक्त अनिष्टकारी योग से परेशान उस व्यक्ति ने इस अशुभ योग के समाधान के लिए अनेक ज्योतिषियों से परामर्श किया, पर वह उसकी समस्या का निराकरण नहीं कर पाये और न ही उसे पूर्णतः आश्वास्त ही कर सके। उसी दौरान वह सज्जन मेरे सम्पर्क में भी आये थे।

शायद उन्हें मेरी कुछ बातें अच्छी लगी या किसी अन्य वजह से, पर वह मेरे द्वारा सुझाये गये उपाय को सम्पन्न कराने के लिए शीघ्र राजी हो गये। उन्हें महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान ही विधिवत् सम्पन्न कराने की सलाह दी थी।

उनकी पुत्र वधु की डिलीविरी डेट चिकित्सकों ने अगस्त महीने के अंतिम सप्ताह में दे रखी थी। अतः उन्हें महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान श्रावण मास के अन्तर्गत सम्पन्न कराने के लिए कहा गया। वैसे भी श्रावण मास में भगवान

शिव की पूजा-अर्चना, उपासना का विशेष महत्व रहता है। शिवोराधना के लिए शिवरात्री से भी ज्यादा महत्व श्रावण मास के सोमवारों को दिया गया है। इसलिए श्रावण मास के प्रथम सोमवार से इस अनुष्ठान को शुरू कराने का कार्यक्रम बनाया गया।

श्रावण मास के पूरे तीस दिन तक महामृत्युंजय अनुष्ठान जारी रहा। अनुष्ठान के अंतिम दिन हवन-यज्ञ सम्पन्न करके ब्राह्मण भोजन, कन्या पूजन का कार्यक्रम भी पूरा किया गया। परिवार के सभी सदस्यों ने अनुष्ठान में पूरे जोश एंव उत्साह के साथ भाग लिया। इसके पश्चात् कोई पच्चीसवें दिन उनकी पुत्र वधु को प्रसव पीडा शुरू हुई, तो उसे एक नर्सिंग होम में भर्ती करवाया गया। जहॉं रात्रि के ग्यारह बजकर पन्द्रह मिनट पर उसने एक स्वस्थ्य पुत्र को जन्म दिया। प्रसव के कार्य को सामान्य रूप में सम्पन्न होने व घर में प्रथम शिशु की किलकारी सुनकर पूरा परिवार खुशी से झूमने लगा। नर्स ने सबसे पहले दादी के हाथ में ही घर के वारिस नवजात को सोंपा।

उस घटना को सम्पन्न हुए भी अब पांच वर्ष से अधिक का समय व्ययतीत हो चुका है और भगवान भोले शंकर की कृपा से पूरा परिवार, विशेषकर घर का चिराग और उसकी दादी, दोनों ही पूर्णतः स्वस्थ एंव सही सलामत है। उनकी पुत्र वधु भी पुनः गर्भवती हो चुकी है। उनका प्रथम पुत्र स्कूल जाने लगा है। परिवार में सब कुछ सामान्य रूप से चल चल रहा है।

विश्व के समस्त प्राणरक्षक उपासनाओं का सिरमौर महामृत्यंजय भगवान आशुतोष मृत्युंजय शिव की आराधना की विस्तृत विधि है। ये आदिदेव, अज, अविनाशी, भूतनाथ, मृत्युजंय, चन्द्रशेखर तथा पशुपति नाथ कहे गये है। ब्रह्माण्ड की रक्षार्थ अमृत मंथन से उद्भुत कालकूट विष को पीकर कंठ में ही रोककर नीलकंठ कहलाये। उनमें पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति रखते हुए आस्थापूर्वक महामृत्युजंय जप का पुरश्चरण, रूद्राभिषेक तथा दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण किया जाता है। महामृत्युजंय का पुरश्चरण साढे तीन लाख मंत्र का माना गया है। इसे यदि स्वंय रोगी न करे सके तो उसे प्राणधिक चाहने वाला परिजन, पुत्र, पिता, भ्राता, मित्र अथवा पवित्र जीवनयापन करने वाला ब्राह्मण, आचार्य द्वारा भी सम्पन्न करवाया जा सकता है।

पुरश्चरण रोगी का ज्योतिषीय दृष्टि से चंद्रवर्ण आदि देखकर प्रदोष, सोमवार, मंगलवार, शनिवार या किसी भी शुभ दिन प्रारम्भ किया जा सकता है। यद्यपि पुरश्चरण काल में सात्विक आहार-विहार, ब्रह्मचर्य पालन, भूमि शयन, नापित से क्षार कर्म न करवाना, कुत्सित इच्छाओं का दमन, निश्चित समय पर जप करना व ईश्वर के ऊपर दृढ आस्था एंव विश्वास रखना अति आवश्यक है। साथ ही पथ्य आदि का पालन भी करना चाहिए। यदि साढे तीन लाख मंत्र जप संभव न हो पाए, तो छोटा पुरश्चरण किया जा सकता है। छोटा पुरश्चरण सवा लाख मंत्र जाप का रहता है। यह जप शिवालय, घर के पूजा स्थान, शिवमूर्ति, लिंग अथवा नर्मदेश्वर के सानिध्य में बैठकर किया जाना चाहिए। यथा संभव धवल वर्ण का नर्मदेश्वर ही स्थापित करना चाहिए अथवा नित्य काली या पीली चिकनी मिट्टी से बनाये गये पार्थिव शिवलिंग की प्रतिष्ठा व स्थापना करके जप करना चाहिए।

जप पूर्व शिवालय में सबसे पहले सफाई व पवित्र जल से प्रक्षालन कर या कच्चा आंगन हो तो गोमूत्र गंगोदक से लीप पोत कर स्वच्छ करना चाहिए। स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख बैठकर गायत्री मंत्र की कम से कम एक माला करनी चाहिए। जप के बाद तीन आचमन, प्राणायाम, शान्तिपाठ, प्रार्थना तदोपरांत महामृत्युंजय मंत्र का संकल्प लेना चाहिए। संकल्प के बाद मंत्र जप करना ही ठीक रहता है।

महामृत्युंजय मंत्र निम्न प्रकार हैः-

'ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्'

जप करने से पूर्व अपने मस्तक पर भस्म से त्रिपुण्ड धारण करना चाहिए। रूद्राक्ष धारण करना चाहिए रूद्राक्ष की माला से ही मौन रहकर मन ही मन जप करना चाहिए। मंत्र के साथ प्रारम्भ में तथा अन्त में बीज मंत्र को संयुक्त करने पर अन्य महामृत्युजंय मंत्र की रचना होती है। यह मंत्र निम्नानुसार बनेगाः-

'ॐ हौं ॐ जूं सः भुर्भुवः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। भुर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ।'

जब पुरश्चरण पूर्ण हो जाए तो मंत्र जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिए।

अतः जब साढे तीन लाख मंत्र का महापुरश्चरण किया जाए, तो 35000 तथा और जब सवा लाख का लघु पुरश्चरण किया गया हो तो 12500 आहुति डालते हुए हवन सम्पन्न करना आवश्यक है। अगर केवल जप का ही संकल्प

लिया हो रूद्राभिषेक का नहीं तो अभिषेक करना आवश्य नहीं, पर दशांश आहुति अथवा असमर्थता होने पर दशांश अतिरिक्त जप किया जाना अनिवार्य है। रोग निवृत्ति हेतु जप के पश्चात् गुडूची, खण्ड, गौदुग्ध तथा गौघृत की आहूति दी जानी चाहिए। हवन के पश्चात् दशांश (1250) तर्पण, तर्पण का दशांश (125) मार्जन तथा यथाशक्ति दान-पुण्य, ब्राह्मण भोजन कराना चहिए।

इस महामृत्युंजय मंत्र के अलावा छोटा जप व पुरश्चरण त्रयक्षर मंत्र का भी होता है। जो इसी प्रकार साढे तीन लाख या सवा लाख संख्या में करना चाहिए। जप, पूजा, न्यास सबकी विधिवत् पूर्ति आवश्यक है। पूजा में लाल व श्वेत चंदन, स्नानार्थ दूध, शुद्ध जल या गंगाजल, अक्षत, संभव हो बिल्व पत्र, धूप, घृत दीप तथा नैवेद्य के सहित श्वेत पुष्प समर्पण करने चाहिए।

मिट्‌टी को स्वच्छ एंव शुद्ध जल में भिगोकर शिवमूर्ति (जलहरी) या योनिपीठ में स्थापित शिवलिंग रोजाना बनाना पडता है। इस पूजा में सर्वप्रथम 'भगवत्यै उमायै नमः' कहकर यानी पीठ पर रक्त चंदन लगना चाहिए। हररायनमः कहकर मूत्तिका शिवलिंग बनाने हेतु ग्रहण करें। 'महेश्वराय नमः' कहकर शिवलिंग बनावें। 'शूल पाणये नमः कहकर योनिपीठ पर शिवलिंग की स्थापना करें। सर्वप्रथम भगवत्य उमाय नमः' कहकर योनिपीठ पर रक्त चंदन लगावें। 'पिनाक ध्वज नमः' कहकर पार्थिव शरीर लिंग में शिव का आवाहन करें। 'शिवाय नमः' कहकर पहले कच्चे गौदुग्ध से पुनः स्वच्छ पवित्र जल से स्नान करावें। 'पशुपतये नमः' मंत्र से क्रमशः लाल चंदन, श्वेत चंदन, अक्षत, पुष्प, बिल्वपत्र, धप तथा घृत दीप समर्पित करें। नैवेद्य समर्णण कर शिव का किसी 'ध्यायेन्त्यि महेशं रजत गिरि निभं चारू चन्द्रावतंस'' अथवा 'चन्द्रार्काग्नि बिलोचनं स्थित मुख पद्‌माद्वयान्नः स्थितम्' आदि मंत्र से ध्यान करें। जप के पश्चात् 'ॐ चण्डेश्वराय नमः' मंत्र से अक्षत फल पुष्पांजलि समर्पण कर, 'ॐ महादेवाय नमः' मंत्र से शिवमूर्ति का किसी तीर्थ स्थल नदी, कूप, बावडी, सरोवर जो पवित्र हो, में विसर्जन कर दें।

ऐसे अनुष्ठान के लिए सबसे पहले सर्वतोभद्र घट स्थापना, नवग्रह स्थापना व पूजा, गणपति स्थापना व पूजा, शिव लिंग की स्थापना व अभिषेक, पूजा-अर्चना का क्रम सम्पन्न करना चाहिए। ऐसे अनुष्ठान के लिए पारद, रजत या स्फटिक के बने शिव लिंग की स्थापना कर उसकी पूजा करने का विधान भी है।

श्री महामृत्युंजय रक्षाकवच (यन्त्रम्)

ऐसे विशिष्ठ अनुष्ठान को विधिवत् सम्पन्न करते समय नवग्रह पूजन, गणपति स्थापना और शिवलिंग आदि की स्थापना के साथ शिव के कल्याणकारी, अद्‌भुत महामृत्युंजय रक्षाकवच (यन्त्र) स्थापना का भी विधान है। शिव के ऐसे रक्षा कवच प्रायः चांदी पत्र या भोजपत्र के ऊपर बनाने चाहिए। शिव अनुष्ठान में लौह या तांबे पर यन्त्र बनाकर प्रयुक्त नहीं करने चाहिए। ऐसे यन्त्र का प्रयोग निषेध माना गया है।

पूजा कार्य में स्थापित करने के लिए चांदी पर उत्कीर्ण किया गया यन्त्र ही प्रयोग करना चाहिए। ऐसे यन्त्रों को पहले से स्वंय खरीदी गई शुद्ध चांदी पर किसी शुभ मुहूर्त, किसी शुभ अवसर जैसे ग्रहण काल, सोमावती अमावस्या रवि-पुष्य, गुरू-पुष्य योग, विजयलक्ष्मी, श्रावण मास आदि के दौरान तैयार करवा कर विधिवत् मंत्र चैतन्य कर लिया जाता है और तदोपरांत ही अनुष्ठान में प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे मंत्र चैतन्य देव यन्त्र को पूजा स्थान, अनुष्ठान में स्थापित करने से देव स्वंय उपस्थित रहते है। इससे स्थान विशेष के वातावरण में तो एक विशिष्टता आती ही है, अनुष्ठान में भी निश्चित सफलता प्राप्त होती है। यंत्र निर्माण के समय व्यक्ति का नाम, गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री का नाम यथा स्थान लिखना चाहिए।

भोजपत्र आदि के ऊपर जो यन्त्र आदि तैयार किये जाते है, उन्हें रक्षा कवच की तरह स्वंय अपने शरीर पर धारण किये जा सकते है। ऐसे यन्त्र बीमार व्यक्तियों, जीर्ण व्याधियों से ग्रस्त लोगों, तांत्रोक्त प्रभावों से डरे-सहमे लोगों को, भूत-प्रेत, जंगली हिसंक जानवरों से भयग्रस्त लोगों, शत्रुओं से सताये लोगों, अकेले यात्रा पर जाने वाले, न्यायालय आदि में झूठे दोषारोपण के शिकार लोगों को पहनाये जाते है।

ऐसे यन्त्रों को सर्वप्रथम किसी शुभ काल में अष्टगन्ध की स्याही और अनार अथवा चमेली की कलम से तैयार करके एंव पूजन आदि से मंत्र चैतन्य करके, चांदी या सोने से बने ताबीज में रखकर शरीर पर धरण किया जाता है। ऐसे यन्त्रों को ताबीज सहित प्रत्येक दिन या प्रत्येक सोमवार के दिन स्वच्छ जल तथा गुग्गुल आदि की धूप देकर शरीर पर धारण करना चाहिए। ऐसे यन्त्रों को धारण करने से निश्चित ही शरीर की रक्षा होती है।

चांदी या सोने के ताबीज में रखकर पुरूष अपने दाहिने बांह पर और स्त्री अपने बायें हाथ में यंत्र बॉध सकते है।

कैंसर में प्रभावशाली उपाय

ज्योतिष शास्त्र में अन्य रोगों के साथ कैंसर जैसी लाइलाज व्याधि का भी विश्लेषण किया जाता है। कैंसर व्याधि का उल्लेख आयुर्वेद से संबन्धित ग्रंथों में **'कर्कट रोग'** के रूप में किया गया है। आयुर्वेद मनीषियों ने इसे कर्मज व्याधि के रूप में मान्यता प्रदान की है।

दरअसल, **'कर्मज'** रोग वह होते है, जिनका संबन्ध व्यक्ति के पूर्व जन्म के पाप कृत्यों के साथ रहता है। पूर्व जन्मों में किए गये पाप कर्मों के फलस्वरूप व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन में कैंसर जैसे लाइलाज एंव पीडादायक रोग की यातना झेलने पर मजबूर होता है।

ज्योतिष मर्मज्ञों ने कैंसर जैसे कर्मज व्याधि और पितृदोष या पितृश्राप जैसे पीडादायक रोगों का संबन्ध मुख्यतः राहू और केतू जैसे पृथक्ताकारी ग्रहों के साथ स्थापित किया है। इन छाया ग्रहों को ही कर्म नियन्ता ग्रह माना गया है। राहू-केतू नामक यह छाया ग्रह सूर्य (पितृ एंव आत्मबल, वृद्धिकारक, पुरूषार्थ कारक) और चन्द्र (मन, मनोबल, भावना, सुख आदि के कारक) जैसे प्रबल ग्रहों को पीडित करके व्यक्ति को ऐसे दुसाध्य रोग से पीडित रखते है। इसलिए कैंसर जैसी व्याधि से पीडित व्यक्ति में इस रोग की संभावना या उसके निदान आदि के लिए सर्वप्रथम उसकी जन्मकुंडली में राहू-केतू की स्थिति के साथ-साथ राहू-केतू से विस्थापित ग्रहों की स्थिति का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

ज्योतिष और धर्म ग्रंथों में कर्मज रोगों से बचने या उनसे निवृत्ति के लिए अनेक परिहार बताये गये है, अतः जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में कैंसरकारी या ऐसे किसी जटिल रोग की कोई संभावना दिखाई पडे तथा व्यक्ति के ऊपर मारकेश, रोगेश या त्रिक भावों के स्वामियों की दशाऽन्तर्दशा का समय चलने वाला हो या उन ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का समय चल रहा हो अथवा गोचर वश भी मारकेश के अशुभ प्रभाव में एकाएक वृद्धि हो जाए, तो उन अशुभ ग्रहों से संबन्धित कुछ परिहार करने चाहिए।

ऐसे उपायों में ग्रहों से संबन्धित मंत्रों का अभीष्ट संख्या में जप, जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश संख्या में ब्राह्मण भोजन कराकर उनका आर्शीवाद लेना चाहिए। ऐसे उपाय से निश्चित ही उस रोग का परिहार हो जाता है। ऐसे परिहार से काफी हद तक रोग से पूर्णतः मुक्ति मिलती देखी गई है। इस प्रकार के पूजा विधान या अनुष्ठान आदि किसी कुशल विद्वान आचार्य के निर्देशन में ही सम्पन्न कराने चाहिए, ताकि उनका पूर्ण लाभ मिल सके।

कर्मज व्याधि से मुक्ति पाने के लिए अन्य उपाय या परिहार के साधन निम्न माने गये हैः-

- **पाशुपतास्त्र स्त्रोत**

पाशुपतास्त्र स्तोत्र का अभीष्ट संख्या में जप से पुरश्चरण करना चाहिए। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश संख्या में ब्राह्मण भोजन कराकर उनका आर्शीवाद लेना चाहिए। ऐसे उपाय से निश्चित ही कैंसर जैसी गंभीर व्याधि से काफी हद तक मुक्ति मिल जाती है।

- **श्री शतचण्डी सम्पुटित**

यह श्री शतचण्डी अनुष्ठान भी एक अनुभूत प्रयोग है। इसके विधिवत् विधान से भी अनेक जीर्ण रोग एंव कैंसर जैसी व्याधि से ग्रसित लोगों को काफी हद तक मुक्ति मिलते देखी गयी है। इस अनुष्ठान के दौरान निम्न मंत्र का सम्पुटित लगाया जाता है। इस सम्पुटित की पाठ संख्या 108 मानी गई है। पाठ के अंत में पाठ संख्या का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश संख्या में ब्राह्मण भोजन कराकर उनका आर्शीवाद लेना चाहिए।

सम्पुटित मंत्रः-
रोगानशेषानपहंसि तुष्टां रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति

- ## **श्री गणपति अथर्वशीर्ष स्त्रोत**

श्री गणपति अथर्वशीर्ष स्तोत्र का नियमित रूप से पंद्रह बार पाठ, पाठ का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिए। यह भी एक अति प्रभावशाली प्रयोग है।

(पाशुपतास्त्र स्त्रोत, श्री शतचण्डी सम्पुटित अनुष्ठान, श्री गणपति अथर्वशीर्ष स्त्रोत आदि अनेक प्रयोगों की विस्तृत जानकारी के लिए आप मेरी अन्य पुस्तकों का अध्ययन कर सकते है। लेखक।)

• लाल किताब के उपाय

अगर किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में **बृहस्पति की अशुभता** के कारण गैस्ट्रिक या फेंफडों से संबन्धित बीमारी का सामना करना पडे, तो उसे रोजाना अपने मस्तक पर केसर का तिलक लगाना चाहिए तथा प्रतिदिन ही थोडी बहुत मात्रा में केसर या गोरोचन का सेवन करना चाहिए। इससे बृहस्पति की अशुभता नष्ट होती है।

शुक्र की अशभुता के कारण यदि किसी स्त्री-पुरूष में गुप्त रोग पैदा हो जाएं, तो उसे गाय की सेवा करनी चाहिए। अपने घर में गाय की पालना करनी चाहिए। मन्दिर या किसी ब्राह्मण को गाय दान करनी चहिए। इससे शुक्र की अशुभ जन्य रोग शांत होते है।

सूर्य से संबन्धित बीमारियों की अवस्था यथा हृदय रोग के दौरान पानी में गुड डालकर पीना चाहिए। नियमित रूप से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए। इससे सूर्य से संबन्धित बीमारियां नष्ट हो जाती है।

चंद्र से सबन्धित बीमारियों के लिए कुछ दिन तक कच्चा दूध और चावल किसी देव स्थान पर चढाना चाहिए। खीर बनाकर या बर्फी का दान किसी मन्दिर में करते रहना चाहिए। ऐसे उपायों से चंद्र से संबन्धित बीमारियां दूर होने लगती है।

मंगल से सबन्धित बीमारियों के लिए अर्थात् जब पेट संबन्धी बीमारियां ज्यादा परेशान करने लगे तो बरगद के पेड की जड में मीठा मिला कच्चा दूध निरंतर 43 दिन क चढाना चाहिए। इससे मंगल से संबन्धित बीमारियां शान्त होने लगती है।

बुध से सबन्धित बीमारियों के लिए जब त्वचा संबधी बीमारियों सताये तो निरंतर चार दिन अर्थात् 96 घंटे तक के लिए नाक में चांदी की तार या सफेद धागे से बिधवा कर रखना चाहिए। तांबे के पैसे में सूराख करके चलते पानी में प्रवाहित करना चहिए। इससे बुध से संबन्धित बीमारियां दूर हो जाती है।

शनि से सबन्धित बीमारियों के लिए चलते पानी में रोजाना कच्चा नारियल बहाना चाहिए। इससे निचित ही सहायता मिलती है।

राहू से सबन्धित बीमारियों के लिए मूली, जौ, सरसों का साग दान करना चाहिए। इससे राहू से संबन्धित बीमारियों में लाभ मिलता है।

केतु से सबन्धित बीमारियों के लिए तंदूर में मीठी रोटी बनाकर लगातार 43 दिन तक कुत्तों को खिलानी चाहिए। तंदूर मिट्टी का बना होना चाहिए। ऐसे उपाय से केतु संबन्धित बीमारियां शान्त होने लगती है।

• लंबी बीमारियों के उपाय

यदि किसी परिवार में लगातार बीमारियों का दौर बना रहे। घर का कोई न कोई सदस्य सदैव बीमारी ही बना रहे। परिवार का कोई न कोई सदस्य जीर्ण रोग से ग्रस्त बना ही रहे, रोग चिकित्सकों के नियंत्रण में न आये। बार-बार परीक्षण कराने के बावजूद रोग का ठीक से निदान तक संभव न हो पाए। रोगी का परिवार जगह-जगह डॉक्टरों को दिखा-दिखा कर थकहार जाए, तो निश्चित ही निम्न उपाय अवश्य कराने चाहिए। लाल किताब आधारित इन उपायों से निश्चित ही रोग को काबू करने में मदद मिलती हैं।

- इसमें सबसे पहले तो घर के सभी सदस्यों और महीने में घर आने वाले अतिथियों की कुल संख्या से थोडी अधिक मीठी रोटियां बनाकर (रोटियां अगर मिट्टी के तंदूर में बनायी जाएं तो अति उत्तम) प्रतिमास गायों, कौओं, कुत्तों को खिलानी चाहिए। साथ ही भिकारियों को बांटानी चाहिए।
- इसी तरह एक पका हुआ पीले रंग का काशीफल किसी मंदिर में चढाना चाहिए। काशीफल चढाने से पहले देख लेना चाहिए कि वह अन्दर से खोखला है। वह अंदर से ठोस तो नहीं है।
- यदि लगातार प्रयास के बावजूद बीमारी पर नियंत्रण न हो पाए, तो ऐसे मरीज को रात के समय अपने सिराहने तांबे के कुछ सिक्के रखकर सोना चाहिए। अगले दिन प्रातःकाल उन्हें वह सिक्के किसी सफाई सेवक (भंगी) को दे देने चाहिए।
- ऐसे बीमार लोग या उसके घर का कोई सदस्य जब कभी शमशान भूमि या कब्रिस्तान में से गुजरे या वहां जाएं या उसके आगे से निकले, तो उन्हें शमशान के अन्दर तांबे के कुछ सिक्के अवश्य गिराने चाहिए। ऐसा करने से उन्हें कुदरती सहायता प्राप्त होती है तथा बीमारी में आराम मिलता है।

- यदि कोई व्यक्ति नेत्र पीडा, ऑखों की बीमारी से पीडित चल रहा है, तो उन्हें शनिवार के दिन चार सूखे नारियल या तांबे के चौरस सिक्के लेकर किसी नदी में प्रवाहित करने चाहिए। इससे उन्हें दीर्घ बीमारी से मुक्ति मिलती है।
- यदि कोई व्यक्ति डायबिटीज, आर्थ्रराइटिस, मूत्र संबन्धी रोग, रीढ की हडड्डी के किसी रोग से पीडित हो, तो उसे चिकित्सा के साथ-साथ काले रंग का कुत्ता अवश्य पालना चाहिए या फिर ऐसे कुत्ते की सेवा करनी चाहिए। अपनी नाभि के ऊपर स्तूरी का लेपन करना चाहिए। इससे निश्चित ही उसकी डायबिटीज नियंत्रण में आ जाती है।
- कान संबन्धी बीमारी होने पर एक सफेद रंग के कपडे में काले-सफेद तिल बांधकर किसी जंगल में जाकर घूरे पर फेंकने चाहिए या जर्मीन के नीचे दबाने चाहिए।
- उच्च रक्तचाप से ग्रस्त होने पर रात्रि को सोते वक्त अपने सिराहने तांबे या चांदी के एक पात्र में जल भरकर सोना चाहिए। अगले दिन उस जल को किसी पौधे के ऊपर चढा देना चाहिए।
- मिरगी या हिस्टीरिया के दौरे पडते हो, तो आटे के पेडे में पताशा रखकर उसे गाय को खिलाना चाहिए। इससे मिरगी के दौरे पडने रूक जाते है।
- यदि किसी व्यक्ति का ज्वर न उतर रहा हो तो उसे तीन दिन तक लगातार सांयकाल के समय किसी मन्दिर में गुड और जौ चढाने चाहिए। इस उपाय से निश्चित ही लाभ मिलता है।

- **लाल किताब में संतान सुख**

लाल किताब में संतान सुख के लिए मुख्यतः केतु और बुध का अध्ययन किया जाता है। लाल किताब में केतु को नर संतान और बुध को मादा संतान अर्थात् पुत्री का कारक माना गया है। केतु अपने उच्च भाव में उच्च फल प्रदान करता है। लेकिन यदि बृहस्पति या मंगल छठवें या द्वादश भाव (केतु के घर में) जाकर बैठ जाए, तो उच्च या अपने घर का केतु भी मंदा फल प्रदान करता है। अतः जिस जन्मकुंडली में केतु शुभ भाव व शुभ ग्रहों से दृष्ट या युति बनकर स्थित हो, तो उस जातक को संतान सुख तो मिलता है, उसे स्वयं की संतान आदर, मान, प्यार-सत्कार देने वाला, अनुशासित होती है। किंतु जब किसी जन्मकुंडली में केतु अशुभ घर में शुभ ग्रहों की दृष्टि या युक्ति लेकर बैठे, तो उस व्यक्ति को संतान सुख तो अवश्य मिलता है, पर उसकी संतान प्रायः दुःख देने वाली, नियंत्रण से बाहर बनी रहने वाली और मान-सम्मान को क्षति पहुंचाने वाली, कुल को कलंकित करने वाली होती है।

लाल किताब में संतान बाधा हटाने या संतान को कुमार्ग से सुमार्ग पर लाने, परिवार की मान-मर्यादा का अनुसरण कराने के लिए केतु संबन्धी उपायों की सहायता लेने के लिए कहा गया है। केतु की शुभता के लिए उन्हें कुत्तों की सेवा करनी चाहिए अथवा घर में कुत्ता पालना चाहिए।

दरअसल, लाल किताब में केतु को कुत्ता का कारक माना गया है। अतः कुत्तों की सेवा या घर में कुत्ते की पालना करने से केतु प्रसन्न होते है। लाल किताब ने साधु, फकीर, साला, जीजा, भांजा-भांजी को भी सांसारिक कुत्तों की संज्ञा दी गई है। यह सभी भी नित सेवा करने, नित्य मदद किए जाने से ही प्रसन्न रहते है। अतः इनकी सेवा से भी केतु की शुभ मदद मिलती है अथवा उन्हें दुःख देने, सताने से केतु अशुभ बनते है तथा संतान बाधाएं खडी करते रहते है। अतः ऐसे लोगों को इनकी सेवा मुहार से केतु का शुभ प्रभाव लेना चाहिए।

लाल किताब में अलग-अलग ग्रह स्थिति के अनुसार संतान के जन्म, संतान के आने, संतान की आयु, संतान के सुख-दुःख, संतान के गुण आदि का विचार किया जाता है।

जब जन्मकुंडली में सूर्य और शुक्र एक साथ बैठे हो, तो वह बृहस्पति का फल प्रदान करते है। शुक्र-सूर्य की शुभ-अशुभ स्थिति से संतान के शरीर, शारीरिक आकृति, संतान पैदा होने के समय, संतान की आयु (आयु के कम या ज्यादा) आदि बातों का विचार किया जाता है। इसी प्रकार शुक्र और चंद्र की स्थिति से संतान की आयु, धन-दौलत, मां-बाप से साथ संबन्ध, संतान के लडका या लडकी होने अथवा संतान की प्रतिभा आदि का विचार किया जाता है।

जन्मकुंडली में राहू और केतु की स्थिति संतान के स्वास्थ्य, गृहस्थी जीवन, संतान पैदा करने की क्षमता एंव सांसारिक सुख आदि का विचार होता है।

लाल किताब के अनुसार, संतान की दीर्घ आयु के लिए जिस दिन स्त्री को अपने गर्भवती होने का पता चले, उसी दिन उसके दायें बाजू पर लाल रंग का धाग बांध देना चाहिए। इस धागे से गर्भपात की आशंका नहीं रहती। बच्चे के जन्म के बाद मां के इस धागे को खोलकर बच्चे को बांध देना चाहिए, जबकि स्त्री की बाजू पर नया लाल रंग का धागा बांध देना

चाहिए। इस लाल रंग के धागे को रक्षा कवच या रक्षा सूत्र कहा जाता है। बच्चे के डेढ साल का होने तक यह रक्षा सूत्र अवश्य बांधकर रखना चाहिए। इससे गर्भपात की संभावना खत्म होने के साथ-साथ बच्चे की आयु बढती है। बच्चा स्वस्थ पैदा होता है।

अगर किसी कारण वश बीच में यह धागा टूट जाए, तो मां की बांह में बांधे हुए धागे को खोलकर बच्चे की बांह में बांध देना चाहिए और मां की बांह में दूसरा नया धागा बांध देना चाहिए।

संतान की दीर्घ आयु और तरक्की, उन्नति के लिए 'गणेश' जी की आराधना, पूजा-अर्चना करनी चाहिए। लाल किताब में चन्द्र को माता, केतु को पुत्र- परिवार और शनि को खजांची माना गया है। अतः जिस जातक की जन्मकुंडली में चंद्र-केतु या चंद्र-शनि, दोनों में से किसी एक का फल अशुभ हो जाए, तो उसका प्रभाव परिवार की खुशहाली पर अवश्य पडता है। इसलिए धन और कारोबार में मेल मिलाप नहीं रहता, अर्थात् ऐसे व्यक्ति को या तो संतान का सुख मिलता है या फिर धन-दौलत। उसे परिवार का सुख या फिर संतान सुख नहीं मिलता। यद्यपि घर में समृद्धि बनी रहती है। चन्द्र-केतु या चंद्र-शनि का यह अशुभ प्रभाव चतुर्थ भाव को छोडकर अन्य सभी भावों पर इसी प्रकार अशुभ सिद्ध होता है।

- जब किसी व्यक्ति के जीवन में संतान दुःख के साथ-साथ धन की कमी भी निरंतर बनी रहे, धन, मान सम्मान को क्षति पहुंचे, हर जगह अपमानित होना पडे, तो उसे प्रतिमास गऊ ग्रास देना चाहिए। इसके अलावा कौवों को दही, या श्वेत मिष्ठान, कुत्ते को घी से चुपडी मीठी रोटी खिलानी चाहिए।
- यदि बच्चे के जन्म से, प्रसव पीडा की शुरूआत से पूर्व ही पीतल की एक कटोरी और एक लौटा लेकर उसमें एक में दूध और दूसरे में चीनी भरकर स्त्री का हाथ लगवाकर अलग रख लेना चाहिए। बच्चे के जन्म के तुरंत बाद इन्हें किसी मन्दिर या देव स्थान पर चढवा देना चाहिए। यदि बच्चे का जन्म रात्रि के समय में हो, तो इन बर्तनों को दूसरे दिन प्रातःकाल धर्म स्थान में दान करना चाहिए। इससे बच्चा और जच्चा दोनों का स्वास्थ्य ठीक-ठाक बना रहता है। उन्हें रोगों का सामना नहीं करना पडता।
- जिस व्यक्ति की जन्मकुंडली में राहू अशुभ भाव में बैठे हों, उसके लिए अच्छा है कि वह बच्चे के जन्म से पहले ही पानी की एक बोतल में जौ डालकर रख ले। इसको बच्चे का जन्म ठीक से होता है और बच्चा दीर्घायु बनता है।
- संतान को प्रथम बार किसी नदी के दूसरी ओर ले जाते समय, जब बच्चे को तीन महीने से अधिक समय तक नदी पार के स्थान पर रहना पडे, तो नदी में तांबे का एक सिक्का अवश्य डालना चाहिए। इस उपाय से बच्चा बुरी अलामत, नजरदोष आदि से सर्वथा बचा रहता है।
- बच्चे की उन्नति के लिए, दिन के समय कच्ची जमीन पर आग जलाकर छोडनी चाहिए। जब जमींन पककर गर्म हो जाए, तो उस तपती जगह से अंगारों को हटाकर उस जमींन के ऊपर ओटे की मीठी रोटी पकाकर कुत्तों को खिलानी या किसी भिखारी को खिलानी चाहिए। यह एक शक्तिशाली उपाय है। इससे बच्चा अपने जीवन में निरंतर उन्नति करता है और समाज में पूर्ण मान-सम्मान की प्राप्ति कर लेता है। यह उपाय महीने में कम से कम एक बार तो अवश्य करना चाहिए। यह उपाय कई बार दोहराया जा सकता है।
- जिस व्यक्ति के बच्चे जीवित न रहते हो, उसे लाल किताब के अनुसार, अपने बच्चे के पैदा होने पर जन्म की खुशी में मिठाई या मीठी चीजें नहीं बांटनी चाहिए। मिठाई की जगह उन्हें अपने रिश्तदारों, मित्रों को नमकीन चीजें खिलानी चाहिए, बांटनी चाहिए।
- जिस परिवार में बच्चों का जन्म न हो, उन्हें अपने घर में काली रंग की कुतिया का पालन करना चाहिए। यह कुतिया जब अकेले नर पिल्ले को जन्म दे, तो उस पिल्ले की पालना ठीक से करनी चाहिए। इस उपाय से संतान बाधा का निवारण होता है। इस उपाय से निश्चित ही घर में बच्चे की किलकारियां सुनने को मिलती है
- कुत्तों को डबल रोटी, मीठी रोटी खिलाते रहने, घर में काला-सफेद रंग का पिल्ला पालने से भी संतान बाधा का दोष मिटता है। लेकिन कुत्ते को घर की छत पर रखकर नहीं पालना चाहिए।
- बच्चों को रात्रि में उबाला हुआ दूध अगले दिन प्रातःकाल नहीं पिलाना चाहिए। इससे संतान के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है।

*****

अध्याय–दस

रोगों के अनुसार रत्नों का चुनाव

अथर्ववेद के **'पृथ्वी सूक्त'** के अन्तर्गत एक बहुत ही अद्‌भुत मंत्र आया है-

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा,
हिरण्यवक्षा जगतो निवेशिनी।

अर्थात्- 'हे! मातृ भूमि! तुम विश्व का भरण पोषण करने वाली हो। तुम रत्नों की खान हो। तुम हिरण्य से परिपूर्ण हो। तुम्हारे ऊपर ही संसार बसा है और तुम ही सबकी प्राण स्थिति का कारण हो।'

शास्त्रों में पृथ्वी को रत्न गर्भा कहा गया है। पृथ्वी को यह संज्ञा देना सर्वधा उचित भी है, क्योंकि पृथ्वी के गर्भ से ही दुर्लभ और अनमोल कहे जाने द्रव्य एंव विविध तरह के 'रत्न' प्राप्त होते है। रत्न और प्राणी शरीर में एक साम्यावस्था मानी गई है।

हिन्दू धर्म दर्शन में पंच तत्वों की विशेष मान्यता रही है। यह पंच तत्व ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त रहते है। यही पॉच तत्व प्राणी (मनुष्य) शरीर में भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है। यद्यपि इन तत्वों की मात्रा अलग-अलग वस्तुओं और प्राणियों में अलग-अलग अंश रूप में रहती है। अतः इसी अनुपात के आधार पर उन्हें जीवित-अजीवित या साधारण-असाधारण होने की संज्ञा प्रदान की जाती है।

वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और आकाश यह पांच तत्व माने गये है। हमारे शरीर के निर्माण में तीन-चौथाई भाग में जल तत्व और शेष एक-चौथाई भाग में चार तत्व विद्यमान रहते है। वायु तत्व के कारण हम सांस लेते हुए जिंदा और सक्रिय बने रहते है, जबकि अग्नि तत्व की प्रधानता के कारण हमारे शरीर का तापमान 98.5 डिग्री फेरनहाइट के आसपास तक बना रहता है। इसी अग्नि तत्व के कारण हमारा शरीर सदैव सक्रियावस्था में रहता है। इसी तरह पृथ्वी तत्व से हमें जो खाद्य पदार्थ प्राप्त होते है, वहह हमारे विकास, स्वास्थ्य एंव जीवित रहने में मदद करते है। जबकि आकाश तत्व से हमें बौद्धिक क्षमता की प्राप्ति होती है। मन, आकाश तत्व से ही आकार ग्रहण करता है।

ब्रह्माण्ड व्यापी इन्हीं पांच तत्वों का समिश्रण ही विभिन्न धातुओं और खनिज तत्वों में विद्यमान रहता है। यद्यपि इन सभी में पृथ्वी तत्व की प्रधानता रहती है और आकाश तत्व अल्पतम् अंश में रहता है। इसलिए जिस प्रकार एक मनुष्य पोष्टिक आहार ग्रहण करके स्वस्थ्य, सक्रिय और बौद्धिक क्षमता सम्पन्न बना रहता है, ठीक उसी तरह उपयुक्त 'रत्न' धारण करके हम जिन्दगी में सही तालमेल स्थापित कर सकते है एंव सुख, शान्ति, संतुष्टि के साथ पूर्णतः स्वस्थ्य, निरोगी बने रह सकते है।

धारण करने पर जब उपयुक्त रत्न त्वचा के निरंतर संपर्क में बना रहता है, तो अपने माध्यम से वह अपने में निहित प्राण ऊर्जा, अपनी सकारात्मक ऊर्जा को धारणकर्ता के शरीर में स्थानांतरण करता रहता है। इससे उसके शरीर में पंचतत्वों की सामजंस्यता बनी रहती है। किसी विशिष्ट तत्व की प्रधानता से उसका अतिफल भी प्राप्त होता है, लेकिन रत्नों के संबन्ध में एक विशेष बात भी अवश्य ध्यान रखनी चाहिए कि यह कुछ समय तक ही अपना पूर्ण प्रभाव प्रदान करते है। कुछ समय के बाद यह अपना काम करना बंद कर देते है।

स्वास्थ रक्षण में रत्नों का महत्व

'रत्नों' में अद्‌भुत गुण निहित रहते है। रत्न भाग्योदय, धन-सम्पदा, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, ऐश्वर्य प्रदान करने वाले माने गये है। यह स्वास्थवर्द्धक, विघ्न-बाधाओं का निवारण करने वाले, परस्पर प्रेम-स्नेह, अपनत्व और आकर्षण का भाव जगाने वाले एंव पुरूषार्थ में वृद्धि करने वाले होते है। अतः यह जीवन पर समय-असमय आने वाले खतरे, दुर्घटना, हिंसक जीव-जन्तुओं के भय के साथ-साथ विभिन्न रोगों से भी सुरक्षित रखते है। इसलिए पुराने समय से ही विभिन्न तरह के 'रत्न' धारण करने का प्रचलन चला आ रहा है। नास्तिक, आस्तिक, पुरातन परंपराओं पर विश्वास रखने या उन्हें दकियानूसी बातें मामने वाले तथाकथित आधुनिक बृद्धिजीवी, सभी तरह के लोग रत्नों को लेकर एकमत् है।

प्राचीन समय से ही रत्नों के संबन्ध में अनेक किवदन्तियां प्रचलित रही है। कोहनूर हीरे की कथा से तो हम सभी परिचित है। लेकिन इसके अतिरिक्त अन्य रत्नों के संबन्ध में भी अनेक कथाएं प्रचलित रही है। मुगलों के मयूर सिंहासन,

महाराजा रणजीत सिंह की रत्न जटित कलगी, अन्य राजा-महाराजाओं के मणि-माणिक्य जटित मुकुटों के प्रताप से संबन्धित सहस्त्रों कहानियां सर्वत्र प्रचलित है। ब्रिटेन के एक **सफेद पत्थर** के विषय में भी कई मान्यताएं प्रचलित है।

ब्रिटेन का यह पत्थर डेवनशायर के शेब्बियन नगर के सैट माइकल गिरजाघर में वर्षों से पडा है। यह सफेद रंग क बडा सा पत्थर है जिसके पीछे एक विचित्र प्रथा बताई जाती है। यह पत्थर 6 फीट लंबा और 5 फीट चौडा है। यहां के लोगों का मानना है कि इस पत्थर को काई शैतान गिरजाघर में गिरा गया था। इस पथर के विषय में मान्यता है कि यदि इस पत्थर को प्रति वर्ष पलटा न जाए तो नगर पर दुर्भाग्य का प्रकोप होगा। प्रतिवर्ष 5 नवबंर की शाम को सभी नगर निवासी चर्च में एकत्रित होकर प्रार्थना करते है और रात को आठ बजे लोहे की छड और डंडों से उस पत्थर को पलट देते है। उसके बाद सभी लोग नाश्ता करके घरों में लौटते है।

प्राचीन समय से ऐसी मान्यता है कि **जेहड (संगयशव)** का जल सेवन करते रहने से अमरत्व की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार सदियों से हिन्दुओं में ऐसा विश्वास चला आ रहा है कि शुद्ध बिल्लौरी स्फटिक की माला गले में धारण रखने से शरीर में नयी स्फूर्ति और नई बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। शुद्ध बिल्लौरी स्फटिक सुषुप्त चेतना केन्द्रों को सक्रिय करने में मदद करता है। इसीलिए विभिन्न तरह की साधना, उपासना आदि में स्फटिक माला का उपयोग करने का विधान है।

स्फटिक मणि को लेकर ऐसा ही विश्वास मिस्त्र, बेबीलोन और असीरिया की प्राचीन सभ्यताओं में रहा है। आधुनिक समय में भी कई तरह के ऐसे अध्ययन, अनुसंधान सम्पन्न हुए है, जिनसे पता चलता है कि स्फटिक मणि के प्रभाव से पेड-पौधे तक तेजी से विकसित होकर फल-फूल आदि से सम्पन्न होने लगते है। स्फटिक मणि का ऐसा ही प्रभाव मानव जीवन के ऊपर भी देखा जाता है। यह सुख, समृद्धि और आरोग्यता प्रदान करने वाला पत्थर माना गया है।

कार्नेलियन नामक एक अन्य पत्थर के संबन्ध में भी प्राचीन समय से ऐसी मान्यता चली आ रही है कि यह रत्न धारा प्रवाह बोलने और नए विचारों को विकसित करने में मदद करता है। अतः इसे धारण करने से निर्णय लेने की क्षमता में सुधार आता है और स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। इसलिए यह रत्न सार्वजनिक जीवन से जुडे लोगों, विशेषकर राजनैतिक, धर्म प्रचारकों, संगीतज्ञ और गायकों से लेकर अध्यापन का कार्य करने एंव विद्यार्थियों तक के लिए अति उपयोगी रहता है। यह रत्न उच्च आक्षांओं को पैदा करता है तथा उन्हें प्राप्त कराने में भी मदद देता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मुहम्मद पैगम्बर, निपोलियन प्रथम और निपोलियन तृतीय भी अपने शरीर पर कार्नेलियन धारण किए रहते थे।

लेपीज लजूली को तो प्राचीन समय से ही **'तीसरी ऑख'** का रत्न माना जाता है। यह रत्न निर्णय क्षमता को विकसित करने में मदद करता है। इसीलिए बाईबिल जैसे पवित्र ग्रंथ में इसका उल्लेख **'ब्रेस्ट प्लेट ऑफ जजमेंट ऑफ एरोन'** के नाम से हुआ है। इस रत्न को धारण करने से अंतदृष्टि और परामानसिक क्षमताओं के विकास में काफी मदद मिलती है। तिब्बतीय लामाओं के कुछ सम्प्रदायों में ध्यान का अभ्यास अथवा तंत्र साधना करते वक्त लेपीज लजूली से निर्मित माला धारण करने की विशेष परंपरा रही है। रोमन्स में तो लेपीज लजूली को कामोत्तेजना बढाने वाला एक शक्तिशाली पत्थर माना जाता था।

स्मोकी क्वाट्र्ज नामक एक अन्य पत्थर के संबन्ध में भी कई तरह की मान्यताएं दुनिया भर में प्रचलित है। प्राचीन समय से इस पत्थर को खतरों से बचाने वाला माना जाता है। इसीलिए प्राचीन समय में जब सैनिकों को लडने के लिए युद्ध भूमि भेजा जाता था, तो **'रक्षा कवच'** के रूप में स्मोकी क्वार्टर्ज को भी अपने साथ ले जाना पडता था। इस रत्न को एक शक्तिशाली 'हीलिंग क्रिस्टल' भी माना जाता है। यह रत्न निःसंतान दम्पत्तियों के लिए भी अति उपयोगी सिद्ध होता है। जहां तक कि इसको धारण करने से पुरूषों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में तेजी से वृद्धि होने के साथ-साथ उनकी सक्रियता और जीविटता एंव जीवन अवधि में भी वृद्धि होने लगती है।

बेरिल एक अन्य मूल्यवान एंव प्रभावशाली पत्थर है। इसे भी प्राचीन समय से मानसिक और परामानसिक शक्तियों को जाग्रित करने वाला विशेष पत्थर माना जाता रहा है। बेरिल से निर्मित माला को गले में धारण करने से अचेतन शक्ति सक्रिय होने लगती है और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं को पहले से ही जानने की क्षमता प्राप्त होने लगती है। यह संकल्प शक्ति को दृड बनाने में भी सहायता करता है। बेरिल को भाग्य निर्माता रत्न माना गया है। प्राचीन समय में इसे वर्षात् कराने के अनुष्ठानों को सम्पन्न करने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। इसे सदैव यौवनता प्रदान करने वाला रत्न भी माना गया है। ऐसा देखा गया है कि जो लोग सदैव अपने शरीर पर बेरिल धारण किए रहते है, वह लोग सदैव एक नयी ऊर्जा, एक नयी स्फूर्ति और एक नये उत्साह से भरे रहते है।

इसी प्रकार के अन्य बहुत से रत्न है, जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। इनमें कई तरह की विशिष्ट क्षमताएं निहित रहती है। अतः इनको धारण करने से भाग्य में तो बदलाव आता ही है, मान-सम्मान में भी वृद्धि होती है। इसके साथ ही इन रत्नों को धारण करने से स्वास्थ्य रक्षण का कार्य भी सहजता से हो जाता है। इनसे परालौकिक जगत से संबन्धित शक्तियों को प्राप्त करने में भी मदद मिलती है। ग्रीन जैस्पर, एक्वॉमरीन, मैग्नेटाइट, एमिथेस्ट, ओनिक्स, ओपल, टोपाज, एगेट जैसे अनेक रत्न इसी श्रेणी में आते है। (विभिन्न रत्नों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए आप मेरी **'भाग्यशाली स्टॉन्स-रत्न'** नामक पुस्तक का अध्ययन भी कर सकते है। लेखक)

पुराने जमाने की बात तो दूर आज के समय में भी रत्नों के चमत्कार देखने को मिलते है। रत्नों ने लोगों के दूबते जहाज को उबारने में मदद की है। वर्तमान शताब्दी के महानायक अमिताभ बच्चन द्वारा नीलम धारण करने से भला कौन अपरिचित है। सैंकडों पुराने और असाध्य रोगों से ग्रस्त लोगों को अशुभ एंव प्रतिकूल ग्रहों के रत्न धारण कराने भर से कुछ दिनों में ही चमत्कारिक स्वास्थ लाभ मिलते देखा गया है।

मेरे एक मित्र है, जिनका बचपन से ज्योतिष और पूजा-पाठ के प्रति अगाध विश्वास रहा है। जब भी वह मित्र कोई नया काम धंधा शुरू करते है अथवा किसी मांगलिक कार्य की शुरूआत करने वाले रहते है, तो सबसे पहले ज्योतिषी परामर्श लेना कदापि नहीं भूलते। ज्यातिष परामर्श एंव शुभ मुहूर्त देखकर ही वह अपने कार्य को आगे बढाते है। यद्यपि उनकी पत्नी का स्वभाव उनके बिलकुल विपरीत है। उनकी पत्नी ज्योतिष पर ज्यादा विश्वास नहीं रखती।

एक बार इस मित्र के साथ एक घटना घटित हुई। उनका एकमात्र दस वर्षीय बेटा अचानक बीमार पड गया। उसके दायें गुर्दे में सूजन आ गई। काफी समय तक उसका जगह-जगह इलाज चलता रहा। इस दौरान सैंकडों तरह के परीक्षण हुए, कई तरह की दवाएं अदल-बदल कर प्रयोग कराई गई। कई तरह के चिकित्सा उपचार अजमाये गये, पर इस सबके बावजूद उसके रोग में कोई लाभ नहीं आया। बच्चे की तबियत दिनोंदिन बिगडती ही जा रही थी और डॉक्टर लोग उसका कोई उचित समाधान नहीं दे पा रहे थे।

अन्ततः बच्चे की जन्मकुंडली के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि उसे राहु महादशा अन्तर्गत मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। साथ ही अष्टमेश गुरू भी गोचरवश उसके द्वादश भाव के ऊपर भ्रमणशील है। बच्चे की जन्मकुंडली में मंगल-राहु से पाप ग्रस्त होकर स्थित थे और मंगल-राहु दोनों ही लग्नेश बुध को पर्याप्त रूप में पाडित किए हुए थे। बच्चे के लग्न भाव में कन्या राशि के केतु बैठे थे। गुरू अष्टम् भाव में बैठकर पीडित किए हुए थे।

ज्योतिषीय विश्लेषण के आधार पर इन ग्रह युतियों का संबन्ध आंत्र संस्थान संबंधी विकारों के साथ रहता है। लग्नेश बुध शरीर के स्वामी के साथ कन्या राशि में आंत्र रोग का प्रतिनिधित्व करने के अतिरिक्त पंचम भाव के स्वामी भी थे। नवम् भाव पेट के भीतरी अंगों का प्रतिनिधि रहता है। अतः ऐसी स्थिति में मंगल के पाप प्रभाव में पडते ही शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की नौबत बनते देखी गयी है। गुरू जब भी गोचरवश जिस भाव से छठे स्थान में बैठते है, निश्चित ही उस भाव से संबन्धित बीमारी देते है। इसके अतिरिक्त जन्मकुंडली में विद्यमान कई अन्य योग भी इस बात का संकेत दे रहे थे कि जातक को शीघ्र ही आंत्र संस्थान की सर्जरी करानी पड सकती है।

बच्चे की जन्मकुंडली का विश्लेषण कराने के बाद उसे कांसे की अंगूठी में उत्तम क्वालिटी का साढे पांच रत्ती वजन का पन्ना (कोलम्बिया) धारण करने के साथ कुछ अन्य उपाय सम्पन्न कराये गये। पन्ना धारण करते ही बच्चे के स्वास्थ पर अद्भुत प्रभाव हुआ। पन्ना पहनते ही उसके स्वास्थ्य में तीव्र गति से सुधार हुआ। चार महीने में ही वह बच्च काफी हद तक स्वस्थ हो गया और वह भी बिना शल्य चिकित्सा कराये। पहले जो चिकित्सा बच्चे पर कारगर साबित नहीं हो रही थी वही चिकित्सा अब अपना प्रभाव दिखाने लगी।

बच्चे को उपाय रूप में लग्नेश बुध का रत्न 'पन्ना' धारण कराने के साथ ही अन्य उपायों द्वारा राहू, केतु और मंगल की अशुभता शान्त करने के लिए कहा गया। गुरू को बल प्रदान करने के लिए भी कहा गया।

रत्न चिकित्सा का आधार

रत्न और आयुर्वेद का बहुत पुराना और गहरा साथ रहा है। प्राचीन काल के वैद्य भेषज विज्ञान के साथ ज्योतिष विद्या की भी जानकारी रखते थे। इसीलिए उस समय किसी भी लंबी चलने वाली बीमारी के उपचार के साथ वह रत्न पहनने की सलाह भी अपने रोगियों को दिया करते थे। आयुर्वेद एंव यूनानी चिकित्सा प्रणाली में **'रत्नों'** से तैयार की कई अनेक औषधियों (भस्म, पिष्टियों) का उल्लेख आया है। इसमें हीरक भस्म, लौह भस्म, स्वर्ण भस्म, प्रवाल पिष्टी आदि तो विशेष

प्रसिद्ध है। पर इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि यदि रत्नों का पूरा लाभ लेना हो या इनका प्रयोग इलाज के तौर पर किया जाए, तो सबसे पहले किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श करना बेहद आवश्यक है।

नीचे कुछ रत्न और उनके चिकित्सकीय गुणों का उल्लेख किया जा रहा हैः-

1. माणिक्य (Ruby)

माणिक्य (रूबी) को सूर्य से संबन्धित रत्न माना गया है। यह रत्न लाल रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को स्वंय में सोख कर उन्हें विस्तीर्ण करने की क्षमता रखता है। इसीलिए यह रत्न रक्त संबन्धी विकारों, विभिन्न तरह के संक्रामक रोगों, अस्थि संबन्धी रोगों, त्वचा संबन्धी रोग, कुष्ठ रोग और अल्सर जैसे रोगों में धारण किए जाने पर उपयोगी सिद्ध होता है। नपुसंकता की अवस्था में भी इसे धारण करना लाभप्रद रहता है।

मेरे स्वंय के अनुभव में भी यह बात आयी है कि जिन लोगों को बार-बार डायरिया या पेचिश की शिकायत बनी रहती है या जिन्हें बार-बार त्वचा संबन्धी संक्रामक रोगों का सामना करना पडता है, अगर वह लोग उचित वजन का माणिक्य धारण कर लें, तो निश्चित ही उन्हें इन सभी रोगों से निजात मिल जाती है। अस्थि संबन्धी रोगों यथा जोड दर्द, जोडों की सूजन आदि की बार-बार शिकायत करने वाले लोगों के लिए भी माणिक्य धारण करना अति उपयोगी रहता है।

माणिक्य में सामाजिक मान-सम्मान, प्रतिष्ठा प्रदान कराने एंव यश का पात्र बनाने की भी अद्‌भुत क्षमता रहती है। यह नुक्सान से भी बचाये रखता है तथा व्यक्ति को हताशा और निराशा के भाव से भी दूर रखता है।

- अतः रक्त संबन्धी विकारों में माणिक्य धारण करना अनुकूल रहता है।
- खूनी दस्त (पेचिस) की अवस्था में माणिक्य का धोया हुआ जल रोगी को पिलाते रहने से खूनी दस्त रूक जाते है।
- संग्रहणी, अपच जैसे रोगों में भी माणिक्य जडित अंगूठी पहनने से आराम मिलता है।
- नपुंसकता, खूनी बवासीर के दौरान मलाई के साथ माणिक्य भस्म के सेवन से चमत्कारिक लाभ मिलता है।
- ऐसा देखा गया है कि उच्च्व कोटि के माणिक्य का औसत जीवनकाल चार वर्ष चार माह के लगभग रहता है।

2- मोती (Pearl)

मोती चंद्रमा से संबन्धित रत्न है। अतः इसमें चंद्रमा जैसी शीतलता रहती है। यह रत्न नारंगी रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह रत्न नेत्र संबन्धी विकारों, क्षय जैसे संक्रामक रोग, हृदय संबन्धी रोग, हिस्टीरिया, मानसिक तनाव और अनिद्रा जैसे मनोरोगों में लाभप्रद रहता है। मूत्र संबन्धी कई तरह के विकारों में भी मोती धारण करना या मोती भस्म को गुलाब जल के साथ सेवन करना उपयोगी रहता है। इससे मूत्र की जलन या मूत्र त्याग के समय होने वाले दर्द में शीघ्र आराम मिलता है।

मोती भावनात्मक संबन्धों को मजबूत करने में भी सहायक है। मोती को चांदी की अंगूठी में जडवाकर अपनी अनामिका अंगुली में धारण करने से दिल में प्रेम का अंकुरण फूटता है। इससे पारिवारिक एकजुटता में वृद्धि होती है। मोती को धारण करने से विपरीत लिंगी आकर्षण पैदा होता है।

पथरी रोग में मोती भस्म शुद्ध शहद के साथ कुछ दिन तक निरंतर सेवन करते रहने से पथरियां घुलकर स्वतः ही मूत्र मार्ग से बाहर निकल जाती है।

- अतः पेशाब की जलन में मोती भस्म केवडे के जल के साथ लेने से आराम मिलता है।
- बवासीर और जोड दर्दों में भी मुक्तक भस्म अति लाभकारी सिद्ध होती है।
- यद्यपि उत्तम कोटि के मोती का जीवन काल भी औसतन्‌ दो वर्ष, दो माह तक ही रहता है।

3- मूंगा (Coral)

मूंगा का संबन्ध मंगल ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। यह भी एक प्रभावशाली रत्न है, जो पीले रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करता है। मूंगा का उपयोग शारीरिक एंव मानसिक कमजोरी को दूर करने के साथ-साथ मंदाग्नि से लेकर मधुमेह, पीलिया एंव त्वचा संबन्धी अनेक बीमारियों के उपचार में किया जाता है। ऐसा देखने में आया है कि जो लोग सदैव शरीर में शारीरिक कमजोरी, थकावट और आलस्य की शिकायत करते है या स्वंय में नपुंसकता का अहसास करने लगे है, अगर ऐसे लोगों को उपयुक्त भार का सिन्दूरी रंग एंव दोषरहित उत्तम क्वालिटी का मूंगा स्वर्ण की

अंगूठी में जडवाकर अनामिका उंगुली में धारण करवा दिया जाए, तो निश्चित ही वह लोग कुछ दिनों के भीतर ही स्वंय में एक नया बदलाव अनुभव करने लगते है। वह पुरूष स्वंय को शीघ्र ही सामान्य पौरूष क्षमता सम्पन्न अनुभव करते है।

मूंगा धारण करने का एक और विशेष फल प्राप्त होता है। इसे शरीर पर धारण करने से धारणकर्ता में तार्किक शक्ति एंव निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होने लगती है। इससे व्यक्ति में विश्वास का भाव उदय होता है। इसलिए उसके मैत्री संबन्धों में स्थिरता आती है। ऐसा देखने में आया है कि जो लोग अपने शरीर पर मूंगा धारण किए रहते है वह किसी भी परिस्थिति में अपने मित्रों या रिश्तेदारों के धोखा मिलने से बचे रहते है। यह रत्न प्रतिकूल परिस्थिति में **'सुरक्षा कवच'** का काम करता हुआ उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है।

- रक्त संबधी विकारों, हाई ब्लड प्रेशर की स्थिति में मूंगा की भस्म बनाकर शहद के साथ सेवन करते रहने से आराम मिलता है।
- सख्त शारीरिक कमजोरी में भी मूंगा भस्म लाभ प्रदान करती है।
- मिरगी, हृदयरोग में भी मूंगा भस्म का सेवन करना उपयोगी रहता है।
- यद्यपि उच्च कोटि के मूंगे का औसत जीवनकाल भी तीन वर्ष, तीन माह तक ही रहता है।

4- पन्ना (Emerald)

इसे बुध ग्रह से संबन्धित रत्न माना जाता है। पन्ना के संबन्ध में प्राचीन समय से ही ऐसी मान्यता है कि यह जहर (विष) को स्वंय में सोख लेता है। अतः प्राचीन समय में राजा, महाराजाओं को खाने के लिए खाने-पीने की चीजें देने से पहले उन्हें पन्ना निर्मित पात्रों में रखकर उनकी जॉच की जाती थी। जॉच में पास होने पर ही वह चीजें राजाओं को परोसी जाती थी।

पन्ना हरे रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को स्वंय की ओर आकर्षित करता है। पन्ना का प्रभाव नेत्र, बुद्धि, तन्त्रिका तन्त्र रक्तचाप, उदर संस्थान के ऊपर देखा जाता है। ऐसा देखने में आया है कि पन्ना को धारण करने से तार्किक शक्ति में तो वृद्धि होती ही है, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, आधाशीशी के दर्द (माइग्रेन) और नेत्र संबन्धी विकारों में भी तुरंत लाभ मिलता है। बहुमूत्र और मूत्र संस्थान से संबन्धित पथरी रोग में भी पन्ना जडित सोने की अंगूठी कनिष्ठा उंगुली में धारण करने से संबन्धित रोग शीघ्र ही नियंत्रण में आ जाते है।

उत्तम श्रेणी के पन्ना का औसत जीवनकाल तीन वर्ष, तीन माह का माना गया है।

5- पुखराज (Yellow Sapphire)

पुखरज का संबन्ध बृहस्पति ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। इसे निर्णय क्षमता बढाने वाला रत्न माना गया है। यह नीले रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करता है। अतः इसे शीतलता प्रदान करने वाला रत्न माना गया है।

पुखराज का असर मस्तिष्क और स्नायु तन्त्रिकाओं से लेकर सभी आन्तरिक अंगों और अस्थियों के ऊपर देखा जाता है। अतः इसको धारण करने से व्यक्ति का स्वास्थ्य सदैव ठीक-ठाक बना रहता है। पुखराज को धारण करने से पाचन संस्थान के कार्य सामान्य स्थिति में रहते है। गुर्दा आदि अंग भी अपना कार्य सामान्य रूप से करते रहते है।

पुखराज मस्तिष्क और स्नायु तन्त्रिकाओं से संबन्धित रोगों यथा-हिस्टीरिया, मिरगी जैसे मनोरोगों के अतिरिक्त उदर संस्थान संबन्धी रोगों में भी उपयोगी सिद्ध होता है। मानसिक रोगों के दौरान पुखराज को स्वर्ण की अंगूठी में जडवाकर तर्जनी उंगुली में धारण करने से पर्याप्त लाभ मिलता है।

पुखराज का महत्व भौतिक साधनों की प्राप्ति एंव भोग-विलासता पूर्ण जीवनयापन के लिए भी उपयोगी है।

उच्च कोटि के पुखराज का औसत जीवनकाल चार वर्ष, चार माह का माना गया है।

6- हीरा (Diamond)

डायमण्ड अर्थात् हीरे का संबन्ध शुक्र ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। यह एक अद्भुत रत्न है, जिसमें भूत बाधा से दूर रखने, जहर के प्रभाव को शान्त करने के अतिरिक्त कामोत्तेजना को प्रज्वलित करने एंव सम्पूर्ण भोग-विलासता प्रदान करने का अद्भुत गुण है। यह इनडिगो-ब्लू रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करने का गुण रखता है।

चिकित्सकीय रूप से हीरा का प्रयोग यौन शीतलता, मधुमेह, पक्षाघात, शारीरिक शिथिलता जैसे अनेक रोगों में सफलतापूर्वक कराया जाता है। जो पुरूष सहवास के दौरान स्त्रियों को संतुष्टि की पराकाष्ठा तक नहीं पहुंचा पाते, उन्हें उपयुक्त वजन का डायमण्ड सोने की अंगूठी में जडवाकर अपनी मध्यमा उंगुली में पहनना चाहिए। इससे पुरूषों को अपनी पौरूषता बढाने में निश्चित कामयाबी मिलती है। इसी प्रकार जिन दम्पत्तियों के मध्य सदैव मनमुटाव बना रहता है, उन्हें भी हीरा पहनना चाहिए। यद्यपि हीरे को सदैव रत्न विशेषज्ञ के परामर्श के बाद ही अपने शरीर पर धारण करना चाहिए।

हीरे में अद्‍भुत चुम्बकीय गुण रहते है, इसीलिए इसे धारण करने से मोहक क्षमता की प्राप्ति होती है, साथ ही सुख समृद्धि भी उपलब्धि होती है। इसे धारण करने से मेधा शक्ति में भी वृद्धि होते देखी गई है। व्यापारिक वर्ग के लिए भी हीरा धारण करना अति उपयोगी रहता है।

उत्तम क्वालिटी के हीरे का औसत जीवनकाल सात वर्ष, सात महीने के लगभग माना गया है।

7- **नीलम** (Blue Sapphire)

नीलम रत्न का संबन्ध शनि ग्रह के साथ है। नीलम एक तीव्र प्रभावशाली रत्न माना गया है, जिसका प्रभाव व्यक्ति के भाग्य से लेकर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के ऊपर तत्काल दिखाई पडता है। नीलम बैंगनी रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

नीलम मानसिक विकार, गुर्दे और उदर संस्थान संबन्धी विकारों में उपयोगी सिद्ध होता है। गहरे डिप्रेशन (पागलपन) की अवस्था में नीलम धारण करने से लाभ मिलता है। इसी प्रकार ऑखों में मोतियाबिन्द उतर आने अथवा नेत्र संबन्धी अन्य बीमारियों, गुर्दा रोगों के दौरान सोने की अंगूठी में नीलम जडवाकर अपनी मध्यमा उंगुली में धारण करने से आराम मिलता है।

ऐसा देखने में आया है कि जो लोग अपने पैरों में कमजोरी की शिकायत करते है अथवा जिनकी रक्त वाहिनियों में रक्त का प्रवाह धीमा पडने लगता है, अगर वह लोग अपने शरीर पर नीलम धारण कर लें, तो उनके लिए यह अति उपयोगी सिद्ध होता है।

नीलम को धारण करने से मानसिक समस्याओं का ही निदान नहीं होता, बल्कि इसे धारण करने से शोहरत और दौलत दोनों भी हासिल होती है। यह शारीरिक दमखम बढाने वाला रत्न माना गया है।

- खॉसी के दौरान, धुंधला दिखाई पडना, मोतियाबिंद आदि के दौरान नीलम को केवडे के जल में घिसकर ऑखों में अंजन करने से नेत्र ज्योति बढती है और नेत्र विकार दूर हो जाते है।
- पागलपन में भी नीलम की भस्म आराम प्रदान करती है।
- कई तरह के रक्त विकार, विषम ज्वर के दौरान भी नीलम उपयोगी सिद्ध होता है।
- यद्यपि उच्च्व कोटि के नीलम का औसत जीवनकाल पॉच वर्ष, पॉच माह के लगभग माना गया है।

8- गोमेद (Gomed)

गोमेद का संबन्ध राहू नामक छाया ग्रह के साथ स्थापित किया गया है। यह रत्न पराबैंगनी रंग की ब्रह्माण्डीय किरणों को आकर्षित करता है। यह बाधाओं को दूर करके तनाव एंव अन्य मानसिक समस्याओं के निदान में सहायक रहता है। इसे धारण करने से भूख न लगने की शिकायत भी दूर हो जाती है। यह मिरगी जैसे रोगों में भी उपयोगी सिद्ध होता है।

ऐसा देखने में आया है कि चांदी की अंगूठी में गोमेद जडवाकर मध्यमा उंगुली में धारण कर लिया जाए, तो इससे विवाह संबन्धी समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है। अगर गर्भावस्था के दौरान गर्भवती महिलाओं को गोमेद धारण करवा दिया जाए, तो वह गर्भावस्था संबन्धी अनेक तरह की परेशानियों से बची रहती है। इन महिलाओं को गर्भपात की भी आशंका नहीं रहती। उनकी प्रसव क्रिया भी सहजता से सम्पन्न हो जाती है।

गोमेद की भस्म बुद्धि को तीव्र करके स्मरण शक्ति बढती है।

उत्तम क्वालिटी के गोमेद का औसत जीवनकाल तीन वर्ष, तीन माह माना गया है।

9- **लहसुनिया** (Cat's eye)

यह केतु नामक छाया ग्रह से संबन्धित रत्न माना गया है। यह रत्न इन्फ्रारेड प्रकार की ब्रह्माण्डीय किरणों को अपनी ओर आकर्षित करता है। केतु की तरह यह रत्न भी गरम प्रकृति का माना गया है। इस रत्न में हैजा, पेचिश जैसे कई तरह के संक्रामक रोगों को दूर करने से लेकर त्वचा संबन्धी रोग और कैंसर जैसे गंभीर रोगों को नियन्त्रित करने की

सामर्थ रहती है। अगर कैंसर रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही एक उत्तम क्वलिटी का लहसुनिया चांदी की अगूंठी में जडवाकर रोगी की मध्यमा उंगुली में अन्य उपयुक्त रत्नों के साथ धारण करवा दिया जाए, तो कैंसर का प्रसार काफी हद तक रूक जाता है।

लहसुनिया कीट-पतंगों के काटने से भी सुरक्षा प्रदान करता है।

लहसुनिया का प्रभाव कतुे की भांति यकायक प्रकट होता है। अगर यह रत्न अनुकूल आ जाए, तो वह व्यक्ति के लिए शीघ्र ही सुख, समृध्दि के द्वार खोल देता है। यह व्यापार आदि में तेजी से लाभ प्रदान करता है।

यद्यपि उत्तम कोटि के लहसुनिया का औसत जीवनकाल तीन वर्ष, तीन माह माना गया है।

10- दाना–ए–फिरंग (Kidney stone)

दाना-ए-फिरंग को किडनी स्टोन के नाम से भी जाना जाता है। यह एक अद्‌भुत रत्न है, जो मूलतः मध्य एशिया के देशों में पाया जाता है। इस तोतिया रंग के रत्न पर गुर्दे के आकार की एक आकृति उभरी रहती है। यही इसकी मुख्य पहचान भी है।

दाना-ए-फिरंग का सीधा प्रभाव गुर्दा और मूत्र संस्थान के ऊपर देखने को मिलता है। अतः इसको धारण करने से मूत्र संस्थान से संबन्धित अनेक तरह के रोगों में तुरंत आराम मिलता है। इतना ही नही, अगर गुर्दे या मूत्र संस्थान में किसी भी जगह कोई पथरी फंसी है और उसके कारण व्यक्ति को पीडा बनी रहती हो, तो उस पीडा में भी यह रत्न तत्काल आराम प्रदान करता है।

यद्यपि दाना-ए-फिरंग का एक विशिष्ट प्रयोग भी है, जिसके द्वारा गुर्दे में पैदा हुई बडी से बडी पथरियां भी टूट-टूट कर स्वतः मूत्र मार्ग से बाहर निकल जाती है।

11- कहरूवा शभई

यह रक्त स्त्राव व गर्भपात रोकने वाला एक अद्‌भुत पत्थर है। जिन स्त्रियों को बार-बार गर्भपात हो जाता है। अगर उन स्त्रियों की कमर पर एक काले रंग के धागे में कहरूवा शभई बांध दिया जाए, तो उससे उनको गर्भपात होने की संभावना नहीं रहती।

12- हौल दिली

जिन लोगों का आत्म विश्वास खो जाता है या जो लोग थोडी सी प्रतिकूल बात देखकर ही डर जाते है, और डर के कारण जिनका दिल तेजी से धडकने लगता है अथवा जिन्हें एकांत-अंधेरे स्थान में जाने पर डर, भय लगता है, उन लोगों के लिए हौल दिली नामक यह रत्न बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। अगर ऐसे कमजोर दिल वाले लोगों को काले रंग के एक डोरे में हौल दिली बांधकर गले में पहना दिया जाए, तो उससे उन्हें अज्ञात भय से तो मुक्ति मिलती ही है, हृदय की तीव्र धडकन में भी आराम मिल जाता है।

13- संगे यशब

संगे यशब को भी डर, भय, अज्ञात डर से बचने के लिए एक अत्यंत उपयोगी पत्थर माना गया है। इसे भी गले में पहनना पडता है।

14-**ओपल–**

इसे बेशर्त प्यार का प्रतीक माना गया है। यह रत्न फेंफडों के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

15-**ब्लड स्टोन–**

ऐसी मान्यता है कि यह रत्न रक्त को शुद्ध करता है। यह शारीरिक आघात एंव चोट आदि की स्थिति में उपयोगी सिद्ध होता है। क्योंकि यह रक्त स्त्राव को तत्काल रोक देता है।

पुराने जमाने से ही ऐसी मान्यता चली आ रही है कि यह रत्न खतरों से बचाता है। प्राचीन काल के निःसंतान दम्पत्ति संतान पाने की चाह में ब्लड स्टोन धारण करके रखते थे।

16-**ओनेक्स–**

यह रत्न बहरेपन से संबन्धित शिकायतों को दूर करने में लाभप्रद माना गया है। यह एकाग्रता बढाने और आत्म नियन्त्रण में भी कारगर है।

17-ग्रीन जैस्पर–

इसे जीवन में स्थापत्य प्रदान करने वाला रत्न माना जाता है। यह मनोवेगों को शान्त करता है। ऐसी मान्यता है कि यह अल्सर के इलाज में सहायक है।

18-**जिरकॉन–**

अनिद्रा से ग्रस्त व्यक्तियों के इलाज में यह रत्न सहायक है। ऐसा माना जाता है कि जिरकॉन को शरीर पर धारण करने से गर्भवती महिलाओं को प्रसव के समय दिक्कतों का सामना नही काना पडता। यह आध्यात्मिक रूझान बढाने में भी सहायक है।

19-**टोपाज–**

यह मस्तिष्क को शान्त रखता है। ऐसी मान्यता है कि यह गुर्दे और पेशाब से संबन्धित शिकायतों में भी लाभप्रद रहता है।

20-**एमिथेस्ट**–

एमिथेस्ट के संबंध में ऐसी मान्यता है कि यह रत्न मानसिक शक्तियों के विकास में सहायता करता है। इसके अलावा यह अनिद्रा और सिरदर्द में भी राहत प्रदान करता है।

21-**एक्वॉमरीन**–

यह पानी से संबन्धित डर और भय को दूर रखता है। यह नेत्र दृष्टि को भी अच्छा बनाए रखने में सहायक है।

22-**मैग्नेटाइट**–

इसे ऊर्जा प्रदान करने वाला क्रिस्टल माना गया है। यह लिवर से संबन्धित व्याधियों और ध्यान को एकाग्र रखने में सहायक माना जाता है। ऐसा देखा गया है कि यह रत्न शरीर के इन्डोक्राइन सिस्टम को सुचारू बनाये रखता है। इसी सिस्टम द्वारा शरीर में अनेक तरह के हॉर्मोन प्रवाहित होते है।

(चमत्कारिक रत्न और अन्य भाग्यशाली पत्थरों के ऊपर विस्तृत जानकारी के लिए आप मेरी ''भाग्यशाली स्टॉन्स'' नामक पुस्तक में भी पढ सकते है। लेखक।)

23- संक्रामक रोगों में उपयोगी रत्न

छाती में संक्रमण होना एक सामान्य बात है। यद्यपि 25-30 वर्ष पहले जब आज की तरह प्रभावशाली एंटीबायोटिक दवाएं सहजता से उपलब्ध नही थी, उस समय इस प्रकार के संक्रामक रोग प्रायः गंभीर प्रभाव डालने वाले एंव मृत्यु कारक ही सिद्ध होते थे। इस प्रकार के छाती के संक्रमण पांच वर्ष के बच्चों और वृद्धों के लिए तो प्रायः खतरनाक सिद्ध होते थे। ऐसे संक्रामक रोगों के कारण हर साल कई करोड बच्चे और वृद्धजन असमय ही आपनी जान गंवा बैठते थे। यद्यपि अब यह तस्वीर काफी हद तक बदल गई है। पर संक्रामक रोगों में प्रभावशाली मानी जाने वाली यह आधुनिक एंटीबायोटिक दवाएं ज्यादा सुरक्षित एंव भरोसेमंद साबित नहीं होती। इन एंटीबायोटिक दवाओं के साथ कई तरह की जठिलतांए एंव विषमताएं सामने आने लगती है। फिर भी यह दवाएं जीवनरक्षक ही सिद्ध हो रही है।

साधारण नजला, जुकाम से लेकर निमोनिया, फुफ्फुसीय शोथ, क्षय (ट्युबरकुलोसिस), श्वसन तन्त्र की जीर्ण शोथ तक अनेक अवस्थाएं छाती के संक्रामक रोगों के अन्तर्गत आती है। यह सभी संक्रामक रोग व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवन पर बहुत बुरा असर डालते है। इसलिए एक समय निमोनिया और ट्यूबरकुलोसिस जैसे रोगों को लेकर लोगों में इतना भय व्याप्त था कि लोग इन रोगों का नाम तक लेने से डरते थे। कुछ समय पहले तक लोग इन रोगों का नाम भी अपने मुंह पर नहीं लाते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में तो अब भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। इन दोनों रोगों को लोग यमदूत ही समझते थे।

यद्यपि विगत कुछ दशकों में प्रभावशाली एंटीबायोटिक दवाओं की मदद से ज्यादातर संक्रामक रोगों को सहज काबू करना संभव हो गया है। ज्यादातर लोगों को समय पर उचित उपचार देकर विषय स्थिति में जाने से रोकना संभव हो सका है, फिर भी इन रोगियों में कई तरह की जटिलतएं पैदा होते देखी जाती है। जैसे अनेक बार इन एंटीबोटिक दवाओं को बार–बार प्रयुक्त किए जाने पर यह बेअसर सिद्ध होने लगती है अथवा संवेदनशील लोगों को बार–बार ऐसे संक्रामक रोगों का सामना करना पडता है। ऐसी स्थिति में उन लोगों को निरंतर दवाओं के भरोसे ही रहना पडता है अथवा साल में दो–चार बार अस्पताल में भर्ती होकर अपना इलाज कराना पडता है। एंटीबोयोटिक दवाओं के निरंतर सेवन से कई अन्य तरह के दुष्प्रभाव भी शरीर में पैदा होने लगते है। अतः यह एंटीबोटिक दवाएं जीवनरक्षक तो है, पर एक सीमा तक ही।

ज्योतिषीय अध्ययन के आधार पर देखा गया है कि गोचर वश जब सूर्य, बृहस्पति और मंगल मिथुन, सिंह या कुंभ राशियों के क्षेत्र में परिभ्रमण करते है अथवा जिन लोगों की जन्मकंडली में मंगल और बृहस्पति की स्थिति अत्यधिक कमजोर बनी रहती है, उन लोगों में ऐसे संक्रामक रोगों के पनपने की संभावना सदैव प्रबल बनी रहती है। अतः इन ग्रहों को बल प्रदान करके उन लोगों की जीवनी शक्ति को बढाया जा सकता है तथा उन्हें ऐसे संक्रामक रोगों के हमले से बचाये रखा जा सकता है।

संक्रामक रोगों का उपचार

अनुभवों के आधार पर पाया गया है कि उच्च्य श्वसन संस्थान संबन्धी संक्रामक रोगों के दौरान चांदी के पात्र में पानी भरकर रखना और उस पानी को प्रातः काल पीना अथवा मिट्टी के पात्र में पानी भरकर उसमें चांदी का सिक्का या टुकडा डालकर रखना और उसी पानी को दिन भर पीते रहने से संक्रामक रोगों से काफी हद तक बचा जा सकता है।

चांदी एक जीवान्त धातु मानी गयी है। इसलिए इसे श्रेष्ठ सुचालक धातु कहा गया है। इसके साथ ही इसमें अनेक तरह के जीवाणुओं को नष्ट करने की अद्‌भुत क्षमता रहती है।

संक्रामक रोगों से बचने के लिए इसके अलावा इन लोगों के लिए लाल रंग का **'मूंगा'** और पीले रंग का **'पुखराज'** धारण करना भी उपयुक्त रहता है। इन्हें **'रक्तमणि'** और **'रतुआ'** जैसे उपरत्न भी पहनने से उपयुक्त लाभ मिलता है। मूंगा, पुखराज, रतुआ जैसे रत्नों को धारण कराने से इनकी जीवनी शक्ति में वृद्धि होती है तथा उनका शरीर स्वंय ही कई तरह के संक्रामक रोगों से मुकाबला करने में सक्षम बन जाता है।

मेरे अनुभव में कई ऐसे मामले आये, जिनमें रत्नों के अद्‌भुत चमत्कार देखने को मिले। जहां पर एक सात वर्षीय बच्चे का तो मैं विशेष रूप में उल्लेख करना चाहूंगा।

बचपन से यह बच्चा बहुत ही नाजुक स्वभाव और संवेदनशील प्रकृति का था। जीवन के प्रथम 3- 4 वर्ष तो उसने एक तरह से डॉक्टर और उनकी दवाओं के सहारे ही व्ययतीत किए। क्योंकि बचपन में उसे अनेक बार छाती के संक्रामक रोगों का सामना करना पडा। संक्रामक रोगों के बार-बार हमले से उन दवाओं के प्रति उसके शरीर में एलर्जिक प्रतिक्रिया शुरू हो गई। इस कारण चिकित्सकों ने कई तरह की दवाएं उसके लिए प्रतिबन्धित कर दी। ऐसी जटिल स्थिति में बच्चे के लिए साधारण संक्रामक रोग भी गंभीर सिद्ध होने लगे, तो उसे उपयुक्त वजन की एक **'रक्तमणि'** के साथ एक पीला **'पुखराज'** पहनने के लिए कहा गया। चूंकि उच्च्य क्वालिटी के पुखराज की कीमत बहुत ज्यादा रहती है, अतः उसे पुखराज की जगह **'वेरिल'** या **'रतुआ'** जैसे उपरत्न पहनने के लिए दिया गया।

वेरलि को रक्तमणि के साथ पंच धातु में जडवाकर पहनाया गया। और मजे की बात यह रही कि उपरोक्त रत्नों को धारण कराने के तीन महीने के भीतर ही बच्चे के स्वभाव एंव स्वास्थ्य में अप्रत्यासित रूप से सुधार आया। उन्हें धारण कराने के बाद उसके जीवन का पहला वर्ष ऐसा व्ययतीत हुआ, जिसमें उसे एक बार भी अस्पताल के चक्कर नहीं काटने पडे।

कमजोर जीवनी शक्ति वाले लोगों के लिए सरसों के तेल को लाल रंग की बोतल में भरकर दस-बारह दिन तक धूप में रखने और उस तेल से छाती एंव शरीर के अन्य अंगों की नियमित तौर पर मालिश कर सूर्य की धूप सेंकने से भी बहुत लाभ मिलता है। सूर्य की धूप में जो अल्ट्रावायलेट अर्थात् पराबैगंनी नामक किरणें रहती है, वह विटामिन 'डी' नामक एक विटामिन को संक्रिय बनाने में तो मदद करती ही है, साथ ही वह शरीर की जीवनी शक्ति को भी सुधारने में सहायक रहती है।